गीतावली सटीक ।

———ooo———

गीतावली के विषम पद और गूढ़ अर्थ की सुलभ टीका
श्री जानकीरमण कृपा पात्र श्री सीतारामीय हरि
हरप्रसाद जी ने संतजन के उपकार हेतु
रचना किया ।

———ooo———

जिसे बनारस लाइट छापेखाने में मुनशी हरिवंशलाल
वो बाबू अविनाशीलाल वो बाबू भोलानाथ
की सम्मति से गोपीनाथ पाठक ने
छापा संमत् १९२६ ।

Benares:

PRINTED AT THE LIGHT PRESS. : BY GOPEENAUTH PATHUK.

1869.

☞ इस पुस्तकके पाठक जनों पर प्रगट हो कि १०४ अंक के आगे ११३ का अंक है सो यह छापेवालों की भूल से छपगया है परन्तु पाठ क्रम से हैं उसमें कुछ छूट अथवा अशुद्ध नहीं हैं ॥

गीतावली सटीक।

-ooo-

श्री सीतारामाभ्यांनमः ।

श्लोक। बालांदिगंबरंरामं कौशल्यानंदवर्द्धनम् । अतसीकुसुमश्यामं
दध्योदनमुखंभजे ॥ १ ॥ सोरठा । जपतरहतसबजाम जा-
सुनामब्रह्मादिकौ । हरिहरकरतप्रणाम तेहिसियसियबर
चरणकों ॥ १ ॥ दोहा । भरतलषनरिपुदवनपद बंदिध्याय
हनुमान । हरिहरटीकारचतहैं देहुसुधारिसुजान ॥ २ ॥
मू० । नीलांबुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितवामभागं । पा-
णौमहासायकचारुचापं नमामिरामंरघुबंशनाथम् ॥ १ ॥

टी० । श्याम कमल सम श्यामल कोमल अंग औ सीता जू बाम
भाग में भली भांति तें स्थित औ हाथ में अमोघ बाण औसुंदर सारंग
धनुष है जिनके तिन रघुवंशनाथ श्री राम कों नमस्कार करत हौं
श्री राम की चारि लीला प्रधान हैं बाल बिवाह बन और राजलीला
यह चारों श्लोक के एक एक पद से जनाए नीलांबुजश्यामलकोमला
गं तें बाल औ सीतासमारोपितवामभागं तें बिवाह औ पाणौमहा
सायकचारुचापं तें बन औ नमामिरामंरघुबंशनाथं तें राज्यलीला ॥

मू० । राग असावरी । आजुसुदिनसुभघरीसुहाई रूपशील
गुनधामरामनृपभवनप्रगटभएआई ॥ १ ॥ अतिपुनीतमधु
मासलगनग्रह बारयोगसमुदाई हरषवन्तचरअचरभूमिसुर

तनुरुहपुलकितजनाई ॥ २ ॥ बरषहिँबिबुधनिकरकुसुमावलि नभदुंदुभीबजाई कौशल्यादिमातुसबहरषित यहसुखबरनि नजाई ॥ ३ ॥ सुनिदशरथसुतजन्मलिएसब गुरजनबिप्रबुलाई बेदबिहितकरिक्रियापरमसुचि आनदउरनसमाई ॥ ४ ॥ सदनबेदधुनिकरतमधुरमुनि बहुबिधिबाजुबधाई पुरबासिन्ह प्रियनाथहेतु निजनिजसंपदालुटाई ॥ ५ ॥ मनितोरनबहु केतुपताकनि पुरीरुचिरकरिछाई मागधसूतद्वारबंदीजन जहँतहँकरतबड़ाई ॥ ६ ॥ सहजसिंगारकिएबनिताचलि मंगलबिपुलबनाई गावहिँदेहिँअसीसमुदितचिर जियोतनयसुखदाई ॥ ७ ॥ बीथिन्हकुमकुमकीचअरगजा अगरुअबीरउड़ाई नाचहिँपुरनरनारिप्रेमभरि देहदसाबिसराई ॥ ८ ॥ अमितधेनुगजतुरगबसनमनि जातरूपअधिकाई देतभूपअनुरूपजाहिजोइ सकलसिद्धिगृहआई ॥ ९ ॥ सुखीभएसुरसंतभूमिसुर खलगनमनमलिनाई सबहिसुमनबिकसतरबिनिकसत कुमुदबिपिनबिलखाई ॥ १० ॥ जोसुखसिंधुसकृत सीकरतेंसिवबिरंचिप्रभुताई सोसुखउमगिअवधरह्योदसदिसिकवनजतनकहौंगाई ॥ ११ ॥ जेरघुबीरचरनचिन्तकतिन्ह कीगतिप्रगटदेखाई अबिरलअमलअनूपभगतिदृढ़ तुलसिदासतबपाई ॥ १२ ॥

टी०। सखी प्रति सखी कहति है आजु सुंदर दिन औ सुंदर सुभ घरी में रूप शील औ गुन के धाम श्री राम महाराज दशरथ के गृह मे आइ के प्रगट भए भवन प्रगट भए आई कहिवे को यह भाव कि अपने इच्छा करि पर धाम ते आइ के प्रगटे गर्भ तें नाहीं ॥ १ ॥ अति पवित्र चैत्र मास कर्क लग्न पांच ग्रह उच्च के मेषके सूर्य मकर के मंगल तुला के शनैश्चर कर्क के बृहस्पति मीन केशुक्र औ श्री राम जन्म दिन मेरु तंत्र औ रामसुधा मे सोमवार औ सूर

सागर में बुधवार औ गोसाइँ जो मंगलवार एहीग्रंथ मे लिखे सो कल्पांतर करि व्यवस्था करना औ योग समुदाय सुकआदि हैं चर जंगम अचर स्थावर औ भूमिसुर ब्राह्मण हर्षवन्त हैं सो कैसे जानि पस्यौ तेहि हेतु लिखत हैं कि तनुरुह कहैं रोम सो पुलक करि जनाय दिए । शंका अचर की पुलकावली कैसेजानिपरी । उत्तर । अचर पर्वत इत्यादि तिनकोरोम रूप हण पत्रादि हैं ते लहलहाय उठे सोई पुलकना है चर अचरसे भूमिसुर कों पृथक लिखिवे को यह भाव की श्री रघुनाथ कों ब्रह्मण्य जानि ब्राह्मणन कों सब तें अधिक आनंद भयो अतएव भागवत में लिखा । ब्रह्मण्यःसत्यसंधश्च रामोदाशरथिर्यथा । मधु मास कों अति पुनीत कहिवे को यहभाव कि बर्ष का आदि मास है अतएव श्री दशरथ महाराज अश्वमेध याग चैत्रै मे आरम्भ किए । बाल्मीकीय रामायण मे लिखा ॥ २ ॥ देवतन के समूह आकाश में नगारा बजाइ पुष्प समूह बरषत हैं नगारा बजाइवे को यह भाव कि रावण के भय तें छिपे छिपे फिरत रहे ते आजु नगारा बजाइ प्रगटे औ श्री कौशल्या जू आदि सब माता हर्षित हैं यह सुख बरनि नहीं जात है जाते चौथे पन में पुत्र प्रगटे याते मातन को सुख अकथनीय ठहराये ॥ ३ ॥ दशरथ महाराज पुत्रजन्म सुनि सब कुल वृद्ध औ ब्राह्मणों कों बोलाय लिए वेदविहित नांदीमुख श्राद्धादि परम शुचि क्रिया करि जो आनंद भयो सो उर मे नहीं समात है गुरूजन विप्र दोऊ बोलाइवे को यह भाव कि लौकिक क्रिया गुरू जन औ बैदिक क्रिया ब्राह्मण सम्हारैं ॥ ४ ॥ मधुर स्वरतें मुनि गृह में बेद धुनि करत औ बहु प्रकारते बधाई बाजति है पुर बासी प्रिय जो नाथ हैं तिन के हेतु अपनी अपनी संपदा लुटाई प्रियनाथ कहिवे को यह भाव कि महाराज के पुत्र होएबिना जो अनाथ रहे सो सनाथ भए ॥ ५ ॥ तोरन बंदनवार केतु ध्वजा पताका फरहरा वा केतु सचिन्ह जैसे विष्णु के ध्वज में गरुड़ चिन्ह

औ शिव के ध्वज में वृष चिन्ह औ पताका चिन्ह रहित मागध कथक सूत पौराणिक बंदी भाट ॥ सूताःपौराणिकाःप्रोक्तामागधावंशशंसकाः । बंदिनस्त्वमलप्रज्ञाःप्रस्तावसदृशोक्तयः ॥ ६ ॥ सहज शृंगा जेहि भांतितें किए रहीं तैसहीं उठि धाईं मंगल बिपुल हरहीं दूर्वादि सहज शृंगार को यह भाव कि मंगल बनाइवे के आनंद मे शृंगारसजना भूलिगईं ॥ ७ ॥ गलिन मे केसर औ अरगजा को कीच है औ अगर की धुआं औ अबीर उड़त है औ देह दसा बिसराइ प्रेम में भरि पुर के नर नारि नाचत हैं ॥ ८ ॥ गज हाथी तुरंग घोड़ा जात रूप सोना सिद्धि अणिमादिक ॥ ९ ॥ देवता संत औ ब्राह्मण सुखी भए औ खलगण के मन मे मलिनाई आई अर्थात दुखी भए जैसे सूर्य के निकसत सब फूल फूलत है पर कोईं को बन बिलखात अर्थात संपुटित होत है भाव सपेटो भीतर जात ख्वाहीऊ पर आय जात है॥ १० ॥ जो सुखरूप समुद्र के एक बूंद ते शिव ब्रह्मा की प्रभुताई है सो सुख अजोध्या जी के दशो दिशा में उमगि रह्यौ वा अजोध्या जी तें उमगि के दशों दिशा में जाय रह्यौ ताकों कवन जतन तें गाइ कहौं भाव बूंद को जो भली भांति न जानै सो समुद्र कों कैसै बखानै ॥ ११ ॥ जे रघुनाथ के चरन के चिन्तक हैं तिनकी गति प्रगट देखि परति है अर्थात ज्ञानिन कों कहीं प्रगट न भए औ भक्तन के पुत्र ह्वै प्रगट भए भाव जो स्ववश रह्यौ सो परवश भयौ अंतराल रहित निर्मल औ उपमा रहित दृढ भक्ति तब तुलसीदास ने पाई भाव केवल भक्ति करि रघुनाथ के प्रगटे तें कर्म ज्ञान को भरोसा छोड़ि केवल भक्ति ही दृढ करि लियो ॥ १२ ॥ १ ॥

मू० । राग जयत श्री । सहेली सुनुसोहिलोरे सोहिलोसोहिलो सोहिलोसोहिलोसबजगआजु पूतसपूतकौसिलाजायो अचलभयोकुलराजु ॥ १ ॥ चैतचारुनौमीसितमध्यगगनगतभानु नषतयोगग्रहलगनभलेदिन मंगलमोदनिधानु ॥ २ ॥

व्योमपवनपावकजलथलदिसि दसहुसुमंगलमूल सुरदुंदुभी बजावहिंगावहिं हरषहिंबरषहिं फूल ॥ ३ ॥ भूपतिस दनसोहिलोसुनिबाजेगहहेनिसान जहंतहंसजहिंकलस-ध्वजचामरतोरनकेतुबितान ॥ ४ ॥ सीचिसुगंधरचेचौकेगृह आंगनगलीबजार दलफलफूलदूबदधिरोचन घरघरमंगल-चार ॥ ५ ॥ सुनिसानंदउठेदसस्यंदन सकलसमाजसमेत लियेबोलिगुरसचिवभूमिसुर प्रमुदितचलेनिकेत ॥ ६ ॥ जातकर्मकरिपूजिपितरसुर दियेमहिदेवनदान तेहिअवसरसुत तीनप्रगटभए मंगलमुदकल्यान ॥ ७ ॥ आनदमहंआनंद अवध आनंदबधावनहोइ उपमाकहेचारिफलकी मोकों भलानकहैकबिकोइ ॥ ८ ॥ सजिआरतीबिचित्रथारकर जूथ जूथबरनारि गावतचलींबधावनलैलैनिजनिजकुलअनुहारि ९ ॥ असहीदुसहीमरहुमनहिमन बैरिनबढहुबिषाद नृप सुतचारिचारुचिरजीवहु संकरगौरिप्रसाद ॥ १० ॥ लैलै ढोवप्रजाप्रमुदितचलि भांतिभांतिभरिभार करहिंगानकरि-आनरायकी नाचहिंराजदुआर ॥ ११ ॥ गजरथबाजिबाहि नीवाहन सबनिसवांरेसाज जनुरतिपतिरितुपतिकोसलपुर बिहरतसहितसमाज ॥ १२ ॥ घंटाघंटिपखाउजआउजझांझ बेनुडफतार नूपुरधुनिमंजीरमनोहर करकंकनझनकार ॥ १३ नृत्यकरहिंनटनटीनारिनर अपनेअपनेरंग मनहुँमदन रतिबिबिधबेषधरि नटतसुदेससुधंग ॥ १४ ॥ उघटहिंछंदप्र बंधगीतपद रागतानबंधान सुनिकिन्नरगंधर्बसराहत बिथके हैंबिबुधबिमान ॥ १५ ॥ कुंकुमअगरअरगजाछिरकहिं भरहिंगुलालअबीर नभप्रसूनझरिपुरीकोलाहल भइमनभाव तिभीर ॥ १६ ॥ बड़ीबयसबिधिभयेदाहिनो गुरसुरआसिर्बाद दसरथसुकृतसुधासागरसब उमगेहैंतजिमरजाद ॥ १७ ॥

ब्राह्मनबेदबंदिबिरुदावलि जयधुनिमंगलगान निकसतपैठत लोगपरस्पर बोलतलगिलगिकान ॥ १८ ॥ वारहिंमुकुतार तनराजमहि षीपुरसुमुखिसमान बगरेनगरनेछावरिमनिगन जनुजुवारिजवधान ॥ १९ ॥ कीन्हबेदविधिलोकरीतिनृप मंदिरपरमहुलास कौसल्याकेकईसुमिचा रहसबिबसुरनिवा-स ॥ २० ॥ रानिनदिएवसनमनिभूषन राजासहनभँडार मागधसूतभाटनटजाचक जहंतहंकरहिंकवार ॥ २१ ॥ बिप्रवधू सनमानिसुआसिनि जनपुरजनपहिराइ सनमानेअवनीसअसीसतईसरमेसमनाइ ॥ २२ ॥ अष्टसिद्धिनवनिद्धिभूतिसव भूपतिभवनकमांहि समउसमाजराजदशरथको लोकपसकलसिहाहिं ॥ २३ ॥ कोकहिसकैअवधवासिनको प्रेमप्रमोदउछाह सारदसेसगनेसगिरीसहिँ अगमनिगमअवगाह ॥ २४ ॥ सिवबिरंचिमुनिसिद्धप्रसंसत बड़ेभूपकेभाग तुलसिदासप्रभुसोहिलोगावत उमगिउमगिअनुराग ॥ २५ ॥

टी० । सहेली प्रति सहेली की उक्ति है सहेली सखी वा सहेली सहैवाली जेहि को यह उत्सव सोहात अर्थात असही दुसही नाहीं सोहिलो कहैं उत्सव सब जगत मे सोहिला है याते बहुबार लिखे वा पांच बेर लिखबे तें पांचो देवतन को उत्सव युक्त जनाए वा पंचभूत सब हर्षित भए जे पहिले रावनादि करि दुखी रहे ताते पांच बार वा पहिले सोहिलो रे जो लिखे सो सुनिबे में है फेरि चारि बार लिखे जातें चारि भाइन का जन्मोत्सव है वा आनंदतें बहुबार लिखे सूत कहिबे को यह भाव कि जन्म तै तीन भैयन का और बो लाए वा दिन ग्रहादि भले तें जाने की सपूती करैंगे अचल भयो कुल राज कहिबे को यह भाव कि पुत्र भए बिना जो चल होत रह्यौ सो अचल भयो ॥ १ ॥ शुक्ल पक्ष मध्यान्ह काल औ बार मंगल आनंद को निधान है ॥ २ ॥ आकास वायु अग्नि जल औ थल करि पृथ्वी लेना औ दशो दिशा

सेसुमंगल का मूल है आकाशादि पांचो लिखवेते पांचो भूतन को हर्ष जनाए ॥ ३ ॥ निसान नगारा चामर कहैं चमर बितान स.मिआना ॥ ४ ॥ सुगंध अतर गुलाबादि दल तुलसी बिल्व पत्रादि फल सुपारी नरिअर आदि रोचन गोरोचन वा रोरी ॥ ५ दशस्यंदन दशरथ महाराज निकेत महल ॥ ६ ॥जात कर्म नांदी मुख श्राद्ध जेहि में दही अच्छत से श्राद्ध औ दुर्बादि जल से तर्पन होत है ताकों करि पितर सुर पूजि ब्राह्मणन को दान दिए । संका । सूतक में पूजा औ दान कैसे किए । उत्तर । जब लौं नार नहीं छीना जाय तबलौं सूतक नाहीं लगत है तेहि अवसर मे तीन पुत्र और प्रगट भए मंगल मुद कल्यान अर्थात मंगल रूप भरतजी मुदरूप लछ्मण जी औ कल्यान रूप शत्रुघ्न जी हैं ॥ ७॥ श्री रघुनाथ के जन्म के आनंद महं तीनों भैयन का जन्म भयो तातें आनंद महं आनंद लिखे अजोध्या जी मे आनंद जुक्त बधावा होत है चारो फल सम चारो भैयन को कहे ते हमको कोऊ कवि भला न कहैगो अर्थात जाको जन मोक्षादि दाता है जात तेंहि कों मोक्षादि की उपमा कैसे संभवै ॥ ८ ॥ बिचित्र थार अद्भुतथार बरनारि अहिवाती कुल अनुहारि कुल के योग्य भाव ब्राह्मणी सतोगुणा ठाठ से औ क्षत्रियार जो गुनी ठाठ से इत्यादि ॥ ९ ॥ असही कहैं जो और की बढ़ती न सहि सकै दुसही कहैं दुख करि पर बढ़ती सहै वा दुसही दुष्ट ए सब मन ही मन अर्थात कुढ़ि के मरऊ औ बैरिन को बिषाद बढ़ो ॥ १० ॥ ढोव कहैं भेंट की सामग्री अर्थात अपने अपने जाति के अनुरूप जैसे अहीर दही बरई पान इत्यादि आन कहैं दोहाई ॥ ११ ॥ बाहिनी जो सेना ताको बाहन जो नायक तिनने हाथी रथ घोड़ा सबनि के साज सँवारे वाहयतीतिवाहनः इस व्युत्पत्ति ते नायक को बाचक भयो मानो सेनापति नहीं है काम है सेना नहीं है बसन्त ऋतु है सो अयोध्या जी मे समाज सहित बि-

हरत है दृ इां समाज भूषण बसनादि हैं वा गजरथ औ तुरंगरथ औ बाहिनी वाहन अर्थात घोड़ीघोड़ा हथिनी हाथी आदि सबनि के साज सँवारे अपर पूर्ववत ॥ १२ ॥ घंटा हाथी आदि के घंटो हाथिन के झेला की औ साढ़नी पायक आदि को आवज कहैं तासा अरबी में तासा कों आवज कहत हैं तार कारताल मंजीर पावजेब १३ ॥ अपने अपने रंग कहैं चाल तें अर्थात संगीत नाचने वाले संगीत के चाल तें औ तांडव नाचने वाले तांडव के चाल तें इत्यादि नट नटी नारि नर नृत्य करत हैं मानौ काम रति बहुत बेष धरि सुदेश कहैं सुंदर औ सुघंग कहैं सूधे अंग तें नाचत हैं अर्थात हाथ मुंह टेढा नाहीं होए पावत है वा सुघंग शुद्ध अंग नृत्य के ॥ १४ ॥ छंद औ प्रबंध औ गीत के पद राग तान बंधान पूर्वक उघटहिं अर्थात गावहिँ जैसे ध्रुपद तराना है तैसे छंद प्रबंध गीत भी है संगीत ग्रंथन में स्पष्ट बंधान कहैं लय अर्थात गीत समाप्त पर्यन्त तान ताल बराबर चला जाय बार बराबर भी भेद न पड़ै सुनि के गंधर्व किन्नर सराहत हैं कि अस हम नहीं गाय सकते औ देवतन के बिमान विशेष थकि गए अर्थात अचल ह्वै गए भाव जो स्वर्ग में नहीं सुने रहे सो सुने तातें मोहि रहे ॥ १५ ॥ तीखुर आदि से मेही औ अति लाल जो बनत ताकों गुलाल कहत हैं औ तेहि से कमलान औ मोटा जो जोन्हरी आदि के पिसान से बनत है ताको अबीर कहत हैं कोलाहल अधिक शब्द मन भावती भीर जो भीर बहुत दिन से चाहत रहे सो भई ॥ १६ ॥ बड़ी बयस साठि हजार बरिस के अवस्था मे गुरू औ देवता के आशिर्वाद ते बिधाता दाहिनो भयो षष्टिर्वर्षसहस्राणि जातस्यममकौशिक इति श्रीमद्रामायणे महाराज दशरथ के सुकृत रूप जे अमृत के सब समुद्र हैं अर्थात् चारो समुद्र ते मर्याद कहैं किनाराछोड़ि उमगे भाव जैसे समुद्र जो किनारा छोड़ि उमगै तो सब जग डूबि जाय सो एकको का कहै

सब सुकृत समुद्र उमगे एहितें यह व्यंजित किए कि सब ब्रह्मांड आनंद मे डूबि गयो ॥ १७ ॥ बिरदावली यश लगि लगि कांन कहिवे को यह भाव कि बेदादि धुनि तें जो महाशब्द भयो तातें सुनात नाहीं कानमेलगि जबजोर सें बोलत हैं तब सुनात है ॥ १८ ॥ मोती जवाहिर आदि श्री महाराज की पटरानी औ पुर की स्त्री गन समान नेवछावर करहिँ एहि तें यह जनाए की पुरवासिनिनिको भी आनंद महारानिन के तुल्यै भयो नेवछावर करतमे जो गिरे मनि समूह ते बगरे कहैं छितिराने नगर मेज्वार जोन्हरी औ जव धान के समान ॥ १९ ॥ मंदिर मे परम हुलास पूर्वक बेद लोक रीति महाराज कीन्हे अर्थात बेद रीति जातसंस्कार अभ्युदयिक श्राद्धादि पतना रक्षणादि लोकरीति नार गाड़ब औ राई नोन वारव औ चौकी हेतु आगिआदि राखब सब रनिवास कौशल्या कैकेई सुमित्रा आदिरहस बिवश कहिए हर्ष के विशेष बस भई ॥ २० ॥ सहन कहैं संपूर्ण कवार कहैं यश ॥ २१ ॥ सुआसिनि कहैं साविची कन्या वर्ग जन दासादि पुरजन पुरबासी अवनीश दशरथ महाराज ईश शिव रमेश विष्णु ॥ २२ ॥ आठो सिद्धि औ नवो निधि सब ऐश्वर्य युक्त महाराज के भवन मे कमाहिँ कहैं परिचर्या करत हैं लोकप इन्द्रादि अणिमामहिमाचैव गरिमालघिमातथा । प्राप्तिःप्राकाम्यमीशित्वं वशित्वंचाष्टसिद्धयः ॥ पद्मोस्त्रियांमहापद्म शंखोमकरकच्छपौ । मुकुंदकुंदनीलाश्च खर्वश्च निधयोनवेतिशब्दार्णवे ॥ २३ ॥ गिरीश शिव आगम शास्त्र निगम बेद इन्ह कों अथाह है वाशिवादि को अगम बेद को अथाह है ॥ २४ ॥ २५ ॥

मू० । रागविलावल । आजुमहामंगलकोसलपुरसुनिनृपकेसुतचारि
भए सदनसदनसोहिलोसुहावननभअरुनगरनिसानहये । १ ।
सजिसजिजान अमरकिन्नरमुनिजानिसमयसमगानठये नाच
हिँनभअपछरामुदितमनपुनिपुनिबरषहिंसुमनचये ॥ २ ॥ अ

तिसुखबेगिबोलिगुरभूसुरभूपतिभीतरभवनगए जातकर्मकरि कनकबसनमनिभूषितसुरभिसमूहदये ॥ ३ ॥ दलरोचनफल फूलदूबदधियुवतिन्हभरिभरिथारलये गावतचलींभीरभइबी थिन्हबंदिनबांकुरबिरदबये ॥ ४ ॥ कनककलसचामरपताक ध्वजजहँतहँबंदनवारनये भरहिँअबीरअरगजाछिरकहिँसक ललोकएकरंगरये ॥ ५ ॥ उमगिचल्यौआनंदलोकतिऊंदेंतस बनिमंदिररितये तुलसिदासपुनिभरेइदेखियतरामकृपाचित वनिचितये ॥ ६ ॥

टी० । हये कहैं बजे ॥ १ ॥ सबै सम गान ठये अर्थात सो हरादि गान ठाने चये समूह ॥ २ ॥ सुरभी धेनु ॥ ३ ॥ बांकुरिबरद उत्कृष्ट यश बये कहैं बदे ॥ ४ ॥ रए रँगे ॥ ५ ॥ रितये खाली किये ॥ ६ ॥

मू० । रागजयतश्री । गावैंबिमलबिबुधबरबांनी भुवनकोटिकल्यानकंदु जायोपूतकोसिलारानी ॥ १ ॥ मासपाषतिथिबारनषतग्रहयो गलगनसुभठानी । जलथलगगनप्रसन्नसाधुमनदसदिसिहि यहुलसानी ॥ २ ॥ बरषतसुमनबधावनगरनभहरषनजातब षानी । ज्यौंहुलासरनिवांसनरेसहिँ त्यौंजनपदरजधानी ३ ॥ अमरनागमुनिमनुजसपरिजनबिगतबिषादगलानी । मिलेहि मांझरावनरजनीचरलंकसंकअकुलानी ॥ ४ ॥ देवपितरगु रुबिप्रपूजिनृपदियेदानरुचिजानी । मुनिबनितापुरनारिसआ सिनिसहसभांतिसनमानी ॥ ५ ॥ पाइअघाइअसीसतनिकस तजाचकजनभएदानी । यौंप्रसन्नकैकइसुमित्रहिहोहुमहेस भवानी ॥ ६ ॥ दिनदूसरेभूपभामिनिदोउभईसुमंगलषानी । भ योसोहिलोसोहिलोमोजनुसृष्टिसोहिलेसानी ॥ ७ ॥ नाचत गावतभोमनभावतसुषसुअवधअधिकानी । देतलेतपहिरतप हिरावतप्रजाप्रमोदअघानी ॥ ८ ॥ गाननिसानकोलाहलकौतु कदेषतदुनीसिहानी । हरिबिरंचिहरपुरसोभाकुलिकोसलपुरी

लुभानी ॥ ९ ॥ आनदअवनिराजरवनीसबमागऊकोखिजु
ड़ानी । आसिषदैदैसराहहिंसादरउमारमाब्रह्मानी॥१०॥
बिभवबिलासबाढ़िदशरथकीदेषिनजिनहिंसोहानी । कीर
तिकुसलभूतिजयरिधिसिधितिन्हपरसवैकोहानी ॥ ११॥ छ
टीबारहौलोकबेदबिधिकरिसुबिधानबिधानी । रामलषनरि
पुदमनभरतधरेनामललितगुरज्ञानी ॥१२॥ सुकृतसुमनति
लमोदबासिबिधिजतनजंत्रभरिवानी। सुषसनेहसबदियोदस
रथहिषरिषलेलथिरथानी ॥ १३ ॥ अनुदिनउदयउछाहउम
गजगघरघरअवधकहानी। तुलसीरामजन्मजसगावतसोसमा
जउरआनी ॥ १४ ॥ ४ ॥

टी० । बिबुध देवता कल्यान कंद कल्यान के मूल वा मेघ जायो उत्पन्न कियो ॥ १ ॥ सुभ ठानी शुभस्थानी जल थल आकाश औ साधुन के मन प्रसन्न होत भयो औ दशो दिशा को हृदय हुलसत भयो शंका जलादि प्रसन्न कैसे भए उत्तर जल निर्मल भयो पृथ्वी कृषी संपन्न भई गगन मेघादि रहित भयो सोई प्रसन्न होना है ॥ २ ॥ जनपद देश रजधानी अयोध्या॥ ३॥ देवता नाग मुनि मनुज परिवार सहित बिषाद गलानि रहित भए औ रावण राक्षसों के मिलेहिं माझा अर्थात फूट बिना लंका शंका ते अकुलात भई मिलेहिं माझा बिधि बात बिगारी जैसे यह चौपाई मे मिलेहिं माझ का अर्थ है तैसे इहां जानना वा जब देवता आदि बिषाद गलान रहित भए सो बिषाद ग लानादि रावन रजनी चरके माझ मिलेहि तें अर्थात डेरा किए तें लंका शंका तें अकुलात भई॥ ४ ॥ दूसरे दिन महाराज को दोऊ भामिनी कैकेयी जू सुमित्रा जू सुमंगल की खानि भई अर्थात श्री राम जी के दूसरे दिन दशमी को पुष्य नक्षत्र मीन लग्न मे श्री भरत जी को प्रादुर्भाव भयो भरत जी के दूसरे दिन एकादशी को श्लेषा नक्षत्र कर्क लग्न मे लक्ष्मण जी शत्रुघ्न जी को प्रादुर्भाव भयो

तिसुखबेगिबोलिगुरभूसुरभूपतिभीतरभवनगए जातकर्मकरि कनकबसनमनिभूषितसुरभिसमूहदये ॥ ३ ॥ दलरोचनफल फूलदूबदधियुवतिन्हभरिभरिथारलये गावतचलींभीरभइबीथिन्हबंदिनबांकुरबिरदबये ॥ ४ ॥ कनककलसचामरपताकध्वजजहँतहँबंदनवारनये भरहिँअबीरअरगजाछिरकहिँसकललोकएकरंगरये ॥ ५ ॥ उमगिचल्यौआनंदलोकतिऊंदेंतसबनिमंदिररितये तुलसिदासपुनिभरेइदेखियतरामकृपाचितवनिचितये ॥ ६ ॥

टी० । हये कहैं बजे ॥ १ ॥ समै सम गान ठये अर्थात सो हरादि गान ठाने चये समूह ॥ २ ॥ सुरभी धेनु ॥ ३ ॥ बांकुरिबरद उत्कृष्ट यश बये कहैं बदें ॥ ४ ॥ रए रँगे ॥ ५ ॥ रितये खाली किये ॥ ६ ॥

मू० । रागजयतश्री । गावैंबिमलबिबुधबरबांनी भुवनकोटिकल्यानकंदुजायोपूतकौसिलारानी ॥ १ ॥ मासपाषतिथिबारनषतग्रहयोगलगनसुभठानी । जलथलगगनप्रसन्नसाधुमनदसदिसिहियहुलसानी ॥ २ ॥ बरषतसुमनबधावनगरनभहरषनजातबषानी । ज्यौंहुलासरनिवांसनरेसहिँ त्यौंजनपदरजधानी ३ ॥ अमरनागमुनिमनुजसपरिजनबिगतबिखादगलानी । मिलेहिमांझरावनरजनीचरलंकसंकअकुलानी ॥ ४ ॥ देवपितरगुरुबिप्रपूजिन्हपदियेदानरुचिजानी । मुनिबनितापुरनारिसआसिनिसहसभांतिसनमानी ॥ ५ ॥ पाइअघाइअसीसतनिकसतजाचकजनभएदानी । यौंप्रसन्नकैकईसुमित्रहिहोहुमहेसभवानी ॥ ६ ॥ दिनदूसरेभूपभामिनिदोउभईसुमंगलषानी । भयोसोहिलोसोहिलोमोजनुसृष्टिसोहिलेसानी ॥ ७ ॥ नाचतगावतभोमनभावतसुषसुअवधअधिकानी । देतलेतपहिरतपहिरावतप्रजाप्रमोदअघानी ॥ ८ ॥ गाननिसानकोलाहलकौतुकदेषतदुनीसिहानी । हरिबिरंचिहरपुरसोभाकुलिकोसलपुरी

लुभानी ॥ ९ ॥ आनदअवनिराजरवनीसबमागहुकोखिझु
ड़ानी । आसिषदैदैसराहहिंसादरउमारमाब्रह्मानी॥१०॥
बिभवबिलासबाढ़िदशरथकीदेषिनजिनहिंसोहानी । कीर
तिकुसलभूतिजयरिधिसिधितिन्ह परसवैकोहानी ॥ ११॥ छ
टीबारहौलोकबेदबिधिकरिसुबिधानबिधानी । रामलषनरि
पुदमनभरतधरेनामललितगुरज्ञानी ॥ १२॥ सुकृतसुमनति
लमोदबासिबिधिजतनजंत्रभरिवानी। सुषसनेहसबदियोदस
रथहिषरिषलेलथिरथानी ॥ १३ ॥ अनुदिनउदयउछाहउम
गजगघरघरअवधकहानी। तुलसीरामजन्मजसगावतसोसमा
जउरआनी ॥ १४ ॥ ४ ॥

टी० । बिबुध देवता कल्यान कंद कल्यान के मूल वा मेघ जायो उत्पन्न कियो ॥ १ ॥ सुभ ठानी शुभस्थानी जल थल आकाश औ साधुन के मन प्रसन्न होत भयो औ दशो दिशा को हृदय हुलसत भयो शंका जलादि प्रसन्न कैसे भए उत्तर जल निर्मल भयो पृथ्वी कृषी संपन्न भई गगन मेघादि रहित भयो सोई प्रसन्न होना है ॥ २ ॥ जनपद देश रजधानी अयोध्या ॥ ३ ॥ देवता नाग मुनि मनुज परिवार सहित बिषाद गलानि रहित भए औ रावण राक्षसों के मिलेहिँ माझा अर्थात फूट बिना लंका शंका तै अकुलात भई मिलेहिँ माझा बिधि बात बिगारी जैसे यह चौपाई मे मिलेहिँ माझ का अर्थ है तैसे इहां जानना वा जब देवता आदि बिषाद गलान रहित भए सो बिषाद ग लानादि रावन रजनी चरके माझ मिलेहि तें अर्थात डेरा किए तें लंका शंका तें अकुलात भई ॥ ४ ॥ दूसरे दिन महाराज को दोऊ भामिनी कैकेयी जू सुमित्रा जू सुमंगल की खानि भई अर्थात श्री राम जी के दूसरे दिन दशमी को पुष्य नक्षत्र मीन लग्न मे श्री भरत जी को प्रादुर्भाव भयो भरत जी के दूसरे दिन एकादशी को श्लेषा नक्षत्र कर्क लग्न मे लक्ष्मण जी शत्रुघ्न जी को प्रादुर्भाव भयो

उत्सव में उत्सव भयो मानो सृष्टि उत्सव मे सानी है श्रीमद्रामायणे पुष्येजातस्तुभरतो मीनलग्नेप्रसन्नधीः । सार्पेजातौतुसौमित्री कुलीरे ब्युदितेरवौ । प्राश्चअन्येद्युःपांचजन्यात्मा कैकेय्यांभरतोऽभवत् । तदन्येद्युःसुमित्रायामनंतात्माचलक्ष्मणः। सुदर्शनात्माशत्रुघ्नोद्वौजातौयुगपत्प्रिये अत एव श्रीगोसांई जी छठी तीन दिन मे स्पष्ट लिखे त्यौं आजु कालि परों जागर होंहिगे नेवते दिए शंका पहिले तेहि अवर सुत तीन प्रगटभए मंगल मुद कल्यान एहि पद मे एकै दिन सब भाइन का जन्म जनाए औ इहां तीन दिन मे कहे सो कैसे उत्तर कल्पांतर करि याको व्यवस्था जानना ॥ ७ ॥ प्रमोद आनंद ॥ ८ ॥ दुनो संसार कुलिसव ॥ ९ ॥ पृथ्वी पति की रानी आनंदित भई माग कोख ते जुड़ात भई भाव माग तो पतिते जुड़ानै रह्यो पर पुत्र भएते कोखिउ करि जुड़ानी वा आनंद की भूमि जे सब महाराज की रानी ते माग औ कोखि ते जुड़ात भई रमा उमा ब्रह्मानी के सराहिवे कों यह भाव कि विश्व के पिता कों पुत्र बनाए तातें धन्य हैं ॥ १० ॥ बिभव का बिस्तार औ वंश की वृद्धि दशरथ महाराज की देषि कै जिन को न सोहानी तिन्ह पर यश मंगल ऐश्वर्य जय रिद्धि औं अणिमादिक सिद्धि सबै कोहानी भाव ए सब ताको त्याग किए ॥ ११ ॥ गुरू ज्ञानी बिधानी जो श्री वशिष्ट जू सो छट्ठी औ बरही की लोक बेद बिधि कों सुंदर बिधान तें करि राम लषन रिपु दवन भरत सुंदर नाम धरे इहां छन्दोनुरोध ते क्रमपूर्वक नाम न लिखे ॥ १२॥ पहिले तिलफूल मे वासा जात है फेर पेरा जात है तब फुलेल होत है ताको रूपक कहत हैं ब्रह्मा ने सुकृत रूप सुगंध दार फूल मे आनंद रूप तिल को वासि कै यत्न रूप कोल्हू मे घानी भरि पेरि कै सुख रूपी फुलेल दशरथ महाराज कों दिए औ खरी औ खलेल कहैं फोकट जो सो थिरयानो कहैं देवता तिन को दिए ॥ १३ ॥ प्रति दिन उछाह को उदै औ उमंग है औ जगत मे घर घर अयो

ध्या जी को कहानी ह्वै रही है सो समाज उर मै आनि कै तुलसी राम जन्म यश गावत है भाव जाते हमारे हृदय मे भी उछाह को उमंग उदय होय ॥ १४ ॥ ४ ॥

मू० । रागकेदारा । अवधवधावनेघरघरमंगलसाजसमाज । सगुनसोहावनेमुदितकरतसर्वनिजनिजकाज ॥ छंद ॥ निजकाजसजतसँवारिपुरनरनारिरचनाअनगनी । गृहअजिरअटनिबजारबीथिन्हचारुचौकेंबिधिघनी ॥ चामरपताकबितानतोरनकलसदीपावलिबनी । सुखसुकृतसोभामयपुरीबिधिसुमतिजननीजनुजनी ॥ दो० । चैतचतुरदसचांदनी अमलउदितनिसिराजु । उडगनअवलिलसीदस दिसिउमगतआनदआजु ॥ छंद । आनंदउमगतआजुबिबुधबिमानबिपुलबनायकै । गावतबजावतनटतहरषतसुमनबरषतआइकै ॥ १ ॥ नरनिरषिनभसुरपेषिपुरछबिपरस्परसचुपाइकै । रघुराजसाजसराहिलोयनलाहुलेतअघाइकै ॥ २ ॥ दो० । जागिएरामछठीसजनीरीरजनीरुचिरनिहारि । मंगलमोदमढ़ीमूरतिजहँन्पबालकचारि ॥ छंद ॥ मूरतिमनोहरचारिबिरचिबिरंचिपरमारथमई । अनुरूपभूपहिजानिपूजनयोगबिधिसंकरदई ॥ तिनकीछठीमंजुलमढ़ीजगसरअजिन्हकीसरसई । किएनीदभामिनिजागरनअभिरामिनीजामिनिभई ॥ ३ ॥ दो० । सेवकसजगभयेसमयसुसाधनसचिवसुजान । मुनिबरगुरुसिषयेलौकिकबैदिकबिबिधिबिधान ॥ छंद । बैदिकबिधानअनेकलौकिकआचरतसुनिजानिकै । बलिदानपूजामूलिकामनिसाधिराषीआनिकै ॥ जेदेवदेवीसेइयतहितलागिचितसनमानिकै । तेतंत्रमंत्रसिषाइराषतसबनसोपहिचानिकै ॥ ४ ॥ दो० । सकलसुआसिनिगुरजनपुरजनपाहुनेलोग । बिबुधबिलासिनिसुरमुनिजाचकजोजेहिजोग ॥ छंद । जेहिजोगजेतेहि

भं।तितेपहिराइपरिपूरनकिए। जेकहतदेतअसीसतुलसीदा
सज्योंकुलसतहिए ॥ ज्यौआजुकालिकुपरँवजागरहोहिंगे
नेवतेंदिए । तेधन्यपुन्यपयोधिजेतेंहिसमैसुषजीवनजिए ॥
दो० । भूपतिभागवलीसुरनर नागसराहिसिहाँहिँ । तियव
रवेषअलीसंपतिसिधिअनिमादिकमाहिँ ॥ छंद। अनिमा
दिसारदसैलनंदिनिबाललालहिपालहीँ । भरिजनमजेपाये
नतेपरितोषउमारमालही ॥ निजलोकविसरेलोकपनिघर
कीनचरचाचालहीँ । तुलसीतपततिहुतापजगजनुप्रभुछठी
छायालही ॥ ६ ॥ ५ ॥

टी० । अब छठी लिषत हैं कवि की उक्ति है अवध मे मंगल सा-
ज समाज औ बधावा घर घर है औ निज निज काज करत सगुन
सोहावने होत तातें सब मुदित हैं पुर नर नारि अगनित रचना सँ-
वारि कै जाको जो काज ताको सजत हैं गृह आंगन अटारिन बजार
औ गलिन मे घनो बिधि ते सुंदर चौकैं औ चवँर पताका चँदवा बंदन
वार कलश औ दीपावली बनी है सुख सुकृत सोभामय पुरी जो
श्री अयोध्याजू तिनको ब्रह्माजू की सुंदर मति रूपा जननी नें मानो
उत्पन्न करी है ॥ १ ॥ अब सखी प्रति सखी की उक्ति है आज
उजेरी चैत चतुर्दशी को निर्मल अर्थात् धूम मेघ आदि रहित नि
शिराज कहैं चन्द्रमा प्रकाश मान हैं औ तारागण की पँक्ति सो
भित भई है औ दशो दिशा मे आनंद उमगत है आजु देवता अ
नेक बिमान बनाय के आनंद उमगत गावत बजावत नाचत हर्षित
होत आय के सुमन वर्षत हैं नर आकाश देषि औ देवता पुर छवि
देषि परस्पर आनंद पाय रघुराज को साज सराहि अघाय कै लो-
चन लाभ लेत हैं ॥ २ ॥ री सखी राम छठी की राति सुंदर नि-
हारि के जागिए मंगल औ मोद सोई मंदिर है मंदिर मे मूरति
रहति हैं इहां महाराज के चारों बालक सोई मूर्ति हैं परमारथ

रूप मनोहर चारि मूर्ति ब्रह्मा सुंदर रचिकै ताके अनुरूप महा-राजही को पूजन योग्य जानि ब्रम्हा शिव मिलि दई तिन की छठी सुंदर मंदिर मे है वा तिन की छट्ठी मंजुल कहैं सुंदर मंदिर है औ जिन्ह की सरसई करि जगत सरस है सो नींद किए औ भा-मिनि जागरन किए ताते रमणीया राची भई वा जिन्ह की सरसई ते जगत सरस है तिन्ह की छठीं रूप सुंदर मढ़ी मे और को को कहै नीद रूपा भामिनि भी जागरन किये ताते रमणीया राचि भई ॥ ३ ॥ सेवक समय के सुंदर साधन हारे औ सचिव सुजान सब सजग भए तिन के मुनिवर जे गुरू ते लौकिक वैदिक अनेक प्रकार के विधान सिखाए तब सुनि जानि कै अनेक वैदिक लौकिक विधान को आचरन करत हैं बलिदान पूजाहेतु औ जड़ी औ मणी आनि कै साधि राखी औ हित लागि चितते सनमानि कै जे देव देवी सेइयत है ते देव देवी के तंत्र मंत्र सबनिसो पहिचानिकै सिखाय राखत पहिचानि कै कहिवे को यह भाव की जेहि देवता मे जाकी प्रीति है वाते देव देवी सब मुनि बरन सो पहिचान करिकै अपना २ जंत्र मंत्र सिखाय राखत सिखायवे को यह भाव कि जो एहिबार न पूजे जाहिँगे तो फेर न कोऊ पूजै गो ॥ ४ ॥ संपूर्ण सोहागिनि श्रेष्ठ वर्ग पुरजन पाऊन विबुध विलासिनि कहैं देव पत्नी देवता मुनि औ याचक लोग जो जेहि योग के हैं तेहि को तेहि भांति वस्त्र भूषणादि पहिराय परिपूरण किए जैसे तुलसी दास को हृदय ऊलसत है तैसे ऊलसत हिए जय कहत असीस देत हैं औ नेवता दिए कि ज्यौं आजु जागरन भयो है अर्थात् श्री राम के छठी को तैसें काल्ह श्री भरत के छठो को औपरों श्री लक्ष्मण शत्रुघ्न के छठी को जागरन होंहिगे अब गोसाईं जी कहत हैं ते धन्य हैं औ पुन्य के समुद्र हैं जेतेहि समय मे सुख पूर्वक जीवन तें जिए अर्थात् वहि उत्सव मे जे रहे ॥ ५ ॥ संपति कहैं लक्ष्मी

औ सिद्धि अणिमादि ते स्त्री सखी को श्रेष्ठ वेष करि कमाति हैं अर्थात् दासी पना करति हैं औ अणि मादि सिद्धि औ सरस्वती औ पार्वती श्री बालराम कों लालत पालत हैं जन्म भरि मे जेपरि तोषन पाए ते परि तोष उमा रमा लहतु भई अर्थात् पुत्र खे ला यवे को सुषन पाए रहीं सो पाई औ इंद्रादिक अपने लोक को भूले जावे को को कहै घरकी चरचा तकनहीं चलावत हैं गोसाईं जी कहत हैं मानो तीनो ताप मे तपत संसार प्रभु छठी की छाया पाई है ॥ ६ ॥ ५ ॥

मू०। रागजयतश्री। बाजतअवधगहागहेआनंदबधाए नामकरनिरघु बरनिकेनृपसुदिनसोधाये। पायरजायसुरायकोऋषिराजबो लाए शिष्यसचिवसेवकसखासादरसिरनाए । साधुसुमतिस मरथसबैसानंदसिखाए जलदलफलमनिमूलिकाकुलिकाजल खाए ॥ १ ॥ गनपगौरिहरपूजिकैगोद्वंददुहाए घरघरमुद मंगलमहागुनगानसोहाए । तुरितमुदितजहँतहँचलेमनके भएभाए सुरपतिसासनुघनमनोमारुतमिलिधाए ॥ २ ॥ गृह आंगनचौहटगलीबाजारबनाए कलसचमरतोरनध्वजासुबि ताननताए। चित्रचारुचौकेरचिलिषिनामजनाए भरिभरिसर वरवापिकाअरगजासनाए ॥ ३ ॥ नरनारिन्हपलचारिमेसब साजसजाए दशरथपुरछबिआपनीसुरनगरलजाए । विबुध बिमानबनाइकैआनंदितआए हरषिसुमनबरषनलगेगयेघनु जनुपाए ॥ ४ ॥ बरेबिप्रचहुंबेदकेरबिकुलगुरुज्ञानी आपुव शिष्ठअथर्वनीमहिमाजगजानी । लोकरीतिबिधिबेदकीकरि कह्योसुबानी सिसुसमेतबेगिबोलियेकौसल्यारानी ॥ ५ ॥ सुनतसुआसिनलैचलीगावतिबड़भागी उमारमासारदसची देषिसुनिअनुरागी। निजनिजरुचिवेषबिरचिकैहिलिमिलि संगलागी तेहिअवसरतिहुलोककीसुदसाजनुजागी ॥ ६ ॥

चारुचौकबैठतभईभूपभामिनिसोहैं गोदमोदमूरतिलिएसु
छतीजनजोहैं । सुषसुषमाकौतुककलादेखिमुनिमुनिमोहैं
सोसमाजकहैबरनिकैऐसोकबिकोहै॥ ७ ॥लगेपढ़नरच्छारच्छ
चारुरिषिराजविराजेगगनसुमनझरिजयजयबकुबाजनबाजे ।
भएअमंगललंकमैसंकसंकटगाजे भुअनचारिदसकेबड़ेदुखदा
रिदभाजे॥ ८ ॥बालबिलोकिअथर्वनोहंसिहरहिजनायोसु-
भकोसुभमोदमोदकोरामनामसुनायो।आलबालकलकोसि
लादलबरनसुहायो कंदसकलआनंदकोजनुअंकुरिआयो ॥
॥ ९ ॥ जोहिजानिजपिजोरिकैकरपुटसिरराषे जयजयजय
करुनानिधेसादरसुरभाषे । सत्यसंधसांचेसदाजेआषरआषे
प्रनतपालपायेसहीजेफलअभिलाषे ॥ १० ॥भूमिदेवदेवदेषि
कैनरदेवसुखारी बोलिसचिवसेवकसखापटधारिभँडारी । दे
ऊजाहिजेहिचाहिएसनमानिसँभारी लगेदेनहियहरषिकै
हेरिहेरिहँकारी॥११॥रामनेवछावरिलेनकोहठिहोतभिखा
रीबहुरिदेततेहिदेखियेमानहुधनधारी । भरतलषनरिपुद
मनहुंधरेनामबिचारीफलदायकफलचारिकेदसरथसुतचारी
॥ १२ ॥ भयेभूपबालकनिकेनामनिरूपमनीके गयेसोचसंक
टमिटेतबतेंपरतीके । सुफलमनोरथबिधिकियेसबबिधिसब
हीके अबहैंहैंगायेसुनेसबकेतुलसीके । १३ ॥ ६ ॥

टी० । कवि की उक्ति आनंद बधावा अवध मे गहागह बाजत है गहागह यह अनुकरण है चारो भाइन के नाम करण के हेतु महाराज सुंदर दिन सो धावत भए महाराज की आज्ञा पाय श्री वशिष्ट जू के शिष्य श्री महाराज के मंत्री दास सखा बोलवावत भए ते आइ के सादर शिर नवाए ते सब साधु समर्थ को बशिष्ठ जू आनंद सहित सिषावत भए भाव वस्तु आनै की बिधि समुद्रादि जल तुलसी दुर्वा बिल्वादि दल सोपारी आदि फल पंच रत्न

आदि मणि सतावरि आदि जड़ी और जे संपूर्ण काज के बस्तु लिवाइ दिए ॥ १ ॥ गनेश गौरी श्री शिव जी को पूजि कै गाइन को दुहाए घर घर मे महा आनंद मंगल औगुन के गान सुंदर होत भए मन के भाए भए ते सचिव सेवकादि जहां तहां तुरित हर्षित चले मानो इंद्र के आज्ञा तें मेघ पवन मिलि करि धाए ॥ २ ॥ गृह सु० । विचित्र सुंदर चौकैं रचि कै नाम लिखि जनावत भए अर्थात यह चौक श्री राम को है यह श्री भरतादि भैयन को है औ तलाव बावली मे अरगजा भरि भरि के सनाए ॥ ३ ॥ एतना बड़ा काज सो चारि पल मे नर नारि सब सजाए दशरथ पुरने अपनी छबि तें इन्द्र लोक को लज्जित किए अत एव देवता विमान बनाय कै आनंदित आए भाव लजीलो पुरी मे रहना उचित नही हर्षि के फूल बरखन लगे मानो गए धन पाए ॥ ४ ॥ बशिष्ठ जी ने बरे कहिं नेवता दिए चारो बेद के ब्राह्मणो को औ आप वशिष्ट जो अथर्वनी हैं जाकी महिमा जगत जानत है सो लोक रीति औ बेद की बिधि करि सुंदर बानी ते कहे सिसुइ० सु० ॥ ५ ॥ सुनत मात्र सुआसिनी बहि भागिनी गावत ले चली पार्वती लक्ष्मी सरस्वती इन्द्र नी स्वरूप देखि गान सुनि कै अनुरागत भई अपनी अपनी रुचि अनुसार बेख बनाय हिलि मिलि संग लागत भई तेहि अवसर मे तीनो लोक की मानो सुंदर दशा जागी भाव चौकठ के बाहर होते सुंदर दसा जागी तो जब घर के बाहर निकसैगे तब क्या जानै क्या होयगो बरहो के दिन आ गन मे निकालवे की रीति है ॥ ६ ॥ सुंदर चौके मे भूप भामिनी बैठत भई गोद मे आनंद की मूर्ति लिए सोभत हैं जेहि मूर्ति को सुकृती जन देषत हैं सुख औ परम शोभा औ कौतुक की कला देषि सुनि के मुनि मोहत हैं सोइ० सु० ॥ ७ ॥ विराजे शोभे संक संकट गाजे कहैं संका औ संकट गाजत भए ॥ ८ ॥ बालक को देखि अथर्वणी ने शिव को जनायो जो शुभ को शुभ मोद को

मोद राम नाम है सो हँसि के सुनायो माता पिता आदि को सुनायो हँसने को यह भाव कि इन का नित्य नावँ जो है ताको अब धरत हौं। पाद्मेश्रियःकमलवासिन्या रमणोयंयतोहरिः । तस्मात्श्रीराम इत्यस्य नामसिद्धंपुरातनम् ॥ सहस्त्रनामसदृशं स्मरणान्मुक्तिदंनृणाम् ॥ वशिष्ट कों अथर्वनी रघुवंश मे भी लिखा है ॥ अथाथर्वनिधेस्तस्य विजितारिपुरःपुरः । अर्थ्यामर्थपतिर्वाच माददेवदतांवरः ॥ अथर्वनी कहिवे ते पुरोहित कृत्य के ज्ञाता जनाये तथाच कामन्दके ॥ त्रय्यांचदण्डनीत्यांच कुशलःस्यात्पुरोहितः । अथर्वविहितंकुर्यान्नित्यंशांतिकपौष्टिकम् ॥ तीनो वेद मे औ राजनीति मे प्रवीण होय सो पुरोहित अथर्वण वेद करि विहित शांतिक पौष्टिक कर्म करै थाल्हा रूप सुंदर श्री कौशल्या जू हैं तिन मे सकल आनंद को मूल मानो अंकुर आयो है इहां अंकुर के स्थान मे बाल श्री राम हैं अंकुर ते दुइ दलनि कसत है सो इहां राम नाम के सुंदर दोऊ अक्षर हैं ॥ ९ ॥ श्री रामजी को देषि कै औ वशिष्टजी के कहिवे ते नाम जानि के ताको जपि कै हस्तपुट जोरि सिरपर राखे अर्थात प्रणाम किए हे करुणानिधे हे सत्य संध हे प्रणतपाल आप की जय होय जय होय आदर सहित देवता भाषे आपजे आषर आषे कहैं कहे अर्थात जनिडरपहुमुनिसिद्धसुरेसा । तुमहिलागिधरिहौंनरवेसा ॥ इत्यादि ते सदा सांचे जे फल अभिलाषे रहे ते ठीक पाए अर्थात आप के अवतार के अभिलाषे रहे सो पाए ॥ १० ॥ ब्राह्मण औ देवतन को देषिकै सुखी जो नरदे सो सचिव सेवक सखा पटधारी वस्त्रन के अधिकारी औ भंडारी अन्नादिक के अधिकारी बोलाय के अज्ञा दिए ॥ ११ ॥ धनधारी कुबेर ॥ १२ ॥ भूप के बालकन के उपमा रहित नीके नाम भए तब ते पुरतियन के सोच गये औ संकट मिटे भाव सूतका गृह मे अनेक बिघ्न को भय रहत है औ स्त्रियन को भीरु सुभाव भी होत है ताते डरी रहीं सो बरही कुशर्वकल समाप्ति पूईभ

ताते सोच गयो वा शुभ को शुभ मोद को मोद राम नाम सुनि सोच रहित भई ॥ १३ ॥ ६ ॥

मू० । रागबिला । बलसुभगसेजमोहतिकौसल्यारुचिररामसिसुगोद लिये । बारबारबिधुबदनबिलोकतिलोचनचारुचकोरकिये ॥ १ ॥ कबहुं पौढिपयपानकरावतिकबहुं फिराषतिलायहिये बालकेलिगावतिहलरावतिपुलकितप्रेमपियूषपिये ॥ २ ॥ बिधिमहेसमुनिसुरसिहातसबदेखतअंबुदओटदिये । तुलसिदासऐसोसुषरघुपतिपैकाहूतोपायोनबिये ॥ ३ ॥

टी० । कवि की उक्ति बिधु चंद्र ॥ १ ॥ श्रीराम प्रेम रूप अमृत को पिए जो श्री कौशल्या जू ते बाल लीला के पद गावति औ श्री रघुनाथ कों हाथ पर झुलावति औ रोमांचित होति हैं भाव हर्ष तें ॥ २ ॥ बादर के ओट देइ देषि वे को यह भाव कि प्रत्यक्ष होय देखिवेते माता हम लोगों के ओर दृष्टि करैंगी तौ यह सुष जात रहैगो ऐसो सुष रघुपति सें बियेक हैं दूसरे ने न पायो ॥ ३ ॥ ७ ॥

मू० । राग सोरठा । ह्वैहौलालकबहिँबड़ेबलिमैया । रामलषन भावतेभरतरिपुदमनचारुचारयौभैया ॥ १ ॥ बालबिभूषनबसनमनोहरअंगनिबिरचिबनैहौं । सोभानिरखिनिछावरिकरिउरलायबारनेजैहौं ॥ २ ॥ छगनमगनअंगनाखेलिहौमिलिठुमुकिठुमुकिकबधैहौ । कलबलबचनतोतरेमंजुलकहिमामोहिबुलैहौ ॥ ३ ॥ पुरजनसचिवराबरानीसबसेवकसखासहेली । लैहैलोचनलाहुसुफललषिललितमनोरथबेली ॥ ४ ॥ जासुषकीलालसालटसिवसुकसनकादिउदासी । तुलसीतेहिसुषसिंधुकौसिलामगनपैप्रेमपिआसी ॥ ५ ॥ ८ ॥

टी० । मैया बलिजाय हे लाल कब बड़े ह्वै हौ भाव ते कहैं सोहाते ॥ १ ॥ बाल बिभूषन कठला जामे बजर बट्टू बघनहा आदि रहत है औरो पदिक हारादि अनेक औ बसन झिँगुरिया चौतनी

आदि मन के हरैया अँगन मे बिरचि के बनाबोंगी वा अंगनि को भी विशेष रचि बनै हौं भाव चोटो गांडि उवटि डिठौना आदि दै शोभा देखि नेवछावर करि उरलाय फिरि आपै नेवछावरि होय जै हौं ॥ २ ॥ छगन मगन एक खेल विशेष है कल बल जो बुद्धि के बहुत कला औ बल से बुझाय तोतरे आधे और के और कहै सोई स्पष्ट करत हैं कहि मा मोहि बलै हो अर्थात माय स्पष्टन कहि मा कहि बोलै हो ॥ ३ ॥ पुरजन सचिव आदि सुंदर मनोरथ रूप लता मे सुंदर फल देषि लोचन लाहु लेहु हैं इहां सचिव पद से आठो मंत्री जानना बाल्मीकीये। धृष्टिर्जयंतोविजयःसुराष्ट्रोराष्ट्रवर्द्धनः । अशो कोधर्मपालश्च। सुमंतश्चाष्टमोमहान् ॥ ४ ॥ लालसा मे लटू हैं भाव जैसे एकै ठांव घूमत झूमत लट्टू अचल रहत ॥ ५ ॥ ८ ॥

मू० । पगनि कबचलिहौचारिभैया। प्रेमपुलकिउरलायसुअनसबक हतसुमित्रामैया ॥ १ ॥ सुंदरतनसिसुबसनबिभूषननषसिष निरषिनिकैया । दलितिनप्राननेछावरिकरिकरि लैहैमातुब लैया ॥ २ ॥ किलकनिनटनिचलनिचितवनिभजिमिलनिम नोहरतैया। मनिषंभनिप्रतिबिंबझलकछबिछलकिहैभरिअँ गनैया ॥ ३ ॥ बालबिनोदमोदमंजुलबिधुलीलाललितजुन्हैया भूपतिपुन्यपयोधिउमगिघरघरआनंदबधैया ॥४॥ ह्वैहैंसकल सुकृतसुष भाजनलोचनलाहुलुटैया । अनायासपाइहैंजनम फलतोतरेबचनसुनैया ॥ ५ ॥ भरतरामरिपुदमनलषनकेचरि तसरितअन्हवैया । तुलसीतबकैसेअजहुंजानिबेरघुबरनगरब सैया ॥ ६ ॥ ॥ ९ ॥

टी० । निकैया सुंदराई हन तोरिवे को यह भाव कि अपनो न-जर न लगे ॥ २ ॥ नटनि नाचनि भजि मिलनि भागि के मिलना मणि खंभनि मे जो प्रतिबिंब परैंगे तिनकी छबि की झलक भरि अँ गनाई छलकिहि भाव प्रतिबिंब का प्रतिबिंब भरि अँगनाई परिहि वा

अरही जोघरमे रहिवे ते मणिखंभनि मे प्रतिविंब के झलक की छवि है सो जब बाहर खेलिहैं तब भरि अँगनाई झलकहि भाव आंगन भरि बालके बालक देखि परैंगे ॥ ३ ॥ चारो भैयन के लरिका खेल जो आनंद सो चन्द्रमा औ सुंदर खेलना जो है सो तेहि चंद की चांदनी तेहि चंद प्रकाश युक्त को देखिकै पुण्य के समुद्र जे भूपति ते उमगि हैं जब समुद्र उमगत है तब शब्द करत है इहां घर घर मे आनंद ते जो बधाई होना है सो शब्द है ॥ ४ ॥ तोतरे बचन के सुनन हारे बेपरिश्रम जन्म के फल कों पावैंगे भाव बेद बेदांत के श्रवण मनन निदिध्यासन विना जन्म को फल अर्थात् मोक्ष पावैंगे इहां माधुर्य पक्ष मे स्पष्ट है ॥५॥ श्री गोसांई जी कहत हैं भरत राम रिपु दवन लषन के चरित्र रूपी नदी के स्नान करैया जैहैं तिन को तब के सरिस अबो रघुवर नगर बसैआ जानना ॥ ६ ॥ ६ ॥

मू० । रागकेदारा । चुपरिउबटिअन्हवायकैनयनआंजेरचिरुचित
लककगोरोचनकोकियोहै । भूपरअनूपमसिबिंदुबारेबारेबार
बिलसतसीसपरहेरिहरैहियोहै ॥ १ ॥ मोदभरिगोदलिये
लालतिसुमित्रादेषिदेवकहैंसबकोसुकृतउपवियोहै । मातुपि
तुप्रियपरिजनपुरजनधन्यपुन्यपुंजपेषिपेषिप्रेमरसपियोहै ॥ २
लोहितललितलघुचरनकरकमल चालचाहिसोछविसुकवि
जियजियोहैं । बालकेलिबातवसझलकिझलमलतसोभाकी
दीयटिमानोरूपदीपदियोहै ॥ ३ ॥ रामसिसुसानुजचरित
चारुगासुनिसुजननिसादरजनमलाहुलियोहै । तुलसीनि
हाईदसरथदसचारिपुरऐसेसुखयोगबिधिबिरच्योनबियोहै ॥
४ ॥ १० ॥

टी० । उबटन लगाय तेल चुपरि नहवाय कै नेत्र मे काजर दिय औ रुचि पूर्वक रचि कै गोरोचन को तिलक कियो औ भौंह पर उपमा रहित स्याम बिंदु दियो अर्थात डिठौना औ छोटे छोटे बार

सिर पर शोभित हैं देखे से हृदय हरि लेत हैं ॥ १ ॥ आनन्द मे भरि कै गोद में लिये सुमित्राजू को दुलारत देखि देवता कहत हैं कि सब को सुकृत उदै भयो है औ माता पिता प्रिय परिवार के जन औ पुरजन धन्य औ पुन्य के पुंज हैं काहे ते कि देखि देखि कै प्रेम रस को पी लियो है ॥ २ ॥ सुंदर लाल छोटे २ चरन औ कर कमल का चाल कहैं चलावना जो सो छवि देखि कै सुंदर कवि को जीव जी उठ्यौ है इहां चाल शब्द ते हाथ पैर का चलावना लेना क्योंकि बँकँइआं चलना अवहीं आगे कहैंगे मानो शोभा रूप दीवट पर रूप रूपी दीया धर्‌यौ है सो बाल केलि रूप वायु के बस झलकि के झलमलात है ॥ ३ ॥ गोसांई जी कहत हैं कि चौदहो भुअन मे ऐसे सुख के योग्य महाराज दशरथ को छोडि के ब्रम्हाने दूसरे को नहीं बनायो है । ४ ॥ १० ॥

मू० । रामसिसुगोदमहामोदभरेदशरथकौसिलहुललकिलखन
लाललियेहैं।भरतसुमित्रालयेकैकईसत्रुसमनतनप्रेमपुलकि
मगनमनभयेहैं ॥ १ ॥ मेढीलटकनमनिकनकरचितबालभू
षनबनाइआछेअंगअंगठयेहैं । चाहिचुचुकारिचूंबिलालत
लावतउरतैसेफलपावतजैसेसुबीजबयेहैं ॥ २ ॥ घनओटबिबु
धबिलोकिबरषतफूलअनुकूलबचनकहतनेहनयेहैं । ऐसेपि
तुमातुपूतपुरपरिजनबिधिजानियतआयुभरिएईनिरमयेहैं ॥
३ ॥ अजरअमरहोऊकरौहरिहरछोऊजरठजठेरिन्हिआ-
सिबाददियेहैं । तुलसीसराहेभागतिन्हकेजिन्हकेहियेडिं
भरामरूपअनुरागरंगरयेहैं ॥ ४ ॥ ११ ॥

टी० । बालराम गोद में हैं ताते दशरथ महाराज महामोद मे भरे हैं औ श्री कौशल्या जू भौललकि कै लषन लाल को लिये हैं भरत जू को श्री सुमित्रा जू औ शत्रुहन जू को कैकई जू लये हैं प्रेम तें तन पुलकि करि कै सब के मन मगन भये हैं ॥ १ ॥ भालपर

के बालकों चोटी सरिस दूनो ओर से गूंथि के पीछे के ओर ले जात हैं ताको मेढी कहत हैं तामे लटकने लटकत हैं और मणि से नाते रचित अर्थात जड़ाऊ बाल समय के भूषन आछेबनाय कै अंग अंग में ठाने हैं अर्थात पहिराये हैं देषि चुचुकारि चूमि कै दुलारत औ हृदय मे लगावत हैं तैसे फल पावत जैसे सुंदर बीज बोए हैं इहां सुंदर बीज सुंदर कर्म्म हैं ॥ २ ॥ मेघ के ओट तें देवता देषिकै फूल बर्षत हैं औ नये नेह से अनुकूल बचन कहत हैं वा नेह से देव नम्र ह्वै गए हैं वा अनुकूल बचन कहत हैं कि इनके नेह नवीन हैं अर्थात अमन देखे पिता माता नगर परिजन को जानियत हैं कि विधाता आयुष भरि में एसे इनहीं को बनाए हैं ॥ ३ ॥ जरठ जठेरिन्ह बूढ औ बुढिया डिंभ बालक रये रँगे ॥ ४ ॥ ११ ॥

मू० । राग असावरी । आजुअनरसेहैंभोरकेपयपियतननीके । रहतनबैठेठाढेपालनेझूलतहूरोअतराममेरोसोसोचुसबहीके ॥ १ ॥ देवपितरग्रहपूजिऐतुलातौलिघीके । तदपिकबहुंकरहुकसखोएसेहीअरतजबपरतदृष्टदुष्टतीके ॥ २ ॥ बेगिबोलिकुलगुरुछुऐमाथेहाथअमीके । सुनतआइऋषिकुसहरेनरसिहमंत्रपढ़िजोसुमिरतभयभीके ॥ ३ ॥ जासुनामसर्वससदाशिवपारवतीके । ताहिझरावतिकौसिलायहरीतिप्रीतिकीहियहुलसतितुलसीके ॥ ४ ॥ १२ ॥

टी० । अनरसे हैं खन मनाए हैं ॥ १ ॥ घृत को तुला दान सुख कारक रोगहार कहैं अरत हैलात ॥ २ ॥ शीघ्र बोलाइये कुल गुरू को कि माथ को अमृत रूप हांथ तें छुऐं सुनत मात्र मे ऋषि आय कै नरसिंह मंत्र जो सुमिरत भय को भय होत सो पढ़ि कै कुश हरे कुश तै मार्जन किये ॥ ३ ॥ ४ ॥ १२ ॥

मू० । माथेहांथजबदियोऋषिरामकिलकनलागे । महिमासमुझिलीलाबिलोकिगुरुसजलनयनतनपुलकिरोमरोमजागे ॥ १ ॥

लियेगोदधाएगोदतेमोदमुनिमनअनुरागे । निरखिमातुहर षोंहियेआलीओटकहतिमृदुबचनप्रेमकेसेपागे ॥ २ ॥ तुम सुरतरुरघुबंसकेदेतअभिमतमागे । मेरेबिसेषगतिरावरीतु- लसीप्रमादजाकेसकलअमंगलभागे ॥ ३ ॥ १३ ॥

टी० । माता के गोद तें धाए तब मुनि गोद में लिए औ हर्ष ते मुनि मन मे अनुरागे ॥ २ ॥ सुर तरु कल्पवृक्ष अभिमत बांछित फल ॥ ३ ॥ १३ ॥

मू० । अमियबिलोकनिकरिकृपामुनिबरजबजोए । तबतेरामअरुभर तलषनरिपुदमनसुमुखिसखिसकलसुअनसुखसोये ॥ १ ॥ ला यसुमित्रालिएहिएफनिमनिज्योंगोए । तुलसीनेवछावरिकर तिमातुअतिप्रेममगनमनसजलसुलोचनकोए ॥ २ ॥ १४ ॥

टी० । अमिय बिलोकनि अमृतदृष्टिजोए देषे ॥ १ ॥ सुमित्रा जू हृदय मे लगाय लिए जैसे सर्प मणि को छपावत कोए कहैं कोर ॥ २ ॥ १४ ॥

मू० । मातुसकलकुलगुरुबधप्रियसखीसुहाई साद‍रसबमंगलकिए महिमनिमहेसपरसबनिसुधेनुदुहाई । बोलिभूपभूसुरलिये अतिबिनयबड़ाईपूजिपांयसनमानिदानदियेलहिअसीससुनि बरषैंसुमनसुरसांई ॥ २ ॥ घरघरपुरबाजनलगेआनंदबधाई सुषसनेहतेहिसमयकोतुलसीजानैजाकोचोरोहैचितचऊँभा ई ॥ ३ ॥ १५ ॥

टी० । सकल माता कुल गुरु बधू अरुंधती औ सुंदर प्रिय सखी आदर सहित मंगल किए भूमि मे जो मणि कहैं श्रेष्ठ महेश तिन पैं वा महिम्न स्तोत्र ते सबनिने सुंदर धेनु दुहाईं अयोध्या खंड मे चीरेश्वर महादेव पर दूधदुहावना लिखा है ॥ १ ॥ ब्राह्मणों कों म हाराज बोलाय लिए अति बिनय बड़ाई तें पांय पूजि सनमानि कै दान दिए तब आसीस पाए सो सुनि कै देवतन के स्वामी फूल बर्षत भए ॥ २ ॥ ३ ॥ १५ ॥

मू० । रागधनाश्री । यासिसुकेगुननामबड़ाई कोकहिसकैसुनऊ

नरपतिश्रीपतिसमानप्रभुताई ॥ १ ॥ यद्यपिबुधिवयरूपसील गुनसबैंचारुचारुशोभाई तदपिलोकलोचनचकोरससिरामभ गतसुषदाई ॥ २ ॥ सुरनरमुनिकरिअभयदनुजहतिहरिहि धरनिगरुआई कीरतिबिमलबिश्वअघमोचनिरहिहिसकल जगछाई ॥ ३ ॥ याकेचरनसरोजकपटतजिजोभजिहैमन लाई सोकुलजुगुलसहिततरिहैभवएहनकछूअधिकाई ॥ ४ ॥ सुनिगुरुबचनपुलकितनदंपतिहरषनहृदयसमाई तुलसिदा सअवलोकिमातुमुखप्रभुमनमेमुसुकाई ॥ १६ ॥

टी० । समैबराबर ॥ १६ ॥

मू० । रागबिलावल । अवधआजुआगमीएकआयो करतलनिरखि कहतसबगुनगनबहुतनिपरिचोपायो ॥ १ ॥ बूढोबड़ोप्रमा निकब्राह्मनसंकरनामसुहायो सँगसिसुसिष्यसुनतकौसि-ल्य भीतरभवनबुलायो जिदियो ॥ २ ॥ पायपषारिअआसन सनरसनपहिरायो मेलेचारुचरनचारयोंसुतमाथेहाथदिवा यो ॥ ३ ॥ नषसिषबालबिलोकिबिप्रतनुपुलकनयनजलछयो लैलैगोदकमलकरनिरषतउरप्रमोदअनमायो ॥ ४ ॥ जन्म प्रसंगकह्योकौसिकमिसिसीयस्वयंबरगायो रामभरतरिपुदम नलषनकोजयसुषसुजससुनायो । तुलसिदासरनिवासरहस वसभयोसबकोमनभायो सनमान्योमहिदेवअसीसतसानँद सदनसिधायो ॥ १७ ॥

टी० । शिव जी जोत षीवनि कै संग मे सुंदर शिष्य का गभशुंड जी के बनाय कै द्रष्ट दर्शन हेतु आए हैं उर प्रमोद अनमायो हृदय मे आनंद नहीं अमात है ॥ १७ ॥

मू० । रागकेदारा । पैढ़ियेलालपालनेहौंझुलावौं करपदमुखचख कमललसतलषिलोचनभँवरभुलावौं ॥ १ ॥ बालबिनोदमोदमं जुलमनिकिलकनिखानिखुलावौं तेइअनुरागतागगुहिबेकहं

मतिखगनयनिबुलावौं ॥ २ ॥ तुलसीभनितभलीभामिनिउर सोपहिराइफुलावौं चारुचरितरघुबरतेरेतेहिमिलिगाइचरनचितलावौं ॥ ३ ॥ १८ ॥

टी० । हे लाल पालने पौढ़िए हम झुलावैं कर पद मुख नेत्र रूप कमलैं शोभित देखि कै अपने नेत्र रूप भ्रमर को भुलावैं ॥ १ ॥ बाल क्रीड़ा को अनंद सोई सुंदर मणि है मणि खानि ते निकसति हैं सो कहत हैं कि किलकनि रूपी खानि से खुलावों अर्थात् प्रगटावों तेहि मणि को अनुराग रूपी धागा मे गुहिवे कों मति रूपी खग नैनी अर्थात् पटहारिन को बुलाय लेंउँ ॥ २ ॥ गोसाईं जी कहत हैं कि भनित भली रूपा भामिनी के उर मे सो मणि का हार पहिराय कै फुलावों अर्थात् आनंदित करों हे रघुवर तेरे सुंदर चरित्र कों तेहि भनित रूपी भामिनी के संग मिलि गाइ कै चरण मे चित्त लगावों ॥ ३ ॥ १८ ॥

मू० । सोइएलाललाड़िलेरघुराई मगनमोदलिएगोदसुमित्राबारबारबलिजाई ॥ १ ॥ हँसेहँसतअनरसेअनरसतप्रतिबिंबनिज्यौं झाई तुम्हसबकेजीवनकेजीवनसकलसुमंगलदाई ॥ २ ॥ मूलमूलसुरबीथिबेलितमतोमसुदलअधिकाई नषतसुमननभबिटपबोंडिमानोछपाछिटकिछबिछाई । होजभांतअलसाततातते रीबानिजानिमैपाई गाइगाइहलराइबोलिहौंसुखनींदरीसुहाई ॥ ४ ॥ बाछरूछबीलेछौनाछगनमगनमेरेकहति मल्हाइमल्हाई सानुजहियहुलसतितुलसीकेप्रभुकिललित लरिकाई ॥ ५ ॥ १९ ॥

टी० । हँसिवे ते हँसत हैं औ उदास होवे ते उदास होत हैं बिंबनि प्रति जैसे परिछाहीं तुम सब के जीवन के जीवन औ सब सुमंगल देनि हार हौ ॥ २ ॥ मूल मूल नक्षत्र है सुर वीथी लता है औ तम समूह सुंदर दलों की अधिकाई है औ नक्षत्र कहैं

तारागण फूल हैं सो आकाश रूप वृक्ष पर छिटकि औ बोड़ि कहैं फैलि कै मानो राति छबि छाई है मूल नक्षत्र को मूल लिखिवे को यह भाव कि जड़ मे एक मुसरा रहत है तामे महीन महीन बहुत सोर रहत है मूल नक्षत्र के ग्यारह तारे हैं तेहि मे से एक मुसरा के स्थान है औ दस महीन महीन सोरों के है ॥ ३ ॥ हे तात अलसात जम्हात हौ तुम्हारी बान हम जानपाई भाव जब अस करत हौ तब सोअत हौ हाथ पर हिलाय गाय गाय सुख निदिआ को बोलै हौं ॥ ४ ॥ मल्हाइ मल्हाई रंगि आय रंगि आय॥ ५ ॥ १९ ॥

मू० । ललनलोनेलैरुआबलिमैआ सुखसोइऔनीदबेरिआभइचारु
चरितचार्योभइआ ॥ १ ॥ कहतिमल्हाइलाइउरछनछन
गनछबीलेछोटेछैआ मोदकंदकुलकुमुदचंदमेरेरामचंद्ररघु
रैआ ॥ २ ॥ रघुबरबालकेलिसंतनकीसुभगसुभदसुरगैआ
तुलसीदुहिपीवतसुषजीवतपयसुप्रेमघनोघैआ ॥ ३ ॥ २० ॥

टी० । लेरुआ बछरा चारु चरित सुंदर हैं चरित्र जेहि के॥ १ ॥ छैया बालक मोद कंद आनंद के मूल औ कुल रूप कुमुद के चंद्रमा ॥ २ ॥ रघुबर की बालकेलि संतन की सुंदर शुभ देनिहारी कामधेनु है तेहि कामधेनु ते सुंदर प्रेम रूप दूध जामे घनाघीव है ताको तुलसी दुहि कै पीवत है ताते सुख युत जीवत है॥ ३ ॥ २० ॥

मू० । सुखनीदकहतिआलिआइहौं रामलषनरिपुदमनभरतसिसु
करिसबसुमुखसोआइहौं । रोवनिधोवनिअनखानिअनरस
निडोठिमूठिनिठुरनसाइहौं हँसनिखेलनिकिलकनिआनंद
निभूपतिभवनबसाइहौं ॥ २ ॥ गोदबिनोदमोदमयमूरतिह
रषिहरषिहलराइहौं तनुतिलतिलकरिवारिरामपरलैहौंरो
गबलाइहौं ॥ ३ ॥ रानीराउसहितसुतपरिजननिरषिनयन
फलपाइहौं चारुचरितरघुबंसतिलककेतहँतुलसिहिमिलि
गाइहौं ॥ ४ ॥ २१ ॥

टी० । अब मांता फुसिलावति है कि सुख नीद कहति है कि हे आली मै आइ हौं सुमुख प्रसन्न ॥ १ ॥ रोअनि धोअनि रूढि है रोइवे के अर्थ मे अनखानि षनमनानि अनरसनि उदासीनता दीठि नजर मूठि टोना ताको निठुरताते नसांओंगी भाव दया न करोंगी वा ए सब जो निठुरति हको नसांओं गी भूपति भवन बसाइवे को यह भाव कि जब बालक सुख पूर्वक सोअत है तब उठे पर आनंद पूर्वक खेलत है ॥ २ ॥ क्रीड़ा औ आनंदमय मूरति को गोद मे लै कै हरषि हरषि के हलराओंगी तन को तिल तिल करिके श्री राम पर नेवछावरि करि रोग बलाय हम लै हौं ॥ ३ ॥ रानी राजा को पुत्र परिवार समेत देषि कै नैननि को फल पाओंगी सुंदर चरित्र रघुवंश तिलक के तहां तुलसी के संग मिलि गाओंगी ॥ ४ ॥ २१ ॥

मू० । रागअसावरी । कनकरतनमयपालनोरच्योमनहुँमारसुत हार विविधषेलौनाकिंकिनीलागेमंजुलमुक्ताहार । रघुकुल मंडनरामलला ॥ १ ॥ जननीउबटिअन्हवाइकैमनिभूषनस जिलियेगोद पौढ़ायेपटुपालनेसिसुनिरषिमगनमनमोद। दस रथनंदनरामलला ॥२॥ मदनमोरकीचंद्रिकाझलकनिनिद रतितनजोति । नीलकमलमनिजलदकीउपमाकहैलघुमति होति ॥ मातुसुकृतफलरामलला ॥ ३ ॥ लघुलघुलोहितललि तहैपदपानिअधरएकरंग। कोकबिजोछबिकहिसकैनखसिख सुन्दरसबअंग ॥ परिजनरंजनरामलला ॥ ४ ॥ पगनूपुरक टिकिंकिनीकरकंजनपहुंचीमंजु । हियहरिनषअद्भुतबन्यो मानोमनसिजमनिगनगंजु । पुरजनसुरमनिरामलला ॥ ॥ ५ ॥ लोयननीलसरोजसेभूपरमसिबिंदुविराज। जनुविधुमु खछबिअमिअकोरच्छकराख्योरसराज ॥ सोभासागररामल ला ॥ ६ ॥ गभुआरीअलकावलीलसेलटकनललितललाट

जनुउड़गनविधुमिलनकोचलेतमबिदारिकरिवाट ॥ सहजसुहावनरामलला ॥ ७ ॥ देखिपेखनाकिलकहिंपदपानिबिलोचनलोल । बिचित्रबिहँगअलिजलजज्यौंसुखमासरकरतकलोल । भक्तकल्पतरुरामलला ॥ ८ ॥ बालबोलिबिनुअरथकेसुनिदेतपदारथचारि । जनुइनबचनन्हितेभयेसुरतरुतापसत्रिपुरारि । नामकामधुकरामलला ॥ ९ ॥ सखीसुमित्रावारहींमनिभूषनबसनबिभाग । मधुरझुलाइमल्हावईगावैउमगिउमगिअनुराग । हैंजगमंगलरामलला ॥ १० ॥ मोतीजायोसीपमेंअरुअदितिजन्यौजगभानु । रघुपतिजायोकौसिलागुनमंगलरूपनिधानु । भुअनबिभूषनरामलला ॥ ११ ॥ रामप्रगटजबतेभयेगयेसकलअमंगलमूल । मीतमुदितहितउदितहैंनितबैरिनकेउरसूल ॥ भवभयभंजनरामलला ॥ १२ ॥ अनुजसखामिसुसंगलैखेलनजैहैंचौगान । लंकाखरभरपरैगोसुरपुरबाजिहैनिसान ॥ रिपुगनगंजनरामलला ॥ १३ ॥ रामअहेरेचलैगेंजबगजरथबाजिसँवारि । दसकंधरउरधकधकीजनिधावैधनुधारि ॥ अरिकरिकेहरिरामलला ॥ १४ ॥ गीतसुमित्रासखिनकेसुनिसुनिसुरमुनिअनुकूल । देअसीसजैजैकहेहरषैंबरषैंफूल ॥ सुरसुखदायकरामलला ॥ १५ ॥ बालचरितमयचंद्रमायहमोरहकलानिधान । चितचकोरतुलसीकियोकरप्रेमअमियरसपान ॥ तुलसीकोजीवनरामलला ॥ १६ ॥

टी० । श्री सुमित्रा जू औ सखिन की उक्ति है रघुकुल मंडन रामलला जे हैं तिन्ह को मानो काम रूपवढ़ई कनक रतन मै पालना रचत भयो तामे बड़त रंग के खेलवना औ घुघुरू औ सुंदर मोतीन की माला लगे हैं ॥ १ ॥ दसरथ नंदन राम लला कों माता नें उवटि अन्हवाइ के सखिन के गहना सजि के गोद लिये फेर सुंदर

पालना मे पौढ़ाए बालक को देषि कै मन आनंद मे मगन भयो ॥ २ ॥ मातु सुकृत फल राम लला के तन की जोति काम के मोर की वा काम रूप मोर की चंद्रिका के झलकनि को निरादर करति है नील कमल औ नील मणि औ नील मेघ की उपमा कहे तुच्छ मति होति है ॥ ३ ॥ परिजन रंजन राम लला के छोटे २ पद हाथ ओठ एक रंग सुंदर लाल हैं नष सिष सुंदर सब अंग की जो छवि सो कवन कवि कहि सकै ॥ ४ ॥ परिजन के चिंतामणि रूप राम लला के पग मे घुंघुरू कमर मे किंकिनी औ हस्त कमलन में सुंदर पहुंची औ हृदय मे बघनहा आश्चर्य बना है मानो ए सब भूषण काम के मणि समूहों को निरादर करनि हारे हैं ॥ ५ ॥ सोभा सागर राम लला के नेत्र नील कमल सम हैं औ भौंह पर काजर को बिंदु सोभत है सो मानो काजर को बिंदु नहीं है शृंगार रस है ताको मुख चंद्र के छवि रूप अमृत को रक्षक राख्यो है ॥ ६ ॥ सहज सोहावन राम लला के गर्भ वाली अलकावली औ सुंदर लटकन ललाट पर लसत है मानो चंद्रमा के मिलन को तारा गन तम बिदारि राह करि चले इहां लटकन उडगन हैं मुख शशि है तम अलकावली है दूनो तरफ बाल अलगाए ते जो लकीर ह्वै गई है सो राह है ॥ ७ ॥ भक्त कल्प तरु राम लला जो हैं सो खेलवना देखि कै किलकत हैं पग हाथ नेत्र चंचल है मानो विचित्र पक्षी भ्रमर औ कमल परम सोभा रूप सर मे कलोल करत हैं इहा विचित्र विहँग बालकन के पग मे महावरादि से चित्रई लिषीजाति है सो है नेत्र भ्रमर कर कमल है ज्यों का मानो अर्थ किया है सो भी होत है कुवलयानंदे मन्येशंकेध्रुवंप्रायोनूनमित्येवमादिभिः । उत्प्रेक्षाव्यज्यतेशब्दैरिवशब्दोपितादृशः ज्यौंइवपर्यायश ॥ ८ ॥ नाम कामधेनु है जेहि के तेहि रामलला के बिनु अर्थ के बालबचन जोसोमु ने मे चारो पदार्थ देत है भाव आप तो बे अर्थ को

है औ सब अर्थ देत है वा बाल बोल बिनु अर्थ को जो है ताको सुनि के सुनैया चारो फल देइबे को समर्थ होत है मानो इन बचनन ते भए हैं कल्पवृक्ष औ तपस्वी औ शिवजी भाव देखिबे मे बेअर्थ के एऊ हैं पर सब अर्थ देत हैं सो क्यों नहोहिँ कारन को गुन कार्य मे रहतही है ॥ ९ ॥ जगमंगल जो रामलला हैं तिनकों सखी औ सुमित्राजू मणिभूषण वसन पृथक २ नेवछावर करत हैं धीरे धीरे भुलाय अनुराग ते उमगि २ रगिआय गावत हैं ॥ १० ॥ मोती सीप मे जन्म्यो औ जगत मे अदिति ने भानु को जन्मायो औ गुन मंगल मोद के पात्र रघुकुल के पति औ भुवन के विशेष भूषण करन वाले राम लला को कौशल्या जू उत्पन्न किये ॥ ११ ॥ औ राम प्रगट जब ते भए तब ते सब अमंगल के मूल गए मित्र आनंदित औ हित कहैं नाते दार उदय के प्राप्त भए हैं औ बैरिन के उर मे नितही सूल है सो क्यों न होय भव भय के भंजनि हार राम लला हैं ॥ १२ ॥ रिपु गन गंजन राम लला जो हैं सो अनुज सखा सिसु संग लै के जब चौगान खेलन जैहैं जद्यपि जेहि डंडा से गेंदा खेला जात है ताको चौगान कहत हैं पर इस खेल का भी नाम चौगान है लंका मे खर भर औ सुर पुर मे नगारा बाजिबे को यह भाव कि बाल काल मे एतनी फुरती है तो आगे क्या जानै कैसी होय गी ॥ १३ ॥ जब श्री राम हाथीरथ घोड़ा सँवारि सिकार को चलैंगे तब दशकंधर के उर मे धकधकी होय गी कि अब इहां भी धनु धारन करि के जनि दौड़ै सो क्यों न होय अरि रूपी हाथी के सिंह राम लला हैं ॥ १४ ॥ सुमित्रा औ सखिन के गीत अनुकूल सुर मुनि सुनि के असीस देइ जय जय कहत हर्षत हैं औ फूल बर्षत हैं सो क्यों न सुखी होंहिं सुरन के सुख दायक रामलला हैं अनुकूल गीत को यह भाव कि जस चाहत रहे तस गीतो मे सुनत हैं ॥ १५ ॥ तुलसी जीवन रामलला जो हैं सो यह षड़कशला नि-

धान बाल चरित मय चंद्रमा है वा तुलसी के जीवन जे राम लला हैं तिन के षोड़शकला निधान बाल चरित्र मय जो यह चंद्रमा है ताको तुलसी अपने चित्त को चकोर कियो सो प्रेम रूपी जो अम्रत रस ताको पान करत हैं चंद्रमा के षोड़श कला अम्रतादि है तेहि के अनुसार रघुकुल मंडनादि षोड़श विशेषण किए चंद्रकला यथा अम्रतांमानदांतुष्टिं पुष्टिंप्रीतिंरतिंतथा। लज्जांश्रियंस्वधांरात्रिं ज्योत्स्नांहंसवतींततः॥ छायांचपूर्णींवामा ममांचंद्रकलाइमाः। स्वरीजाधानमींतास्त्र क्रमात्संपूजयेत्सुधीः॥ १॥ शारदा तिलकादि तंत्र मे शंख स्थापन प्रकरण मे प्रसिद्ध है रघुकुल मंडन राम लला को अम्रत कला कहिवे को यह भाव कि बंश बिना म्रतक सरीर सम जो रघुकुल भया रहा ताकोजिआय लिए दशरथ नंदन को मानदा कला कहिबे को यह भाव कि जो जगत के कारण सो पुत्र भए एहि ते अधिक कवन सन्मान देहिंगे॥ महिमाअवधिरामपितु माता। औबिधिहरिहरसुरपतिदिसिनाथा॥ बरनहिंसबदसरथगुन गाथा। मातु सुक्रत फल राम लला को तुष्टि कला कहिवे को यह भाव कि अपने सुक्रत को फल पाए तोष होत है सो सुक्रत फल रघुनाथ को पाय संतुष्ट भई॥ आनंदअवनिराजरवनीसब मागहुं कोष जुड़ानी परिजन रंजन को पुष्टि कला कहिवे को यह भाव को परिवार के जन को पोषण करि रंजित किए कछुक काल बीते सब भाई बड़े भए परिजन सुषदाई पुरजन सुरमणि रामलला को प्रीति कला कहिवे को यह भाव कि प्रीति तें चिंतामणि सम सब कों मनोबांछित फल देत हैं। प्राणवोंपुरनरनारिबहोरी। ममताजिनपरप्रभुहिनथोरी॥ सोभा सागर को रति अर्थात् रमणोद्दीपन कारिणी कला कहिवे को यह भाव कि बाल स्वरूपो मे सखी देषि कै ठगि गई॥ अवलोकिहौंशोचबिमोचनकोंठगिसीरहीजो नठगेधिगसे॥ सहजसोहावनरामललाको॥ लज्जा अर्थात् लज्जा

दायिनी कला कहिवे को यह भाव कि जेतनें सोहावने रहैं सब लजाय गए ॥ भुजनिभुजगसरोजनयननिबदनबिधुजित्यौलरनि ॥ औ ॥ लाजहिंतनशोभानिरषि कोटिकोटिशतकाम । भक्त कल्पतरु को श्री कला कहिवे को यह भाव कि भक्तन को सब प्रकार की श्री देत हैं ॥ रामसदासेवकरुचिराखी ॥ औ ॥ राखत भलेभावभक्तनको कछुकरीतिपारथहिजनाई ॥ नाम काम धेनु है जाको तेहि राम लला को स्वधा पितृगण तृप्तिजनि का कला कहिवे को यह भाव कि संतान के नाम की बड़ाई सुनि कै पितर लोग तृप्ति होत हैं ॥ रामरूपगुनशीलसुभाऊ । प्रमुदितहोहिं देषिसुनिराऊ ॥ जग मंगल राम लला को रात्रि कला अर्थात् बिश्राम दायिनी कहिवें को यह भाव कि रात्रिउ बिश्राम हेतु है औ एउ हैं ॥ सोसुषधामरामअसनामा । अखिललोकदायकबिश्रामा ॥ भुवन बिभूषन राम लला को ज्योत्स्ना कला कहिवे को यह भाव कि भुवन को बिभूषन ज्योत्स्नाकलौ है एऊ हैं ॥ सहजप्रकासरूपभगवाना । औ पुरुषप्रसिद्धप्रकाशनिधि । भवभयभंजनरामलला को हंस कहिए सूर्य सो रहैं जेहि मे सो हंसवती कला ताकोकहिवे को यह भाव कि सूर्य तम नाशक हैं औ एऊ अज्ञान तम नाशक हैं वा हंस जो सूर्य ताकी कला चंद्रमा मे रहत औ एऊ सूर्यवंशी हैं ॥ रामकसनतुम्हकहहुअस हंसवंशअवतंस । रिपुगनगंजनराम ललाको ॥ छाया कला कहिवे को यह भाव कि छायो ताप हरत औ एऊ रिपुगण के मारि भक्तन को ताप हरत ॥ शीतलसुषदछाहजेहिकरकीमेटतपापतापमाया । अरि करि के हरि राम लला को पूरणी कला कहिवे को यह भाव कि रावणादि सत्रुन को मारि जगत् के सुख ते परि पूर्ण किए । जबरघुनाथसमररिपुजीते । सुर नरमुनिसबकेभयबीते ॥ सुर सुष दायक राम लला को बामा कहैं सुंदरी कला कहिवे को यह भाव कि चंद्रमा की सुंदरी कला सुख

दायक एज देवतन के सुखदायक तुलसी को जीवन राम लला को अमा अर्थात परिमाणरहित कला कहिवे को यह भाव कि परिमाण रहित कलौ जीवन दाची औ एज जीवन दाता ॥ प्रानप्रानकेजीव के जिवसुषकेसुखराम। चंद्रमा की चौदह कला प्रगट है अमावस परिवा की दुइ कला गुप्त है तेहि तें गोसांई जी चौदह तुक से बाल लीला प्रगट राषे दूइ तुक मे गुप्त किए अर्थात पहिले औ अंत मे ॥ १६ ॥ २२ ॥

मू० । रागकान्हरा । पालनेरघुपतिहिझुलावै लैलैनामसप्रेमसरस
स्वरकौसल्याकलकीरतिगावै ॥ १ ॥ केकिकंठदुतिस्यामबरनव
पुबालबिभूषनविरचिबनाए अलकैंकुटिललतिलटकनभ्रूनी
ललनलिनदोउनयनसुहाए २ सिसुसुभायसोहतजबकरगहिब
दननिकटपदपल्लवल्याए मनहुंसुभगजुगभुजगजलजभरिलेत
सुधाससिसोंसचुपाए ॥ ३ ॥ उपरअनूपविलोकिखिलौनाकिल
कतपुनि२ पानिपसारत मनहुउभयअंभोजअरुनसोबिधुभय
बिनयकरतअतिआरत ॥ ४ ॥ तुलसिदासबहुबासबिवसअलिगुं
जतसोछबिनहिंजातबषानी मनहुंसकलस्रुतिऋचामधुपह्वै
बिसदसुजसबरनतबरबानी ॥ ५ ॥ २३ ॥

टी० । पालना मे रघुपति को झुलावति हैं कौशल्या जू प्रेम सहित मधुर स्वर से नाम लैलै के अर्थात बझा सैना तोता छगन मगन आदि कहि कहि के सुंदर कीर्ति गावति हैं ॥ १ ॥ मोर के कंठकी द्युति समान श्याम बरन सरीर है तामे बाल समय के बिभूषण विशेष रचि कै बनाये भए हैं टेढे अलक हैं औ भौंह पर सुंदर लटकन है औ नील कमल सम सुंदर दोऊ नयन हैं। अलकाश्चूर्णकुंतला इत्यमरः छूटे बारको अलक कहत हैं ॥ २ ॥ बाल सुभाव तें जब कर तें गहि कै मुष के निकट पल्लव इव अर्थात पल्लव सम कोमल औ लाल पद को ले आवत भए तब अस सोहत मनो सुंदर दुइ

सर्प सचुपाएक हैं आनंदित चंद्रमा से कमल मे भरि के सुधा लेत हैं इहां दोऊ हाथ सर्प है पद कमल है मुख चंद्रमा है छबि सुधा है ॥ ३ ॥ ऊपर उपमा रहित खेलौना देखि कै किलकारी मारत औ पुनि पुनि हाथ पसारत हैं मानो दुइ कमल चंद्रमा के भय से अति आर्त सूर्य से बिनय करत हैं इहां खेलौना सूर्य हैं लाल रंग से औ हाथ दोऊ कमल है औ पुनि पुनि पसारना आर्तता है ॥ ४ ॥ गोसाईं जी कहत हैं कि बक्र सुगंध ते बिवस जो भ्रमर गुंजत हैं सो छबि बखानी नहीं जाति है मानो सकल बेदन की ऋचा भ्रमर ह्वै के श्रेष्ट बानी तें उज्वल सुयश रघुनाथ को बरनत हैं ॥ ४ ॥ २३ ॥

मू० । झूलतरामपालनेसोहैं भूरिभागजननीजनजोहैं। अधरपानि पदलोहितलोने सरसिंगारभवसारससोने ॥ ३ ॥ किलकत निरषिबिलोलखेलौना मनहुंबिनोदलरतछबिछौना ॥ ४ ॥ रंजितअंजनकंजबिलोचन भ्राजतभालतिलकगोरोचन ॥ ५॥ लसैमसिबिंदुबदनबिधुनीको चितवतचितचकोरतुलसीको॥ ॥ ६ ॥ २४ ॥

टी० । जो हैं देषत हैं ॥ १ ॥ तन कोमल कै सुंदर श्यामता से बाल समय के बिभूषणन की परिछाहीं झलकति है ॥ २ ॥ ओठ हाथ पद सुंदर लाल हैं मानो श्टंगार रूप तडाग मे लाल रंग के कमलैं उत्पन्न भए हैं इहां लुप्तोत्प्रेक्षा है इहां सर श्टंगार से श्याम सरीर लेना काहे ते कि श्टंगार रस भी स्याम है ॥ ३ ॥ खेलौना देषि चंचल ह्वै किलकत हैं मानो खेलवार मे छबि के बालक लरत हैं इहां हाथ पर हाथ पांव पर पांव का फेकना सो लरना है कमल वलेच जो सो अंजन से रंजित हैं औ भाल मे गोरोचन कै तिलक शोभत है ॥ ५ ॥ सुंदर बिधु बदन मे डिठौना लसत है तेहि मुख चंद्र को तुलसी को चित रूप चकोर चितवत है ॥ ६ ॥ २४ ॥

मू० । रागकल्यान । राजतसिसुरूपरामसकलगुननिकायधामकौतु
कीकृपालब्रह्मजानुपानिचारी नीलकंजजलदपुंजमरकतम
निसदृशस्यामकामकोटिसोभाअंगअंगऊपरवारी ॥ १ ॥ हा
टकमनिरत्नखचितरचितइन्द्रमंदिराभइंदिरानिवाससदनवि
धिरच्यौसँवारी । बिहरतन्टपअजिरअनुजसहितबालकेलि
कुसलनीलजलजलोचनहरिमोचनभयभारी ॥ २ ॥ अ-
रुनचरनअंकुसध्वजकंजकुलिसचिन्हरुचिर भ्राजतअतिनूपु
रवरमधुरमुखरकारी । किंकिनीबिचिचजालकंबुकंठललित-
माल उरबिसालकेहरिनषकंकनकरधारी ॥ ३ ॥ चारुचिबु-
कनासिकाकपोलभालतिलकभ्रुकुटि स्रवनअधरसुंदरद्विजक्ष
बिअनूपन्यारी । मनहुअरुनकंजकोसमंजुलजगपांति प्रसव
कुंदकलीजुगुलजुगलपरमशुभ्रवारी ॥ ४ ॥ चिक्कनचिकुराव
लीमनोषडंघ्रिमंडलीबनींबिशेषिगुंजतजनुबालककिलकारी
एकटकप्रतिबिंबनिरखिपुलकतहरिहरखिहरखिलैउछंगजन
नीरसभंगमनबिचारी ॥ ५ ॥ जाकहंसनकादिसंभुनारदादि
शुकमुनिंद्रकरतबिबिधिजोगकामक्रोधलोभजारी दसरथगृ
हसोइउदारभंजनसंसारभारलीलाअवतारतुलसिदासचास
हारी ॥ ६ ॥ २५ ॥

टी० । सकल गुण समूह के धाम कृपाल ब्रह्म कौतुकी शिशुरूप राम बकंइँयां ह्वै शोभत हैं रूप पद से यह जनाए की रूप मात्र से शिशु हैं सकल गुण निधान से वात्सल्यादि सकल गुण संपन्न जनाए अर्थात्केवल निर्गुणै नहीं कौतुकी ते स्वतंत्र जनाए कृपाल ते यह जनाए कि हैं तो ब्रह्म पै लोगन के सुख देवे हेतु घुटुरुअन ते चलत हैं नील कंज जलद पुंज मरकत मणि सदृश श्याम इहां तीन उपमा दिए ताते मालोपमा अलंकार है वा कमल वत्कोमल औ मेघवत् गंभीर मरकतवत् द्युति औ श्यामता तीनिउ की अपर

सुगम ॥ १ ॥ जेहि नृप को सदन सुवर्ण मणि रत्न से जडित औ रचित इंद्र मंदिर के सदृश लक्ष्मी को वा सस्थान बिधाता ने संवारि कै रच्यौ तेंहि नृप के आंगन मे अनुज सहित हरि बिहरत हैं सो कैसे हैं बालकेलि मे कुशल हैं औ नील कमल सम लोचन हैं जिन को औ भारी भय के नाश निहारे हैं मणि रत्न का भेद मणि नागादि तें होत है औ रत्न पर्वत ते वह रत्न शब्द श्रेष्ठ वाचक है रत्नं स्वजाति श्रेष्ठेपि इत्यमरः अर्थात् श्रेष्ठ मणि ॥ २ ॥ लाल चरण है तामे अंकुश ध्वज कमल वज्र के सुंदर चिन्ह है औ मधुर शब्द करनि हारा श्रेष्ठ नूपुर अतिहीं शोभत हैं औ कटि मे बिचित्र किंकिनिन को जाल कहैं समूह औ शंखवत्कंठवारेखाचयाचिता ग्रीवाकंबुग्रीवेतिकथ्यते । औ बिशाल उर है तामे सुंदर माला औ बघनहां है हाथ मे कंकण धारण किए हैं ॥ ३ ॥ ठोढी नासिका कपोल भाल तिलक भौंह कान औ ओष्ठ सुंदर हैं औ सुंदर उपमा रहित दांतन की छबि न्यारी है मानो लाल कमल के कोश मे सुंदर दुइ पांति की प्रसवक हैं उत्पत्ति है तिन्ह मे परम शुभ्र वारी कहैं छोटी कुंदकली दुइ दुइ हैं इहां लाल कमल कै कोश मुख है तामे उपर नोचे के दंतस्थान अर्थात् डाढ़ तें युग पांति हैं तामे छोटी छोटी दुइ दुइ जो दंतुली तेई कुंदकली हैं ॥ ४ ॥ चिक्कन जे बालन की पांति हैं ते मानो विशेष बनी भई भंवरन की मंडली है औं जो बालक की किलकारी है सोई मानो तिन का शब्द है एक टक ते प्रतिबिंब को देषि हरषि हरषि कै पुलकत जो हरि तिन को माता रस भंग जिय मे बिचारि कै गोद मे ले लिए भाव अबहीं तो हरषत हैं असन होइ की डरि उठैं वा हरि तो हरषि हरखि पुलकत हैं पर माता ने डर तें पुलकना बिचारा ताते उठाय लिए ॥ ५ ॥ लीला अवतार लीला के हेतु अवतार है जेहि को ॥ ६ ॥ ॥ २५ ॥

मू० । रागकान्हरा । आंगनफिरतघुटुरुवनिधाए नीलजलदतनुस्याम रामसिसुजननिनिरषिमुषनिकटबुलाए ॥ १ ॥ बंधुकसुमन अरुनपदपंकजअंकसप्रमुषचिन्हबनिआए । नूपरजनुमुनिबर कलहंसनिरचेनीडदैबांहबसाए ॥ २ ॥ कटिमेषलबरहारग्रीवदररुचिरबाहुभूषनपहिराए । उरश्रीवत्समनोहरहरिनषहेममध्यमनिगनबहुलाए ॥ ३ ॥ सुभगचिबुकद्विजअधरनासिकाश्रवनकपोलमोहिअतिभाए । भ्रूसुंदरकरुनारसपूरनलोचनमनहुंजुगलजलजाए ॥ ४ ॥ भालविसाललिलितलटकनबरबालदसाकेचिकुरसोहाए । मनोदोउगुरुसनिकुजआगेकरिससिहिमिलनतमकेगनआए ॥ ५ ॥ उपमाएकअभूतभईतबजबजननीपटपीतओढाए । नीलजलदपरउड़गननिरखततजिसुभावमानोतड़ितछपाए ॥ ६ ॥ अंगअंगपरमारनिकरमिलिछबिसमूहलैलैजनुछाए । तुलसिदासरघुनाथरूपगुनतौकहौजौबिधिहोहिबनाए ॥ ७ ॥ २६ ॥

टी० । घुटुरुवनि बकैयां ॥ १ ॥ दुपहरि आके फूल समलाल चरण है तामे कमल अंकुश आदि चिन्ह बने हैं औ नूपुर है मानौ रघुबर ने नूपुर रूप खोता रचे तेहि मे मुनि बर रूप कल हंसनि कों बांहदैबसाए भाव इहां कोई भय नहीं होयगो इहां बसना ध्यान करना है अंकुशादि चिन्ह यथा महारामायणे । रेखोर्द्धवित्तं तेमध्येदक्षिणस्यांघ्रिपंकजे ॥ पादादौस्वस्तिकंज्ञेयमष्टकोणस्तथैवच ॥ १ ॥ श्रियंहलंचमुशलंसर्पोबाणांबरेतथा पद्ममष्टदलंचैवस्यंदनंवज्रमुच्यते ॥ २ ॥ यवोंगुष्ठे तथाध्ये तारेखोर्द्धावामतस्थिताः । रेखोर्द्धादक्षिणेचैवस्वस्तिकाथोजपादपः ॥ ३ ॥ अंकुशंचध्वजंचैवमुकुटंचक्रमेवच । सिंहासनंक्षत्युदंडंचामरंछत्रमुद्यतं ॥ ४ ॥ न्रचिन्हं यवमालेमेचतुर्विंशतिलक्षणाः क्रमेणैवप्रवर्तन्तेश्रीरामस्यांघ्रिदक्षिणे ॥ ५ ॥ ऊर्द्धरेखाययासव्येपसव्येसरयूतयागोष्पदंपादमूलेचतदधःसागरांवरा ॥ ६ ॥ कुंभंचैवपताकांचजम्ब फ

लमथोद्यतं । अर्द्धचंद्रोदरश्चैवषटकोणंचत्रिकोणकं ॥ ७ ॥ गदातथा
चजीवात्माबिंदुरंगुष्ठमध्यागः । सरयूवादक्षिणेकोणे लक्षणंज्ञेयमुत्तमं
॥ ८ ॥ गोःपदाधस्तथाशक्तिःसुधाकुंडमथोद्यतं । त्रिवलीकामपचंचपू
र्णःसिंधुसुतस्तथा ॥ ९ ॥ वीणावंसीधनुस्तुणोमरालश्चंद्रिकेतिच। चतुर्विं
शतिरामस्यचरणेवामकेस्थिता ॥ चतुर्विंशतिरामस्येतिछान्दसोदीर्वोभा
वःस्थितेतिस्थितानीत्यर्थः । सुपांसुलगितिसुपोड़ादेशःपरमेव्योमन्सर्वो
भूतानीत्यादिवत् ॥ १० ॥ तानिसर्वाणिरामस्यपादेतिष्ठंतिवामके । या
निचिन्हानिजानक्यादक्षिणेचरणेस्थिता ॥ ११ ॥ यानिचिन्हानिरामस्य
चरणेदक्षिणेस्थिता । तानिसर्वाणिजानक्याःपादेतिष्ठंतिवामके ॥ १२ ॥
ऊर्द्धरेखारुणाज्ञेयास्वस्तिकंपीतमुच्यते । सितारुणंचाष्टकोणंश्रीश्चबा
लार्कसन्निभा ॥ १३ ॥ हलंचमुशलंचैवश्वेतधूम्रमितिस्मृतं । सर्पोसित
स्तथावाणःश्वेतपीतारुणोहरित् ॥ १४ ॥ नभोवदंबरंज्ञेयमरुणंपंकजं
स्मृतम् । रथंविचित्रवर्णंचयुक्तं वेदहयैःसितैः ॥ १५ ॥ वज्रंतडिन्निभं
ज्ञेयंश्वेतरक्तंतथायवं । कल्पवृक्षंहरिद्वर्णंअंकुशंश्याममुच्यते ॥ १६ ॥
लोहिताचध्वजातस्यांचित्रवर्णाभिधीयते। सुवर्णमुकुटंचक्रंरत्नसिंहास
नाभकं ॥ १७ ॥ कांस्यवधमदंडंस्याचामरंधवलंमहत् । छत्रंचिन्हंशि
वंशुक्लंनरचिन्हंसितलोहितम् ॥ १८ ॥ बाणवज्रेचमालाचवामेचसरयूं
सिता । गोष्पदश्चसितारक्तोपीतरक्तासितामाही ॥ १९ ॥ स्वर्णवर्णोसितं
किंचित्कुंभमेवंप्रवर्तते चित्रवर्णापताकाचश्यामंजंबूफलंतथा ॥ २० ॥ धव
लश्चार्द्धचंद्रोतिरक्तईषत्सितोदरः ।षट्कोणंचमहास्वच्छं त्रिकोणोरुण
एवच ॥ २१ ॥ श्यामलातुगदाज्ञेयाजोवात्मादीप्तिरूपक. । बिंदुःपीतंतु
थाशक्तीरक्तस्यामसितापिच ॥ २२ ॥ सितरक्तं सुधाकुंडंत्रिवलीचत्रि
णिवत् । वर्ततेरौप्यवन्मीनोधवलःपूर्णसिंधुजः ॥ २३ ॥ पीतरक्तासित
वीणावेणुश्चित्रविचित्रकः । हरित्पीतोरुणश्चैवत्रिविधंधनुरुच्यते ॥ २४ ॥
वेणुवद्वर्ततेतूणोहंसईषत्सितारुणः सितपीतारुणाज्योत्स्नासर्वतोरंग
मद्भुतं ॥ २५ ॥ २ ॥ कटि मे किंकिनी कंबु कंठ मे सुंदर हार औ

सुंदर बाज्ज मे भूषण पहिराए हैं उर मे मनोहर श्री वत्स औ बज्ज मणि गण युक्त सुबर्न के मध्य मे जो हरि नख सो उर मे है पीतं प्रदक्षिणावर्त विचित्रंरोमराजिकं । विष्णोर्वक्षसियद्दीप्तं श्रीवत्संतत्प्र कीर्तितम् ॥ ३ ॥ करुणा रस पूर्न जो लोचन है सो मानो दुइ कमल है ॥ ४ ॥ सुंदर विशाल भाल है तामे संदर लटकन औ बाल दशा के सुंदर बार हैं मानो दोऊ गुरू अर्थात् बृहस्पति शुक्र औ शनैश्चर मंगल आगे करि कै चंद्रमा के मिलिवे को तम के समूह आए हैं इहां पोखराज हीरा नीलम मानिक के जो चारो लटकन है सोई बृहस्पति शुक्र शनि मंगल हैं मुख चंद्र है विख रे बार जे मुख पर परे हैं तेत मगन हैं आगे करि आइवे को यह भाव कि अंधकार से चंद्रमासे बैर है ताते चंद्रमा के मान्य वर्ग कों आगे करि लिए अर्थात् बृहस्पति गुरू हैं शुक्र उपकारी हैं जब गुरू पत्नी से चंद्रमा ने कुचाल किया रहा तब शुक्र सहाय किए रहे भारत मे ख्यात है औ शनि ग्रह राज जे सूर्य तिन के पुत्र हैं ताते एऊ मान्य हैं औ मंगल मित्र हैं ॥ ५ ॥ जब जननी पट पीत ओढ़ाए तब एक अद्भुत उपमा भई अब सो उपमा कहत हैं कि मानो श्याम मेघ पर तारा गण को देखत मात्र चंचलता सुभाव छोड़ि कै बिजुरी ने छिपाय लिए अर्थात् तारा गण को भाव तारा गण की अयोग्यता करना देषिवे ते बिजुरी ने भी अयोग्यता किआ ॥ ६ ॥ मानो अनेक काम मिलि कै छबि समूह को लैलै कै अंग अंग पर छावत भए गोसांई जी कहत हैं को रूप गुण रघुनाथ को तौ कहौं जौ ब्रह्मा के बनाए हौंहिं वा जौ रघुनाथ ब्रह्मा के बनाए हौंहिँ तौ रूप गुण कहौं ॥ ७ ॥ २६ ॥

मू० । रागकेदारा । रघुबरबालछबिकहौंबरनि सकलसुषकीसींवको टिमनोजशोभाहरनि ॥ १ ॥ बसीमानऊचरनकमलनिअरु नतातजितरनि रुचिरनूपुरकिंकिनीमनहरनिरुनझुनकरनि

॥ २ ॥ मंजुमेचकमृदुलतनुअनुहरतिभूषनभरनि जनुसुभगसिंगारसिसुतरुफल्यौहै अद्भुतफरनि ॥ ३ ॥ भुजनिभुजगसरोजनयननिबदनबिधुजित्यौलरनिरहैकुहरनिसलिलनभउपमाअपरदुरिडरनि ॥ ४ ॥ लसतकरप्रतिबिंबमनिआंगनघुटुरुअनिचरनि जलजसंपुटसुछबिभरिभरिधरतिजनुउरधरनि ॥ ५ ॥ पुण्यफलअनुभवनिसुतहि बिलोकिदसरथघरनि बसततुलसीहृदयप्रभुकिलकनिललितलरषरनि ॥ ६ ॥ २७ ॥

टी० । रघुबर की बाल छबि बर्नन करि कहत हौं सो छबि कैसी है कि सब सुख की मर्यादा है औ कोटि काम की शोभा हरनि हारी है ॥ १ ॥ मानो अरुनता सूर्य को छोड़ि कै चरण कमलन मे आय बसी औ सुंदर नूपुर औ किंकिनी को रुन झुन करनि मन हरति है ॥ २ ॥ सुंदर श्याम कोमल तनु के योग्य भूषणन की भरनि है अर्थात् भराव है मानो सुंदर श्टंगार रूप बाल तरु अद्भुत फरनि से फल्यौ है इहां श्टंगार रूप छोटा तरु रघुनाथ हैं औ भूषण जे सरीर मे भरे हैं ते फल हैं अनुहरति कहिवे को यह भाव कि श्याम तन मे जो रंग शोभा पावै श्टंगार तरु कहिवे को यह भाव कि श्टंगार का रंग भी श्याम है अद्भुत कहिवे को यह भाव कि छोटा तरु फरत नाहीं कदापि फरत भी है तौ अनेक रंग का फल नहीं ॥ ३ ॥ भुजो ने सर्प को औ नैनो ने कमल को औ मुख ने चंद्रमा को समर मे जीत्यौ तें सब बिल जल औ आकाश मे रहे अर्थात् बिल मे सर्प औ जल मे कमल आकाश मे चंद्रमा रहे औ अपर जेती उपमा ते डरनि से छपि रहीं भाव हमारी भी न दुर्दशा होय ॥ ४ ॥ घुटुरुअनि चलनि से मनि आंगन मे हाथ को प्रतिबिंब सोहत है सो प्रतिबिंब नही है कमल को संपुट है तेहि मे सुंदर छबि भरि भरि के मानो धरनी अपने उर मे धरति है इहां बाल छबि जो परिछांहीं मेटात आवत है सोई उर मेधरना है ॥ ५ ॥ औ

कौशल्या जू पुत्र को देखि कै अपने पुन्य फल को अनुभव करति हैं औ तेहि समय की किलकनि औ लरखरनि प्रभु की तुलसी के हृदय मे बसति है ॥ ६ ॥ २७ ॥

मू०। नेकुबिलोकुधौरघुबरनि चारिफलत्रिपुरारितोकोदियेकरन्ह पबरनि ॥ १ ॥ बालभूषनबसनतनुसुंदररुचिररजभरनि पर स्परखेलनिअजिरटिचलनिगिरिगिरिपरनि ॥ २ ॥ झुकनि झांकनिछांहसोंकिलकनिनटनि हठिलरनि तोतरीबोलनिबि लोकनिमोहनीमनहरनि ॥ ३ ॥ सखिबचनसुनिकौसिला लखिसुढरपासेढरनि लेतभरिभरिअंकसैततिपैतजनुदुहुकर नि ॥ ४ ॥ चरितनिरखतबिबुधतुलसीओटदेजलधरनि चह तसुरसुरपतिभयोसुरपतिभयोचहतरनि ॥ ५ ॥ २८ ॥

टी०। कौशल्या जू को और काम मे लगी देखि सखी कहति है हे नृप घरनि चारो भैअन को नेकु देषु तौ मानो त्रिपुरारि ने चारो फल तोको हाथ पर दिए हैं इहां लुप्तोत्प्रेक्षा है ॥ १ ॥ अ-जिर आंगन ॥ २ ॥ नटनि नाचनि ॥ ३ ॥ सखी के बचन सुनि कै औ सुंदर पासे की ढरनि लखि के अर्थात् सुकृत को फल जानि कै कोशल्या जू चारो भैअन को गोदी में उठाय उठाय लेत हैं मानो उठाय नहीं लेत हैं पैत कहैं दावता को दोऊ हाथ से बटोरत हैं भाव जीत कै जब पासा देषत है तब खेलारी जो दांव पर द्रव्य धरा रहत है ताको दूनो हाथ से बटोरि लेत है ॥ ४ ॥ देवता इंद्र भयो चा-हत है औ इन्द्र सूर्य भयो चाहत हैं भाव देवता हजार नेत्र तें देखिवे हेतु इन्द्र भयो चाहत है औ इन्द्र बिस्व भरि के नेत्र तें दे-षिवे हेतु सूर्य भयो चाहत हैं अर्थात् सूर्य सब के नेत्र मे रहत हैं ॥ ५ ॥ २८ ॥

मू०। रागजैतश्री। भूमितलभूपकेंबड़ेभाग राम लषनरिपुदमनभर तसिसुनिरषतअतिअनुराग ॥ १ ॥ बालबिभूषनलसतपाइन्ह

दुमंजुलअंगविभाग दसरथसुकृतमनोहरबिरवनिरूपकरह जनुलाग ॥ २ ॥ राजमरालबिराजतबिहरतजेहरिहृदयत डाग तेन्हपअजिरजानुकरधावतधरनचटकचलकाग ॥ ३ ॥ सिद्धसिहातसराहतमुनिगनकहैसुरकिन्नरनाग ह्वैबरुबिहंग बिलोकियेबालकबसिपुरउपबनबाग । परिजनसहितरायरानिन्हकियोमज्जनप्रेमप्रयाग तुलसीफलचाय्यौताकेमनिमरकतपंकजराग ॥ २९ ॥

टी०। सुंदर कोमल अंगन के बिभाग पाइ के बाल समय को बिभूषण शोभत है मानों श्री दशरथ महाराज के सुकृत रूपी मनोहर बिरवनि मे रूप रूपी करहा लगा बिरवा बाल तरु को कहत हैं ॥ २ ॥ जे राज मराल हर के हृदय रूपी तडाग मे बिहरत बिराजत ते दशरथ महाराज के आंगन मे चंचल काग के धरन को बकैयां ते शीघ्र धावत हैं इहां चंचल काग भुशुंडी जी हैं किलकत मोहि धरन जब धावहिं चलों भागि तब पूप देखावहिं बा चटक गंवरा औ चंचल काग के धरन को धावत हैं ॥ ३ ॥ सिद्धि सिहात हैं भाव अस भा गहमारो न भयो औ मुनि गन सराहत है भाव कहत हैं कि महाराज सब तें धन्य हैं औ सुर किन्नर नाग कहत हैं बरु पुर के उपबन औ बाग मे बिहंग ह्वै बसि बालकनि को बिलोकिए पुर के समीप सो उपबन औ दूरि सो बाग ॥ ४ ॥ परिवार सहित राजा औ रानिन्ह ने प्रेम रूपी प्रयाग मे मज्जन कियो तेहि मज्जन के फल चारिउ बालक हैं मरकत मणि औ पद्म राग मणि के सम अर्थात् नील मणि सम श्री राम जू औ भरत जू पंकज राग सम लक्ष्मण जू औ शत्रुघ्न जू हैं ॥ ५ ॥ २९ ॥

मू०। रागअसावरी। छंगनमगनआंगनषेलतचारुचाय्यौभाई सानुजभरतलाललखनरामलोनेलोनेलरिकालखिमुदितमातुसमुदाई॥ १ ॥बालबसनभूषनधरेनषसिखछबिछाई नीलपीत

मननिजसरसिजमंजुलमालनिमानोइन्हदेहनितेदुतिपाई ॥
॥२॥ठुमुकिठुमुकिपगधरनिनटनिलरषरनिसोहाईभजनिमि
लनिरूठनिटूठनिकिलकनिअवलोकनिबोलनिबरनिनजाई ॥
॥ ३ ॥ जननिसकलचहुंवोरआलवालमनिअँगनाई दसरथ
सुकृतबिबुधबिरवाबिलसतबिलोकिजनुबिधिबरवारिबनाई ॥
॥ ४ ॥ हरबिरंचिहरिहेरिरामप्रेमपरवसताईसुखसमाजरघु
राजकेबरनतबिसुद्धमनसुरनिसुमनझरिलाई ॥ ५ ॥ सुमिर
तश्रीरघुबरनिकीलीलालरिकाई तुलसिदासअनुरागअवधआ
नंदअनुभवततवकोसोअजहुअघाई ॥ ६ ॥ ३० ॥

टी० । सुगम ॥ १ ॥ काम को नील पीत कमल की मालौं ने मानहुंइन देहन ते द्युति पाई है ॥ २ ॥ टूठनि प्रसन्न होनि ॥ ३ ॥ मणि का आंगन नहीं है थाला है चारो भैया नहीं है दशरथ सुकृत के बाल कल्पवृक्ष है ताको बिलसत देखि कै ब्रह्मा ने माता रूपी श्रेष्टवारि चारो ओर बनाई हैं बारि रूंधानि ॥ ४ ॥ शिव ब्रह्मा विष्णु राम की प्रेम तें परवसताई देखि कै दशरथ महाराज के सुख समाज को बिशुद्ध मन तें वर्नत हैं औ देवतो ने कि फूलनि कि झरि लाई है ॥ ५ ॥ श्री मान् चारो भैयन की लरिकाई की लीला सुमिरत मात्र तुलसीदास अनुराग रूप अवध मे तब के ऐसो आनंद अजहु अघाय् कै अनुभव करत हैं ॥ ६ ॥ ३० ॥

मू० । रागबिलावल । आंगनषेलतआनदकंदा रघुकुलकुमुदसुषद
चारुचंदा ॥ १ ॥ सानुजभरतलषनसंगसोहै सिसुभूषनभूषि
तमनमोहै ॥ २ ॥ तनुदुतिमोरचंदजिमिझलकै मनहुंउम
गिअँगअँगछबिछलकै ॥ ३ ॥ कटिकिंकिनोपायपैजनबाजै पं
कजपानिपहुचियाराजै ॥ ४ ॥ कठुलाकंठबघनहानीकेनयनस
रोजमयनसरसीके ॥ ५ ॥ लटकनलसतललाटलटूरी दमक
तद्वैद्वैदंतुरिआरूरी ॥ ६ ॥ मुनिमनहरतमंजुमसिबुंदा ललि

तवदनवलिबालमुकुंदा ॥ ७ ॥ कुलहीचित्रविचित्रझगूली निरषतमातुमुदितप्रतिफूली ॥ ८ ॥ गहिमनिषंभडिंभडगि डोलत कलबलवचनतोतरेबोलत ॥ ९ ॥ किलकतझुकिझांकतप्रतिबिंबनि देतपरमसुखपितुअरुअंबनि ॥ १० ॥ सुमिरतसुषमाहियहुलसीहै गावतप्रेममगनतुलसीहै ॥ ११ ॥ ३१॥

टी० । १ । २ । ३ । पंकजपाणिकरकमल ॥ ४ ॥ मानोनेत्रकाम के तड़ाग के कमल है वा काम रूप तड़ाग के॥ ५॥ रूरी भली । ६ । । ७ । कुलही टोपी औ झगुली अंगरखी मातु बलिहारी जात संते हर्षहिं बलि जो पूर्व पद मे है ताको अन्वय इहां करना॥ ८॥ डिंभ बालक ॥ ९ ॥ १० ॥ सुषमा परमा शोभा ॥ ११ ॥ ३१ ॥

मू० । रागकान्हरा । ललितसुतहिलालतिसचुपायेकौसल्याकलकनकअजिरमहंसिखवतचलनअंगुरिआलाये॥ १॥ कटिकिंकिनीपैजनिआपायेनवाजतरुनझुनमधुररिंगाए पहुंचीकरनिकंठकठुलाबन्योकेहरिनखमनिजरितजराये॥ २ ॥ पीतपुनीतविचित्रझंगुलियासोहतस्यामसरीरसोहाये दंतियाद्वैद्वैमनोहरमुखछविअरुनअधरचितलेतचुराये ॥ ३ ॥ चिवुककपोलनासिकासुंदरभालतिलकमसिविंदुवनाये राजतनयनमंजुअंजनयुतखंजनकंजमीनमदुनाये ॥ ४ ॥ लटकनचारुभ्रकुटिआंटेढ़ीमेढ़ीसुभगसुदेससुभाये किलकिकिलकिनाचतचुटकीसुनिडरपतिजननिपामिछुटकाये ॥ ५ ॥ गिरिघूटुरुनिटेंकिउठिअनुजनितोतरिबोलतपूपदेखाये बालकेलिअवलोकिमातुसबमुदितमगनआनदअनमाये ॥ ६ ॥ देषतनभघनवोटचरितमुनिजोगसमाधिबिरतिबिसराये तुलसिदासजेरसिकनयेहिरसतेजनजड़जीवतजगजाये ॥ ७ ॥ ३२ ॥

टी० । लाल तिलक हैं दुलारति सचुपाए आनंद पाए कल सुंदर ॥ १ ॥ मधुर रिंगाए धीरे धीरे चलाए औ इहां जो जड़ाए शब्द

है ताको रूढि लक्षणा करि पहिराये अर्थ करना ॥ २ ॥ ३ ॥ खंजन कमल मीनो के मद कों नीचे किए अंजन युत सुंदर नयन शोभत हैं ॥ ४ ॥ मेठी आदि को अर्थ पहिले लिखि आए पानि छुटकाए हाथ छोड़ाए मे जननी डरपति है वा आप श्री राम डरपत है ॥ ५ ॥ पूप देखाए माता के मानपूआ देखाए से तोतर बोलत अर्थात् तोतराय कै मागत बालकेलि देखि कै माता सब हर्षित हैं औ अनमा एक हैं जो न अमाय अर्थात् अपार आनंद तेहि मे मगन हैं ॥ ६ ॥ बिरति बैराग्य जाए हृथा ॥ ७ ॥ ३२ ॥

मू० । रागललित । छोटीछोटीगोड़िआअंगुरिआंछोटीछबीलीन खजोतिमोतीमानोकमलदलनिपरललितआंगनखेलैठुमुकि ठुमुकिचलैझुझुनझुझुनपायपैंजनम्टदुमुखर॥ १ ॥ किंकिनीक लितकटिहाटकरतनजटिमंजुकरकंजनिपहुंचिआरुचिरतर पिअरीझीनीझंगुलीसांवरेसरीरखुलीबालकदामिनिओढ़ी मानोबारेबारिधर॥ २॥ उरबघनहाकंठकठुलाझंगूलेकेसमे ढीलटकनमसिबिंदुमुनिमनहर अंजनरंजितनैनचितचोरैचि तवनिमुखशोभापरवारोंअमितअसमसर॥ ३ ॥ चुटकीबजाव तिनचावतिकौसल्यामाताबालकेलिगावतिमल्हावतप्रेमसुभर किलकिकिलकिहंसैद्वैद्वैदतुरिआंलसैतुलसीकेमनबसैतोतरेब बचनबर ॥ ४ ॥ ३३ ॥

टी० । म्टदु मुखर कोमल शब्द से ॥ १ ॥ कटि मे किंकिनी शोभित है औ सोना रत्न से जड़ी अति शय सुंदर पहुंचियां सुंदर कर कमलनि मे हैं औ बालक के सांवरे सरीर मे खुलै बाली पीत रंग की झीनी झंगुली है मानो बालक नहीं है छोटे मेघ हैं झिगुली नहीं हैं दामिनि है ताको ओढ़ि लई है ॥ २ ॥ झंडुले केश बिखरे बार अस मसर कहैं पंचबाण अर्थात् काम ॥ ३ ॥ प्रेम सुभर प्रेम मे सुंदर भरि ॥ ४ ॥

मू० । सादरसुमुखिबिलोकिरामसिसुरूपअनूपभूपलियेकनिआ सुंदरस्यामसरोजबरनतनसबअंगसुभगसकलसुषदनिआ ॥ १ ॥ अरुनचरननखजोतिजगमगति रुनझुनकरतिपांयपैंजनिआं कनकरतनमनिजटितरटतिकटिकिंकिनिकलितपीतपटतनियां ॥ २ ॥ पहुंचीकरनिपदिकहरिनखउरकठुलाकंठमंजुगजमनिआं रुचिरचिबुकरदअधरमनोहरललितनासिकालसतिनथुनिआ ॥ ३ ॥ बिकटभ्रुकुटिसुखमानिधिआननकलकपोलकाननगफनिआ भालतिलकमसिबिंदुबिराजतसोहतसीसलालचौतनिया ॥ ४ ॥ मनमोहनीतोतरीबोलनिमुनिमनहरनिहसनिकिलकनिआ बालसुभायबिलोलबिलोचनचोरतिचितहिचारुचितवनिआं ॥ ५ ॥ सुनिकुलबधूझरोषनिझांकतिरामचंद्रछबिचंद्रबदनिआं तुलसिदासप्रभुदेषिमगनभईप्रेमबिवसकछुसुधिनअपनियां ॥ ६ ॥ ३४ ॥

टी० । हे सुमुखि रूप है अनूप जेहि को तेहि राम शिशु को भूप गोंद मे लिए हैं तैं देखु सखी को उक्ति है ॥ १ ॥ पीत पट तनीयां करि के कलित तक हैं युक्त जो कटि तेहि मे रतन मणिन से जड़ित जो कनक मयी किंकिनी सो रटति है पीत पट तनियां कहैं पीत रंग के बस्त्र की कछनी मारवाड़ मे लगोटी को तनियां कहत हैं पर इहां राज कुमार हैं ताते कछनी जानना ॥ २ ॥ पदिक धुक धुकी गज मनियां गज मुक्ता रद दांत ॥ ३ ॥ बिकट टेढ़ कल सुंदर नग फनियां कान को भूषण प्रसिद्ध है जाको काशी आदि देश मे दुबंच्चा भी कहत हैं चौतनिया टोपी ॥ ४ ॥ बिलोल चंचल ॥ ५ ॥ यह सखी को बचन सुनि चंद्रबदनी कुल बधू झरोखनि तें झांकति हैं यह कथा सत्त्योपाख्यान मे स्पष्ट है ॥ ६ ॥ ३४ ॥

मू० । रागबिलावल । सोहतसहजसोहायेनयन । खंजनमीनकमलसकुचततबजबउपमाचाहतकबिदैन ॥ १ ॥ सुंदरसबअंग

निमिन्नुभूषनराजतजनुसोभाआयेलैन बड़ोलाभलालचीलो भवसरहिगएलषिसुषमावज्ञमैन ॥२॥ भोरभूपलिएगोदमोदभरेनिरषतदनसुनतकलबैन बालकरूपअनूपरामछबिनिवसतितुलसिदासउरऐन ॥ ३ ॥

टी० । सहज सोहाए अर्थात् अंजनादि बिना ॥ १ ॥ सुंदर सब अंगन मे बाल भूषण शोभत हैं मानो भूषण नहीं है बज्ज काम है ते शोभा लेवे को आवत भए पर सुषमा रूप बड़ो लाभ लखि लालची काम लोभ बस रहि गए ॥ २ ॥ निवसति उर ऐन हृदय रूपी गृह मे बसति ॥ ३ ॥ ३५ ॥

मू० । रागविभास । भोरभयोजागज्जरघुनंदन गतव्यलीकभगतनिउरचंदन । ससिकरहीनछीनदुतितारे तमचरमुखरसुनज्जमेरेप्यारे ॥ १ ॥ बिकसतकंजकुमुदबिलषाने लैपरागरसमधुपउड़ाने। अनुजसखासबबोलनिआए बंदिन्हअतिपुनीतगुनगाए ॥ २ ॥ मनभावतोकलेऊकीजै तुलसिदासकहँजूठनदीजै ॥ ३ ॥ ३६ ॥

टी० । माता की उक्ति है हे रघुनंदन भोर भयो जागज्ज तुम कैसे हौ कि व्यलीक कहैं कपट तेहि करि रहित जो भक्त तिन के उर के चंदनहौ अर्थात् सीतल करनिहारे ॥ १ ॥ चंद्रमा किरन रहित भए औ तारन की द्युति छीन भई औ मुरुगा बोलि रहे हैं तेहि शब्द कों सुनज्ज ॥ २ ॥ कमल फूले औ कोई संपुटित भई औ कमलन की धूरी औ रस लैके भ्रमर उड़त भए ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ३६ ॥

मू० । प्रातभयोतातबलिमातुबिधुबदनपरमदनवारोकोटिउठोप्रानप्यारे सूतमागधबंदीबदतबिरदावलीद्वारसिसुअनुजप्रियतमतिहारे ॥१॥ कोकगतसोकअवलोकिससिछीनछबिअरुनमयगगनराजतरुचिरतारे मनज्जरबिबालम्हगराजतमनिकरक

रिद्लितअतिललितमनिगनविथारे ॥ २ ॥ सुनऊतमचरमुख
रकीरकलहंसपिककेकिरवकलितबोलतबिहंगबारे मनऊं मु
निबृंदरघुबंसमनिराबरेगुनतगुनआश्रमनिसपरिवारे ॥ ३ ॥
सरनिबिकसितकंजपुंजमकरंदबरसंजुतरमधुरमधुकरगुंजारे
मनऊंप्रभुजन्मसुनिचयनअमरावतीइंदिरानंदमंदिरसंवारे ॥
॥ ४ ॥ प्रेमसंमिलितबरबचनरचनाअकनिरामराजीवलोचन
उघारेदासतुलसीमुदितजननिकरैआरतीसहजसुंदरअजि
रपाँउधारे ॥ ३७ ॥

टी० । हेतात प्रात भयो मैं माता बलि जांउ औ तुम्हारे मुख चू
द्र पर कोटि मदन वारों हे प्रान प्यारे उठौ पौराणिक कथक भाट
बिरदावली कहत हैं औ तुम्हारे अति प्रय प्रिय बालक और अनुज
द्वार पर खड़े हैं ॥ १ ॥ चंद्रमा की छवि छीन देखिकै चक्रवाक शो
क रहित भए औ लाल रंग मय आकाश मे सुंदर तारे राजत हैं
मानो बाल रवि रूपसिंह ने तमसमूह रूप हाथिन को बिदारित
करि अति सुंदर मणि गणन कों छितिराय दिये इहां मणि गणतारा
हैं मुरगा बोलत हैं औ सुगा औ राजहंस औ कोइलि औ मोर
रवकलितक हैं शब्द युक्त हैं औ बच्चौ पच्छिन के बोलत हैं सो सु-
नऊ पच्छी औ पच्छिन के बच्चा नही बोलत हैं हे रघुबंसमनि मानो
मुनिगन परिवार सहित आश्रम मे आप के गुण बर्णत हैं इहां
आश्रम घोंता है ॥ ३ ॥ तड़ागन मे कमलन के समूह प्रफुल्लित हैं
तिनमे श्रेष्ठ रस है तापर भ्रमर अतिसुंदर मधुर गुंजार करत हैं
मानो भ्रमर गुंजार नही करत हैं प्रभु को जन्म सुनि के इन्द्र के
पुरी मे चयन है अर्थात् देवता लोग नृत्यगान करत हैं प्रफुल्लित क
मल नही है लक्ष्मी ने आनंद को मंदिर बनायो है ॥ ४ ॥ प्रेम
युक्त श्रेष्ट बचन रचना सुनि श्रीराम कमलसमनेत्र उघारत भए गो
साइँजी कहत हैं कि हरषित जननी आरती करति हैं औ सहज

सुंदर जो रघुनाथ सो आंगन में पधारत भए । ५ ॥ ३७ ।

मूल । जागियेकृपानिधानजानिरायरामचन्द्र जननिकहैबारबार भोरभयोप्यारे। राजिवलोचनबिसालप्रीतिबापिकामराल ललितकमलबदनउपरमदनकोटिबारे ॥ १ ॥ अरुनउदितबिगतसर्वरीससांझकिरिनि हीनदीनदीपज्योतिमलिनदुतिसमूहतारे। मनहुज्ञानघनप्रकासबीतेसबभौबिलास आसचासतिमिरतेषतरनितेजजारे ॥ २ ॥ बोलतखगनिकरमुखरमधुरकरिप्रतीत सुनहुश्रवनप्रानजीवनधनमेरेतुमबारे । मनहुबेदबंदीमुनिछंदसूतमागधादि बिरदबदतजयजयजयजयतिकैटभारे ॥ ३ ॥ बिकसितकमलाबलीचलेप्रपुंजचंचरीक गुंजतकलकोमलधुनित्यागिकंजन्यारे । जनुबिरागपाइसकलसोककूपगृह बिहाइभृत्यप्रेममत्तफिरतगुनतगुनतिहारे॥ ४ ॥ सुनतवचनप्रियरसालजागेअतिसयदयाल भागेजंजालबिपुलदुखकदंबटारे । तुलसिदासअतिअनंददेखिकैमुखारबिंद छूटेभ्रमफंदपरममंदद्वंदभारे । ५ ॥ ३८ ।

टी० । जननी वारवार कहति है हे कृपानिधान जानी जे ब्रह्मादि तिन के स्वामी लालकमल समबिशाल लोचन प्रीति रूपी बाउली के हंस सुंदर कमल बदन ऊपर कोटि काम वारे गए भए मेरेप्यारेरामचन्द्रभोरभयोजागिए इहां षट्बिशेषण ते षटऐश्वर्य युक्त जनाए औ कृपानिधान जानि राय प्रीति वापि कामराल एती निविशेषण ऐश्वर्य के दिए प्यारे राजीव लोचन बिशाल ललित कमल बदन ऊपर कोटि मदन वारे एती निविशेषण माधुर्य्य के दिए तेहिते ऐश्वर्य माधुर्य दूनो मे अपनी रूचि जनाए औ कौशल्याजी को बरदान है ॥ मातुबिबेकअलौकिकतोरे । कबहुनमिटिहिअनुग्रहमोरे ॥ ताते बिबेकन मिटेउ ॥ १ ॥ सूर्य उए रात्रि बीती चन्द्रमा किरणहीन औ दीप की ज्योति दीन अर्थात् शोभाहीन औ सब तारन

की द्युति मलीन भई मानो सूर्य नही उए पूर्ण ज्ञान को प्रकाश भयो औ रात्रि नही बीती भवका बिलास अहंता ममता दिवोल्यो औ आश त्रास रूप अँधकार को तोष रूप सूर्य के तेज ने जराय दियो ॥ २ ॥ हे प्रान जीवन धन मेरे वारे मधुर शब्द ते पच्छीन के समूह बोलत हैं हमारे बचन को विश्वास करि श्रवन तें तुम सुनहु मानो पच्छी नही बोलत हैं वेद रूप बंदी औ मुनिवृंद रूप सूत माग धादि जय जय जय जय जयति बैट भारे कहियस कहत हैं ॥ ३ ॥ कमल समूहोंके फूलत मात्र कमलन के त्यागि के पृथक ह्वै भँवरन के समूह सुंदर कोमल धुनि तें गुंजत चले भाव सायंकाल मे कमलन के संपुटित होवेतें भीतर पड़ि गए रहे ते उड़ि चले ते भ्रमर कमल बिहाय गुंजार करत नहीं उड़त हैं मानो वैराग्य पाय सब शोक रूप गृह कूप छोड़िकै तिहारे सेवक गुण को गुणत प्रेम मे मत्त फिरत हैं संपुटित कमल का गृह कूप मे उत्प्रेच्छा करने का यह भाव कि संपुटित कमल से भी निकलना कठिन है औ गृहकूप से भी निकलना कठिन है औ संपुटित भए पर भ्रमर को केवल कमलै देषि परत है तैसे गृहकूप मे जे पड़े हैं तिनको केवल घरै देखि पड़त है इहां कमल के प्रफुल्लित होए से भ्रमर छुट्टी पावत है इहां प्रभु कृपाकरि जब निकालै तब छुट्टी पावै ॥ ४ ॥ रसाल प्रिय बचन सुनत मात्र अति सय दयाल जे श्री राम ते जागे जंजाल भागत भए औ अनेक दुःखन के समूहन के टारत भए गोसाईं जी कहत हैं कि दास मुखारविंद देषि कै अति अनंद भए तातें माया के परम मंद भारे भ्रम फंद छूटे । ५ ॥ ३८ ।

मूल । बोलतअवनिपकुमारठाढ़ेन्टपभवनद्वार रूपसीलगुनउदारजागहुमेरेप्यारे । बिलषितकुमुदिनिचकोरचक्रवाकहरष भोर करतसोरतमचरखगगुंजतअलिन्यारे ॥ १ ॥ रुचिरमधुरभोजनकरिभूषनसजिसकल अंगसंगअनुजबालकसबबिबिधिबिधि

सँवारे । करतलगहि ललितचापभंजनरिपुनिकरदाप कटित टपटपीत तूनसायकअनियारे ॥ २ ॥ उपवनमृगयाविहारकारनगवनेकृपाल जननीमुखनिरषिपुन्यपुंजनिजविचारे । तुलसिदाससंगलीजैजानिदीनअभैकीजै दीजैमतिविमलगावैचरितवरतिहारे । ३ ॥ ३९ ।

टी० । राज भवन के दरवाजे पर राजन के बालक ठाढ़े भए बोलत हैं अर्थात् तुह्मारे जागिवे की प्रत्यसा देखत हैं हे रूपशील गुनउदार मेरे प्यारे जागऊ भोर भए ते कोंई औ चकोर विलखात हैं औ चक्रवाक कों हरष है मुरगा औ और पच्छी शोर करत हैं और भ्रमर न्यारे गुंजार करत हैं एतना सुनि जागे यह शेष है १ अनुज औ बालक सब जे विविधि विधि सँवारे भए हैं तिनके सङ्ग सुंदर मधुर भोजन करिके औ सकल अँगन मे भूषन औ कटि देश मे पीतपट औ तरकस चोखे सायक युक्त सजि के औ रिपु समूहन के अहँकार भंजन करनिहारा सुंदर चापहस्ततल मे गहि के उपवन मे सिकार खेलिवे के हेतु कृपाल गवने जननी ने मुख देखि के अपने पुन्य का समूह विचारा कृपाल कहिवे को भाव मानस रामायन मे स्पष्ट है ॥ जेमृगरामबानकेमारे । तेतनुतजिसुरलोकसिधारे ॥ गोसाईंजी कहत हैं कि हम को संग लीजे औ दीन जानि के अभै कीजे औ निर्मल मति दीजे जाते तेहारे श्रेष्ठ चरित्रन कों गावैं इहां गोसांईजू आवे समे देहाध्यास भूलि प्रत्यक्ष सम कहे ॥ ३९ ॥

रागनट । खेलनचलिऐआनदकंद सखाप्रियनृपद्वारठाढ़े विपुलबालकबृंद ॥ १ ॥ तृषिततुम्हरेदरसकारनचतुरचातकदास बपुषबारिदबरषिछबिजलहरऊलोचनप्यास ॥ २ ॥ बंधुबचनबिनीत सुनिउठेमनऊकेहरिबाल ललितलघुसरचापकरउरनयनबाऊबिसाल ॥ ३ ॥ चलतपदप्रतिबिंबराजतअजिरसुषमापुंज प्रेमबसप्रतिचरनमहिमानोदेतिआसनकंज ॥ ४ ॥ निरषिपरमबि

विचसोभाचकितचितवहिँमात हरषविवसनजातकहिनिजभ
वनविहरऊतात ॥ ५ ॥ देषितुलसीदासप्रभुछविरहेसवपलरो
कि थकितनिकरचकोरमानऊसरदइंदुविलोकि । ६ ॥ ४० ।

टी० । सषा औ प्रिय जे बालकन के अनेक जुत्थैं ते न्रप द्वार में खड़े हैं वा सखा औ प्रिय औ बालकन के अनेक युत्थैं न्रप द्वार मे खड़े हैं तुह्मारे दरस के कारन चतुरदास रूप चातक जे त्रिषित हैं तिनको स-रीर रूप मेघ तें छवि रूप जल बरषि कै नेचन को प्यास हरऊ ॥ २ विनीतनम्र केहरिबालक कहैं सिंघ को बालक ॥ ३ ॥ परम शोभा पुंज जो आंगन है तेहि मे चलत संते पद को परिछाहीं शोभति है सो परिछाही नही है मानो प्रेम बस चरण प्रति पृथ्वी कम लन के आसन देति है ॥ ४ ॥ हर्ष के विशेष बस हैं ताते नहीं कहिजात है कि हे तात निज भवन मे विहरऊ अर्थात बाहर न जाऊ ॥ ५ ॥ गोसाईंजी कहत हैं कि प्रभु छवि देषि कै सब पलक रोकि रहे मानो चकोरन के समूह सरद पूनो के चंद को देषि थ-कित भए । ६ ॥ ४० ।

मू० । विहरतअवधवीथिन्हराम संगअनुजअनेकसिसुनवनीलनीरद
स्यामतरुनअरुनसरोजपदवनिकनकमयपदचान पीतपटकटि
तूनवरकरललिततघुधनुवान ॥ २ ॥ लोचननिकोलहतफलछ
विनिरषिपुरनरनारि बसततुलसीदासउरअवधेसकेसुतचारि
। ३ ॥ ४१ ।

टी० । नवीन स्याममेघसमस्याम श्रीराम अनुज औ अनेक शिशुन के संग अवधि की गलिन मे विहरत हैं ॥ १ ॥ तरुण जो लालक-मल तद्वत चरण हैं तामे सुवर्ण मयो पनहीं बनी है अर्थात पहिरे हैं पीतपट औ तरकस कटि मे है श्रेष्ट करनि मे सुंदर छोटे धनुष औ बान है ॥ २ ॥ लोचनइ० सु० । ३ ॥ ४१ । करतलसोहतबानधनु हिया । यहपदक्षेपक है ताते न लिखा

मूल । जैसेरामललिततैसेलोनेलषनलालु तैसेईभरतसीलसुषमास नेहनिधितैसईसुभग्रसंगसत्रुसालु॥ १ ॥ धरेंधनुसरकरकसेक टितरकसीपीरेपटओढेचलैंचारुचालु अंग अंगभूषनजरायकेज गमगतहरतजनकेजीकोतिमिरजालु॥ २ ॥ खेलतचौहटाघाट बीथीबाटकनिप्रभुसिवसुप्रेममानससरालु सोभ दानदैदैसन मानतजाचकजनकरतलोकलोचननिहालु ॥ ३ ॥ रावनदुरि तदुखदलैसुरकहैंआजुअवधसकलसुषकोसुकालु तुलसोसरा हैंसिद्धसुकृतकौसल्याजूकेभूरिभागभाजनभुआलु । ४ ॥ ४२

टी० । ललित सुंदर लोने सुंदर शील सुखमा सनेह निधि सील औ परम सोभा औ स्नेह के समुद्र शत्रुशाल शत्रुहनजी ॥ १ ॥ तरकसी तरकस जराय के जड़ाऊ के तिमिरजाल अंधकार समूह ॥ २ शिवजीके सुंदर प्रेम रूप मानससर के हंस जो प्रभु हैं सो चौहटा औ घाट गली औ फुलवारिन मे खेलत हैं औ लोक के लोचन रूप जाचक जन के सोभा दान दै दै के सनमानत है औ निहाल करत हैं ॥ ३ ॥ देवता कहत हैं कि अवध मे सकल सुख को सुकाल है पर रावन पाप रूप दुख को आजु औ मारैं भाव अवध के सुख मे न भूलैं हमारे दुख को देखि सीघता करै वा देवता कहत हैं कि आजु कहैं या समै में रावन पाप रूप जो दुख है ताको मारैं तो अवध मे सकल सुख को सुकाल होय भाव फेर दुकाल का भै न रहिजाय गोसांई जी कहत हैं कि बड़े भाग्य के पात्र जो महाराज दशरथ औ कौशल्या जू तिन के सुकृत को सिद्ध सराहत हैं ॥ ४ ॥ ४२ ॥

मू० । रागललित । ललितललितलघुलघुधनुसरकरतैसितरकसिक टिकसेपटपिअरे ललितपनहिपांयपैंजनीकिंकिनिधुनिसुनिसु षलहैमनुरहैनितनियरे ॥ १ ॥ पहुंचीअंगदचारुहृदयपदिक हारकुंडलतिलकछबिगड़ोकबिजियरेसिरसिटेपारोलालनी रजनयनबिसालसुंदरबदनठाढेसुरतरुसियरे ॥ २ ॥ सुभगस

कलअंगअनुजबालकसंगदेषेनरनारिरहैज्योंकुरंगदियरे षे
लतअवधखोरिगोलीभौंराचकडोरिमूरतिमधुरबसैतुलसीके
हियरे ॥ ३ ॥

टी० । ललित० ई सु० ॥ १ ॥ अंगद बिजायठ पदिक धुक धुकी हार माला वा सात पदिक के माला का नाम पदिक हार है सिर सिटे पारे लाल शिर मे लाल टोपी है नीरज कमल। सुरतरु सियरे कल्पवृक्षकेछायामे ॥ २ ॥ ज्यौं कुरंग दियरे जैसे मृगा दीपककोदेखिकैसंका ॥ मृग तो गान सुनि मोहित होत है दीपक तें कैसे लिखें उत्तर ॥ ब्याधादीपकबारिकैकुछगान। करत हैं तब मृगा उड़ां आवत है यह प्रसिद्ध है चकडोरी चकई ॥ ३ ॥
॥ ४३ ॥

मू० । छोटिअैधनुहिआपनहिआपगनिछोटीछोटिअैकछौटीकटि
छोटिअैतरकसी लसतझँगुलीझीनोदामिनिकोछबिछीनोसुं
दरबदनसिरपगिआजरकसी। बयअनुहरतबिभूषनबिचित्रअं
गजोहैजियआवतिसनेहकीसरकसी मूरतिकीसूरतिकहीन
परैतुलसीपैजानैसोईजाकेउरकसकैकरकसी ॥ २ ॥ ४४ ॥

टी० । कछौटी कछनी ॥ १ ॥ अवस्था के अनुहार बिचित्र भूषण अंग मे हैं देखिवे तें जिय मे स्नेह की प्रबलताई आवति है तुलसी पै मूरति की सूरति नही कहि परै है जाके हृदय मे कड़क ऐसी कसकै है अर्थात् मूरति सोई जानै ॥ २ ॥ ४४ ॥

मू० । रागटोड़ी । रामलषनएकओरभरतरिपुदमनलालएकओरभ
ए सरजुतीरसमसुषदभूमिथलगनिगनिगोइआंटिलये ॥
॥ १ ॥ कंदुककेलिकुसलहयचढ़िचढ़िमनकमकसिठकिठो
किखये करकमलनिबिचित्रचौगानैखेलनलगेखेलरिझये ॥
॥ २ ॥ व्योमबिमाननिबिबुधबिलोकतखेलकपेषकछांहछये
सहितसमाजसराहिदसरथहिबरषतनिजतरुकुसुमचये ॥ ३ ॥

एकलैबढ़तएकफेरतसबप्रेमप्रमोदबिनोदमये एककहतभइ
हालरामजूकीएककहतभइयाभरतजये ॥ ४ ॥ प्रभुबकसतग
जबाजिबसनमनिजयधुनिगगननिसानहये पाइसखा सेवकजा
चकभरिजीवनहूसरेद्वारगये ॥ ५ ॥ नभपुरपरतिनिछावरिज
हँतहँसुरसिद्धनिबरदानदये भूरिभागअनुरागउमगिजेगावत
सुनतचरिततनितये ॥ ६ ॥ हारेहरषहोतहियभरतहिजिते
सकुचिसिरनयननए तुलसीसुमिरिसुभावसीलसुकृतीतेइजेए
हिरंगरए ॥ ७ ४५ ॥

टी० । राम दू० सु० ॥ १ ॥ गेंदा के खेल मे जे कुशल हैं ते घोड़न पर चढ़ि चढ़ि कै मन कों ठोकि ठोकि मजबूत करि करि के खड़े भए ठोंकि ठोंकि मजबूत करिबे को यह भाव कि हम हारैंगे नहीं अवश्य जीतैं गे अस निश्चै करि करि वा मन को फेरि फेरि के अर्थात मिलाप छोड़ि छोड़ि के ताल ठोंकि ठोंकि के षड़े भए वा मन भरि घोड़न को कसि कसि के याल ठोकि ठोकि के चढ़िं चढ़ि खड़े भए हस्त कमलन मे बिचित्र दण्डा है रिझावन वाले खेल खेलन लगे यह खेल या भांति ते खेला जात है दूनो ओर गोइंया खडे होत हैं बीच मे एक सीवां बनावत हैं जमीन मे गेंदा को धरि घोड़े पर से दंडा मारि मारि के गेंदा को सीवा के ओर बढ़ावत हैं औ दूसरे ओर से दंडा मारि मारि के गेंदा को फेरत हैं जेहि ओर से सोवां पार होय तेहि की हाल होय अर्थात् जीत होय ॥ २ ॥ आकाश तें बिमानन पर देवता देखत हैं खेलने वाले और देखने वालों की छाया छाय रही वा खेलने वालों पर देखनेवालों की छाया छाय रही वा खेलने वालों को छाया सम देखने वाले अर्थात् देवता छाजे समाज सहित राजा दशरथ को सराहि के अपना तरु जो कल्पवृक्ष ताको पुष्प समूहैं बर्षत भए ॥ ३ ॥ सब प्रेम आनन्द औ कौतुक मैजे हैं तिन मे से एक गेंदा कों लै बढ़त औ एक रोकि कै फेरत

एक कहत है कि राम जू की जीत भई औ एक कहत हैं कि भैया भरत जीते ॥ ४ ॥ हये कहैं हने अर्थात् बजाए ॥ ५ ॥ जहं तहं पुर तें औ आकाश तें नेछावरि परति है अर्थात् आकाश तें देवता औ पुर तें पुरबासी नेवछावर करत देवता औ सिद्ध बरदान देत भए अनुराग से उमगि के जे ए चरित नित्य सुनत गावत हैं तिन के बड़े भाग हैं ॥ ६ ॥ सिरनैननएसिरऔनैननीचेकेनबावतभएरएकहैंरंगे ॥ ७ ॥ ४५ ॥

मू० । खेलिखेलिसुखेलनिहारे उतरिउतरिचुचुकारितुरंगनिसादरजाइजोहारे ॥ १ ॥ बंधुसखासेवकसराहिसनमानिसनेहसंभारे दिएबसनगजबाजिसाजिसुभसाजिसुभांतिसंवारे ॥ ॥ २ ॥ मुदितनयनफलपाइगाइगुनसुरसानंदसिधारे सहितसमाजराजमंदिरकहंरामराउपगधारे ॥ ३ ॥ भूपभवनघरघरबसंडकल्यानकोलाहलभारे निरखिहरषिआरतीनिछावरिकरतसरीरबिसारे ॥ ४ ॥ नितनयेमंगलमोदअवधसबबिधिसबलोगसुखारे तुलसीतिन्हसमतेउजिन्हकेप्रभुतेप्रभुचरितपियारे ॥ ५ ॥ ४६ ॥

टी० । सुंदर खेलने वारे खेल खेलि के ॥ १ ॥ बंधु सखा सेवक कों सराहि सनमानि के फिरि सनेह को सम्हारे अर्थात् सनेह मे आप जो बिह्वल ह्वै गए रहे ताको सम्हारे पुनि बसन औ घोड़ा हाथी साजि कै औ सुंदर भांति ते संवारे जे सुभ साज भाव सुंदर पोसाक ते दिए वा कल्यान साजि के सुंदर भांति ते सँवारत भए औ बसनादि दिए वा सनेह सम्हारे यह सब दिए भाव जेहि की जेतनी प्रीति तेतनी दिए वा सनेह को सम्हारे भए जो बंधु आदि हैं तिन कों सराहि सनमानि कै बसनादि दिए सनेह सम्हारे भए कहिबे को यह भाव कि सनेह को न सम्हारैं तो देहाध्यास रहित ह्वै जाहिँ ॥ २ ॥ मुदित इ० सु० ॥ ३ ॥ भूपति के भवन मे

औ घर घर मे कल्यान को घमंड है अर्थात् कल्यान पूरि रहा है वा कल्यान को अहंकार है ॥ ४ ॥ गोसांई जी कहत हैं कि तिन्ह अवध बासो सम तेऊ हैं जिन्ह के प्रभु तें प्रभु का चरित पिआरा है ॥ ५ ॥ ४६ ॥

मू० । रागसारंग । चहतमहामुनिजागजयो नीचनिसाचरदेतदुस
हदुषकृसतनतापतयो ॥ १ ॥ सापेपापनयेनिदरतखलतबयह
मंचठयो बिप्रसाधुसुरधेनुधरनिहितहरिअवतारलयो ॥ २ ॥
सुमिरतश्रीसारंगपानिछनमेंसबसोचुगयो चलेमुदितकौसिक
कोसलपुरसगुननिसाथदयो ॥ ३ ॥ करतमनोरथजातपुलकि
प्रगटतआनंदनयो तुलसीप्रभुअनुरागउमगिमगमंगलमूलभ
यो ॥ ४ ॥ ४७ ॥

टी० । महामुनि जे बिस्वामित्र जू ते यज्ञ औ जय दोऊ चाहत हैं महामुनि कहिवे को यह भाव कि तप बल याही देह मए क्षत्री तें ऋषि पति अस कोऊ मुनि नही भयो नीच निसाचर दुःसह दुःख देत हैं तातें तन तापन ते तयो औ क्षम भयो ॥ १ ॥ अब बिस्वामित्र जू का बिचार कहत हैं शाप देइवे मे पाप है औ नवताई किए मे खल निरादर करत है अस बिचारि कै तब यह मंत्र ठान्यो कि बिप्रादि के हित हरि अवतार लियो है इहां और नाम न कहे हरिही कहे ताको यह भाव कि या काल मे अपना दुःख हराइवे पर दृष्टि है अर्थात् हरताति हरिः ॥ २ ॥ सारंग पानि कहिवे को यह भाव कि सारंग अस धनुष हाथ मे है तो क्यो न हमारे शत्रु को नाशैं गे सगुननि साथ दयो कहिले को यह भाव कि राह भरि सगुन होत आयो ॥ ३ ॥ पुलकि करि कै मनोरथ करत जात हैं औ नयो जो कबहूं न भयो आनंद सो प्रगटत हैं गोसांई जी कहत हैं कि प्रभु अनुराग के उमग करि कै मग मंगल मूल भयो भाव जबताई यज्ञ कै ओर घर मे लगे रहे तबताई न भयो

औ प्रभु के ओर चलते राह मे भयो आगे क्या जाने केतना होय गो ॥ ४ ॥ ४७ ॥

मू० । आजुसकलसुकृतफलपाइहौं सुखकीसीवअवधिआनदकीअ
वधबिलोकिहौजाइहौं ॥ १ ॥ सुतहिसहितदसरथहिदेषि
हौंप्रेमपुलकिउरलाइहौं रामचन्द्रमुषचन्द्रसुधाछबिनयनच
कोरनिप्याइहौ ॥ २ ॥ सादरसमाचारन्रुपबूझिहैहौंसबक
थासुनाइहौं तुलसीह्वैकृतकृत्यआश्रमहिरामलषनलैआइ
हौं ॥ ३ ॥ ४८ ॥

टी० । अब विश्वामित्र जी को मनोरथ कहत हैं सुख की सीमा औ आनन्द की सीमा कैसी जो अयोध्या जी हैं तिन कों जाय मैं देखि हौं ॥ १ ॥ श्री रामचंद्र के मुख रूप चन्द्र को जो छबि रूप अमृत है ताकों नैन रूप चकोरन कों पिआइ हौं ॥ २ ॥ सादर इ० सु० दो० । बहुबिधिकरतमनोरथ जातनलागीबार । करिमज्जनसरजूज ल गएभूपदरबार ॥ चौ० । मुनिआगमनसुनाजबराजा । मिलनगए लैबिप्रसमाजा ॥ करिदंडवतमुनिहिसनमानी । निजआसनबैठारि न्हिआनी ॥ चरनपखारिकीन्हअतिपूजा । मोसमआजुधन्यनहिदूजा बिबिधिभांतिभोजनकरवावा । मुनिवरहृदयहरषअतिपावा ॥ पुनिच रननमेलेसुतचारी । रामदेषिमुनिदेहबिसारी ॥ भयेमगनदेखतमु खसोभा । जनुचकोरपूरनशशिलोभा ॥ इहां यतनी कथा छोडि दिए प्रसंग मिलाइबे हेतु हम लिखि दिआ ॥ ३ ॥ ४८ ॥

मू० । रागनट । देषिमुनिरावरेपदआजु भयोप्रथमगनतीमैअबतहांज
हांलौसाधुसमाजु ॥ १ ॥ चरनबंदिकरजोरिनिहोरतकहिय
कृपाकरिकाजुमेरेकछुनअदेयरामबिनुदेहगेहसबराजु ॥ २ ॥
भलीकहोभूपतितिभुअनमैकोसुकृतीसिरताजु तुलसीरामज
नमतेजनिअतसकलसुकृतकोसाजु ॥ ३ ॥ ४९ ॥

टी० । देखि इ० पद सुगम ॥ ४९ ॥

मू० । राजनरामलषनजोदीजै जसरावरोलाभढोठनिऊमुनिसना थमबकीजै ॥ १ ॥ डरपतह्रौसांचेऊसनेहबससुतप्रभावबिनु जाने बूझियेवामदेवअरुकुलगुरुतुमपुनिपरमसयाने ॥ २ ॥ रिपुरनदलिमषराषिकुसलअतिअलपदिननिघरऐहैं तुलसि दासरघुबंसतिलककीकविकुलकीरतिगैहैं ॥ ३ ॥ ५० ॥

टी० । राजन इ० पद सुगम ॥ ५० ॥

मू० । रहेठगिसेन्टपतिसुनिमुनिबरकेबैन कहिनसकतकछुरामप्रेम बसपुलकगातभरेनीरनैन । गुरुवसिष्टसमुझायकह्यौतबहिय हरषानेजानेसेषसयन सौंपेसुतगहिपानिपांयपरिभूसुरउर चलेउमगिचयन ॥ २ ॥ तुलसीप्रभुजोहतपोहतचितसोहत मोहतकोटिमयन मधुमाधवमरतिदोउसंगमानोदिनमनिग मनकियोउत्तरअयन ॥ ३ ॥ ५१ ॥

टी० । रहेठगि सु० ॥ १ ॥ बिस्वामित्र जू बैन कहैं आनन्द से उमगि चले ॥ २ ॥ गोसांई जी कहत हैं कौ कोटि काम के मोहत जो प्रभु सोभत हैं सो देखत मात्र चित्त कों पोहि लेत हैं अर्थात् अपने मे लगाइ लेत है मानो चैत्र बैसाख रूप दोऊ मूरति संग लै बिस्वामित्र रूप सूर्य उत्तर दिसा को गवन कियो भाव चैत्र बैसाख पाय सूर्य अति प्रताप युक्त होत हैं तैसे इन दोऊ भैयन को पाय बिस्वामित्र जू भए ॥ ३ ॥ ५१ ॥

मू० । रागसारंग । रिषिसंगहरषिचलेदोउभाई पितुपदबंदिसीस लियोआयसुसुनिसिषआसिषपाई ॥ १ ॥ नीलपीतपाथोजब रनवपुवयकिसोरबनिआई सरधनुपानिपीतपटकटितटकसेनि षंगबनाई ॥ २ ॥ कलितकंठमनिमालकलेवरचंदनषौरिसु हाई सुंदरबदनसरोरुहलोचनमुखछबिबरनिनजाई ॥ ३ ॥ पल्लवपंषसुमनसिरसोहतक्योंकहौवेषलोनाई मनोमूरतिध रिउभयभागभईत्रिभुअनसुंदरताई ॥ ४ ॥ पैठतसरनिसिल

निचढिचितवतषगम्हगवनरुचिराई सादरसभयसप्रेमपुलकि मुनिपुनिपुनिलेतबोलाई ॥ ५ ॥ एकतीरतकिहतीताडकाविद्याबिप्रपढ़ाई राष्यौजन्नजतिरजनीचरभइजगबिदितबड़ाई ॥ ७ ॥ चरनकमलरजपरसिअहल्यानिजपतिलोकपठाई तुलसिदासप्रभुकेबूभेमुनिसुरसरिकथासुनाई ॥ ७ ॥ ५२ ॥

टी० । पिता की सिच्छा सुनि आज्ञा शिर धरि लिए फिर पद कों बंदि आशिष पाइ कै ऋषि के संग हरषि कै दोऊ भाई चले ॥ १ ॥ श्याम पीत कमल के समान सरीर के वर्ण हैं औ किशोर अवस्था बनि के आई अर्थात् भली भांति आई है बान धनुष हाथ मे है औ कटि देश मे पीत पट है औ तामे तरकस बनाय कै कसे है ॥ २ ॥ कंठ मे मणि माल शोभित है औ सरीर मे सुंदर चंदन की खौरि है सुंदर मुख औ कमल सम लोचन हैं मुष की छवि बरनी नहीं जाति है ॥ ३ ॥ अपर पद सु० ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५२ ॥

मू० । रागनट । दोउराजसुवनराजतमुनिकेसंगनषसिषलोनेलोने बदनलोनेलोयनदामिनिवारिदवरबरनअंग॥ १ ॥सिरसिसिषासुहाईउपवीतपीतपटधनुसरकरकसेकटिनिषंगमानोमखरुजनिसिचरहरिवेकोसुतपावककेसाथपठयेपतंग ॥ २ ॥ करतछांहघनबरषैसुरसुमनछबिबरणतअतुलितअनंग तुलसीप्रभुविलोकिमगलोगषगम्हगप्रेममगनरंगेरूपरंग॥ ३ ॥५३ ॥

टी० । लोने सुंदर लोयन नेत्र दामिनि वरण अंग श्री लक्ष्मण जी को औ मेघ बरण अंग श्री राम जी को है ॥ १ ॥ मानो मख के रोग रूप निशाचर हरिवे को अग्नि के साथ पुत्र जो अश्वनी कुमार तिन को सूर्य पठए हैं इहा पावक विश्वामित्र जू हैं अश्वनी कुमार रूप दोऊ भाई हैं सूर्य चक्रवर्त्ती महाराज हैं ॥ २ ॥ मेघ छांह करत हैं देवता फूल बर्षत हैं औ अनेक अनंग सम छवि बरनत हैं वा छबि बरनते मे काम नहीं तुलित होत है वा अतुलित

जो छबि ताको काम बरनत है ॥ ३ ॥ ५३ ॥

मू० । रागकल्यान । मुनिकेसंगबिराजतबीर काकपक्षधरकरकोदं डसरसुभगपीतपटकटितूनीर ॥ १ ॥ बदनइंदुअंभोरुहलो चनस्यामगौरसोभासदनसरीर पुलकतरिषिअवलोकिअमित छबिउरनसमातप्रेमकीभीर ॥ २ ॥ खेलतचलतकरतमगकौ तुकबिलमतसरितसरोवरतीर तोरतलतासुमनसरसीरुहपि यतसुधासमसीतलनीर ॥ ३ ॥ बैठतबिमलसिलनिबिटपनि तरपुनिपुनिबरनतछांहसमीर देषतनटतकेकिकलगावतमधु पमरालकोकिलाकीर ॥ ४ ॥ नयननिकोफललेतनिरषिखग खगसुरभीब्रजबधूअहीर तुलसीप्रभुहिदेतसबआसननिजनि जमनम्टदुकमलकुटीर ॥ ५ ॥ ५४ ॥

टी० । काकपक्ष जुलफ को दंड धनुष तू नीर तरकस ॥ १ ॥ इंदु चंद्रमा अंभोरुह कमल ॥ २ ॥ सर सीरुह कमल ॥ ३ ॥ नाचत जो मोर हैं औ सुंदर गावत जो भ्रमर हैं औ हंस कोकिल सुआ जे हैं तिन कों देषत हैं ॥ ४ ॥ खग पक्षी गौ औ खगियन के रहै वाली जो स्त्री औ अहीर नयननि को फल लेत हैं गोसाईं जी कहत हैं कि सब प्रभु को अपने अपने मन रूप कुटी मे कोमल कमल को आसन देत हैं भाव अवर आसन को कठोर जानि अस भावना करत हैं ॥ ५ ५४ ॥

मू० । रागकान्हरा । सोहतमगमुनिसंगदोउभाईतरुनतमालचारु चंपकछबिकबिसुभायकहिजाई ॥ १ ॥ भूषनबसनअनुहरति अंगनिउमगतिसुंदरताई बदनमनोजसरोजलोचननिरही हैलोभाइलोनाई ॥ २ ॥ अंसनिधनुसरकरकमलनिकटिक सेहैनिषंगबनाई सकलभुवनसोभासरबसलघुलागतनिरखि निकाई ॥ ३ ॥ महिम्टदुपथघनछांहसुमनसुरबरषिपवनसु षदाई जलथलरुहफलफूलसलिलसबकरतप्रेमपहुनाई॥४॥

सकुचसभीतबिनीतसाथगुरुबोलनिचलनिसुहाई षगम्रगबि
चित्रबिलोकत बीचबिचलसतललितलरिकाई ॥ ५ ॥ बिद्या
दईजानिविद्यानिधिबिद्याह्नलहीबड़ाई ख्यालदलीताडकादे
षिरिषिदेतअसीसअघाई ॥ ६ ॥ बूझतप्रभुसुरसरिप्रसंगक
हिनिजकुलकथासुनाईगाधिसुअनमनेहसुषसंपतिउरआस्र
मनसमाई ॥ ७ ॥ बनबासीबडुजतीजोगिजनसाधुसिद्धिसमु
दाई पूजतपेषिप्रीतिपुलकततननयनलाभलुटिपाई ॥ ८ ॥
मषराष्योखलदलदलिभुजबलबाजतबिबुधबधाईनितपथचरि
तसहिततुलसीचितबसतलषनरघुराई ॥ ९ ॥ ५५ ॥

टी० । सुंदर तरुण तमाल के वृक्ष सम श्री रघुनाथ की औ चंपक सम औ लक्ष्मण की छवि यह कबि सुभाव ते कहि जाति है कवि सुभाव कहिवे को यह भाव कि प्रायः जो न घटै सो घटावना कबिन का सुभाव होत है ॥ १ ॥ अंगनि के अनुरूप भूषन बसन है अर्थात् श्री राम जी को पीत बसन औ पीत मणि आदि को भूषन है औ श्री लक्ष्मण जी को नील बसन औ नील मणि आदि को भूषण है औ सुंदरताई उमगति है औ मुखन पर काम की नैनन पर कमलन की शोभा लोभाय रही है ॥ २ ॥ अंमन कहैं कांधन पर सरबस कहैं सब ॥ १ ॥ पृथ्वी कोमल पथ से मेघ छाया से देवता फूल बरषि कै पवन सुष दाई से अर्थात् सीतल मंद सुगंध बहि के जल के वृक्षस्थल के वृक्ष फल फूल से औ सलिल सब से अर्थात् आत्म निवेदन से प्रेम पूर्व कपट नाई करत हैं ॥ ४ ॥ गुरू के साथ मे सकुचता सभीतता औ नम्रता युक्त बोलनि औ चलनि सोहाति है औ बिचित्र पक्षी म्रग जो देखत हैं सो बीच बीच मे सुंदर लरिकाई लसत है ॥ ५ ॥ खेलही मे ताड़का कोदल ताको देषि कै ऋषि अघाय के असीस देत भए औ बिद्या निधि जानि बिद्या दई भाव बिद्यान के रहिवे को स्थान एही है बिद्या ने

भी बड़ाई लही भाव विद्या निधि जो सोऊ हम को सौखे यह बड़ाई लही पहिले ताड़का का बध है फिर विश्वामित्र का विद्या देना है ताते पद का यहि भांति अन्वय किया ॥ ६ ॥ प्रभु गंगाजी की कथा बूझत भए ताको कहि के विश्वामित्र जू अपने कुल की कथा सुनाई बालकाण्ड वाल्मीकीय रामायण मे विश्वामित्र के कुल की कथा लिखी है विस्तर भय तें इहां नही लिषा विश्वामित्र जी को जो सनेह औ सुख रूप सम्पति है सो हृदय रूप आश्रम मे नहीं समाति है ॥ ७ ॥ वानप्रस्थ ब्रह्मचारी औ सन्यासी और अष्टांग योग साधन वारे जे जन औ साधु अर्थात् पर काज साधन कर निहारे औ सिद्ध अर्थात् जो साधन करि चुके हैं तिन की समुदाय देखि के पूजत हैं औ प्रीति तें तन पुलकत हैं औ नैनन ने लाभ को लूटि पाई है ॥ ८ ॥ बाजत विबुध बधाई देवतन की बधाई बाजत है ॥ ९ ॥ ५५ ॥

मू० । मंजुलमंगलमयब्रह्मढोटामुनिमुनितियमुनिसिसुविलोकिकहै मधुरमनोहरजोटा ॥ १ ॥ नामरूपअनुरूपवेषबयरामलषनलाललोने इन्हतेंलहीहैमानोघनदामिनिदुतिमनसिजमरकतसोने ॥ २ ॥ चरनसरोजपीतपटकटितटतूनतीरधनुधारी कैहरिकंधकामकरिकरबरविपुलबाहुबलभारी ॥ ३ ॥ दूषनरहितसमयसमभूषनपाइमुअंगनिसोहै नवराजीवनयनपूरनबिधुबदनमदनमनमोहै ॥ ४ ॥ सिरनिसिषंडसुमनदलमंडनबालसुभायबनाये केलिअंकतनुरेनुपंकजनुप्रगटतचरितचुराये ॥ ५ ॥ मषराषवेलागिदसरथसोमागिआश्रमहिआने प्रेमपूजिपाहुनेप्रानप्रियगाधिसुअनसनमाने ॥ ६ ॥ साधनफलसाधकसिद्धनिकेलोचनफलसबहीके सकलसुकृतफलमातुपिताकेजीवनधनतुलसीके ॥ ७ ॥ ५६ ॥

टी० । सुंदर मंगल मय ब्रह्म बालक हैं मंजुल मंगल कहिबे को

यह भाव कि जेहि केनाम लेवे ते अमंगल नाश जात है मुनि औ मुनि की पत्नी औ मुनि के बालक कोमल मनोहर जोड़ी देखि के कहत हैं ॥ १ ॥ नाम औ रूप योग्य वेष औ अवस्था से औ राम लषन अति लोने हैं मानो मेघ दामिनि काम मरकत मणि औ सोना ने इनही तें छबि लही है ॥ २ ॥ कमल सम चरण है कटि देश मे पीत पट औ तरकस औ बान धनु धारन किए हैं सिंह सम कांध हैं काम रूप हाथी के श्रेष्ठ सुंड सम विशाल भुजा औ पराक्रम भारी है ॥ ३ ॥ दूषन रहित जे समय सम भूषण ते सुअंगनि पाय सोभत हैं दूषण रहित कहिवे को यह भाव कि बहुत मणि दोष सहि तो होत हैं नवीन कमल सम नेत्र हैं पूर्ण चंद्र सम मुख है सो मदन को मन मोहत है ॥ ४ ॥ शिर पर मोरपंख औ फूल दल को भूषण बाल सुभाय ते बनाए हैं खेल के चिन्ह जो तनु मे रेनु औ पंक सो मानहु चोराए चरित को प्रगटत है भाव बिश्वामित्र जी को जो आंख बचाय के खेले हू देहैं ताकों प्रगटत हैं ॥ ५ ॥ बिश्वामित्र जू यज्ञ राषिवे के हेतु चक्रवर्ती महाराज सों मांगि के आश्रम मे ले आए प्रान ते प्रिय जो पाहुन दोउ भाई तिन्ह कों प्रेम ते पूजि कै सन्मानत भए ॥ ६ ॥ साधन दू० सु० ॥ ७ ॥ ॥ ५६ ॥

मू० । रागरूहव । रामपदपदुमपरागपरी ऋषितियत्यागितुरतपाहनतनछबिमयदेहधरी ॥ १ ॥ प्रबलपापपतिसापदुसहदवदारुनजरनिजरीकृपासुधासींचीबिबुधवेलिंज्यौफिरिसुषफरनिफरी॥ २ ॥ निगमअगममूरतिमहेसमतियुवतिवरायवरी सोइमूरतिभइजानिनयनपथएकटकतेनटरी ॥ ३ ॥ बरनतहृदयसरूपसीलगुनप्रेमप्रमोदभरी तुलसिदासअैसेकेहिआरतकीआरतिप्रभुनहरी॥ ४ ॥ ५७ ॥

टी० । पराग धूरि पाहन पाषान ॥ १ ॥ प्रबल पाप से जो पति

शाप रूप दुःसह अग्नि तेहि करि कठिन जानि से जो जरी रही सो कृपा रूपी अमृत से सोंची गई फेरि कल्पलता के समान सुख रूप फल नि से फरो। पाद्मे गच्छतस्तस्यरामस्यपादस्पर्शान्महाशिला काचिद्योषाभवत्सद्योविस्मितंमुनिरब्रवीत्। शापदग्धपुराभवीरामशक्रापराधतः अहल्याख्याशिलाजन्मेशनलिंगोकृतःस्वराट् त्वदंघ्रिस्पर्शनात्तस्यैशापान्तंप्राहगोतमः तत्माद्दियंतेपदाजस्पर्शाच्छुद्धाभवत्प्रभो॥ २॥ जो मरति बेद कों अगम अर्थात् बरनन मे औ महेश की मतिरूप युवती ने चुनि कै बरी है बराय बरी कहिवे को यह भाव कि विष्णु नृसिंह बामनादि को तजि कै बरी सोई मूरति नयन गोचर भई जानिए कटक ते नटरो ॥ ३ ॥ रूप शील गुण के हृदय मे आनत भाव प्रेम औ आनंद मे भरत भई गोसाईं जी कहत हैं किप्रभु यहि प्रकार ते केहि आरत की आरति नहीं हरी हैं भाव सब की हरी है ॥ ४ ॥ ५७ ॥

मू० । परतपदपंकजरजनिषिरवनी भईहैप्रगटअतिदिव्यदेहधरिमानोत्रिभुवनछविछवनो ॥ १ ॥ देषिबड़ोआचरजपुलकितनकहतमुदितमुनिभवनो जोचलिहैरघुनाथपयादेसिलानरहिहै अवनो ॥ २ ॥ परसिजोपायपुनीतसुरसरीसोहैतीनिपथगवनी तुलसिदासतेहिचरनरेनुकीमहिमाकहैमतिकवनो ॥ ॥ ३ ॥ ५८ ॥

टी० । छवनी कन्या ॥ १ ॥ मुनि भवनी मुनि पत्नी ॥ २ ॥ तीनि पथ स्वर्ग मर्त्य पाताल लोक ॥ ३ ॥ ५८ ॥

मू० । भूरिभागभाजनभई रूपरासिअवलोकिबंधुदोउप्रेमसुरंगरई ॥ १ ॥ कहाकहैकेहिभांतिसराहैनहिकरतूतिनई बिनुकारनकरुनाकररघुबरकेहिकेहिगतिनदई ॥ २ ॥ करिबहुबिनयराषिउरमूरतिमंगलमोदमई तुलसीह्वैबिसोकपतिलोकहिप्रभुगुनगनतगई ॥ ३ ५ ९ ॥

टी० । भाजन पात्र सुरंग रई सुंदर रंग मे रंगी ॥ १ ॥ बिनु कारन बिनु हेतु ॥ २ ॥ करि दू० सु० ॥ ३ ॥ ५९ ॥

मू० । रागकान्हरा । कौसिककेमखकेरखवारे नामरामअरुलषनललितअतिदसरथराउदुलारे ॥ १ ॥ मेचकपीतकमलकोमलकलकाकपक्षधरवारे सोभासकलसकेलिमदनबिधिसुकरसरोजसवारे ॥ २ ॥ सहससमूहसुबाहुसरिसषलसमरसूरभटभारे केलितूनधनुबानपानिरननिदरिनिसाचरमारे ॥ ३ ॥ ऋषितियतारिस्वयंबरपेषनजनकनगरपगधारे मगनरनारिनिहारतसादरकहिबड़भागहमारे ॥ ४ ॥ तुलसीसुनतएकएकनिसोचलतबिलोकनिहारे मूकनिबचनलाहुमानोअंधनिलहेहैबिलोचनतारे ॥ ५ ॥ ६० ॥

टी० । अब मग के नर नारिन की उक्ति लिखत हैं कौशिक दू० सु० ॥ १ ॥ ए बालक श्याम पीत कोमल कमल सम हैं औ सुंदर जुल्फ धारन किए हैं मानो सकल शोभा समेटि कै काम रूप बिधाता ने अपने कर कमल सेसंवारे है इहां लुप्तोत्प्रेक्षा है ॥ २ ॥ समर मे सूर बड़े योद्धा सुबाहु सरिस षल अनेक सहस्र निशाचरन कों षेलवाड़ के तरकस औ धनुष बान जो हाथ मे है ताही सो रण मे निरादर करि कै मारे ॥ ३ ॥ पेषन कहैं देषन ॥ ४ ॥ मानों मूकनि ने बचन लाभ औ अंधनि ने नेत्र न की पुतरी लहे हैं ॥ ५ ॥ ॥ ६० ॥

मू० । रागटोड़ी । आएसुनिकौसिकजनकहरषानेहै । बोलिगुरुभूसुरसमाजसोमिलनचले जानिबड़ेभागअनुरागअकुलाने- है ॥ १ ॥ नाइसीसपगनिअसीसपाइप्रमुदितपांवड़े अरघदेतआदरसोंआनेहै असनबसनबासकैसुपाससबबिधिपूजिप्रियपाहुनेसुभायसनमानेहै ॥ २ ॥ बिनयबड़ाईरिषिराजऊपरस्परकारतपुलकिप्रेमआनदअघानेहै देषेरामलषननिमिषबि

थकितभईप्रानज्ञतेप्यारेलागेंविनुपहिचानेहै ॥ ३ ॥ ब्रह्मानं
दहृदयदरससुषलोयननिअनुभएउभयसरसरामजानेहै तुल
सीविदेहकीसनेहकीदसासुमिरिमेरेमनमानेराउनिपटसया
नेहै ॥ ४ ॥ ६१ ॥

टी० । कौशिक को आगमन सुनि अपने बड़े भाग जानि अनुराग से विह्वल भए हैं औ हरषाने हैं जे जनक महाराज तें सचिव आदि तिन के सहित मिलिवे को चले शंका गुरू को कैसे बोलाए उत्तर । श्री जनक महाराज के गुरू जागवल्क जी हैं सतानंद जी परोहित हैं पुरोहित को भी गुरू कहत हैं ॥ १ ॥ प्रिय पाहुने विस्वामित्र जी ॥ २ ॥ विनय दू० सु० ॥ ३ ॥ ब्रह्मा नंद उरमेंऔ राम दरसन सुष नेत्रन तें दूनो अनुभव किए तब सरस राम हैं यह जाने अर्थात् नेत्र सुष को अधिक माने गोसांई जी कहत हैं विदेह के स्नेह की दसा सुमिरि कै हमारे मन ने मान लिया कि महाराज अत्यंत चतुर हैं भाव ज्ञान में न भूले । श्रेयः श्रुतिंभक्तिमुदस्यतेविभो क्लिश्यन्तियेकेवलबोधलब्धये तेषामसौक्लेशलएवशिष्यतेनान्यद्यथास्थूलतुषावघातिनाम् ॥ ४ ॥ ६१ ॥

मू० । रागमलार । कोसलरायकेकुवरोटा राजतरुचिरजनकपुर
पैठतस्यामगौरनीकेजोटा ॥ १ ॥ चौतनीसिरनिकनककलि
कानिकटिपटपीतसोहाए उरमनिमालविसालविलोचनसी
यस्वयंवरआए ॥ २ ॥ वरनिनजातमनहिमनभावतसुभगअव
हिवयथोरी भइहैमगनविधुवदनविलोकतवनिताचतुरचको
री ॥ ३ ॥ कहँसिवचापलरिकवनिबूझतविहँसिचितैतिरछोहै
तुलसीगलिनभीरदरसनलगिलोगअटनिअवरोहै ॥ ४ ॥
॥ ६२ ॥

टी० । कुअरौटा कहैं कुअरैं जोटा जोड़ी ॥ १ ॥ चौतनी टोपी कनक कली सोना को कलि का कार कुंडल वा पीत रंग के पुष्प

को कली कन पर खोसे हैं ॥ २ ॥ बरनि इ० मु० ॥ ३ ॥ अटनि अवगो है अटारिन पर चढे, हैं ॥ ४ ॥ ६२ ॥

मू० । एअवधेसकेसुतदोऊ चढिमंदिरनबिलोकतसादरजनकनगर सबकोऊ ॥ १ ॥ स्यामगौरसुंदरकिसोरतनतूनबानधनुधारी कटिपटपीतकंठमुकुतमनिभुजबिसालबलभारी ॥ २ ॥ मुख मयंकमरसीरुहलोचनतिलकभालटेढ़ीभौंहे कलकुंडलचौतनीचारुअतिचलतमत्तगजगौहै ॥ ३ ॥ बिस्वामित्रहेतुपठएन्हपइन्हशिताडिकामारी मषराख्यौंरिपुजीतिजानिजगमग मुनिबधूउधारी ॥ ४ ॥ प्रियपाहुनेजानिनरनारिन्हनयनन्हि अयनदये तुलसिदासप्रभुदेखिलोगसबजनकसमानभये ॥ ५ ॥ ॥ ६३ ॥

टी० । गज गौ हैं गज गति से अयन गृह जनक समान भए बिदेह भए अपर पद सुगम ॥ ५ ॥ ६३ ॥

मू० । रागटोड़ो । बूझतजनकनाथढोटादोउकाकेहैं तरुनतमाल चारुचंपकबरनतनुकौनेबड़भागीकेसुकृतपरिपाकेहैं ॥ १ ॥ सुषकेनिधानपायेहोयबेपिष.नलायेठगकैसेलाडूखायेप्रेमम धुछाकेहैं स्वारथरहितपरमारथीकहावतहैंभेसनेहबिबसबिदेहत बिवाकेहैं ॥ २ ॥ सीलसुधाकेअगारसुषमाकेपारावारपावतनपरपारपैरपैरिथाकेहैं लोचनललकिलागेमनअतिअनुरागेएकरसरूपचित्तसकलसभाकेहैं ॥ ३ ॥ जियजियजोरत सगाईरामलषनसोआपनेआपनेभायजैसेभायजाकेहैं प्रीति कोप्रतीतिकोसुमिरबेकोसेइबेकोसरनकोसमरथतुलसीहूता केहैं ॥ ४ ॥ ६४ ॥

टी० । जनक महाराज बूझत हैं कि हे नाथ ए दोऊ बालक केहि के है ए जे नूतन तमाल औ सुंदर चंपा के बरन सम सरीर ते कवने बडे भागी के सुकृत के फल हैं ॥ १ ॥ अब कबिकी उक्ति

है सुष के रासि पाए हृदय को पिधान कहैं ढपना लगावत भए भाव जब कोऊ धन पावत है तब गुप्त ठौर मे तोपि कै धरत है इहां गुप्त ठौर हृदय है ताको पिधान देइ ध्याम भूलना है ठग के लडुआ अस षात भए अर्थात् बिष डरि कै लडुआ ठग षवावत हैं तब षव-इआ अचेत ह्वै जात है तस भए औ प्रेम रूपी मदिरा मे छकि गए हैं कहावत तो रहे स्वारथ रहित परमारथी पर सनेह के बिशेष बस भए तें बिदेहता रहित ह्वै गए हैं भाव सनेह बिबस भए तातें स्वारथ सहित औ बिदेहता बिना के तातें परमारथ रहित इहां गोसांईं जी यह जनाए कि परमारथ के फल रूप राम है ॥ २ ॥ सकल सभा के एक रस रूप से चित्त हैं ताते लोचन ललकिके लागे औ मन अति अनुरागे ते लोचन मन शील रूप अम्रत क गृह परम शोभा के समुद्र कों पैरि पैरि थाके हैं पर पार नाहीं पावत है शील सुधा के अगार कहिवे को यह भाव कि समुद्र सुधा को भवन है औ यह परम शोभा रूप समुद्र शील रूप अम्रत को भवन हैं थाके हैं कहिवे को यह भाव कि अघाते नही हैं पारावार समुद्र का नाम है समुद्रोब्धिर कूपारः पारावारः सरित्पतिः जाके जैसे जैसे भाव हैं तेहि भाव के अनुकूल अपने अपने जिय मे राम लषन सो नाता जोरत है प्रीति करिवे को बिश्वास करिवे को सुमिरिवे को सेवन करिवे को औ सरन जाइवे को योग्य जो ताको तुलसिहु ने ताके हैं ॥ ४ ॥ ६४ ॥

मू० । राग मलार । एकौनकहांतेआए नीलपीतपाथोजबरनमन हरनसुभायसुहाए ॥ १ ॥ मुनिसुतकिधौभूपबालककिधौब्रह्म जीवजगजाए रूपजलधिकेरतनसुछबितियलोचनललितल लाये ॥ २ ॥ किधौरबिसुअनमदनऋतुपतिकिधौहरिहरवे षवनाए किधौआपनेसुकृतसुरतरुकेसुफलरावरेहिपाये ॥ ३ ॥ भएबिदेहबिदेहनेहवसदेहदसाबिसराए पुलकगातनसमात

हरष हियसलिलसुलोचनछाए ॥ ४ ॥ जनकबचनम्टदुमंजु मधुरभरेभगतिकौसिकहिभाये तुलसीअतिआनंदउमगिउ ररामलषनगुनगाये ॥ ५ ॥ ६५ ॥

टी०। स्याम पीत कमल सम बरण औ मन के हरनि हारे स्वाभाविक संदर जे एते कौन हैं औ कहां ते आए हैं ॥ १ ॥ कैधौं मुनि सुत हैं कैधौं राजाके बालक हैं इहां मुनि के संगते मुनि पुत्र का संदेह औ राज कुमार सम देषि राज पुत्र का संदेह वा विस्वामित्र जी के कोई पहिले के संबंधी ता नहीं हैं यातें क्षत्री का संदेह कदापि अब के सम्बंधी होहि यात ब्राह्मण का संदेह है कैधों जीवऔजगत को जो उत्पन्न किए जे सोई ब्रह्म हैं मानस रामायन मे स्पष्ट करि लिखा ॥ ब्रह्मजोनिगमनेतिकहिगावा । उभयवेषधरिकीसोईआवा ॥ इहां अत्यंत सांत औ चमत्कार देषि ब्रह्म कहे काउ अस अर्थ करत हैं कैधो ब्रह्म जीव ही तो नही जगत मे जन्मे हैं कैधौं रूप रूपो समुद्र के मणि हैं कैधौं एललासुंदर छबि रूप तिय के सुंदर लोचन हैं ॥ २ ॥ कैधौं रवि सुअन कहैं हंस है काउ अस कहत कैधौं रवि सुअन कहैं अस्वनीकुमार सो तोन होहैं कैधौं काम वसंत हैं रूप जलधि के रत्न इहां से औ मनद रति पति किधौं इहां लो अत्यंत रूप देषि संदेह है कैधौं वेष बनाएभए हरि हर तो नही हे इहां अति तेजस्वी देषि हरि हर का संदेह है कैधौं अपने सुकृत रूप कल्पवृक्ष के सुंदर फल आपही ने पाऐ हैं अर्थात् दोउभाइन के इहां विस्वामित्र जी को सर्वोत्कृष्ट तपस्वी जानि तप के फल रूप मे संदेह है ॥ ३ ॥ नेह बस देह दसा को बिसराए ताते बिदेह महाराज बिदेह भए इहां भए बिदेह बिदेह कहिबे को यह भाव कि अबताई नाम मात्र रह्या है सांचे बिदेह आज भए हैं वा अब ताईं जगत से बिदेह रहे अब ब्रह्मानन्द हूते बिदेह भए इहां स्वरूपा नन्द की बड़ाई जानना पुलकावली अंग मे

हैं हृदै मे हरष नही समात है औ लेचन से आंसू छाए भाव जब हर्ष हृदय मे न समायो तब नैन के राह बाहर भयो ॥ ४ ॥ जनक जी के सुंदर कोमल औ मीठे औ भगति भरे बचन कौशिक को भाए गोसाईं जी कहत हैं अति आनंद जो सो हृदय तें उमगि के श्री राम लखन के गुन गावत भए अर्थात् जनक महाराज से सब कहि देत भए ॥ ५ ॥ ६५ ॥

मू० । कौसिककृपालहूकोपुलकिततनुभोउमगतअनुरागसभाकेस
राहेभागदेषिदसाजनककीकहिबेकोमनभो ॥ १ ॥ प्रीतिके
नपातकीदिएहूसापपापबड़ोमखमिसिमेरोतबअवधगवनभो
प्रानहूतेप्यारेसुतमागेदियेदसरथसत्यसंधसोचसहेहूनोसो
भवनभो ॥ २ ॥ काकसिखासिरकरकेलितूनुधनुसरबालकबि
नोदजातुधाननिसोरनभो बूझतबिदेहअनुरागआचरजबस
ऋषिराजजागभयोमहाराजअनुभो ॥ ३ ॥ भूमिदेवनरदेव
सचिवपरस्परकहतहमकोसुरतरुसिवधनुभो सुनतराजाकी
रीतिउपजीप्रतीतिप्रीतिभागतुलसीकेभलेसाहेबकोजनुभो ॥
॥ ४ ॥ ६६ ॥

टी० । कृपाल जो बिश्वामित्र तिनहू को तन रोमांच युक्त भयो अनुराग उमगत संते सभा के भाग सराहे औ जनकजी की दशा देषि कै वृत्तान्त कहिवे को मन भो ॥ १ ॥ अब वृत्तान्त कहत हैं पातकी जे राक्षस ते प्रीति के नहीं हैं औ शाप दिए हू सेबडो पाप हैं तब मख के बहाने से मेरो अवध मे गमन भयो भवन सूनो सो भयो शोच सहे पर सत्य प्रतिज्ञ जे दशरथ महाराज ते प्रान हूतें प्यारे सुत मागिवे ते दिए ॥ २ ॥ शिर विषे जुल्फ मात्र है अर्थात् जूंड़ो आदि नहीं तरकस औ हाथ मे जे धन बान ते खेलवाड़ के हैं भाव युद्ध के नहीं औ बालबिनोद से अर्थात् रोष से नहीं औ युद्ध निशाचरन के नायकन से भयो भाव साधारन से नहीं । जातू

निरन्तरासिद्धधातिपुष्णातीतिजातुधानःराक्षसनायकइत्यर्थः । अनुराग औ आश्चर्य के बस ह्वै विदेह महाराज बूझत हैं कि हे ऋषिराज यत्य भयो तब विश्वामित्रजू बोले कि हे महाराज अनुभो अर्थात् सम्यक् भयो वा महाराज अनुभो हे महाराज आपही अनुभव करिए जौ यत्यनपूर्ण होता तौ हम अनंद पूर्वक इहां कैसे आवते ॥ ३ ॥ सुनत मात्र रघुनाथ मे राजा की रीति उपजी भाव निश्चय भयो कि राजकुमार हैं ताते उपजी औ प्रीति प्रतीति उपजी भाव ऐसे राक्षसन के मारे हैं तौ क्यौं न धनु तोरैंगे औ ब्राह्मण राजा संची परस्पर कहत हैं कि हम को शिव धनु कल्पवृक्ष भयो भाव एही शिव धनु के प्रसाद से यह दर्शन पाए राजा की रीति कहे व्यवहार सुनत मात्र प्रतीति औ प्रीति उपजी कि भाग तुलसी के हैं कि भले साहेब को गुलाम भयो भाव जेहिं साहब के पाए ते महाराज जनक महाराज तेऊ अपने कौं कृतार्थ माने ॥ ५ ॥ ६ ॥

मू० । चार्यौभलेबेटादेवदसरथरायके जैसेरामलषनभरतरिपुहनतैसेसीलसोभासागरप्रभाकरप्रभायके ॥ १ ॥ ताड़कासंघारिसखरास्वनौकेमारेब्रतकोटिकोटिभटकिएएकएकघायकेएकवानबेगहीउड़ानेजातुधानजातसूषिगएगातहैपतउआभ-षेवायके ॥ २ ॥ सिलाछोरछुवतअहल्याभईदिव्यदेहगुनपेषेपारसकेपंकरुहपायके रामकेप्रसादगुरुगौतमखसमभयेरावरेऊसतानंदपूतभयेमायके ॥ ३ ॥ प्रेमपरिहासपोषेवचनपरस्परकहतसुनतसुखसबहीसुभायके तुलसीसराहैभागकौसिकजनकजूकेबिधिकेसुढरहोतसुढरसुदायके ॥ ४ ॥ ६७ ॥

टी० । हे देव हे महाराज राजा दशरथ के चारों बेटा भले हैं जैसे राम लषन तैसे भरत शत्रुहन शील शोभाके समुद्र औ प्रताप के सूर्यहैं इहाँ चारो भाइन कौं बरनन करि यह जनाए कि आपकौं अन्यत्र वर न ढूंढ़नो परैगो । १ । ताडका दिवध फेर कहत हैं ताडका

मारिकै यज्ञराखे औ प्रतिज्ञा भलेपाले कोटि कोटि भट एक एक चोट के किए तिनमे एक चोट के जातु धानै बान के वेगैसे उड़ाने जातहैं ताते तिन के गात सूधि गए बवंडर के पत्ता सम भए भावफिर भूतल मे नआए । २ । शिला कै कोर छुअत अहल्या दिव्य देह भई चरण कमल के पारस के गुणदेखे भाव जैसे पारस के छुए लोहा सोना होत तैसे जडते दिव्य भई श्रीराम के प्रसाद ते रावरै गुरु जो गौतम जीते खसम भए भाव रडुआपन छूटा औ सतानंद अपने माता के पूत भए भाव वे मह तारी के टुअर कहावत रहे सो छुटा । ३ । प्रेम औ परिहास तें पुष्ट भए जे सुंदर भाव के वचन परस्पर कहत हैं ते सुनत साच सबही को सुख भयो गोसाईं जी कहत हैं की कौशिक जनक जी को भाग सराहे औ कहे विधि अनुकूल से सुंदर दांव के पासा सुढ़ार होत है इहाँ सुंदर पासा परना रघुनाथ का आगमन है ॥ ४ ॥ ॥ ६७ ॥

मू० । एदोअटसरथकेबारे । नामरामघनश्यामलखनलघु नषसि षश्चंगउज्यारे ॥ १ ॥ निजहितलागिमांगिआनेमै धरमसेतुरखवारे । धीरबीरविरुदैतबांकुरे महाबाहुबलभारे ॥ २ ॥ एकतीरतकिहतीताड़का कियसुरसाधुसुखारे । जज्ञराखि जगसाखितोषिरिषि निदरिनिसाचरमारे ॥ ३ ॥ मुनितियतारिस्वयंवरपेषन आएसुनिवचनतिहारे । राउदेखिहैपिनाकनेकजेहि नृपतिलाजजरजारे ॥ ४ ॥ मुनिसानंदसराहि सपरिजन वारहिबारनिहारे । पूजिसप्रेमप्रसंसिकौसिकहिं भूपतिसदनसिधारे ॥ ५ ॥ साचतसत्यसनेहविवसनिसि नृपहिगनतगएतारे । पठयेबोलिभोरगुरकेसंग रंगभूमिपगुधारे ॥ ६ ॥ नगरलोगसुधिपाइमुदित सबहीसबकाजबिसारे । मनहुंमघाजलउमगिउदधिरुष चलेनदीनदनारे ॥ ७ ॥ एकिसोरधनुघोरबहुत मिलखातबिलोकनिहारे । ८

खौनचांपतिन्हतेंजेह्नसुभटनि कौतुककुधरउषारे ॥ ८ ॥
एजानेबिनुजनकजानियत करिपनभूपहंकारे । नतकसुधा
सागरपरिहरि कतकूपखनावतषारे ॥ ९ ॥ सुषमासीलसने
हसानि सानोरूपबिरंचिसँवारे । रोमरोमपरसोमकामसत
कोटिवारिफेरिडारे ॥ १० ॥ कोउकहैतेजप्रतापपुंजचित ये
नहिजातभियारे । छुअतसरासनसलभजरैगो येदिनकरबं
सदियारे ॥ ११ ॥ एककहैंकछुहोउसुफलभए जीवनजनम-
हमारे अवलोकेभरिनयनआजुतुलसीकेप्रानह्नतेप्यारे ॥ १२
॥ ६८ ॥

टी०। उज्यारे कहैं सुंदर ॥ १ ॥ धर्म सेतु के रक्षक धीर वीर बिरदवाले वाकें आजानु बांह्न और भारी बलवाले जे श्री राम लषन तिन कों निज हित लागि मैं मांगि आने ॥ २ ॥ ३ ॥ धनु तोरै सोबरै जान कौ यह बचन सुनि नृपति लाज जरि-जारे लाज रूप ज्वर तें राजनि कों जिन्ह ने जारे हैं ॥ ४ ॥ सपरिजन परि बार सहित जनकजो ॥ ५ ॥ सत्य औ सनेह के बिवस तें सोचत हैं भाव न सत्यै छोड़त बनत न राम सनेहै राजा को ताराग न ते रात्रि गई भाव कब बिहान होयगो ॥ ६ ॥ मानो मघा नक्ष-त्र के जल ते नदी नारें उमगि के समुद्र के ओर चले इहां सुधि पावना मघा को जल है उदधि श्रीराम को सरूप है नदी नद नारे पुरवासी हैं ॥ ७ ॥ कौतुकमे कुधर कहैं पर्वत को जिन्ह उखारे अर्थात् रावणादि ॥ ८ ॥ हकारे बोलाए इहां सुधा सागर रघुनाथ हैं औ खारा कूप प्रतिज्ञा है ॥ ९ ॥ परम शोभा शील औ स्नेह सानि कै मानो इनके रूप ब्रह्मा ने सवारे फिरि रोम रोम पर सत कोटि चंद्रमा औ काम नेवछावरि करि डारे ॥ १० ॥ कोऊ कहत है कि हे भैया तेज औ प्रताप के पुंज हैं ताते चितए नहीं जात हैं एदिन कर बंस दीपक के छुअत माच सरासन रूप फनि गाजरैगो

॥ ११ ॥ गोसाईं जी कहत हैं आजु नयन भरि प्रान हूं ते प्यारे के अवलोके ॥ १२ ॥ ६८ ॥

मू० । जनकबिलोकिबारबाररघुबरको। मुनिपदसीसनायआयसुअ सीसपाइएईबातेकहतगवनकियोघरको ॥ १ ॥ नीदनपरतरातिप्रेमपन एकभांतिसोचतसकोचतबिरंचिहरि हरको। तुम्हतेसुगमसबदेवदेखिबेकोअबजसुहंसकियेजोग वतजुगपरको ॥ २ ॥ ल्यायेसंगकौसिकसुनायेकहिगुनगन आएदेषिदिनकरकुलदिनकरको। तुलसीतऊसनेहकोसु- भाउवाउमानोचलदलकोसोपातकरैचितचरको॥ ३ ॥ ६९

टी० । एई बाते कहत अर्थात् श्रीरामलक्ष्मण विषयक बाते कहत ॥१॥ राति से नींद नाही परत जातें प्रेम औ प्रतिज्ञा एक भांति है भाव त्याग योग दूनो नाहीं ताते शोचत है औ ब्रह्मा विष्णु शिवको सकोच देत है हे देव तुम ते सब सुगम सुनत आए सो अब देषि बे को है अब कवि की उक्ति है कि श्री जनक महाराज अपने यस को हंस किए ताके दो ऊपर के यो गवत हैं इहां दोऊ पर प्रेम औ पन है ॥२॥ कौशिक ऐसे महात्मा अर्थत् अन होनी करनि हारे तें संग ले आए औ रघुनाथ के गुन गन मारीचादि बध औ अहल्या को पाषान ते चैतन्य करना कहि सुनाए औ आपो दिन कर कुल दिन कर को देषि आए भाव जाके देखे ब्रह्मानंदो भूलि गयो गोसाईं जी कहत हैं ताहू पर सनेह को सुभाव मानो वायु है सो पीपर के पात केसमान चित्त को चल करत है ॥ ३ ॥ ६९ ॥

मू० । रागकेदारा । रंगभूमिभोरेहीजाइकैरामलषनलषिलोगलू टिहैलोचनलाभअघाइकै ॥ १ ॥ भूपभवनघरघरपुरबाहरइ हैचरचारहीछाइकै मगनमनोरथमोदनारिनरप्रेमबिवसउ ठैगाइकै ॥ २ ॥ सोचतबिधिगतिसमुझिपरस्परकहतबचन बिलषाइकै कुअरकिशोरकठोरसरासनअसमंजसभयोआइ

कै ॥ ३ ॥ सुकृतसंभारिमनाइपितरसुरसीमईसपदनाइकैर
घुबरकरधनुभंगचहतसबअपनोसोहितुचितुलाइकै ॥४॥ लेत
फिरतकनसुईसगुनसुभबूझतगनकबुलाइकै सुनिअनुकूलमु
दितमनमानहुधरतधीरजहिधाइकै ॥ ५ ॥ कौसिककथाए-
कएकनिसोंकहतप्रभाउजनाइकै सीयरामसंयोगजानियतर
च्यौबिरंचिबनाइकै ॥ ६ ॥ एकसराहिसुबाहुसथनबरबाहु
उछाहबढ़ाइकै सानुजराजसमाजबिराजिहैरामपिनाकुचढ़ा
इकै ॥ ७ ॥बड़ोसभावबड़ोलाहुबड़ोजसुबड़ीबड़ाईपाइकै को
सोहिहैऔरकोलायकरघुनायकहिबिहाइकै ॥ ८ ॥ गव-
निहैंगंवहिगवाइगरबगृहन्नपकुलबलहिलजाइकै भलीभां-
तिसाहेबतुलसीकेचलिहैब्याहिबजाइकै ॥ ९ ॥ ७० ॥

टी० । रंग इ० सु० ॥ १ ॥ मनोरथ जनित आनंद मे नारि नर मगन है प्रेम के बिशेष बस है ताते गाय उठे ॥ २ ॥ शोचत इ० सु० ॥ ३ ॥ अपनो सो हितु चितु लाय कै अपने हित समान चित्त लगाय कै ॥ ४ ॥ कनसुई कानाफुसु की अर्थात् सलाह की बातें सुनत फिरत औ ज्योतिषीबोलाय कै सुभ सगुन बूझत अनुकूल सगुन सुनि मुदित होतहैं मानो सगुन नाही सुनत हैं धीरज कों धाइकै धरत हैं ॥ ५ ॥ प्रभाव जनाय कै कौशिक की कथा एक एकनि सों कहत भाव जो नही होनि हार ताके करनि हारे बिश्वामित्र जी हैं ताते सीता राम जू को संयोग बिरंचि ने बनाय कै रच्यो यह जानियत है ॥ ६ ॥ एक उछाह बढ़ाय कै सुबाहु के मथनि हार जो रघुनाथ की श्रेष्ट बाहु है ताको सराहि कै कहत हैं कि पिनाक चढ़ायकै अनुज सहित श्री राम राज समाज मे शोभि हैं ॥ ७ ॥ बड़ो इ० सु० ॥ ८ ॥ न्रपन के कुल कहैं समूह लजाय कै औ गर्व बल को गवाय गवहिं से अर्थात् बहाने से गृह को गवनि हैं ॥ ९ ॥ ॥ ७० ॥

मू० । रागटोड़ी । भोरफूलबीनबेकोगएफुलवाईहैं सोसनिटैपारे
उपबीतपीतपटकटिदोनाबामकरनिसलोनेभ्रैसवाईहैं ॥ १ ॥
रूपकेअगारभूपकेकुमारसुकुमारगुरकेप्रानअधारसंगसेवका
ईहैं नीचज्यौंटहलकरैंरूपराषैअनुसरैंकौसिकसेकोहीबस
कियेदुऊभाईहैं ॥ २ ॥ सषिनसहिततेहिओसरबिधिसंजो
गगिरिजाजूपूजिबेकोजानकीजूआईहैं निरखेलषनरामजा-
नेऋतुपतिकामसोहिमानोमदनमोहनोमूड़नाईहैं ॥ ३ ॥
राघोजूश्रीजानकीलोचनमिलिबेकोमोदकहिबेकोजोगनमै
बातेसीबनाईहैं स्वामीसीयसखिन्हलषनतुलसीकोतैसोतैसो
मनभयोजाकीजैसीप्रैसगईहैं ॥ ४ ॥ ७१ ॥

टी० । भोरहीं फूल बीनिबे को फुलवारी मे गये हैं शिरन पर टोपी हैं और पीत यज्ञो पवीत है और पीत पट कटि मे है इहा देहली दिपक न्याय करि के पीत का दूनो के संग करना औ वा महाधन में दोना है औ सवाई सलोने भए हैं सवाई होवे को यह भाव कि अंग आवरण रहित हैं वा कदापि कोऊ आय अपने रूप से दबाय न लेय ताते सवाई भए वा कुछ मदन महीप का भी रंग आय पड़ा है तातें वा बिदेह महाराज की वाटिका की छबीलीं फूलों कलीं न ते बाम अंग भूषित हैं तातें सवाईं सलोने भए हैं सो जब कलिन ते एतना भए तब आगे नहीं जानते कि केतना होंहिंगे वा दोना लेने से एक मुद्रा बिचित्र कढी ताते सवाई कहे एक तो रूप के गृह हैं भाव रूप मात्र के आधार भूत हैं ताहू पर भूप के कुमार हैं अर्थात् काहू साधारन के नहि ताहू पर सुकुमार है औ गुरू के प्राण आधार है तथापि संग मे सेवकाई करतहैं कैसे करत सो लिखत हैं नीच जैसे टहल करै तस करत औ रूप राखे काम करत हैं कौसिकऐसे क्रोधी को दोऊ भाइ बस किए हैं ॥२॥ श्री लषन लाल औराम जू को निरषे जाने कि यह राज कुमार नही हैं बसंत औ काम

हैं ताते मोहि गई मानो देषि न मोहीं काम नेमु ऊपर मोहनी नाई है तातें मोहीं ॥३॥ श्रीराघव जू औ श्री जानकी जू कै नजरि मिलबे को जो आनंद सो कहिबे योग्य नोह है हमने बनाई बातें ऐसी कही है रघुनाथ जी को औ जानकी जू को सषिन को औ लखन लाल जू को औ तुलसी को जाकी जैसी सगाई है ताको तैसो मन होत भयो इहां आनंद से भूलि गोसाई जू अपन को प्रत्यक्ष सम कहे ॥४॥ ॥ ७१ ॥

मू० । पूजिपारबतीभलेभायपायपरिकैसजलसुलोचनसिथिलतन पुलकितआवेनवचनमनरह्यौप्रेमभरिकै ॥ १ ॥ अंतरजामिनिभवभामिनिस्वामिनिसोहौ कहौचहौबातमातुअंततौहौलरिकै मूरतिकृपालमंजुमालदैबोलतभईपूजोमनकामनाभावतोबरूबरिकै ॥ २ ॥ रामकामतरूपाइबेलिज्यौंबोड़ीबनाइमागकोषिपोषिफैलिफूलिफरिकै रहौगीकहौगीतबसांचोकहीअंबासियगहेपांयहैउठायमथेहाथधरिकै ॥ ३ ॥ मुदितअसीससुनिसीसनाइपुनिपुनिबिदाभईदेवीसोजननिडरडरिकै हरषीसहेलीभयोभावतोगावतीगीतगौनीभवनतुलसीकेप्रभुकोहियोहरिकै ॥ ४ ॥ ७२ ॥

टी० । पूजि इ० ॥ १ ॥ अंत तो हौं लरिकै कहिवें को यह भाव कि अंतर्जामिनी सो कुछ न कहा चाहिए क्योंकि सब जानतही हैं पर कहिवे को जो चाहत हौं सो लरिकाहों सो कृपाला जो मूरति है सो सुंदर माला दै करि के बोलति भई कि मन भावतो बर बरि कै तुम्हारी मन कामना पूजि जाउ श्री रघुनाथ रूप कल्पवृक्ष पाइ कै फैली बेली के समान बनाय करि कै माग कोषि ते तुष्ट पुष्ट ह्वै फैलि फूलि फरि कै जबर होगी तब कहो गो कि अंबा ने साची कही यह सुनि जानकी जू चरन गहे तब है कहे भाव यह क्या करती हौ औ माथे हाथ धरि कै उठाय लिए ॥ ३ ॥ ४ ॥ ७२ ॥

मू० । रंगभूमिआयेदसरथकेकिसोरहैं पेषनसोपेषनचलेहैंपुरनर नारिबारेबूढेअंधपंगुकरतनिहोरहैं ॥ १ ॥ नीलपीतनीरज कनकमरकतघनदामिनिबरनतनरूपकेनिचोरहैं सहजसलो नेरामलषनललितनामजैसेसुनेतैसेईकुअरसिरमोरहैं॥ २ ॥ चरनसरोजचारुजंघाजानुऊरूकटिकंधरविसालबाहुबड़ेबर- जोरहैं नीकेकैनिषंगकसेंकरकमलनिलसैंवानबिसिषासनम नोहरकठोरहैं॥ ३ ॥ काननिकनकफूलउपवीतअनुकूलपि- अरेदुकूलबिलसतआछेछोरहैं राजिवनयनबिधुबदनटेपारे सिरनषसिषअंगनिठगौरीठौरठौरहैं ॥ ४ ॥ सभासरबरलो ककोकनदकोकगनप्रमुदितमनदेषिदिनमनिभोरहैं अबुधअ सेलैमनमैलेमहिपालभयेकछुकउलूककछुकुमुदचकोरहैं ॥ ॥ ५ ॥ भाईसोंकहतबातकौसिकहिसकुचातबोलघनघोरसे बोलतथोरथोरहैं सन्मुखसबहिबिलोकतसबहिनीकेकृपासो हेरतहँसितुलसीकीओरहैं ॥ ६ ॥ ७३ ॥

टी० । पुरकें नर नारि तमासा सम देषन चले हैं औ बारे बूढे अंध पंगु निहोरा करत हैं भाव हम सब कों भी लैचलो शंका अंध काहे कों निहोरा करत हैं उत्तर युगल राज किशोर शिर मौर के बात सुनि बे हेतु ॥ १ ॥ श्याम कमल औ मरकत मणि औ मेघ के बर्ण सम तन श्री राम जू को है औ पीत कमल औ कनक औ दामिनि के बर्ण सम तन श्री लक्ष्मण जू को है औ रूप को निचोर है अर्थात उत्तमांस है औ सहज हीं दोऊ भाई सलोने हैं अर्थात् बनावट ते नहीं औ नामौं सुंदर है जैसे सुने रहे तैसे ई दोऊ भैया कुअरन के शिर मौर हैं ॥ २ ॥ सुंदर चरण कमल औ जंघा औ ठेंहुन औ ऊरू औ कटि औ उन्नत स्कंध है औबाहु बडे जो राबर हैं शंका बाहन की जो राबरीके से जाने उत्तर सुबाहु आदि को बध सुनिबे तें जंघा ऊरू मे पुन

हलिशंका नहीं करना क्योंकि जंघा नाम ठेहुन के नीचे के भाग का है औ ठेहुन के ऊपर के भाग को ऊरू नाम है जाको आज कालि लोग जंघा कहत हैं पर गोसाईं जी शास्त्र रीति ते लिषे जंघातुप्रसृताजानूरुपर्वाष्ठीवदस्त्रियाम् शक्थिक्लीवेपुमानरुस्तस्यंधिपुंसिवंक्षणः इत्यमरःजंघाप्रसृताइजंघायाःजानुउरुपर्वअष्टीवत् चौणिजानुनःशक्थिऊरूईऊरोः ॥ भली भांति तरकस कसे हैं औ कर कमलनि मे बान धनुष है ते देषिबे में तो मनोहर पर कठोर हैं ॥ ३ ॥ कानन मे पुष्पाकार सोने के कुंडल हैं औ अनुकूल यज्ञोपवीत है अर्थात् जस क्षत्री को चाहिए औ पीत रंग को वस्त्र है तामे आछे किनारे शोभत हैं अर्थात् मोती मणि आदि करि कै कमल सम नयन औ चंद सम मुख हैं टोपी सिरन मे है नख तें शिषा पर्यंत अंगन मे ठौर ठौर ठगोरी अर्थात् जहां जाइ मन तहईं लोभाइ ॥ ४ ॥ सभा जो सोई श्रेष्ठ तड़ाग औ लोग सब जो हैं सोई कमल औ चक्रवाक के समूह हैं ते भोर के दिनमणि रघुनाथ के देषि प्रमुदित भए मूढ मन मैले आशावाले जे महिपाल हैं तें कछु उल्लू अर्थात् घुघुआ कछु कुमुद कोई कछुक चकोर भए कोऊ अस कहत हैं महिपाल जे मूढ तें उलूक औ जे नही सहने वाले तें कुमुद औ जे मन मैले ते चकोर भए ॥ ५ ॥ यद्यपि बोल घन सम गंभीर है पर बिस्वामित्र तें सकुचात हैं ताते भाई तें धीरे धीरे बात कहत हैं सन्मुख सब के हैं औ सब के भली भांति देषत हैं औ कृपा से हसि कै तुलसी के ओर हेरत हैं ॥ ६ ॥ ७३ ॥

मू० । एईरामलषनजेमुनिसंगआएहैं चौतनीचोलनाकाछेसखिसोहै
आगेपाछेआछेऊतेंआछेआछेआछेभायभायेहैं ॥ १ ॥
सांवरेगोरेसरीरमहाबाहुमहावीरकटितूनीरधरेधनुषसुहा
एहैं देषतकोमलकलअतुलबिपुलबल कौसिककोदंडकलाक

लितसिषाये हैं ॥ २ ॥ इन्ह ही ताड़िका मारी गौतम की तीय तारी भारी भारी भूरिभट रन बिचलाये हैं रिषिमष रखवारे दसरथ के दुलारे रंगभूमि पगु धारे जनक बुलाये हैं ॥ ३ ॥ इन्ह के बिमल गुन गन तपुलकित तन सतानंद कौसिक नरेसहिं सुनाये हैं । प्रभु पद मन दिये सो समाज चित किए ह्ल लसि हुलसि हिये तुलसि ह्ल गाये हैं ॥ ४ ॥ ७४ ॥

टी० । जे राम लषन मुनि संग आए हैं ते एई हैं हे सषी टोपी औ कुरता पहिरे हैं औ आगे पाछे सोभत है अर्थात् आगे राम जी पाछे लछमन जी सुंदर ह्लं तें सुंदर सुंदर हैं औ भला भाव जो कोई पदार्थ है ताह्ल को भाए हैं वा भले यह भैया हैं ताते हम सब के भाए हैं वा सुंदर ह्ल ते जो सुंदर ताह्ल ने सुंदर सुंदर भैया हैं ताते भाए हैं वा भला भाव है जेहि को अर्थात् बिस्वामित्र जी तिन के भाए भए है ॥ १ ॥ देषत मे सुंदर कोमल हैं पर बड़े बलवान नहीं तुलत हैं वा बह्लत बल है अत एव अतुल हैं औ बिस्वामित्र जो ने सुंदर धनुर्बिद्या की कला इन को सिषाए हैं ॥ २ ॥ जनकजू के बोलाए तें रंग भूमि मे पग धारें हैं इन के बिमल गुन गन को पुलकित तन ते सतानंद औ बिस्वामित्र जू नरेस को सुनाए हैं ॥ ४ ॥ ७४ ॥

मू० । रागकान्हरा । सीयस्वयंबर माई दोउ भाई आए देषन सुनत चली प्रमदा प्रमुदित मन प्रेम पुलकित तन मनह्ल मदन मंजुल पेषन ॥ ॥ १ ॥ निरषि मनोहरताई सुषपाइ कहै एक एक सो भूरि भाग हम धन्य आलि ए दिन एषन तुलसी सहज सनेह सुरंग सब सो समाज चित्त चित्रसार लागी लेषन ॥ २ ॥ ७५ ॥

टी० । प्रमदा स्त्री पेषन कहैं देषन ॥ १ ॥ भूरि बह्लत धनक हैं त्यग गोसाईं जी कहत हैं सो सब समाज नारिन को अपने सहज सनेह रूपी सुंदर रंग से अपने चित्त रूपी चित्रसार मे लिषने लगीं

मू० । रागगौरी । रामलषनजबदृष्टिपरेरी अवलोकतसबलोकज-
नकपुरमनोबिधिबिबिधिबिदेहकरेरी ॥ १ ॥ धनुषजज्ञकम
नीयअवनितलकौतुकहीभएआयषरेरी छबिसुरसभामनहु
मनसिजकेकलितकल्पतरुरूपफरेरी ॥ २ ॥ सकलकामबर-
षतमुखनिरषतकरषतचितहितहरषभरेरी तुलसीसबैसरा-
हतभूपहिभलेपैतपासेसुढरढरेरी ॥ ३ ॥ ७६ ॥

टी० । री सखी जब ते राम लषन दृष्टि परे तब ते जनक पुर के लोग देषत हैं अर्थात् ए कटक देषत हैं मानो बिधाता ने अनेकन बिदेह किए है भाव बिदेह महाराज के डाह ते इहा बिदेह कहिवे ते सब को देहाध्यास रहित जनाए ॥ १ ॥ धनुष यज्ञ के सुंदर तल भूमि जो है तामे कौतुकही आय के षड़े भए हैं मानो धनुष यज्ञ की सुंदर भूमि नही है छवि युक्त सुरसभा जो सुधर्म्मा सो है औ श्रीराम लषन नही हैं काम के शोभित कल्पवृच्छ हैं औ रामलषन का जो रूप है सो रूप नही है तेहि कल्पवृच्छ को फल है इहा दुइ कल्पवृच्छ जानना ॥ २ ॥ मुख निरषत मात्र मे सकल कामना को बरषत हैं इहा कल्पवृच्छ ते अधिक जनाए क्यों कि कल्पवृच्छ छाया के नीचे गए फल देत है औ ए देखते मात्र औ हर्ष भरे जेहि तन के चित्त तेहि को कर्षत हैं वा यद्यपि चित्त चोरावत हैं तथापि हित मानि हर्ष भरे वा चित को तो चोरावत हैं पर हितते हर्ष भरत हैं गोसाईं जी कहत हैं कि जनक महाराज के सब सराहत हैं कि भले दाव के पासे सुंदर परे हैं भाव जो पन किए ताको भलो फल पाए ॥ ३ ॥ ७६ ॥

मू० । नेकुसुमुषिचितलाइचितौरी राजकुअरमूरतिरचिवेकीरुचि
सुचिबिरंचिश्रमुकियोहैकितौरी ॥ १ ॥ नखसिषसुंदरताअव
लोकतकह्योनपरतसुषहोततितौरी सांवररूपसुधाभरिवेकहु
नयनकमलकलकलसरितौरी ॥ २ ॥ मेरेजानइन्हहिबोलि

वेकारनचतुरजनकठयोठाठइतोरी तुलसीप्रभुभंजिहैसंभुधनु भूरिभागसियमातुपितोरी ॥ ३ ॥ ७७ ॥

टी० । अरी सुमुषि तनकचित लगाय कै देषु ब्रह्मा ने राजकुअर की मूरति रचिवे की सुचि रुचि ते केतनो श्रम कियो है नष ते सिष लों सुंदरताई के अवलोकत जेतना सुष होत है तेतना कहि नहि परत सांवर रूप जो कोई अस्त है ताको भरिवे को सुंदर नयन कमल रूप कलश को षाली करो इहां और ओर न देखना खाली करना है ॥ २ ॥ मेरे जान चतुर जनक ने इन्है बोलिवे कारन इतो ठाट ठयो है तुलसी के प्रभु शंभु धनु तोरि हैं भूरि भाग जानकी जू के माता औ पितो के हैं ॥ ३ ॥ ७७ ॥

मू० । रागसारंग । जबतेरामलषनचितयेरी रहेएकटकनरनारिजनकपुरलागतपलककलपवितयेरी ॥ १ ॥ प्रेमबिवसमागतमहेससोदेषतहीरहियेंनितएरी कैएसदावसहुइन्हनयनन्हि कैएनयनजाहुजितयेरी ॥ २ ॥ कोउसमुझाइकहैंकिनभूपहिं वड़ेभागआएइतयेरी कुलिसकठोरकहांसंकरधनुम्हदुमूरति किसोरकितएरी ॥ ३ ॥ बिरचतइन्हहिंबिरंचिभुअनसबसुंदरताषोजतरितएरी तुलसिदासतेधन्यजनमजनमनक्रमवचजिन्हकेहितएरी ॥ ४ ॥ ७८ ॥

टी० । जब ते इ० सुगम ॥ ७८ ॥

मू० । सुनुसखिभूपतिभलोइकियोरी जेहिप्रसादअवधेसकुअरदोउ नगरलोगअवलोकिजियोरी ॥ १ ॥ मानिप्रतीतिकहेंमेरेते कतसंदेहवसकरतहियोरी तौलौंहैयहसंभुसरासनश्रीरघुवर जौलोनलियोरी ॥ २ ॥ जेहिबिरंचिरचिसीयसंवारीअरुरामहिऐसोरूपदियोरो तुलसिदासतेहिचतुरविधातानिजकरयहसंयोगसियोरी ॥ ३ ॥ ७९ ॥

टी० । सुन इ० सु० ॥ ७९ ॥

मू० । अनुकूलनृपहिसूलपानिहै नीलकंठकारुण्यसिंधुहरदीनबंधु
दिनदानिहै ॥ १ ॥ जोपहिलेहिपिनाकजनकौगएसौंपिजि
अजानिहै बहुरित्रिलोचनलोचनकेफलसबहिसुलभकियेआ
निहै ॥ २ ॥ सुनियतभवभाव तेरामहैंसियभावतीभवानिहै
परिषतप्रीतिप्रतीतिपयजपनुरहेकाजठटुठानिहै ॥ ३ ॥ भये
त्रिलोकिबिदेहनेहबसबालकबिनु पहिचानिहैहोतहरेहोने
बिरवनिदलसुमतिकहतिअनुमानिहै ॥ ४ ॥ देषियतभूपभोर
केसेउडगनगरतगरीबगलानिहै तेजप्रतापबढतकुअरनकोज
दपिसकोचीबानिहै ॥ ५ ॥ बयकिसोरबरजोरबाहुंबलमेरुमेलि
गुनतानिहै अवसिरामराजीवबिलोचन संभुसरासनभानिहै
॥ ६ ॥ देषिहैब्याह उछाह नारिनर सकलसुमंगलषानिहै
भूरिभागतुलसीतेउजेसुनिहैगाइहैबषानिहै ॥ ७ ॥ ८० ॥

टी० । नृप को सूलपाणि अनु कूल है भाव सूल जो लिये हैं तब सूलो को क्यों न छेदैं गे नील कंठ हैं औ करुणा के समुद्र हैं भाव काल कूट नाम बिष तें सुरा सुर को जरत देषि करुणा बसता बिषकों पीए जब उदासीन पर एतना करुना है तब ए तो प्रीति पाच हैं औहर हैं आर्त दुःख हरने का सुभाव है औ दीन बंधु हैं भाव हम सब पिनाक के औरतें दीन ह्वै रहे हैं सो क्यो न सहाय करैं गे औ दीनन के दानी हैं तो क्यो न दान देहिं गे ॥ १ ॥ जो शिव जू पहिलही जनक जू को जिअ मेजानि के पिनाक सौंपि गए हैं जिय जानि कहिबे को यह भाव कि आगे काम आवैगो फेर त्रिलोचन नें श्रीराम रूप लोचन के फल को सबही को सुलभ कियो है । श्रीमद्रामायणे बिश्वामित्रं प्रति जनक वाक्यं । देवरातइ तिख्यातोनिमेःषष्ठोमहीपतिःन्यासोयंतस्यभगवन्हस्तेदत्तोमहात्मनः ॥ २ सुनियत है कि श्री शिव को श्री राम सोहाते हैं औ भवानी जी को जानकी जू सोहाती हैं प्रीति बिश्वास पै जपन परिषत है

ताते कार्य मे विलम्ब ठानि रहेहैं इहां अपने मे श्री राम जानकी के प्रीति प्रतीति को औ धनु तोरै मे राजन के पैज को औ बिना धनु टुटे न बिवाह करि वे मे जनक के पन को परिषत हैं ॥ ३ ॥ बिनु पहिचाने जेन्है विलोकि के विदेह बस भए तेई ए बालक हैं होनिहार बिरवन के हरे हरे पात होत हैं अनुमानि के हमार सुंदर मति कहति है इहां अनुमान यह है कि बिदेह ह्वै के ये पहिचाने नेह बस भए तो होनिहार नोक है ॥ ४ ॥ औ भोर के तारागण सम राजन को देषियत है मारे ग्लानि के गरीब गले जात हैं औ तेज प्रताप कुअरन को बढत है यद्यपि संकोची बानि है अर्थात् कुछ अहंकार युक्त यद्यपि नहीं बोलत हैं ॥ ५ ॥ भानि हैं तोरि हैं ॥ ६ ॥ सकल सुमंगल के षानि हैं तातें नारि नर व्याह उछाह देषि हैं ॥ ७ ॥ ८० ॥

मू० । राग केदारा । रामहिनीकेकैनिरषिसुनयनो । मनसकुअ-
गमसमुझियहअवसरकत सकुचतपिकबयनो ॥ १ ॥ बड़भा
गमखभूमिप्रगटभई सीयसुमंगलअयनो । जाकारनलोचन-
गोचरभई मूरतिसबसुषदयनो ॥ २ ॥ कुलगुरतियके वचन-
मधुरसुनिजनकजुवतिमतिपयनो । तुलसिथिलदेहसुधिबु-
धिकरि सहजसनेहबिषयनो ॥ ३ ॥ ८१ ॥

टी० । श्री सतानन्द की पत्नी सुनैना जू से कहति हैं कि श्री राम को नीके निरषकु हे पिकबैनी मनो ते अगम अर्थात श्री राम हैं अस समुझि कै फिरकत सकुचति हो ॥ १ ॥ सीय सुमंगल को गृह बड़े भाग्य तें यज्ञ भूमि से प्रगट होती भई जा कारण ते सब सुख देनिहारी मूरति नैनन को विषै भई श्री महारामायणे विश्वामित्रं प्रति जनक वाक्यं अथ मे कृषतः क्षेत्रं लांगला दुत्थिता ततः क्षेत्रं शोधयता लब्धा नाम्नासीते तिविश्रुता अथेति वृत्तान्तरा रम्भे क्षेत्रं यागभूमिम ममकृषतः मयि कर्षति अग्नि चयनार्थं मितिशेषः

ऋषभेण कर्षतो त्यादि शास्त्रात् लाङ्गला दुत्थिता आविर्भूतायज्ञ चेत्रं शोधयता सीतायाः लाङ्गल पद्धतेर्मया लब्धा ततो नाम्नासीतेति प्रसिद्धा पाद्मेच अथलोकेश्वरी लक्ष्मी जनकस्य पुरेस्वतः शुभ चेत्रे हलोत् खाते तारेचोत्तर फाल्गुने अयोनिजा पद्मकरावाला कैशशि संन्निभा सीता मुखे समुत्पन्नावाल भावेन सुंदरी सीतामुखोद्भवात् सीताइत्यस्या नामचाकरोत् भविष्ये च ॥ सर्वर्त्तुनिकरश्रेष्ठेऋतौतुकुसुमाकरे मासिपुण्यतमेविप्रमाधवेमाधवप्रिये नवम्यांशुक्लपक्षेच वासरेमंगलेशुभे साम्ये ऋक्षेचमध्यान्हे जानकीजनकालये आविर्भूतास्वयंदेवी योगेषुगतिरूत्तमा ॥ २ ॥ श्री जनक जू की रानी जो सुनैना जू मति की चोषी है सो कुल गुरु तिय के मधुर बचन सुनि के सहज सनेह बिषैनी बुद्धि करि जो देह के ओर ते सिथिल भई रही सो तेहि की सुधि करत भई भाव श्री राम के ध्यान मे जो लगी रहीं सो प्रत्यक्ष देषन लगीं ॥ ३ ॥ ८१ ॥

मू० । मिलोबरुसुंदरसुंदरिसीतहिलायकसावरोसुभगसोभाहू
कोपरमसिंगारु मनहूकोमनमोहैउपमाकोआनकोहैसुष-
मासागरसंगअनुजराजकुमारु ॥ १ ॥ ललितसकलअगतनु
धरेंकीअनंगनैननिकोफलकैधोसियकोसुकृतसारु सरदसुधा
सदनछबिहिनिंदैबदनअरुनआयतनबनलिनलोचनचारु ॥
॥ २ ॥ जनकमनकीरीतिजानिबिरहितप्रीतिऐसीओमूरति
देषेरह्योपहिलोबिचारु तुलसीन्टपहिऐसोकहिनबुझावेको
जपनओकुअरदोउप्रेमकीतुलाधौतारु ॥ ३ ॥ ८२ ॥

टी० । सुंदरी सीतहिं लायक सोभाहूं को परम सिंगार सुभग सांवरो बर मिलो उपमा को उपमा देइवे को ॥ १ ॥ की अनंग कैधो कामदेव सारु फल सुधा सदन चन्द्रमा आयत बिस्तित न बनलिन नवीन कमल चारु सुंदर ॥ २ ॥ श्री जनक के मन की रीति जान की प्रीति ते बिसेष रहित है काहे ते कि ऐसीउ मूरति देखे

पर पहिलोहि विचार रह्यो भाव नेमिए रहे प्रेमी न भए महाराज को ऐसों कहि के कोऊ नही बुझावत है कि प्रतिज्ञा औ रघुनाथकुअर दून दोउन को प्रेम की तुला पर धरि कै तौलो भाव कौनगरू है ॥ ३ ॥ ८२ ॥

मू० । देषिदे२दोउराजसुअन गौरस्यामसलोनेलोनेलोयननिजिन्ह कीसोभातेसोहैसकलभुअन ॥ १ ॥ इन्हहीताडकामारीमग मुनितियतारीरिषिमखराख्यौरनदलेहैदुअन तुलसीप्रभुकोअ वजनकनगरनभसुजसबिमलबिधुचहतउअन ॥ २ ॥ ८३ ॥

टी० । इहां देषि देषि देषु देषु के अर्थ मे है लोने लोयननि सुंदर नेत्र ॥ १ ॥ दुअन दुष्ट जनक पुर रूप आकाश मे प्रभु को सुजस रूप बिमल चंद अब उगा चाहत है ॥ २ ॥ ८३ ॥

मू० । रागटोड़ी । राजारंगभूमिआजुबैठेजाइजाइकै आपनेआपने थलआपनेआपनेसाज आपनीआपनीबरबानिकबनाइकै ॥ १ ॥ कौसिकसहितरामलषन ललितनामलरिकाललामलोने पठएबुलाइकै दरसलालसाबसलोगचलेभायभलेबिकसतमुष निकसतधाइधाइकै ॥ २ ॥ सानुजसानंदहिएआगेह्वैजनक लियेरचनारुचिरसबसादरदेषाइकै दियेदिव्यआसनसुपास सावकासअतिआछेआछेबीछेबीछेबिछौनाबिछाइकै ॥ ३ ॥ भूप तिकिसोरदुहुओरबीचमुनिराउदेषिबेकोदाउदेषोदेषिबोबि हाइकै उदयसयलसोहैसुंदरकुअरजोहैमानौभानुभोरभूरि किरनिछपाइकै ॥ ४ ॥ कौतुककोलाहलनिसानगानपुरनभ बरषतसुमनसुबिमानरहेछाइकै हितअनहितरतबिरतबिलो किबालप्रेममोदमगनजनमफलपाइकै ॥ ५ ॥ राजाकीरजाइ पाइसचिवसहेलीधाईसतानंदल्याएसियसिबिकाचढ़ाइकै रू पदीपिकानिहारिमृगमृगीनरनारिबिथकेबिलोचननिमेषेबि सराइकै ॥ ६ ॥ हानिलाहुअनषउछाहुबाहुबलकहिबंदीबो लेबिरदअकसउपजाइकै दीपदीपकेमहीपआयेसुनिपैजपनु

कीजैपुरुषारथकोऔसरभोआइकै ॥ ७ ॥ आनाकानीकठ
हँसीमुहाचाहोहोनलागीदेषिदसाकहतबिदेहबिलषाइकै ।
घरनिसिधारिऐसुधारिएआगिलैकाजपूजिपूजिधनुकीजैबि-
जयबजाइकै ॥ ८ ॥ जनकबचनछुएबिरवालजाकैसेबीररहे
सकलसकुचिसिरनाइकै तुलसीलषनमाषेरोषेराषेरामरुष
भाषेम्टदुपरुषसुभायनरिसाइकै ॥ ९ ॥ ८४ ॥

टी० । राजा द० आपने आपने थल कहैं अपने अपने दरजाके माफिक बानिक बेष ॥ १ ॥ ललाम सुंदर बिकसत मुख प्रसन्न मुख ॥ २ ॥ सानुज कुश केतु सहित बीछे बीछे चुने चुने ॥ ३ ॥ देषिबो बिहाय कै औंर ओर देषिबो छोड़ि कै मानो दिव्य आसन नही हैं उदयाचल है ता पर सुंदर कुँअर जो हैं सो मानो भोर के सूर्य हैं सो अपना सब किरिन छपाय कै सोभत हैं इहां किरिन प्रताप है ॥ ४ ॥ रत अनुरागो बिरत बिरागी ॥ ५ ॥ श्री जानकी जू को रूप रूपी दीपक को देषि कै लग लगी सदृश नर नारि ए कटक ह्वै थकित भए ॥ ६ ॥ न टूटिवे ते बल प्रताप बीरता की हानि औ टूटिवे ते चिभुअन जै समेत बैदेही को लाभ जेहि पिना-क बिनु नाक किए नृप अनख धनु तोरै सो बरै जानकी उछाह राज समाज आज जेहि तोरा बाऊं बल ए सब कहि कै रावन बानासुरो भागि गए यह कहना अकस उपजावना है पै जपन अति प्रतिज्ञा ॥ ७ ॥ आना कानी इसारा से अर्थात् पिनाक के ओर बतावन लगे कठहँसो बेहँसी आएहुँ सब को कहत हैं मुहां चाही पहिले तुम उठो पहिले तुम उठो अस कहन लगे ॥ ८ ॥ छुए से जैसे लजारू को बिरवा सकुचै तैसे श्री जनक के बचन से सकल बीर सिर नाय के सकुचि रहे लछिमन जू अमरखे औ रोख युक्त भए श्रीरघुनाथ को रूष राखे स्वभाविकै रिसाय कै नही कठोर औ कोमल बचन भाषे ॥ ९ ॥ ८४ ॥

मू० । भूपतिविदेहकहीनीकीऐजोभईहै बड़ेहीसमाजआजुराज-
निकीलाजपतिहांकआंकएकहीपिनाकहीनिलईहै ॥ १ ॥ मे
रोअनुचितनकहततरिकाईवसपनपरमितिऔरभांतिसुनिग
ईहै नतरुप्रभुप्रतापउतरुचढ़ाएचांपदेतोपैदेषाइबलफलपाप
मईहै ॥ २ ॥ भूमिकेहरैआउषरईआभूमिधरनिकेबिधिबि
रचैप्रभाउजाकोजगजईहै बिहंसिहियहरषिहटकेलषनरा
मसोहतसकोचसीलनेहनारिनईहै ॥ ३ ॥ सहमीसभासक
लजनकभएबिकलरामलषिकौसिकअसीसआज्ञादईहै तुलसी
सुभायगुरुपायलागिरघुराजऋषिराजकीरजाइमाथेमानिलई
है ॥ ४ ॥ ८५ ॥

टी० । लछिमन जी की उक्ति है भूपति विदेह ने जो भई है सो कही ताते ठीके है आंक एक ही कहैं निश्चय करि हांकि कहैं ललकारि कै ॥ १ ॥ प्रतिज्ञा की मर्जादा और भांति ते सुनि गई है अर्थातजो तोरे सो बरे कदापि यह नहीं होता तो भूमि के हरैआ औ भूमि धरन के उषरैआ को जीत निहार जेहि को प्रभाव जगत मे विधि विरचे हैं तेहि उतरे चांप को प्रभु के प्रताप ते चढाइ कै अपने बल को देखाय देते पर याको फल पाप मई है भाव बड़े के रहते छोटे का प्रथम विवाह होना अनुचित है अर्थात छोटा बड़ा दोउ देव पितर के काम लायक नहीं रहत तथाच स्मृतिः दाराग्निहोचसंयोगं कुरुतेयोग्रजेस्थिते । परिवेतासविज्ञेयः परिवित्तिस्तुपूर्वजः ॥ यह कहनो अनुचित रहा पर मेरो कहनो अनुचित नहीं है क्यौंकि लरिकाई बस कहत हौं ॥ २ ॥ हृदय में हरषि के मुसुकाय के श्री रामः ज लषन को बरजे तब संकोच शील औ नेह ते श्री लषन लाल की नारि कहैं गर्दन नई भई सोही ३ ४ ॥ ८५ ॥

मू० । सोचतजनकपोचपैजपरिगईहै । जोरिकरकमलनिहोरिक-
है कौसिकसोआयसुभोरामकोसोमेरेदुचितईहै ॥ १ ॥ वा

नजातुधानपतिभपदीपसातहूके लोकपविलोकतपिनाकभूमि लईहै । जोतिलिंगकथासुनोजाकोअंतपायेबिनु आयेबिधि-हरिहारिसोईहालभईहै ॥ २ ॥ आपुहीबिचारिएनिहारि येसभाकीगति बेदमरजादमानौहेतुवादहईहै । इन्हकेजितौ हैमनसोभाअधिकानी तनमुपनकीसुखमासुषदसरसईहै ॥ ३ रावरोभरोसोबलुकैहैकोउकियेछलकैधोंकुलकेप्रभावकैधौ लरिकइहै । कन्याकलकीरतिबिजयबिस्वकीबटो रिकैधोंकर तारइन्हहीकोनिरमईहै ॥ ४ ॥ पनकोनमोहनबिसेषचिंता सीताहूकीलुनिहैपैसोईसोईजोईजेहिबईहै । रहैंरघुनाथकी निकाईनीकीनोकीनाथहाथसोतिहारेकरतूतिजाकीनईहै ५ कहिसाधुसाधुगाधिसुअनसराहेराउमहाराजजानिजियठौ-कभलीदईहै । हरषेलखनहरखानेबिलषानेलोगतुलसीमुदि तजाकोराजारामजईहै ॥ ६ ॥ ८६ ॥

टी० । सोचत इ० । जनकजू सोचत हैं कि कठिन पेच परि गई है भाव यह प्रतिज्ञा जो किया सो भला नहीं किया जनक महा-राज हस्त कमल जोरि कै निहोरा करि बिस्वामित्र जू सो कहत हैं कि आपने जो रघुनाथ को आज्ञा दिया तामे हमको दुचिताई है अब दुचिताई को हेतु कहत हैं ॥ १ ॥ बाणा सुर रावण औ साती दीप के राजा औ लोक पालन के देषत ही पिनाक ने भूमि को लई है अर्थात् भूमि को पकडि लई है जोति लिंग को अंत नही है यह कथा सुनि के अंत लेइ वे को ब्रह्माजू ऊपर को गये औ बिष्णु जू पाताल को गये पर तेहि लिंग को अंत न पाये ब्रह्मा बिष्णु हारि फिरि आए सोई हाल इहां भई है भाव पिनाक केतना भारी है याको अंत कोऊ नहीं पावत है ब्रह्मा बिष्णु हारि गए लिंग का अंतन मिला यह काशीखंड में लिखा है ॥ २ ॥ हमारही कहने पर नहीं आप भी बिचारिए और सभा की दसा देषिए कि

कि कैसी ह्वै रही है जैसे बेद के मजीद को नास्तिक बाद नासत है भा वतसपिनाक ने ओहत करि दिआ है अब श्रीराम का वर्णन करत हैं कि श्रीराम के मन जितौंहैं है औ तन मे सोभा अधिकाय रही है औ मुख की सुषद सोभा सरसाय रही है इहाँ इन्ह के औ मुख नए जो बङ्क वचन शब्द हैं सो आदर मे हैं वा दोऊ भाइन मे लगाय लेना । ३ । सो जितौ हैं मन आदि आप के भरोसा के बल सों है कैधौं कोऊ देवता हैं छलते मनुष्य बने है कैधों अपने कुल के प्रभाव से अर्थात् सूर्य वंशी हैं तेंहिते तेजयुक्त हैं कैधो लरिका ई अर्थात् कुछ आगे पीछे को बिचार नही है कन्या सुंदर कीर्ति औ विश्वकी विजय बटोरिवे कों कैधौं बिधाता ने इनही को निर्मान कियो है ॥ ४ ॥ हे नाथ हमकों अपने प्रतिज्ञा करने को मोह नही है और कोको क है सीता ह्व की विशेष चिंता नही है कदापि विश्वामित्र जू पूछैं कि क्यों नही है।तापर कहत हैं सोई सोईकाटि हैं जोई जोई जेहि ने बोया है भाव जीव कर्म वस दुष सुष भागी है पर नीकी नीकी जो रघुनाथ की निकाई है सो बनी रहै यह बात की विशेष चिन्ता है सो आप के हाथ है आप कैसे हैं कि करनी नई है भाव आजुलो ब्रह्मा छोडि सृष्टि कोऊ न करि सके सो आप किए तो यह कौन बडी बात है वा आप अन होनी करनि हार हैं ॥ ५ ॥ बिश्वामित्र जू ने आप की बात साधु है साधु है अस कहि के राजा कों सराहे फिर कहे कि हे महाराज आप के जिय को जानी आप ने भला ठहराय राखा है भाव रघुनाथ को निकाईए मे सब की भलाई है यह श्री जनक श्री बिश्वा-मित्र को सम्बाद सुनि लषन हर्षे औ बिलखाने भए जो लोग रहे सो हर्षाने गोसांई जी कहत हैं कि यह आश्चर्य नही है जाको जई राजा राम हैं सोई मुदित होत हैं भाव और के रोअते रोअत जन्म बीतत है ॥ ६ ॥ ८६ ॥

मू० । सुजनसराहीजोजनकबातकहीहै रामहीसुहानीजानिमु-
निमनमानीसुनिनीचमहीपावलीदहनबिनुदही है॥ १ ॥क
हैगाधिनंदनमुदितरघुनंदनसोन्हपगतिअगहगिरानजातिग-
ही है देषेसुनेभूपतिअनकझूठेझूठेनामसांचेतिरहुतिनाथसा
षीदेतमहीहै॥ २ ॥ रागउबिरागभोगजोग२वतमनुजोगी
जागबलिकप्रसादसिद्धिलहीहै तातेनतरनितेनसीरेसुधाक
रहूतेसहजसमाधिनिरुपाधिनिरवहीहै॥ ३ ॥ ऐसेउअगा
धबोधरावरेसनेहबसबिकलबिलोकियतदुचितईसही है काम
धेनुकृपाकुलसानीतुलसीसउरपनसिसुकेरिमरजादाबांधीर-
हीहै ॥ ४ ॥ ८७ ॥

टी० । जो श्री जनक जू की कही बात है ताको सुजनो ने स-
राही औ मुनि को मन मानी भई बात है अस जानि श्री राम को
सोहात भई पर सो बात सुनि के नीच जो महिपावली है सो बिनु
अग्नि के जरिजात भई ॥ १ ॥ गाधिनंदन रघुनंदन सो हर्षित कहत
हैं कि मिथिलेस की गति गहिवे जोग नही है ताते बातहू नही
गही जात है नाम मात्र के झूठे झूठे अनेक भूपति देखे पर सांचे
भूपति तिरहुति नाथही हैं या बात की साखी पृथ्वी देति है भाव
कन्या उपजाय कै ॥ २ ॥ प्रीति औ वैराग्य भोग औ जोग सब मह
राज के मन को जोगवत हैं भाव जेहि के ओर तनिक दृष्टि करत
सो सीघ्र हाजिर ह्वै जात है जोगो जागबलिक के प्रसाद ते यह
सिद्धता को लही है ताते सूर्य ते तप्त नही होत हैं औ और को
को कहै चन्द्र मोते सीतल नही होत हैं उपाधि रहित स्वाभाविक
समाधि को निर्वाह करत हैं वायु आदि बस करि जो समाधि सो
उपाधि सहित ॥ ३ ॥ हे श्री राम जू आप के सनेह के बस ऐसेऊ
अगाध बोध वाले जनक महाराज कों बिकल बिलोकिअत है ताते
अस जानि परत है कि इन के मन मे निश्चै दुचितई है यह सुनि

के प्रतिज्ञा रूपी बछरा को देषि कै कृपा रूपी काम धेनु रघुनाथ के उर मे हुलसानी पर बिस्वामित्र जू की आज्ञा रूप मर्जादा मे बांधी है ताते ठहर गई ॥ ४ ॥ ८७ ॥

मू० । ऋषिराजराजाआजुजनकसमानको आपएहिभांतिप्रीतिस
हितसराहियतरागीऔबिरागीबड़भागीऐसोआनको ॥ १ ॥
भूमिभोगकरतअनुभवतजोगसुषमुनिमनअगमअलषगतिजा
नको गुरहरपदनेहगेहबसिभोबिदेहअगुनसगुनप्रभुभजन
सयानको ॥ २ ॥ कहनिरहनिएकबिरतिबिबेकनीतिबेदबुध
संमतपथीननिरबानको बिनुगुनकीकठिनगांठजड़चेतनकी
छोरीअनायाससाधुसोधकअपानको ॥ ३ ॥ सुनिरघुबीरको
बचनरचनाकीरीतिभएमिथिलेसमानोदीपकबिहानको मि-
थ्यौमहामोहजीकोछूटोपोचसोचसीकोजान्यो अवतारभयो
पुरुषपुरानको ॥ ४ ॥ सभासूपगुरनरनारिपुरनभसुरसबचि
तवतमुखकरुनानिधानको एककहिएककहतप्रगट एकप्रेमबस
तुलसीसतोषिएसरासमईशानको ॥ ५ ॥ ८८ ॥

टी० । श्री रघुनाथ की उक्ति ऋषि इ० हे रिषिराज आजु श्री जनक समान राजा को है काहे ते कि आप एहि भांति ते प्रीति सहित सराहियत है तो रागी औ बिरागिन के मध्य मे बड़ भागी ऐसो आन को है ॥ १ ॥ भूमि भोग करत अर्थात् राज भोग तो करत हैं पर वाही मे जोग सुष को अनुभवत हैं इन की गति मन न सील जे मुनि तिनहूं के अगम है और को जानै गुरु औ हर के पद मे नेह है जाको घर मे रहि के बिदेह ह्वै रहे हैं निर्गुन औ सगुन रूप प्रभु के भजन मे अस आन कौन सयान है ॥ २ ॥ कहनि रहनि सब एक भांति की है बैराग्य ज्ञान औ राजनीति सब बेद बुध संमत है इन को औ मोक्ष के पथिक हैं अर्थात् स्वर्गादि के नही जो बिनु गुन की कठिन गांठि जड़ चेतन की है

ताको वे परिश्रम छोरि डारी है औ अपने खरूप को साधु कहैं भली भांति सोध कहैं ॥ ३ ॥ दीपक बिहान को कहिवे को यह भाव कि अपनी बड़ाई सुनि सकुचे ॥ ४ ॥ नृप जनक महाराज गुरू बिश्वामित्र जू औ पुर के नर नारि ॥ ५ ॥ ८८ ॥

मू० । राग मारू । सुनोभैश्राभूपसकलदैकानबज्ररेषगज दसनजनकपनवेदबिदितजगजान ॥ १ ॥ घोरकठोरपुरारि सरासननामप्रसिद्धपिनाकु जोदसकंठदियोबावोजेहिहरगि रिकियोमनाकु ॥ २ ॥ भूमिभालभ्राजतनचलतसोंज्योबिरंचि कोश्रांकुधनुतोरैसोदूबरैजानकीराउहोंदूकीरांकु ॥ ३ ॥ सुनिश्रामर्षिउठेअवनीपतिलगेबचन जनुतीरटरैनचांपकरो अपनोसोमहामहाबलबीर ॥ ४ ॥ नमितसीससोचहिसलज्ज सबश्रीहतभएसरीर बोलेजनकबिलोकिसीयतनदुषितसरोष अधीर ॥ ५ ॥ सप्तदीपनवखंडभूमिकेभूपतिवृंदजुरे । बडो लाभुकन्याकीरतिकोजहँतहँमहिपमुरे ॥ ६ ॥ डग्योनधनु जनुवीरबिगतमहिकोंधौकहुसुभटदुरे । रोषेलषनबिकटभृ कुटीकरिभुजअरुअधरफुरे ॥ ७ ॥ सुनहुभानुकुलकमलभा नुजोअबअनुसासनपावों । कोवापुरोपिनाकुमलिगुनमंदर मेरुनवावों ॥ ८ ॥ देखोनिजकींकरकोकौतुकक्योंकोदंडच ढावों ॥ लैधांवोभंजोम्टनालज्योंतौप्रभुअनुगकहावों ॥ ९ ॥ हरषेपुरनरनारिसचिवनृपकुअरकहेबरबैन । म्टदुमुसुकाइ रामबरज्योप्रियबंधुनयनदैसैन ॥ १० ॥ कौसिककह्योउठहु रघुनंदनजगबंदनबलश्रैन । तुलसिदासप्रभुचलेम्टगपतिज्यों निजभगतनिसुषदैन ॥ ११ ८९ ॥

टी० बंदी की उक्ति सुनो दू० । वज्र पर की रेषा जैसे नही मिटति है औ हाथी के दात जैसे फेर भीतर नही जात तस जनक महाराज को प्रतिज्ञा है वेद मे विदित है औ सब जग जानत है कि पुरारि

को सरासन अति कठोर है जाको पिनाकअस नाम प्रसिद्ध है जो पिनाक को रावन बाँ बं दियो अर्थात् सन्मुख न भयो जेहि रावन ने कैलास को लघु कियो अर्थात् ढेला सम उठाय लियो ॥ १ ॥ २ ॥ भाल पर भ्राजत जो बिरंचि को अंक है सो जैसे नहीं चलत तैसे भूमि ते नहीं चलत है तेहि धनु को जो तोरै सो राजकुमारी को बरै चाहै राजा होय चाहै रंक होय ॥ ३ ॥ महा महा बल बीर जो रहे सो अपनो सो किए अर्थात् जेतना पराक्रम रहा तेतना किए पर चांप न टरेउ महा महा बल बीरन को चांप अपनो सो कियो अर्थात् जड ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ जह तह महिप मुरे कहैं जहां ते उठे रहेत हैं फेरि आइ बैठे ॥ ६ ॥ फुरे फरके ॥ ७ ॥ ८ ॥ क्यौं कहैं कैसे म्टनाल कमल दण्ड अनग सेवक ॥ ९ ॥ १० ॥ अयन गृह म्टगपति सिंह ॥ ११ ॥ ८९ ॥

मू० । जबहिसबन्टपतिनिरासभए गुरुपदकमलबंदिरघुपतितबचांप समीपगये ॥ १ ॥ स्यामतामरसदामबरनवपुउरभुजनयनबिसाल । पीतबसनकटिकलितकंठसुंदरसिंधुरमनिमाल ॥ २ । कलकुंडलपल्लवप्रसूनसिरचारु चौतनीलालकोटि मदनछबि सदनबदनबिधुतिलकमनोहरभाल ॥ ३ ॥ रूपअनूपबिलोकतसादरपुरजनराजसमाजु लषनकह्योथिरहोहुँधरनिधरु धरनिधरनिधरआजु ॥ ४ ॥ कमठकोलदिग्गदंतिसकलअंग सजगकरहुप्रभुकाजु । चहतचपरिसिवचांपचढ़ावनदसरथको जुबराजु ॥ ५ ॥ गहिकरतलमुनिपुलकसहितकौतुकहिउठादूलियो । न्टपगनमषनिसमेतनमितकरिसजिसुषसबहिदियो ॥ ६ ॥ आकरष्यौसियमनसमेतहरिहरष्यौजनकहियो । भंज्य भ्टगुपतिगर्वसहिततिहुलोकबिमोहकियो ॥ ७ ॥ भयोकठिनकोदंडकोलाहलप्रलयपयोदसमानचौकेंशिवविरंचि दिसिनायकरहेमूंदिकरकान ॥ ८ ॥ सावधानह्वैचढेविमान

नचलेबजाइनिसान। उसगिचल्यौआनंदनगरनभजयधुनिमं गलगान ॥ ६ ॥ विप्रवचनसुनिमषीसुआसिनिचलीजानकि हिल्याइ। कुअरनिरषिजयमालमेलिउरकुवरिरहीसकुचाइ ॥ १० ॥ बरषहिसुमनअसीसहिसुरमुनिप्रेमनहृदयसमाइ । सीयरामकीसुंदरतापरतुलसिदासबलिजाइ ॥ ११ ॥ ६०

टी० । जबहिंइ ० ॥ १ ॥ तामरस कमल दाम समूह कटि कलित कटि मे धारन किए सिंधुर मनि गज मुक्ता ॥ २ ॥ कल सुंदर चौतनी टोपी कोटि मदन छबि सदन कोटि काम के छवि के गृह ॥ ३ ॥ धरनि धर शेष धरनी पृथ्वी धरनि धर पर्बत ॥ ४ ॥ कच्छप शूकर भगवान दिग्गज सकल अंग तेस जग होय के प्रभु के काज करहु भाव कोई अंग तें ढीला हो जु गे तो नम ह्वारि सको गे चपरि उत्साह करि ॥ ५ ॥ गहि इ० आकर्षेउ इ० यह दूनो तुकन को भाव नाटक के अनुमार हैं । उत्त्विप्रंसहकौशिकस्यपुलकैःसार्द्धमुपनी मितंभूपानांजनकस्यसंशयधियासाकंसमास्फालितम्बैदेहीमनसासमंच सहसाकृष्टंततोभार्गवप्रौढ़ाहंकृतिदुर्मदेनसहितंतद्भग्नमैशंधनुःअस्यार्थः अथधनुर्भंगेनानारसानुभावात चिचरसंदर्शयितुंपद्यमवतारयति उत्त्वि प्तमितिकौशिकेवत्सलरसोजातःअचहर्षःसंचारीहर्षात्पुलकाः सात्विक इतिज्ञानम्भूपेभयानकरसःअचदैन्यंसंचारीदैन्यादेवमुखनमनंअचभी षणाविविघातचप्रभावेनैवरामेभीषणत्वंजनकेकरुणारसोजातः अचग्ला निः संचारीसाचाधेर्जीताआध्यनुभावःसंशयइतिज्ञानंबैदेह्यांमधुररसो जातः मनआकर्षणमेवाचानुभावः रामेवीररसःअचस्वद्वोद्दीपनंसापरसु रामागतोतिज्ञानंअचसर्वरसानामुद्दीपनविभावोरामएव ॥ ६ ॥ ७ ॥ कोलाहल महाशब्द पयोद मेव दिसि नायक दिक्पाल ॥ ८ ॥ निसान नगारा ॥ ६ ॥ विप्र सतानंद ॥ १० ॥ ११ ॥ ६० ॥

मू० । राग मलार । जबदोउदसरथकुअरबिलोके । जनकनगरनर नारिमुदितमननिरषिनयनपलरोके । बयकिसोरघनतडित

बरनतननषसिषअंगलुभारे । देचितुकैहितुलै सबछविवितु बिधिनिजहाथसवारे॥ २॥ संकटनृपहिसोचअतिसीतहिभूप सकुचिसिरनाए । उठेरामरघुकुलकलकेहरिगुरुअनुसासन पाए ॥ ३ ॥ कौतुकहीकोदंडखंडिप्रभुजयअरुजानहिपाई । तुलसिदासकीरतिरघुपतिकीमुनिन्हतिहूपुरगाई ॥ ४ ॥ ९१ ॥

टी० । जवदू ० जब दोऊ चक्रवर्ती कुमार कों देषे तब देषि करि जनक पुर के नर नारि अपने निमेष कों रोके औ मुदित मन भए ॥ १ ॥ ते दोऊ राजकुमार कैसे हैं कि किशोर अवस्था औ मेघ औ तडिता सम तन को वरण है औ नष ते सिष लों सब अंग लो भाव निहारे हैं कै हितु कहैं प्रीति करि सब जगत के छबि रूप धन लैकै चित्त दै कै ब्रह्मा ने अपने हाथ ते संवारे हैं जिनको २ देषि कै श्री जनक महा राज कों लोस भयो अर्थात् काहे को अस-प्रण किआ औ श्री जानकी जी को अति सोच भयो औ राजा सब सकुचाय के सिर नवाये भाव ए दोऊ भाई बडे तें जस्वी देषि परत हैं कदापि इन से धनु उठा तो हम लोगों के मुह मे मसि लगी तब गुरु अनु सासन पाए तें सुंदर जो रघु कुल है तिन मे श्रेष्ठ जो श्रीराम सो उठे ॥ ३ ॥ ४ ॥ ९१ ॥

मू० । राग टोडी । मुनिपदरेनुरघुनाथमाथेधरीहै रामरूपनिरषि लषनकीरजाइपाइधराधरधरनिसुसावधानकरीहै ॥ १ ॥ सुमिरिगनेसगुरगौरिहरभूमि सुरसोचतसकोचतसकोचीवा नखरीहै। दीनबंधुकृपासिंधुसाहसिकसीलसिंधुसभाकोसको चकुलहूकीलाजपरीहै॥ २ ॥ पेषिपुरुषारथपरखिपनप्रेमनेम सीयहीयकीबिशेषिबड़ीखरभरीहै दाहिनोदियोपिनाकुसह मिभयोमनाकुमहाव्यालबिकलबिलोकिजनुजरी है॥ ३॥ सुर हरषतबरषतफूलवारवारसिद्धमुनिकहतसगुनशुभघरीहै। रा मबाहुबिटपबिसालबोड़ीदेखियतजनकमनोरथकलपबेलिफ-

लीहै ॥ ४ ॥ लख्योनचढ़ावतनतानतनतोरतह्नंघोरघुनिसुन
मिवकीसमाधिटरीहै । प्रभुकेचरितचारुतुलसीसुनतमुखएक
हीसुलाभमवहांकोहानिहरीहै ॥ ५ ॥ ६२ ॥

टी० । बिस्वामित्र जू के चरण की धूरी रघुनाथ ने माथे पर धरी है रघुनाथ की रूप देषि कै श्री लछिमन जू आज्ञा दिए ॥ दिसिकुंजरहुकमठअहिकोला । धरहुधरनिधरिधीरनडोला ॥ सो आज्ञा पाय कै धराधर जो कच्छपादि सो भूमि कों थिर करी है भाव लघुतरनी सीडगम गाय उलटि न जाय ॥ १ ॥ अब जानकीजू की घर भरी कहत हैं कि गणेश गुरूगौरि हर भूमिसुर कों सुमिरि कै सोचत हैं कहंधनु कुलिसहुचाहिकठोरा कहंस्यामलम्रदुगातकिसोरा । बिधिकेहिभांतिधरौंउरधीरा सिरससुमनकनबेधिअहीरा॥ औ देवतन को संकोच देत हैं की आप लोगन की सुद्ध संकोची बान है भाव संकोच मे परि के जे न होनि हार ताहू के करनि हारे हैं हे दीनबंधु कृपासिंधु हे साहसिक अर्थात् सीघ्र कार्य सिद्ध करैया औ हे सील के समुद्र हम को सभा को संकोच औ कुल हू को लाज परी है भाव चित्त तो चाहत है कि बिनु धनु तोरे जय माल डार देउँ पर आजु लों अस हमारे कुल मे काहू कन्या ने नही किया है यह जो सिय हिय की बिसेष घर भरी है ताको औ राजन को पुरुषारथ देषि के औ श्री जनक जू को प्रेम को नेम औ प्रतिज्ञा की परिच्छा करि के श्री राम जू ने पिनाक कों दाहिना दियो अर्थात् प्रदच्छिण कियो डरि कै पिनाक लघु ह्वै जात भयो जैसे जरी को देषि कै सर्प बिकल होय सिकुर जात देवता हर्षत संते बार बार फूल वर्षत हैं औ सिद्ध सगुन औ मुनि सुभ घरी कहत हैं पुनि सिद्धादि कहत हैं कि श्री राम बांह रूप विशाल वृच्छ मे श्री जनक जू की मनोरथ रूपी कल्प लता जो फैली रही ताकों फरी देषिअत है ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ एकही सुंदर लाभ नें

सबही की हानि को हरन कारी है ॥ ५ ॥ ९२ ॥

मू० । रागसारंग । रामकामरिपुचांपचढ़ायो । मुनिहिपुलकआनं
दनगरनभनिरषिनिसानबजायो ॥ १ ॥ जोहिपिनाकबिनुनाक
कियेन्टप सबहिबिषादबढायो । सोईप्रभुकरपरसतटूट्यो जनु
हुतोपुरारिपठायो ॥ २ ॥ पहिराईजयमालजानकी जुवति-
न्हमंगलगायो । तुलसीसुमनबरषिहरषेसुर सुजसतिहुपुर
छायो ॥ ३ ॥ ९३ ॥

टी० । रामदू० ॥ १ ॥ हुतोपुरारिपढ़ायो भाव यो शिव जी प-
ढ़ाय दिए रहे कि यो राम के छुअते टूटि जाना ॥ २॥ ३ ॥ ९३

मू० । राग टोड़ी । जनकमुदितमनटूटतपिनाकके । बाजेहैबधाव
नेसुहावनेमंगलगानभयो सुखएकरसरानीराजारांकके १ ॥
दुंदुभीबजाइगाइहरषिबरषिफूलसुरगन नाचेनाचेनायकहु
नाकके । तुलीमहीसदेखिदिनरजनो सजैसेसूनेपरेसूनसे
मनोमिटायेआंकके ॥ २ ॥ ९ ॥ ९४ ॥

टी० । जनकदू० राँक दरिद्र ॥ १ ॥ नाक के नायक इन्द्र दिन में जैसे चंद्रमा देखि परत हैं तैसे राजा सब देषि परे अब दूसरो उ-पमा कहत हैं जैसे अंक के मिटाए सुन्न सूना परत है अर्थात् बे हिसाब ह्वै जात है तस भए ॥ २ ॥ ९४ ॥

मू० । लाजतोनसाजिसाजराजाराउरोषेहै । कहाभोचापचढ़ाएव्या
हुह्वैहैबडेखायेबोलैखोलैसेलअसिचमकतचोषेहै ॥ १ ॥
जानिपुरजनत्रसेधीरदैलषनहसेबलइन्हकेपिनाकनोकेनाषे
जोषेहै । कुलहिलजावैबालबालिसबजावैगालकैधोकूरकाल
बसतमकिचिदोषेहै ॥ २ ॥ कुअरचढ़ाईभौंहैअबकोबिलोकै
सौहैंजहाँतहाँभेअचेतषेतकेसेधोषेहै । देषेनरनारिकहैंसाग
षाइजाएमायबाहुपीनपावरनिपीनाखायपोषेहै ॥ ३ ॥प्रमुदि
तमनलोककोकनदकोकगनरामकेप्रतापरविसोचसरसोषेहै ।

तबकेदेषैआतोषेतवकेलोगनिभलेअबकेसुनैआसाधुतुलसीह्र
तोषेहै ॥ ४ ॥ ६५ ॥

टी० । लाजइ० । लाज तो नहीं है पर राजा जे राउ हैं ते युद्ध के साज साजि के क्रोध युक्त भए हैं आपुस मे कहत हैं चाँप चढ़ाये तें कहा भयो यह विवाह वडे खाए ते होइगो अस बोले मिआन चोखे तरवार खींचि लिए औ सांग लिए चमकि रहे हैं अर्थात राजा सब ॥ १ ॥ बाल बालि समूर्खोते मूर्ख तमकिचि दोखे हैं चिदोष के वस अक वक करि रहे हैं ॥ २ ॥ ३ ॥ रघुनाथ के प्रताप रूपी सूर्य ने सोच रूपी सर कों सोखि लिए तातें लोक रूप कमल औ चक्र वाक गन हर्षं ॥ ४ ॥ ६५ ॥

मू० । जयमालजानकीजलजकरलईहै । सुमनसुमंगलसगुनकोब-
नाईमंजुमानऊमदनमालीआपुनिरमईहै ॥ १ ॥ राजरुषल
बिगुरभूसुरसुआसिनिन्हिसमयसमाजकीठबनिभलीठईहै ।
चलीगानकरतनिसानबाजेगहगहेलहलहेजोयनसनेहसरस
ईहै ॥ २ ॥ हनीदेवदुंदुभीहरषिबरषतफूलसुफलमनोरथभो
सुखमुचितईहै । परजनपरिजनरानीराउप्रमुदितमनसाअ-
नूपरामरूपरंगरईहै ॥ ३ ॥ सतानंदसिषसुनिपायपरिपहिरा
ईमालसियपियहियसोहतसोभईहैं । मानसतेनिकसिबिसा
लसुतमालपरमानऊमरालपांतिबैठीबनिगईहै ॥ ४ ॥ हित
नकोलाहकोउछाहकीबिनोदमोदसोभाकीअवधिनहींअव-
अधिकईहै । यातेबिपरीतिअनहितनकोजानिलीबीगतिकहै
प्रगटषुनसखासोखईहै ॥ ५ ॥ निजनिजवेदकीसप्रेमजोगछे
ममईमुदितअसीसविप्रविदुषनिदईहै । छवितेहिँकालकीकृ-
पालसीतादूलहकीऊलसतहिएतुलसीकेनितनईहै ॥ ६ ॥ ६६

टी० । जयमालइ० । जलजकर करकमल जयमालामऊआ औ दूब की है एवंतयोक्तेतमवेत्यकिंचिद्दिसंसिदूर्वाकमधकमाला ऋतुप्र-

णामक्रियथैवतन्वीप्रत्यादिदेशैनमभाषमाणादूतिरघुवंशे ॥ १ ॥ लहै लहेआनंदयुक्त ॥ २ ॥ ३ ॥ इहां श्री रघनाथ तमाल हैं मराल पांति जय माल है ॥ ४ ॥ खुनुसखांसीखई है क्रोध रूप छई वालीखांसी रोग है ॥ ५ ॥ निज निज वेद के आसोवाद के मंच से आसिर्वाद दिए ॥ ६ ॥ ८६ ॥

मू० । रागकेदार । लेऊरीलोचननिकोलाऊ कुवरसुंदरमावरोस सखिसुमुखिसादरचाऊ ॥ १ ॥ खंडिहरकोदंडठाढेजानुलंबितवाऊ । रुचिरउरजयमालराजतिदेतसुखसवकाऊ ॥ २ ॥ चितैचितहितसहितनषसिखअंगअंगनिवाऊ । मुक्ततनिजसियरामरूपविरंचिमतिहिसराऊ ॥ ३ मुदितमनवरवदनसोभाउदितअधिकउछाऊ । मनऊ दूरिकलंककरिससिसमरस्ह्योराऊ ॥ ४ ॥ नयनसुखमाअयनहरतसरोजसुंदरताऊ । वसततुलसीदासउरपुरजानकीकोनाऊ ॥ ५ ॥ ८७ ॥

टी० । लेऊ इ० । हे सखि हे सुमुखि आदर सहित चाऊ कहैं देखु ॥ १ ॥ जानु लंबित बाहू आजानुवाऊ ॥ २ ॥ नखतेसिखलोंजो सब अंग अंग का निवाह है अर्थात सब अंग जस चाहीत सहै तिनको प्रीति सहित चित दै चितै के अपना सुकृत श्री सियराम को रूप औ ब्रह्मा को बुद्धि कोस राहना करू ॥ ३ ॥ हर्षित मन है औ उछाह करि श्रेष्ठ वदन की सोभा अधिक प्रकाशित है मानो शशि ने कलंक को दूरि करि समर मे राहु कों माख्यो है इहां राहु पिनाक है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८७ ॥

मू० । राग सारंग । भूपकेभागकीअधिकाई । टूट्योधनुषमनोरथपूज्योबिधिसबबातबनाई ॥ १ ॥ तबतेदिनदिनउदोजनकोजबतेजानकिजाई । अबयहव्याहसुफलभयोजोवनत्रिभुअनविदितबड़ाई ॥ २ ॥ बारबारऐहैंपऊनाईरामलषनदोउभाई । एहिआनंदमगनपुरबासिन्हदेहदसाबिसराई ॥ ३ ॥ सादर

सकलचिलोकतरामहिँकामकोटिछविछाई। एहसुषसमउस
माजएकमुखक्यौंतुलसीकहैगाई ॥ ४ ॥ ९८ ॥

टी० । भूप इ० । सुगम ॥ ९८ ॥

० । राग सोरठा । मेरेबालककैसेधौमगनिवहहिगे । भूषपियासमीतस्रमसकुचनिक्यौंकौसिकहिकहहिगे ॥ १ ॥ कोभोरहीउवटिअन्हवैहैकाढिकलेऊदैहै । कोभूषनपहिराइनिछावरिकरिलोचनसुषलैहै ॥ २ ॥ नयननिमेषनिज्योजोगवैनितपितुपरिजनमहतारी । तेपठएरिषिसाथनिसाचरमारनमषरषवारी ॥ ३ ॥ सुंदरसुठिसुकुमारसुकोमलकाकपक्षधरदोऊ । तुलसीनिरषिहरषिउरलैहौंबिधिह्वैहैदिनसोऊ ॥४॥
॥ ९९ ॥

टी० । माता की उक्ति मेरे इ० । सकुचनि संकोच ते ॥ १ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ काक पक्ष जुलुफ ॥ ४ ॥ ९९ ॥

मू० । रिषिनृपसीसठगौरीसीडारी । कुलगुरसचिवनिपुननेवनिअवरेबनसमुझिसुधारी ॥ १ ॥ सिरिससुमनसुकुमारकुअरदोउसूरसरोषसुरारी । पठएबिनहिसहाएपयादेहिकेलिबानधनुधारी ॥ २ ॥ अतिसनेहकातरिमाताकहैलषिसषिबचनदुषारी । बादिबीरजननीजीवनजगछत्रजातिगतिभारी ॥ ३ ॥ जोकहिहैफिरेरामलषनघरकरिमुनिमखरषवारी । सोतुलसीप्रियमोहिलागिहैज्यौसुभायसुतचारी ॥ ४ ॥ १०० ॥

टी० । रिषिइ० । वशिष्ट जू औ मंत्री सब बिचार मे बिचच्छन रहे पर अव रेव को काहूने समुझि के न सुधारी ॥ १ ॥ सुरारी राक्षस ॥ २ ॥ कातरि विह्वल ॥ ३ ॥ ४ ॥ १०० ॥

म० । जबतेलैमुनिसंगसिधाये । रामलषनकेसमाचारसषितबतेकछुअनपाये ॥ १ ॥ बिनुपानहीगवनफलभोजनभूमिसयनतरुछाहीं । सरसरिताजलपानसिसुनकेसाथसुसेवकना

ही ॥ २ ॥ कौसिकपरमकृपालपरमहितसमरथसुखदसुचा
ली । बालकसुठिसुकुमारसकोचीममुझिसोचमोहिआली
॥ ३ ॥ बचनसप्रेमसुमिचाकेसुनि सबसनेहबसरानी । तुल
सीआइभरततेहिऔसर कहीसुमंगलबानी ॥ ४ ॥ १ ॥

टी० । जबतेइ० ॥ १ ॥ २ ॥ सकोची कहिबेको यह भाव कि सं-
कोच ते कछु न कहैंगे ॥ ३ ॥ ४ ॥ १०१ ॥

मू० । सानुजभरतभवनउठिधाए । पितुसमीपसबसमाचारसुनिमु
दितमातुपहिआए ॥ १ ॥ सजलनयनतनपुलकअधरफरक-
तलखिप्रीतिसुहाई । कौसल्यालिएलाइहृदयबलि कहौक
छुहैसुधिपाई ॥ २ ॥ सतानंदउपरोहितअपने तिरहुतिना
थपठाए । षमकुसलरघुबीरलखनकी ललितपचिकाल्याए ॥
दलिताड़कामारिनिसिचरमषराषिबिप्रतियतारी । दैबिद्या
लैगएजनकपुरहैगुरुसंगसुषारी ॥ ४ ॥ करिपिनाकुपनसुता
स्वयंबरसजिन्नृपकटकवटोर्‌यौ । राजसभारघुबरम्टनालज्यौं
संभुसरासनतोर्‌यौ ॥ ५ ॥ यौंकहिसिथिलसनेहबंधुदोउअं
बुअंकभरिलीन्हे । बारबारमुखचूंबिचारुमनिबसननिछावरि
कीन्हे ॥ ६ ॥ सुनतसुहावनिचाहअवधघरघरआनंदबधा-
ई । तुलसिदासरनिवासरहसबससखीसुमंगलगाई ॥ ७ ॥
॥ १०२ ॥

टी० । सानुज इ० । पद सुगम ॥ १०२ ॥

मू० । राग कान्हरा । रामलषनसुधिआईबाजैअवधबधाई । ललि
तलगनलिषिपचिकाउपरोहितकेकरजनकजनेसपठाई ॥ १ ॥
कन्याभूपबिदेहकीरूपकीअधिकाई । तासुस्वयंबरसुनिसबै
आएदेसदेसकेन्टपचतुरंगबनाई ॥ २ ॥ पनपिनाकपबिमेरुते
गरुताकठिनाई । लोकपालमहिपालबानवानइतदसमुखस-
केनचांपचढ़ाई ॥ ३ ॥ तेहिसमाजरघुराजकेम्टगराजजगाई ।

भंजिसरासनसंभुकोजगजयकलकोरतितिथतियमनिसियपा-
ई ॥ ४ ॥ पुरघरघरआनंदमहासुनिचाहसुहाई । मातुमुदि
तमंगलसजैकहैमुनिप्रसादभएसकलसुमंगलमाई ॥ ५ ॥ गु
रुआयसुमंडपरच्योसबसाजसजाई । तुलसिदासदसरथबरा-
तसजिपूजिगनेसहिचलेनिसानबजाई ॥ ६ ॥ १०३ ॥

टी० । राम इ० । जनेस राजा ॥ १ ॥ २ ॥ प्रतिज्ञा किआ भया जो पिनाक है सो मेरु ते अधिक गुरु है औ बज्र ते अधिक कठिन है बान बानासुर ॥ ३ ॥ तेहि समाज मे रघुराज के म्रगराज जो श्री राम तिन को जगावत भए अर्थात् उत्साह बढ़ावत भए बीर विहीन मही मै जानो इत्यादि बचन ते तिन्हो ने शंभु को सरासन तोरि के जगत मे जय आदि पाई ॥ ४ ॥ इहां चाह को अर्थ वांच्छित है ॥ ५ ॥ इहां गनेश के पूजन हेतु मंडप बनाए ॥ ६ ॥ ॥ १०३ ॥

मू० । राग केदार । मनमेमंजुमनोरथहोरी । सोहरगौरिप्रसाद
एकतेकौसिककृपाचौगुनोभोरी ॥ १ ॥ मनपरितापचापचिं
तानिसिसोचसकोचतिमिरनहिथोरी । रविकुलरविअवलो
किसभासरहितचितबारिजबनविकसोरी ॥ २ ॥ कुअरकुअ
रिसबमंगलमूरतिन्रपदोउधरमधुरंधरधोरी । राजसमाजभू
रिभागीजिन्हलोचनलाहुलह्योइकठोरी ॥ ३ ॥ व्याहउछा
हरामसीताकोसुक्रतसकेलिबिरंचिरचोरी । तुलसिदासजा
नैसोईयहसुषजाकेउरबसतिमनोहरजोरी ॥ ४ ॥ १०४ ॥

टी० । मन इ० । मिथिला के सखिन की उक्ति है री सषी जो मन मे एक मनोरथ रह्यो अर्थात् श्री जानकी जी को बिवाह को सो हर गौरी के प्रसाद औ कौसिक के क्रपा ते चौगुनो भयो भाव चारो राज कुमारिन को व्याह देखिबे मे आयो ॥ १ ॥ प्रतिज्ञा करिबे को जो परिताप औ चांप की गरुआई को जो चिंता सोई

रात्रि रही औ तेहि करि जो सोच औ संकोच सोई तेहि राति को घनो अँधिआरो रह्यो तेहि करि जिनि के चित रूपी कमल सभा रूपी तडाग मे संपुटित भए रहे ते रविकुल रवि जो श्री राम तिन को देखि कै प्रफुल्लित भए ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ १०४ ॥

मू० । राजतरामजानकीजोरी । स्यामसरोजजलदसुंदरवर दुल हिनितड़ितवरनतगोरी ॥ १ ॥ व्याहसमयसोहतिवितानत रउपमाकहुँनलहतिमतिमोरी । मनहुमदनमंजुलमंडपम हंछविसिंगारसोभासोऊथोरी ॥ २ ॥ मंगलमयदोउअंगम नोहरग्रथितचूनरीपीतपिछोरी । कनककलसकहुँदेतभांव रीनिरषिरूपसारदभईभोरी ॥३॥ मुदितजनकरनिवासरहस बसचतुरनारिचितवहितृनतोरी । गाननिसानवेदधुनिसुनि सुरवरषतसुमनहरषकहैकोरी ॥ ४ ॥ नयननकोफलपाइप्रेम बससकलअसीसतईसनिहोरी । तुलसीजेहिआनंदमगनम नक्योंरसनावरनैसुपसोरी ॥ ५ ॥ १०५ ॥

टी० । राज दू० ॥ १ ॥ व्याह के समै मे दूलह दुलहिन मंडप मे सोभत हैं तिन की उपमा हमारी मति कतहू नही पावति है मानो काम रूप सुंदर मंडप के तरे छवि रूप दुलहिन औ शृंगार रूप दूलह हैं पर एहू कहते नही बनत है क्यों कि इन की सोभा थोरी है अर्थात् जानकी राम सम नहीं ॥ २ ॥ दुलहिन दूलह को सब अंग मंगल मै औ मनोहर हैं पीत पट को चूनरी के संग ग्रंथि बंधन भयो है ॥ ३ ॥ रहस आनंद ॥ ४ ॥ री सखी जेहि आनंद मे मन डूबि गयो ताको जिह्वा कैसे वरनै ॥ ५ ॥ १०५ ॥

मू० । दूलहरामसियादुलही री । घनदामिनिवरवरनहरनमनसुं दरतानषसिषनिवही री ॥ १ ॥ व्याहविभूषनवसनविभूषित सखिअवलीलषिठगिसिरही री । जीवनजनमलाहुलोचनफ लहैइतनोइलह्योआजुसही री ॥ २ ॥ सुषमासुरभिसिंगार

छीरदुहिमयनअमियमयकियोहैदहीरी । मथिमाखनसिय
रामसंवारेसकलभुवनछविमनहुमहीरी ॥ ३ ॥ तुलसिदास
जोरीदेषतसुषसोभाअतुलनजातिकहीरी । रूपरासिबिर
चीबिरंचिमानोसिलालवनिरतिकामलहीरी ॥ ४ ॥ १०६ ॥

टी० । दूलह इ० ॥ १ ॥ २ ॥ सुखमा रूप धेनु ते सिंगार रूप दूध को दुहि कै काम रूप अहीर ने अमृत रूप दही जमायो तेहि दही को मथि के माषन काढ्यो ताको श्री सीता राम को बनायो औ सकल भुअन की छबि मानो माठा है अर्थात् निकाम जानि जो बहाय दियो सो है ॥ ३ ॥ रूप रूपी रासि मानो ब्रह्मा ने सीता राम को बिरची औ काटे पीछे की जो बिनिआ सो रति काम ने पाई शिला जो बालि तेहि के कनन रति काम पाई उंछः कणश आदानं कणिशा द्यर्ज्जनं शिलं इति यादव कोषे ॥ ४ ॥ ॥ १०६ ॥

मू० । जैसेललितलषनलाललोने । तैसिऐललितउर्मिलापरस्पर
लषतसुलोचनकोने ॥ १ ॥ सुषमासारसिंगारसारकरिका-
नकरचेहैतेहिसोने । रूपप्रेमपरमितिनपरतकहिबियकिर-
होहैमतिमौने ॥ २ ॥ सोभासीलसनेहसुहावनोसमउकेलि
गृहगोने । देषितिअनकेनयनसफलभयेतुलसिदासहूकेहो
ने ॥ ३ ॥ १०७ ॥

टी० । जैसे इ० ॥ १ ॥ परम सोभा को सारांस औ शृंगार को सोना करि के तेहि सोना ते लषनलाल औ उर्मिलाजू को बनाए भाव सुषमा के सारांस ते लषनलाल को औ शृंगार के सारांस ते उर्मिला जू को रूप औ प्रेम के अवधि हैं ताते कही नही परति है बिशेष थकि के मति मौन ह्वै रही है औ उर्मिला जू को श्याम बरण है ताते शृंगार को सारांस कहे हिरण्य वर्णा सीता स्वाम्मांडवी पाटल प्रभाउर्म्मिला श्यामवर्णाभा स्रुतिकीर्तिसमप्रभा इतिनार-

दपंचराचे पाटलः श्वेतरक्तमिश्रितोवर्णः ॥ २ ॥ केलि गृह कोह बरजावे को सभै को सोभा सील औ सुंदर सनेह जो है ताको देषि कै तिअन के नैन सुफल भए तुलसीदास को अब होनिहार है ॥ ३ ॥ १०७ ॥

मू० । राग बिलावल । जानकीबरसुंदरमाई । इंद्रनीलमनिस्याम सुभंगअंगअंगमनोजनिबङ्छबिछाई ॥ १ ॥ अरुनचरनअंगुलीमनोहरनषदुतिवंतकछुकअरुनाई । कंजदलनिपरमनहु भौमदसबैठेअचलसुसदमिबनाई ॥ २ ॥ पीनजानुउरचारुजडितमनिनूपरपदकलमुषरसोहाई । पीतपरागभरेअलिगनजनुजुगलजलजलषिरहेलोभाई ॥ ३ ॥ किंकिनिकनककंजअवलीम्टदुमरकतसिषरिमध्यजनुजाई । गईनउपरसभीतनमितमुषबिकसिचह्नदिसिरहीलोनाई ॥ ४ ॥ नाभिगभीरउदररेखाबरउरभृगुचरनचिन्हसुषदाई । भुजप्रलंबभूषनअनेकयुतबसनपीतसोभाअधिकाई ॥ ५ ॥ जज्ञोपवीतविचिचहेममयमुक्तामालउरसिमोहिभाई । कंदुतडितबिचजनुसुरपतिधनुनिकटबलाकपांतिचलिआई ॥ ६ ॥ कंबुकंठचिबुकाधरसुंदरक्योंकहौंदसननकीरुचिराई । पदुमकोसमहंबसेबज्जमानोनिजसंगतडितअरुनरुचिलाई ॥ ७ ॥ नासिकचारुललितलोचनभ्रूकुटिलकचनिअनुपमछबिपाई । रहेघेरिराजीवउभयमानोचंचरीककछुहृदयडेराई ॥ ८ ॥ भालतिलककंचनकिरीटसिरकुंडललोलकपोलनिझाई । निरखहिंनारिनिकरबिदेहपुरनिमिन्टपकीमरजादमिटाई ॥ ९ ॥ सारदसेससंभुनिसिवासरचिंततरूपनहृदयसमाई । तुलसिदाससठक्यौंकरिबरनेयहछबिनिगमनेतिकहिगाई ॥ १० ॥ १०८ ॥

टी० । जानकी इ० ॥ सषी प्रति सखी की उक्ति अरी माई जानकी वर सुंदर है मरकत मणि सम स्याम है औ सुंदर सब अंग

अंगनि मे अनेक कामन की छवि छाय रही है ॥ १ ॥ लाल चरण है अंगुरी मन हर निहारी है नख दुतिवंत जे हैं ते कछुक अरु नाई लिए हैं मानो कमल दल निके ऊपर सुंदर अचल सभा बनाइ के दश मंगल के तारा बैठे हैं ॥ २ ॥ जानु पुष्ट हैं औ सुंदर जंघा हैं औ चरण मे मनिन ते जडित सुंदर सोने के नूपुर हैं सो सुंदर शब्द करत हैं सो नूपुर नही हैं पुष्पन के पीत धूरो तें भरे भँवर के समूह हैं मानो युगल चरण रूप युगल कमल को देखि के लो-भाइ के रहि गए हैं ॥ ३ ॥ सोनन की किंकिनी नही है कमल कलिन की पांति है सो मरकत सिषर के मध्य मे मानो उत्पन्न भई है इहां मरकत सिषर श्री रघुनाथ हैं मध्य भाग कटि देश है ते किंकिनी रूप कली सब डर तेज पर न गई नीचे मुष करि बिकसीं तिन के बिकसने की सुंदराई चहुं दिशि छाय रही ॥ ४ ॥ ५ ॥ उर में बिचित्र सुवर्ण मय जनेऊ औ मोतिन की माला जो है सो इम को भाइ मानो श्याम मेघ औ बिजुरी के बीच इन्द्र धनुष है तेहि के निकट बकुलनि की पांति चली आई है इहां मेघ श्रीराम है औ पीत बसन बिजुरी है सुरपति धनु यज्ञोपवीत है मोती की मालावक पांति है ॥ ६ ॥ शंख सम कंठ है ठोड़ी औ ओठ सुंदर है औ दांतन की रुचिराई कैसे कै कहौं अर्थात् कहिवे योग्य नही है मानो कमल के कोश मे हीरा गण अपने संग मे बिजुरी औ सूर्य को सुंदराई लिए बसे हैं वा सुंदर ललाई रूप तडिता को लिए बसे हैं लाल रंग की बिजुरी भी लिषी है ॥ ७ ॥ सुंदर नासा सुंदर लोचन टेडी भौंहं औ जुलुफन ने उपमा रहित छवि पाई है मानो नेत्रें नही हैं युग कमल हैं भौंह औ जुलुफ नही हैं भौंरन के समूह हैं ते भ्रमर गण कछु हृदय मे डराइ के युगल नेत्र रूप कमल कों घेरि रहे हैं भाव ताते बइठत नहीं है इहां डरावनि हारो पलक रूप पंषा है ॥ ८ ॥ लोल चंचल झांई

परिछांही निकर समूह निमिकुल की मरजादा मिटाई अर्थात् ए कटक ते निरषहिँ ॥ ९ ॥ १० ॥ १०८ ॥

मू० । राग कान्हरा । भुजनिपरजननीवारिफेरिडारी । क्यौंतोर्यौ कोमलकरकमलनिसंभुसरामनभारी ॥ १ ॥ क्यौंमारीचसुबाहुमहाबलप्रबलताड़कामारीमुनिप्रसादमेरेरामलषनकीबिधिबड़िकरबरटारी ॥ २ ॥ चरनरेनुलैनयननिलावतिक्यौंमुनिबधूउधारी । कहोधौंतातक्यौंजीतिसकलन्टपबरीहैबिदेहकुमारी ॥ ३ ॥ दुसहरोषमूरतिभृगुपतिअतिन्टपतिनिकरषयकारी । क्यौंसौंप्योसारंगहारिहियकरिहैबहुतमनुहारी ॥ ४ ॥ उमगिउमगिआनंदबिलोकतिबधुनसहितसुतचारी तुलसिदासआरतीउतारति प्रेममगनमहतारी ॥ ५ ॥ १०९

टी० । भुजन इ० हाथ चहुं ओर भुजन पर फिराय के जननी ने नेवछावरि करी ॥ १ ॥ जब रघुनाथ सकोच बस उत्तर न दिए तब आपही समाधान करति हैं कि मुनि के प्रसाद तें मेरे राम लखन की विधाता ने अनेक अल्पायु टारी ॥ २ ॥ चरण रेणु को नयनन में लगाइबे को यह भाव कि विरह करि नेत्र संतप्त रहे तिनको सीतल करति हैं अब फेरि अधिक प्रेम करि पूछति हैं कि कैसे अहल्या को तारी ॥ ३ ॥ षयकारी क्षयकारी मनुहारी मनावन ॥ ४ ॥

मू० । मुदितमनआतीकरैमाता । कनकवसनमनिवारिवारिवरपुलकप्रफुल्लितगाता ॥ १ ॥ पालागनिदुलहिनिहिसिषावतिसरिससासुसतसाता । देहिँअसीसतेबरिसकोटिलगिअचलहोउअहिवाता ॥ २ ॥ रामसीयछबिदेषियुवतिजनकरहिंपरस्परबाता । अबजान्यौसांचेहुसुनोसखिकोबिदबड़ोबिधाता ॥ ३ ॥ मंगलगाननिसाननगरनभआनंदकह्योनजाता । चिरंजीवहुअवधेसमुअनसबतुलसिदाससुषदाता ॥ इति श्री रामगीतावल्यां बालकांडः संपूर्ण ॥ ४ ॥ ११० ॥

टी० । मुदित इ० ॥ १ ॥ श्री कौशल्या जू दुलहिनिन को अपने सरिस साती से सासुन को पैलगी करिबे को सिखावति हैं ॥ २ ॥ बिधाता बड़ा पण्डित है कहिबे को यह भाव कि समान जोड़ो मिलाय दियो ॥ ३ ॥ नगर औ आकाश मे मंगल गान होत है औ नगारे वाजत है दोउ ठौर को आनन्द कहा नही जात है सब असीस देत हैं कि अवधेस के सब सुअन तुलसीदास के सुषदा ता चिरंजीअड ॥ ४ ॥ ११० ॥

दो० । मंगलऔसरजसरित मंगलविपिनप्रमोद । मंगलसीताराम जू जोमोदऊकोमोद ॥ १ ॥ युगलचन्दपरिकरयुगल चरनरेनुसिरनाय । हरिहरसममतिमंदहूं टीकालईबनाय ॥ २ ॥ इतिश्री रामगीतावली प्रकाशिकाटीकायां श्रीसीतारामकृपापात्र श्रीसीतारामीयहरिहरप्रसादकृतौबालकांण्डः समाप्तः श्रीसीतारामाभ्यांनमः ॥

श्रीसीतारामाभ्यांनमः दो० । जिनकेअंगप्रसंगते भूषितभूषणहोत । होतसुगंधसुगंधयुत पोतामोतीद्योत ॥ सोभाह्वसोभालहत जिनकेअंगप्रसंग । विधिहरिहरबाणीरमा उमाहोंहिलषिदंग ॥ तिन्हसियसियबल्लभचरण बारबारसिरनाय । चरणरेणुपविकरजुगल नयननमाझलगाय ॥ अवधकाण्डटीकारचत हरिहरमतिअनुहारि । दिगरीसुमतिसुधारिहैं बालकअल्पबिचारि ॥

मू० । राग सोरठ । नृपकरजोरिकह्योगुरुपांही । तुम्हरीकृपाअसीसनाथमेरीसबैमहेशनिबाही ॥ १ ॥ रामहोंहिंयुवराजजियतमेरेयहलालचमनमाही । बहुरिमोहिजियबेमरिवेकोचितचिंताकछुनाहीं ॥ २ ॥ महाराजभलोकाजबिचार्यौबेगिबिलंबनकीजै । बिधिदाहिनोहोइतोसबमिलिजनमलाहुलुटिलीजै ॥ ३ ॥ सुनतनगरआनंदबधावनकैकेईबिलपानी । तुलसीदासदेवमायाबसकठिनकुटिलताठानी ॥ ४ ॥ १ ॥

टी० । नृप दू० । निवाही कहैं पूर्ण किए ॥ १ ॥ २ ॥ बिधि दाहिनो होय तो या कथन तें मनोरथ के लाभ में संदेह जनाए ॥ ३ ॥ ४ ॥ १ ॥

मू० । राग गौरी । सुनहुरामभेरेप्रानपियारे । बारोसत्यबचनश्रुतिसम्मत जातेहौंबिछुरतचरनतिहारे ॥ १ ॥ बिनुप्रयाससबसाधनकोफल प्रभुपायेसोतौनहींसभारे । हरितजिधर्मसीलभयोचाहत नृपतिनारिबससरबसहारे ॥ २ ॥ रुचिरकांचमनिदेषिमूढज्यौं करतलतेंचिंतामनिडारे । मुनिलोचनचकोरससिराघव सिवजीवनधनसोउनबिचारे ॥ ३ ॥ जद्यपिनाथतातमायाबस सुषनिधानसुततुम्हहिबिसारे । तदपिहमहित्यागहुजनिरघुपतिदीनबंधुदयालमेरेबारे ॥४॥ अतिसयप्रीतिबिनीतबचनसुनि प्रभुकोमलचितचलननपारे । तुलसिदासजौरहौमातुहित कोसुरभूमिनिप्रभयटारे ॥ ५ ॥

टी० । औ कौशिल्या जो की उक्ति है सुनऊ इ० । श्रुति सम्मत जो सत्य वचन है ताकों बारों कहैं फूंकि देउँ काहेते कि जेहि सत्य वचन करि तुम्हारे चरण ते हम बिछुरत हैं ॥ १ ॥ सब साधन को फल रूप जो प्रभु आप ताको पाए पर नही सम्हारि सकै ॥ २ ॥ ३ ॥ तात माया वश तुम्हारी माया वश ॥ ४ ॥ चलन न पावै चलै कै इच्छा न किए पर फेरि बिचारै सो अगिले तुक मे स्पष्ट है ॥ ५ ॥ ॥ २ ॥

सू० । रहिचलियेसुंदररघुनायक । जौसुततातबचनपालनरत जननीउतातमानिबेलायक ॥ १ ॥ बेदबिदितयहबानितुम्हारी रघुपतिसदासंतसुषदायक । राखहुनिजमरजादनिगमकी हौंबलिजांउधरहुधनुसायक ॥ २ ॥ सोककूपपुरपरिहिमरिहिन्टप सुनिसंदेसरघुनाथभिधायक । यहदूषनबिधितहिहोतअबरामचरणबियोगउपजायक ॥ ३ ॥ मातुबचनसुनिस्रवतनयनजलकछुसुभाउजनुनरतनपायक । तुलसिदाससुरकाजनसाध्यौतौतदोषहोइमहिआयक ॥ ४ ॥ ३ ॥

टी० । रहि इ० । रहि चलिए कहैं रहि जाइए ॥ १ ॥ रघुपति सदा संतन के सुषदाता हैं यह बानि तुम्हारी बेद मे प्रसिद्ध है बेद सिद्ध जो अपनी मर्जाद है ताको राषहु भाव अजोध्या बासी सब संत हैं तिन को दुख मति देहु मै बलि जाउं धनुष बान को धरि देहु भाव चलन के साजसब उतारि डारहु ॥२॥ अब ब्याकुलता ते बिधाता प्रति कहति हैं कि रघुनाथ के जाइबे वाला संदेस सुनि कै सोक रूपी कूप मे अजोध्या बासी परैंगे औ महाराज मरैंगे औ राम चरण बियोग उपजावनि हारा जो यह दूषण से तुम्ह कहं होत है ॥ ३ ॥ पायक कहैं पाए कै आयक कहैं आए कै ॥ ४ ॥ ३ ॥

सू० । सो० । रामहौंकौनयतनघररहिहों । बारबारभरिअंकगोदलैललनकौनसोकहिहौं ॥ १ ॥ इहिआंगनबिहरतमेरेबा

रेतुमजोसंगनिसृलीन्हे । कैसेप्रानरहतसुमिरतसुत बहुविनोदतुमकीन्हे ॥ २ ॥ जिन्हश्रवननिकलवचनतिहारे सुनि सुनिहौंअनुरागी । तिन्हस्रवनन्हबनगवनसुनतिहौं मोतेकवनअभागी ॥ ३ ॥ जुगलमनिमिषजांहिरघुनंदन वदन कमलविनुदेखे । जौंतनरहैबरषबोतेवलि कहाप्रोतिइहिलेखे ॥ ४ ॥ तुलसीदासप्रेमवसश्रीहरि देखिविकलमहतारी । गदगदकंठनयनजलफिरिफिरि आवनकहेउमुरारी ॥ ५ ॥ ४ ॥

टी० । रामदू० हे राम मै कवने जतन ते घरमें रहौंगी ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ दूहां वरष पद ते चौदह वरष लेना ॥ ४ ॥ फिरि कहैं वारंबार ॥ ५ ॥ ४ ॥

मू० । राग विलावल । रहहु भवन हमरे कहेकामिनि । सादर सासुचरनसेवहुनित जोतुम्हरेंअतिहितगृहस्वामिनि ॥ १ ॥ राजकुमारिकठिनकंटकमग क्योंचलिहौमृदुपदगजगामिनि दुसहबातवरषाहिमआतप कैसेसहिहौंअगनितदिनजामिनि ॥ २ ॥ हौंपुनिपितुआज्ञाप्रमानकरि ऐहौवेगिसुनहुदुतिदामिनि । तुलसिदासप्रभुबिरहबचनसुनि सहिनसकीमुरछितभईभामिनि ॥ ३ ॥ ५ ॥

टी० । श्री जानकी जू प्रति रघुनाथ जी की उक्ति है । रहहुदू० गृह मे स्वामिनि हैं यह कहिवे को यह भाव कि तुमको अन्यत्र जाना न चाहिए ॥ १ ॥ जामिनि राति ॥ २ ॥ ३ ॥ ५ ॥

मू० । कृपानिधानसुजानप्रानपति संगविपिनहौंआवौंगी । गृहतें कोटिगुनितसुखमारग चलतसाथसचुपावौंगी ॥ १ ॥ थाके चरनकमलचापौंगी स्रमभयेवाउडोलावौंगी । नयनचकोर निसुखमयंकछवि सादरपानकरावौंगी ॥ २ ॥ जौंहठिनाथराखिहौमोकहं तौसंगप्रानपठावौंगी । तुलसिदासप्रभुबिनु जीवतरहिक्यौं फिरिबदनदेखावौंगी ॥ ३ ॥ ६ ॥

टी० । श्री जानकी जू की उक्ति है कपा इ० । सचु सुख ॥ १ ॥ अपने नैन रूपी चकोरन को तुम्हारे मुष रूप चन्द्र के छवि रूप किरन को आदर सहित पान कराओंगी ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ ॥

मू० । कहौतुम्हबिनुग्रहमेरोकौनकाजु । बिपिनकोटिसुरपुरसमा-
नमोकोजौपैपियपरिहस्योराजु ॥ १ ॥ बलकलबिमलदुकूल
मनोहरकंदमूलफलअमियनाजु । प्रभुपदकमलबिलोकिहौं
छिनुछिनुइहितेअधिककहासुषसमाजु ॥ २ ॥ हौरहौंभव-
नभोगलोलुपह्वैपतिकाननकियोमुनिकोसाजु । तुलसिदास
ऐसेबिरहबचनसुनिकठिनहियोबिहस्योनआजु ॥ ३ ॥ ७ ॥

टी० । कहो इ० ॥ १ ॥ अमिय नाजु अम्रत सम अन्न ॥ २ ॥ एसे बिरह बचन अर्थात् तुम सुकुमारि हौ बन योग्य नहीं यह बचन सुनि के मेरो हृदय कठिन है सो न फट्यो ॥ ३ ॥ ७ ॥

मू० । प्रियनिठुरबचनकहेकारनकवन । जानतहौसबकेमनकीगति
मृदुचितपरमक्रपालुरवन ॥ १ ॥ प्राननाथसुंदरसुजानमनि
दीनबंधुजनआरतिदवन । तुलसिदासप्रभुपदसरोजतजिरहि
हौंकहाकरौंगीभवन ॥ २ ॥ ८ ॥

टी० । प्रिय इ० । रवन स्वामी ॥ १ ॥ सुजान मनि सुजानन मे श्रेष्ठ ॥ २ ॥ ८ ॥

मू० । मैंतुमसोंसतिभायकहीहै । बूझतऔरभांतिकतभामिनिकान-
नकठिनकलेसमहीहै ॥ १ ॥ जौचलिहौतोचलौचलिएबन
सुनिसियमनअवलंबलहीहै । बूड़तबिरहवारिनिधिमानहु
बचननाहंमिसिबांहगहीहै ॥ २ ॥ प्राननाथकेसाथचलीउ
ठिअवधसोगसरिउमगिबहीहै । तुलसीसुनिनकबहुकाहुक
हुंतनुपरिहरिपरिछांहरहीहै ॥ ३ ॥ ९ ॥

टी० । श्री रघुनाथ की उक्ति है मैं इ० । हे भामिनि हम तुमसे जस है तस कहो है ताको तुम और भांति काहे बूझति हौ बचन

मे सांचों कठिन कलेश है ॥ १ ॥ मानो बिरह रूप समुद्र मे बूडत संते स्वामी ने बचन के बहाने तें बांह गहि लई है ॥ २ ॥ सरिमदो सरीर ते पृथक् परिछांही कों रहते काहू ने नहीं सुनी है भाव तब जानकी जू कैसे रहैं ॥ ३ ॥ ९ ॥

मू० । जबहिरघुपतिसंगसीयचली । बिकलबियोगलोगपुरतियकहै अतिअन्याउअली ॥ १ ॥ कोउकहैमनिगनतजतकांचलगि करतनभूपभली । कोउकहैकुलकुवेलिकैकेईदुषबिषफलनि फली ॥ २ ॥ एककहैवनजोगजानकीबिधिबडबिषमबली । तुलसीकुलिसङ्कीकठोरतातेहिदिनदलकिदली ॥ ३ ॥ १० ॥

टी० । जब दू० । हे सखी अति अन्याव है ॥ १ ॥ दूहां कांच स्यानी सत्य बचन है कुवेलि बिष लता ॥ २ ॥ क्या जानकी जू बन ने जोग हैं अर्थात् नहीं पर बिधाता अति कठिन बलवान है गोसांई जी कहत हैं कि तेहि दिन और को को कहै कुलिसङ्की कठोरता दलकि के फटि गई ॥ ३ ॥ १० ॥

मू० । ठाढ़ेहैंलषनकमलकरजोरे । उरधकधकीनकहतकछुसकुच निप्रभुपरिहरतसबनचिनतोरे ॥ १ ॥ कृपासिंधुअवलोकिबं धुतनप्रानकृपानबीरसीछोरे । तातबिदामागिऐसातुमोवनि हैबातउपाइनऔरे ॥ २ ॥ जाइचरनगहिआयसुजाच्योजन निकहतबहुभांतिनिहारे । सियरघुबरसेवासुचिह्वैहौतौजा- निहौसहीसुतमोरे ॥ ३ ॥ कीजडूइहैविचारनिरंतररामस मीपसुकृतनहियोरे । तुलसीसुनिसिषचलेचकितचितउड्यौ मानोबिहगवधिकभयभोरे ॥ ४ ॥ ११ ॥

टी० । ठाढे दू० । संकोच ते कछु कहत नाही हैं हृदय मे धक धकी है काहे ते कि प्रभु या काल मे सब को तोर टन सम त्याग करत हैं ॥ १ ॥ प्राण रूप जो तरवार है ताको बीर के समान छोरे अर्थात् दुस्सगो पोले बंधु के तन को देषि के कृपासिंधु बोले कि हे

तात माता सो बिदा मागिए और उपाय से न बनि है अर्थात् बे माता के कहे हम न ले चलब ॥ २ ॥ सुचि कुल रहित ॥ ३ ॥ एही बिचार निरंतर करेउ कि थोरे सुकृत से रघुनाथ के निकट प्राप्ति नही होत है यह सिखावन सुनि के चकित चित ते चलत भए मानो बधिक के गाफिल भए से पच्छी उडेउ ॥ ४ ॥ ११ ॥

मू० । राग सोरठ । मोकोबिधुबदनबिलोकनदीजै । रामलषनमे-
रीएहीभेटबलिजांउंजोहिमिलिलीजै ॥ १ ॥ सुनिपितुबच
नचरनगहेरघुपतिभूपअंकभरिलीन्हे । अजहुंअवनिबिहर-
तिदरारभिससोअवसरसुधिकीन्हे ॥ २ ॥ पुनिसिरनाइगव
नकियोप्रभुमुरछितभयोभूपनजाग्यौ । करमचोरनृपपथिक
मारिमानोरामरतनलैभाग्यो ॥ ३ ॥ तुलसीरबिकुलरबिरथ
चढ़िचलेतकिदिसिदषिनसुहाई । लोगनलिनभएमलिनअव
धसरबिरहबिषमहिमआई ॥ ४ ॥ ११ ॥

टी० । श्री राम प्रति श्री चक्रवर्ती महाराज की उक्ति है मोको इ० ॥ १ ॥ २ ॥ कर्म रूप चोर ने महाराज रूप पथिक को मारि कै मानो राम रूप रत्न को लूटि कै लै भाग्यो ॥ ३ ॥ गोसांई जी कहत हैं कि सूर्य कुल के सूर्य जो श्री राम सो रथ पर चढ़ि के सुंदर दच्छिण दिसा के ओर चलत भए सूर्य दच्छिणायन मे हिम रितु आवति है सो इहां कठिन बिरह रूप हिम रितु आई ताते अजोध्या रूप सर मे लोग रूप कमल मलीन होत भए ॥ ४ ॥ १२ ॥

मू० । राग बिलावल । कहौसोबिपिनहैधौंकेतिकदूरि । जहंगमु
कियोंकुंवरकोसलपतिबूझतिसियपियपतिहिबिसूरि ॥ १ ॥
प्राननाथपरदेसपयादेहिचलेमुषसकलतजेतृनतूरि । करोंब
यारबिलंबिएबिटपतरझारोंहोंचरनसरोरुहधूरि ॥ २ ॥ तु
लसिदासप्रभुप्रियाबचनसुनिनीरजनयननीरआएपूरि । का-
ननकहांअबहिसुनुसुंदरिरघुपतिफिरिचितयेहितभूरि ॥ ३ ॥

टी० । श्री राम प्रति श्री जानकी जी की उक्ति है कहो हू० । श्री जानकी जू प्रिय पति जो श्री राम तिन सों बिसूरि कहैं बिलखाय कै बूझति हैं हे कोशल पति कुंवर जहां को गमन कियो हौ सोवन धौं केतिक दूरि है हम ते कहो ॥ १ ॥ हे प्राणनाथ सब सुष को टनवत तोरि कै तजे औ परदेस को पयादे चले स्वमित भए छोड़ि गे ताते तरु तर बिलम्ब कीजिए मैं बयारि करौं औ चरण कमल की धूरि झारौं भाव जाते स्वम उतरि जाय ॥ २ ॥ प्रिया के यह बचन सुनि के प्रभु के नैन कमल मे जल भरि आए कहत भए कि हे सुंदरि सुनो अबहो बन कहां है अस कहि के अति हित सें फेर देखत भए ॥ ३ ॥ १३ ॥

मू० । फिरिफिरिरामसीयतनहेरत। तृषितजानिजललेनलषनगए
भुजउठाएऊँचेचढिटेरत ॥ १ ॥ अवनिकुरंगबिहगद्रुमडारन
रूपनिहारतपलकनप्रेरत । मगननडरतनिरषिकरकमल
निसुभगसरासनसायकफेरत ॥ २ ॥ अवलोकतमगलोगचहुं
दिसिमनहुंचकोरचंद्रमहिघेरत । तेजनभूरिभागभूतलपरतु
लसीरामपथिकपदजेरत ॥ ३ ॥ १४ ॥

टी० । फिरि हू० । श्री राम जू ऊँचे पर चढ़ि के भुजा उठाय लषन लाल को टेरत हैं औ श्री जानकीजू के ओर फिरि फिरि देषत हैं ॥ १ ॥ भूमि ते हरिन औ वृक्षन के डारन तें पक्षी रूप को एक टक देखत हैं यद्यपि श्री रामजू कर कमल निसे सुंदर धनुष बान फेरत हैं तथापि ऐसे मगन हैं कि देषि डरत नहीं हैं ॥ २ ॥ जैसे चन्द्रमा को चकोर घेरत हैं तैसे मग लोग चहुं ओर ते देखत हैं अर्थात् पलक रोकि ॥ ३ ॥ १४ ॥

मू० । नृपतिकुंअरराजतमगजात। सुंदरबदनसरोरुहलोचनमरक
तकनकबरनमृदुगात ॥ १ ॥ अंसनिचापतूनकटिमुनिपट
जटामुकुटबिचनूतनपात। फेरतपानिसरोजनिसायकचोरत

चितहिसहजमुसकात ॥ २ ॥ संगनारिसुकुमारिसुभगसुठि राजतिबिनुभूषननवसात सुषमानिरषिग्रामवनितनिकेनलिन नयनविगसतमानोप्रात ॥ ३ ॥ अंगअंगअगनितअनंगछबिउ पमाकहतसुकविसकुचात । सियसमेतनिततुलसिदासचितब-सतकिशोरपथिकदोउभ्रात ॥ ४ ॥ १५ ॥

टी० । सुंदर मुख औ कमल सम नेत्र औ कोमल अंग हैं मर-कत बरण श्री राम औ कनक बरण श्री लछिमन जी हैं ॥ १ ॥ अंसनिचाप कान्हनपरधनु मुनिपटवल्कलादि॥ २ ॥ सुभगसुठि अति सुंदरिभूषननवसात सोरहश्रृंगार परम सोभा देषि कै ग्राम युवतिन के नेत्र कमल बिकसे जैसे प्रातः काल मे कमल बिकसत हुआ मुखमा सूर्य है ॥ ३ ॥ ४ ॥ १५ ॥

मू० । तूंदेषिदेषिरीपथिकपरमसुंदरदोऊ । मरकतकलधौतबरन कामकोटिकांतिहरनचरनकमलकोमलअतिराजकुंवरकोऊ ॥ १ ॥ करसरधनुकटिनिषंगमुनिपटसोहैसुभगअंगसंगचंद्र बदनिबधूसुंदरिसुठिसोऊ । तापसवरबेषकिएसोभासबलूटि लिएचितकेचोरबयकिशोरलोचनभरिजोऊ ॥ २ ॥ दिनकर कुलमनिनिहारिप्रेममगनग्रामनारिपरसपरकहैंसषिअनुरा गतागपोऊ । तुलसीयहध्यानसुधनजानिमानिलाभसघनक्र पिनज्योंसनेहसोंहियसुगेहगोऊ ॥ ३ ॥ १६ ॥

टी० । ग्राम बधुन की उक्ति है देषिइ० । कलधौतस्वर्ण ॥ १ ॥ जोऊ देखु ॥ २ ॥ परस्पर कहति हैं कि हे सखी इन दोऊ कुँअर रूप मणिन को अनुराग रूपता गमे पोऊ यह ध्यान को सुंदर धन जानि कै अति लाभ मानि कै हृदय रूप सुंदर गृह मे सनेह पूर्वक छपाउ जैसे क्रपिन धन छपावत है ॥ ३ ॥ १६ ॥

मू० । कुंअरसांवरोरीसजनीसुंदरसबअंग । रोमरोमछबिनिहारि आलिबारिफेरिडारिकोटिभानुसुअन सरदसोमकोटिअनंग

॥ १ ॥ वामअंसलसतचापरौलिमंजुजटकलापसुचिसरकर मुनिपटकटितटकसेनिषंग। आयतउरबाहुनयनमुषसुषमाकोलहैनउपमाअवलोकिलोकगिरामतिगतिभंग॥२॥ यौंकहि भईमगनवालवियकीसुनिजुवतिजालचितवतचलेजातसंगमधुपम्रगविहंग। वरनौंकिमितिन्हकीदसाहिनिगमअगमप्रेमरसहितुलसीमनवसनरंगेरुचिररूपरंग॥ ३ ॥ ७ ॥

टी० कुअर इं०। री सजनी यह सांवरो कुवर सब अंग ते सुंदर हैं हे आली इनकी रोम रोम की छबि देखिकै कोटिन अश्वनी कुमार औ सरद पूनो के चंद्र औ कोटिन काम कों फेरि कै नेवछावरि करि डारू ॥ १ ॥ वाम कांधे मे धनु औ माथे मे पवित्र सुंदर जटन कै समूह औ हाथ मे वाण सोभत है बल कल पहिरे हैं औ कटि देश मे तरकस कसे हैं छाती बाहु औ नयन बिसाल हैं औ मुख की परम शोभा को कोऊ नहीं पावत है लोक मे उपमा खोजि कै सारदा की मति औ गति नष्ट ह्वै गई है मति भारती पंगु भई जो निहारि बिचारि फिरी उपमान पवै ॥ २ ॥ वह कह निहारी वाला अस कहि प्रेम मे डूबि जात भई औ ताकी कहनि और सब युवती सुनि थकित होत भई औ भ्रमर म्रग पक्षी चितवत संग मे चले जात हैं मन रूप वसन कों सुंदर रूप रंग में रँगे हैं तिन्ह की दशा कैसे बरनो काहे ते कि बेदन को भी अगम प्रेम रस है ॥ ३ ॥ ॥ १७ ॥

मू०। राग कल्यान। देषिकोउपरमसुंदरसखिबटोही। चलतमहिम्रदुचरनअरुनवारिजनयनभूपसुतरूपनिधिनिरषिहौमोंही॥ टेक अमलमरकतस्यामसीलसुखमाधामगौरतनसुभगसोभासुमुखिजोही। जुगलबिचनारिसुकुमारिसुठि सुंदरीइंदिराइंदुहरिमध्यजनुसोही॥ १ ॥ करनिवरधनुतीररुचिरकटितूनीरधीरसुरसुखदमर्दनअवनिद्रोही। अंबुजा-

यतनयनबदनछबिबडुमयनचारुचितवनिचतुरलेतचितयोयो हो ॥ २ ॥ बचनप्रियसुनिस्रवनरामकरुनाभवनचितै सबअधिकहितसहितकछुओहो । दासतुलसीनेहबिबसबिसरीदेहजाननहि आपुतेहिकालधौकोंहो ॥ ३ ॥ ॥ १८ ॥

टी० । देषु दू० । लाल कमल के रंग कोमल चरण तें जे भूमि मे चलत हैं ते रूप निधि भूप सुतन्ह को देषि मै मोहि गई ॥ १ ॥ हे सुमुषि निर्मल मरकत सम स्याम औ शील परम शोभा के धाम एक कुवर औ गौर तन सुंदर सोभा वालो दूसरो कुवर कों देषु औ दूनो कुवरन के बीच अति सुंदर सुकुमारि नारि है मानो चंद्रमा औ विष्णु के मध्य मे लक्ष्मी सोभी ॥ २ ॥ तू नीर तरकस अवनि द्रोही राक्षसादि अंबु जायत नयन कमल वत् विस्तृत नेत्र लेत पोही गूथि लेत ॥ ३ ॥ सब कों चितए पर अधिक हित सहित ओहि कहनि हारि कों कोही कहैं कवन हौ ॥ ४ ॥ १८ ॥

मू० । राग केदारा । सषिनीकेकैनिरषिकोउसुठिसुंदरबटोही मधुरमूरतिमनमोहनजोहनजोगबदनसोभासदनदेषिहोमोही टेक । सावरेगोरेकिशोरसुरमुनिचितचोरउभयअंतरएकनारिसोही मनहुबारिदबिधुबीचललितअतिराजतितड़ितनिजसहजबिछोही ॥ १ ॥ उरधीरजधरिजनमसुफलकरिसुनहिसुमुषिजिनिबिकलहोही । कोजानैकोनेसुकृतलह्योहैलोयनलाहुताहीतेंबारहिबारकहतिहौंतोही ॥ २ ॥ सषिहीसुसीषदईप्रेममगनभईसुरतिबिसरिगईआपनीओही । तुलसीरहीठाढ़ीपाहनऐसीगढ़िकाढ़ीनजानेकहांतेआईकौनकोकोही ॥ ३ ॥ १९ ॥

टी० । सखी दू० । हे सखी भली भांति करि देखु कोऊ अति सुंदर बटोही हैं इन मन मोहन पथिकन की सोहावनि मूरति देखिबेयोग्य हैं सोभा के सदन इनके मुख हैं जाके देखि के मैमोहि

गई हौं ॥ १ ॥ दोउन के बीच एक नारि सोहि रही है मानो मेघ औ चन्द्रमा के बीच मे अपनो चंचल सुभाव त्यागि के अति सुंदर बिजुरी सोहि रही है ॥ २ ॥ हे सुमुखि सुनु बिकल मतिहौं हि धीरज धरि के अपना जन्म सुफल करु को जाने कौने सुकृतन से नेचन ने यह लाभ पायो है ताते मै बारहि बार तोसो कहति हौं ॥ ३ ॥ पाहन सी गढ़ि काढ़ी गढ़ी भई पारथ की मूरति सी कौन की कोही केहि की हौ औ कौन हौ ॥ ४ ॥ १६ ॥

मू० । माईमनकेमोहनजोहनजोगजोही । थोरिहिबयसगोरे
सांवरेसलोंनेलोनेलोपनललितबिधुबदनबटोही । सिरनिज
टामुकुटमंजुलसुमन जुततैसियैलसतिनवपल्लवखोही । कियेमु
निबेषबीरधरेधनुतूनतीरसोहैं मनकोहैंलखिपरेनमोही॥१॥
सोभाकोसांचोंसंवारिरूपजातरूपढारि नारिबिरचीबिरंचि
संगसोसोही । राजतरुचिरतनसुंदरस्रमकेकनचाहैचकचौ-
धीलागैकाकहौंतोही ॥ २ ॥ सनेहसिथिलसुनिबचनसकल
सियचितईअधिकहितसहितओही । तुलसीमानहुप्रभुकृपा
कीमूरतिफिरिहेरिकैहरषिहियलियोहैमोही ॥ ३ ॥ २० ॥

टी० । माईदू० । हेमाई देषिवे जोग्य मन के मोहन बटोही को मै देषी ते बटोही कैसे हैं कि जिन्ह की अवस्था थोरी है एक सलोने गोरे हैं एक लोने सांवरे हैं सुंदर आंषै हैं चंद्र सम मुषै हैं ॥ १ ॥ नव पल्लव षोही नए पच न जुत डौंगी को हैं कौन हैं ॥ २ ॥ ब्रह्मा ने सोभा को सांचा बनाइ कै तामे रूप रूपी सोना को ढ़ारि कै नारि बनाई सो नारि संग मे सोहि रही है चाहै कहैं देषे ॥३॥ वह जो सनेह ते सिथिल है ताकी सब बातै श्री जानकीजू सुनि कै अधिक प्रीति सहित वाको देखत भई मानो जानकीजू न देषीं प्रभु की कृपा को मूरति ने फिरि के देषि हरषि के चित्त को गूंथि लई ॥ ४ ॥ २० ॥

मू० । सषिसरदबिमलबिधुवदनवधटी । ऐसीललनासलोनीनभईनहैन होनीरतैरचीविधिजोछोलतछबिछूटी । टेकः । साँवरेगोरे पथिकबीचसोहतिअधिकतिहुँतिभुअनसोभामानऌूटी । तुलसीनिरषिसियप्रेमबसकहैंतियलोचनसिसुन्हदेहुअमियघूटी ॥ १ ॥ २१ ॥

टी० । सखीद्द० । हे सखी निर्मल सरद के चन्द सम या बधूटी को मुख है ऐसी सलोनी ललना न भई है न कहूं है नहो निहार है बिधाता ने याके सुधारत मे जो छवि छूटि परी ताते रति को बनाई ॥ १ ॥ तिहुंक हैं तीनो जने लोचन सि सुन्ह देहु अमिय घूटी लोचन रूप बालकन को पथिक रूप रूपी अम्हत को घोटो देहु ॥ २ ॥ २१ ॥

मू० । सोहैंसांवरोपथिकपाछेललनालोनो । दामिनिवरनगोरीलषि सषितिनतोरीबीतीहैवयकिशोरीजोबनहोनी । टेक । नीके कैनिकाईदेषिजनमसुफललेषिहमसीभूरिभागिनिनभनछोनी । तुलसीस्वामीस्वामिनिजोहैसोहीहभामिनिसोभासुधापियैंकरिअंषियांदोनी ॥ १ ॥ २२ ॥

टी० । सो हैंद्द० ॥ १ ॥ न भन छोनी न आकाश न पृथ्वी मे अंषिआं दोनी आँषिन को दोना बनाय ॥ २ ॥ २२ ॥

मू० । पथिकगोरेसांवरेसुठिलोने । संगसुतियजाकेतनतेलहीहैंदुतिस्वर्नसरोरुहसोने । टेक । वयकिशोरसरिपारमनोहरवयसिरोमनिहोने । सोभासुधाआलिअंचवहुकरिनयनमंजुमृदुदोने ॥ १ ॥ हेरतहृदयहरतनहिफेरतचारुविलोचनकोनेतुलसीप्रभुकिधौंप्रभुकेप्रेमपढेप्रगटकपटविनुटोने २ ॥ २३ ॥

टी० । पथिक द्द० ॥ १ ॥ किशोर अवस्था रूप नदी से पार ह्वै के मनोहर युवा अवस्था होनि हार है ॥ २ ॥ सुंदर नैनन सो तिरछे देषतहीं मन को हरि लेत हैं फेर फेरत नाही गोसांई जी कहत हैं कि प्रभु कै धौं प्रभु के प्रेम ने बिना कपट के टोना प्रगट पढे हैं

भाव टोना कपट करि छिपाय के किया जात है इहां साभु है मन हरे ताते प्रगट कहे ॥ ३ ॥ २३ ॥

सू० । मनोहरताकेमानोऐन स्यामलगोरकिशोरपथिकदोउसुमुषि निरषिभरिनैन। टेक । बीचबधूबिधुबदनिबिराजतिउपमाकहुं कोउहैन मानकुंरतिरितुनाथसहितमुनिबेषबनायौहैमैन ॥ ॥ १ ॥ किधौंसिंगारसुषमासुप्रेममिलिचलेजगचितबितलैन। अद्भुतचईकिधौपठईबिधिमगलोगनिसुषदैन ॥२ ॥ सुनिसुचि सरलसनेहसुहावनेग्रामबधुन्हकेबैन । तुलसीप्रभुतरुतरबि लंबकियेप्रेमकनौडेकैन ॥ ३ ॥ २४ ॥

टी० । मनो इ० ॥ १ ॥ है ननहीं है ॥ २ ॥ कै धौं श्रृंगार रस औ परम सोभा औ प्रेम मिलि के जगत के चित्त रूपी धन को लेइवे को चले हैं श्रृंगार श्री राम जू सुखमा श्री जानकी जू प्रेम औ लछिमन जू हैं कै धो बिधाता ने मग लोगन के सुष देइवे हेतु अद्भुत इन्ह तीनो मूर्ति के एकच करि पठए हैं वा बिचिच बेद चई ॥ ३ ॥ प्रेम करि के कनौड़ा केहि के नहो भए भाव सब के भए ॥ ४ ॥ २४ ॥

सू० । वयकिशोरगोरेसांवरेधनुबानधरेहैं । सबअंगसहजसुहाव- नेराजिवजीतेनयननिबदननिबिधुनिदरेहैं। टेक । तनसुमुनि पटकरिकसेजटामुकुटकरेहैं । मंजुमधुरम्टदुमूरतिपानह्यौन पायनिकैसेधौपथबिचरेहैं ॥ १ ॥ उभयबीचबनिताबनीलखि मोहिपरेहैं । मदनसप्रियासप्रियसषामुनिबेषबनाएलियेम- नजातहरेहैं ॥ २ ॥ सुनिजहंतहंदेषनचलेअनुरागभरेहैं । रामपथिकछबिनिरषिकैतुलसीमगलोगनिधामकामबिसरेहै ॥ ३ ॥ २५ ॥

टी० । बैय इ० । राजीव कमल निदरे हैं निरादर किए हैं १ ॥ सुंदर मनोहर मूर्ति कोमल तासु में पनही पगन मे नहो ॥ २ ॥ दोउन के बीच मे बनिता बनी है अस हमको लखि परत हैं किर-

ति सहित बसंत सहित काम मुनि बेष बनाये सब के मन हरे लिए जात है ॥ ३ ॥ ४ ॥ २५ ॥

मू० । कैसेपितुमातकैसेतेप्रियपरिजनहैं । जगजलधिललामलोने लोनेगोरेश्याम जिन्हपठयेऐसेबालकनबनहैं ॥ टेक ॥ रूप केनपारावारभूपकेकुमारमुनि बेषदेषतलोनाईलघुलागतमदनहैं । सुषमाकीमूरतिसीसाथनिसिनाथमुखीनखसिखअंगसबसोंभाकेसदनहैं ॥ १ ॥ पंकजकरनिचापतीरतरकसकटि सरदसरोजहूतेंसुंदरचरनहैं । सीतारामलखननिहारि ग्रामनारिकहै हेरिहेरिहेरिहेलीहियेकेहरनहैं ॥ २ ॥ प्रानहूकेप्रानसेसुजीवनकेजीवनसे प्रेमहूकेप्रेमरंककृपिनकेधनहैं । तुलसीकेलोचनचकोरनिकेचंद्रमासे आछेमनमोरचितचातककेघनहैं ॥ ३ ॥ २६ ॥

टी० । कैसेइ० । जगत रूप समुद्र के रत्न ॥ १ ॥ इहां पारावार अवधि के अर्थ मे है अर्थात रूप की सीमा नही है निसिनाथमुखी चन्द्रमुखी ॥ २ ॥ सरद सरोज सरद के कमल हेरि हेरि हेरि हेली कहैं हे सखी देखु देखु देखु इहां अति हर्ष मे बीप्सा ३ रंक कृपिन के दरिद्र कृपिनि के मन रूप मोर औ चित्त रूप चातक के आछे कहैं नवीन सजल मेघ हैं ॥ ४ ॥ २६ ॥

मू० । राग भैरव । देषिहैपथिकगोरेसांवरेसुभगहैं सुतियसलोनीनीसंगसोहतसुमगहैं । टेक । सोभासिंधुसंभवसेनीकेनीकेनगहैं मातुपितुभागबसगएपरीफगहैं ॥ १ ॥ पायनपनहीनमृदुपंकजसेपगहैं । रूपकीमोहनीमेलिमोहेअगजगहैं॥२॥ मुनिवेषधरेधनुसायकसुलगहैं । तुलसीहियेलसतलोनेलोनेडगहैं ॥ ३ ॥ २७ ॥

टी० । देखि इ० ॥ १ ॥ सोभा समुद्र से उत्पन्न आछे आछे मणि हैं माता पिता के भाग बस फांदा मे परि गए हैं ॥ २ ॥ पायन

चरनन मे मेलि डारि अग अस्थावर जंगम ॥ ३ ॥ सुलग हैं सुंदर लागत हैं डग फाल जाको कोऊ देश मे डेग कहत हैं ॥ ४ ॥ ॥ २७ ॥

मू० । पथिकपयादेजातपंकजसेपायहैं । मारगकठिनकुसकंटकनिकायहैं टेक ॥ सखिभूखेप्यासेपैचलतचितचायहैं । इन्हकेसुकृतसुरसंकरसहायहैं ॥ १ ॥ रूपसोभाप्रेमकैसेकमनीयकायहैं । मुनिवेषकियेकिधौ ब्रह्मजीवमायहैं ॥ २ ॥ बीरबरिआरधीरधनुधररायहैं । दशचारिपुरपालआलिउरगायहैं ॥ ३ ॥ मगलोगदेषतकरतहायहायहैं वनइनकोतौबामबिधिकेबनायहैं । धन्यतेजेमीनसेअवधिअंबुआयहैं । तुलसीप्रभुसोजिन्हह्नकेभलेभायहैं ॥ ४ ॥ २८ ॥

टी० । पथिक इ० निकाय समूह ॥ १ ॥ चाय आनन्द ॥ २ ॥ रूप श्रीरामजी सोभा श्रीजानकीजू प्रेम श्रीलछिमनजू माय माय ॥ ३ ॥ राय राजा हे सखी चौदहो भुअन कै पालक उरगाय हैं परमेस्वर हैं ॥ ४ ॥ इनको जीवन तो बिधाता बनाय कै वाम है ॥ ५ ॥ आय है यह जो अवधि रूपी जल है तेहि मे जेमीन से ह्वै रहे हैं ते धन्य हैं औं जिन्ह के भले भाव इनसे हैं तेऊ धन्य ॥ ६ ॥ २८ ॥

मू० । राग असावरी । सजनीहैंकोउराजकुमार । पंथचलतम्टदुपदकमलनदोउसीलरूपआगार । आगेराजिवनयनस्यामतनसोंभाअमितअपार । डारोवारिअंगअंगनिपरकोटिकोटिसतमार ॥ १ ॥ पाछेगौरकिशोरमनोहरलोचनबदनउदार । कटितूनीरकसेकरसरधनुचलेहरनछितिभार ॥ २ ॥ जुगलबीचसुकुमारिनारिएकराजतिबिनहिंसिंगारइंद्रनीलहाटकमुकुतामनिजनुपहिरेमहिहार ॥ ३ ॥ अवलोकहुभरिनयनबिकलजनहोहुकरहुसुबिचार । पुनिकहँयहसोभाकहँलोचनदेहगेहसंसार ॥ ४ ॥ सुनिप्रियबचनचितैहितकैरघु

नाथकृपासुखसार। तुलसिदासप्रभुहरेसबनिकेमनतनरहिन सँभार ॥ ५ ॥ २८ ॥

टी०। सजनीइ० ॥ १ ॥ २ ॥ उदार कहैं सुंदर ॥ ३ ॥ इहां म रकत मनि श्रीराम सोना श्रीलछिमनजी मोती श्रो जानकीजी है ॥ ४ ॥ ५॥ ६ ॥ २८ ॥

मू०। राग टोड़ी। देखिरीसखीपथिकनखसिखनीकेहैं। नीलेपीरे कमलसेकोमलकलेबरनितापसकैबेषकियेकामकोटिफीकेहैं टेक:। सुकृतसनेहसीलसुखमासुखसकेलिबिरिचेबिरंचिकि धौंश्रमियश्रमीकेहैं। रूपकीसीदामिनिनोसोभामिनीसहतिसं गउमहुंरमातेश्राछेश्रंगश्रंगतीकेहैं ॥ १ ॥ बनपटकसेकटितू नतीरधनुधरेधीरबीरपालकक्रृपालसबहीकेहैं। पानद्दीनच रनसरोजनिचलतमगकाननपठाएपितुमातुकैसेहीकेहैं॥ २॥ श्रालीश्रवलोकिलेऊनयननिकोफलएऊलाभके सुलाभसुख जीवनसेजीकेहैं। धन्यनरनारिजेनिहारिबिनुगाहकहुंश्राप ने २ मनमोलबिनुबीकेहैं ॥ ३ ॥ बिबुधबरषिफूलहरषिहि येकहतग्रामलोगमगनसनेहसियपीकेहैं। जोगीजनश्रगमद् रसपायौपावरनिमुदितबचनसुनिसुरपसचीकेहैं ॥ ४ ॥ प्रीति केसुबालकसेलालतसुजनमुनि मगचारुचरितलषनरामसीके हैं। जोगनबिरागजागतजनतोरयत्यागएहीश्रनुरागभागखु लेतुलसीकेहैं ॥ ५ ॥ ३० ॥

टी०। देखिइ०। रूप कीसी दामिन दामिन को ऐसो रूप है ॥ २ ॥ बन पट वल्कलादि ॥ ३ ॥ बीके हैं बिकाए हैं ॥ ४ ॥ सिय पीके सनेह मे ग्राम लोग मगन हैं श्रौ देवता हिय मे हरषि फूल बरषि कहत हैं कि जोगी जन को जो दरस अगम सोपा वरन पा यो यह देवतन के जे बचन हैं ते सुनि के इन्द्र श्रौ इन्द्रानी मुदित भए ॥ ५ ॥ मग के सुंदर चरित्र जे श्रीलखन श्री राम श्री जानकी

जीके हैं तेई प्रीति के सुंदर बालक समान हैं बालक कों जैसे पिता माता दुलारत तैसे इहां सुंदर जन मुनि ते दुलारत औ एनही चरित्र न के अनुराग ते जो गाढ़ि बिना तुलसी के भाग खुले हैं ॥ ॥ ६ ३० ॥

मू० । रीतिचलिवेकीचाहिप्रीतिपहिचानिकै आपनीआपनीकहैंप्रेमपरवसअहैंमंजुम्टदुवचनसनेहसुधासानिकै । सांवरेकुंअरकैचरनकेचराइचिन्हवधूपगधरतिकहाधौंजियजानिकै । जुगलकमलपदअंकजोगवतजातगोरे गातकुंअरमहिमामहामानिकै ॥ १ ॥ उन्हकोकहनिनीकीरहनिलखनसीकीतिन्हकीगहनिजेपथिकउरआनिकै। लोचनसजलतनपुलकमगनमनहोतभरिभागीजसतुलसीबखानिकै ॥ २ ॥ ३१ ॥

टी० । रीति इ० । श्रीजानकी रामलषन की चलिवे की रीतिचाहि कहैं देखि कै औ प्रीति पहिचानि कैजे नर नारि प्रेम ते परवस हैं ते सुंदर कोमल बचन न कों स्नेह रूपी अम्टत मे सानि कै आपनोआपनी उक्ति कहत हैं ॥ १ ॥ २ ॥ उनकी कहनि नीकी है औ लखन सीकी रहनि नीकी है औ जे पथिक श्रीराम आदि के उर मे आनि कै लोचन सजल तन पुलक मगन मन होत तिन्ह की गहनि नीकी है औ तुलसीउ यस बखानि कै बड़भागी है ॥ ३ ॥ ३१ ॥

मू० । राग के दारा । जेहिजेहिमगसियरामलखनगएतहँतहँनरनारिबिनुछरनिछरिगे निरखिनिकाईअधिकाईबिथकितभईबचबपुनयनसरसोभासुधाभरिगे। जोतेबिनुवयेबिनुनिफननिरायेबिनुसुक्ततसुखेतसुखसालिफूलिफरिगे। मुनिह्रंमनोरथकोअगमअलभ्यलाभुसुगमसोरामलघुलोगनिकोकरिगे॥१॥ लालचीकौडीकेकूरपारसपरेहैं पालेजानतनकोहैं कहाकोवोसोबिसरिगे । बुधिनबिचारनविगारनसुधारसुधिदेहगेहनेहनातेंमनतेंनिसरिगे ॥ २ ॥ बरषिसुमनसुरहरषिहरषि

कहैंअनायासभव निधिनीचनीकेतरिगे । सोसनेहसमउ
सुमिरितुलसिहूसेकेभलीभांतिभलेपैंतभलेपासेपरिगे ॥ ३ ॥
॥ ३२ ॥

टी० । जेहि इ० जेहि जेहि राह से श्रीजानकी राम लषन गये तहां तहां नर नारि बेटो ने छुरि गये अधिक सुंदराई देखि कै बचन सरीर विशेष थकित भए औ नैन रूपी तडाग मे सोभा रूपी मिष्ट जल भरि गए वा सुधा अमृत ॥ १ ॥ बिना जो ते बिना वा एनिफल कहे अंकुर निराए बिना अर्थात् मोहे बिना सुकृत रूप सुंदर खेत मे सुख रूप धान फलि के फरि गयो इहां जोतना आदि कर्म्म उपासना ज्ञान है जो लाभ मुनिहु के मनोरथ को अगम औ अलभ्य है सो लाभ श्रीराम छोटे लोगन को भी सुगम करि गए ॥ २ ॥ जे कूर कौड़ी के लालची रहे तिनके पारस सम श्रीरामादि पथिक पाले परे है ताते अध्यास रहित भए नहीं जानत हैं कि हम कौन हैं औ कहा करनो है सो बिसरि गए न बुद्धि है न बिचार है न बिगार सुधार की सुधि है देह गृह नेह नाता सब मन ते निकल गये ॥ ३ ॥ सम उसमें पैत दांव ॥ ४ ॥ ३२ ॥

मू० । बोलेराजदेनकोरजायसुभोकाननकोआननप्रसन्नमनमोद
बड़ोकाजुभो मातुपितुबंधुहितआपनोपरमहितमोकोबीस-
हूकेईसअनकूलआजुभो । टेक । असनअजीरनकोसमुझि
तिलकतज्योबिपिनगवनभलेभूषेकोसोनाजुभोधरमधुरीनधी
रबीररघुबीरजूकोकोटिराजसरिसभरतजूकोराजुभो ॥ १ ॥
ऐसीबातैंकहतसुनतमगलोगनकीचलेजातभ्रातदोउमुनिको
सोसाजुभो।ध्याइबेकोगाइबेकोसेइबेसुमिरिबेकोतुलसीको
सबभांतिसुषदसमाजुभो ॥ २ ॥ ३३ ॥

टी० । बोले इ० । राज देइबे के लिए तो बोलाए औ आज्ञा दिए कानन को पर रघुनाथ को मुष प्रसन्न औ मन मे आनन्द बड़ो

काज बन जावो विचारि होत भयो औ अस गुनत भए कि माता कैकेई को औ पिता को बंधु भरत को हमारे बन जावे मे हित है औ अपना तो परम हित है सो पर बीसोबिस्वे आजु ईश्वर अनुकूल भयो परम हित कहिवे को यह भाव कि पितु वचन पालिवे ते बे परिश्रम परम धरम सुलभ भयो वा इहां माता आदि को हित औ बन मे मुनि आदि के दरसन ते आपन हित ताते वा जेहि हेतु अवतार लिए सो कार्य बन जावे ते होय गो ताते परम हित ॥ १ ॥ अजीरन पर को भोजन सम राजतिलक को समुझि के त्याग दियो औ निपट भूष को अनाज प्राप्ति होनो सम बन गमन भयो भाव जैसे अन्न मिलिवे ते भूषा प्रसन्न होत तस प्रसन्न भए धर्म्म रूपी बोझा को धरनि हार धीर बीर जो रघुबीर जू तिन को अपने एक राज को को कहै कोटि राज सम भरत जू को राज पाइबो भयो ॥ २ ॥ मुनि के समान साजु भयो है जेहि दोऊ भा-इन को ते मग लोगन की ऐसो बाते जे ते कहत सुनत चले जात हैं ध्याइबे आदि को तुलसी को सब भांति ते सुख दाता यह पथ को समाज भयो ॥ ३ ॥ ३३ ॥

सू० । सिरिससुमनसुकुमारिसुषमाकीसीवसीयरामबडे़डीसकोच संगलईहै भाईकेप्रानसमानप्रियाकेप्रानकेप्रानजानिवानिप्री तिरीतिकृपासीलमईहै । आलबालअवधसुकामतरुकामबे-लिदूरिकरिकैकईविपतिबेलियईहै आपुपतिपूतगुरजनप्रिय परिजनप्रजाहूकोकुटिलदुसहदसादईहै ॥ २ ॥ पंकजसेप-गनिपानह्यौनपरुषपंथकैसेनिवहेहैंनिवहैंगेगतिनईहै । ए हीसोचसंकटसगनमगनरनारिसबकीसुमतिरामरागरंगरई है ॥ ४ ॥ एककहैवामविधिदाहिनोहमकोभयौउतकीन्ही पीठिइतकोसुडीठिभईहै । तुलसीसहितवनवासीमुनिहम-रिऔअनायासअधिकअघाइवनिगईहै ॥ ४ ॥ ३४ ॥

टी० । सिरसइ० । भाई जो श्रीलषन लाल तिन के प्रान समान औ प्रिया जो श्रीजानकी जू तिन के प्रान के प्रान औ कृपा सील मई जो श्री राम सो सिरिस के फूल सम सुकुमारि औ परम सोभा की मर्यादा जो श्री जानकी जू तिन की बानि कहैं सुभाव औ प्रीति रीति जानि कै बड़े ही संकोच सें संग मे लई है ॥ १ ॥ थाल्हा रूप श्री अवध है तेहि मे सुंदर कल्पवृक्ष औ कल्पलता के समान श्री राम जानकी हैं तिन कों कैकेई ने दूरि करि के कै बिपति की बंवरि बोई है तेहि बिपति बौंर करि कुटिल कैकेई ने अपने को औ महाराज आदि कों दुसह दसा देति भई ॥ २ ॥ एक तो कमल से कोमल चरन है ताहू पर जू तो नाही औ राह कठोर है तेहि मे कैसे निवहे हैं औ कैसे निवहैं गे यह नई गति है भाव आजुलों अस नही देषा एही सोच औ संकट मे मग के नर नारि डूबे हैं औ सब की सुंदर मति श्री राम की प्रीति रूपी रंग मे रंगी है ॥ ३ ॥ पुर नर नारि कहत हैं कि बन बासी मुनि सहित हम सब कै अनाआस अधिक अघाय कै बनि गई है ॥ ४ ॥ ३४ ॥

मू० । राग गौरी । नीकेकैमैनबिलोकनपाएसषिएहिमगजुगपथि
कमनोहरबधुबिधुबदनिसमेतसिधाए । नयनसरोजकिशोर
बयसबरसीसजटारचिमुकुटबनाए कटिमुनिबसनतूनधनुसर
करस्यामलगौरसुभायसुहाए ॥ १ ॥ सुंदरबदनबिसालबां-
हुउरतनुछबिकोटिमनोजलजाए। चितवतमोहिलगीचौधो
सीजानोनकौनकहांतेधौंआए॥ २ ॥ मनगयोसंगसोचवस
लोचनमोचतबारिकितोसमुझाए। तुलसिदासलालसादरस
कीसोईपुरबैजेहिआनिदेषाए ॥ ३ ॥ ३५ ॥

टी० । नीके इ० ॥ ३५ ॥

मू० । पुनिनफिरेदोउबीरबटाऊ स्यामलगौरसहजसुंदरसषिबार
कबहुरिबिलोकिबेकाऊ । करकमलनिसरसुभगसरासनक-

टिमुनिबसननिषंगसुहाए भुजप्रलंबसबअंगमनोहरधन्यसो जनकजननिजेहिजाए ॥ १ ॥ सरदबिमलबिधुबदनजटासिरमंजुलअरुनसरोरुहलोचन। तुलसिदाससारगमैंराजतकोटिमदनमदमोचन ॥ २ ॥ ३६ ॥

टी०। पुनि इ०॥ ३६ ॥

मू०। राग केदारा। आलीकाहूतोबूझेनपथिककहांधौंसिधैहैं कहांतेआएहैंकोहैंकहानामस्यामगोरेकाजकैकुसलफिरिएहिमगऐहैं टेक। उठतबयसमसिभीजतसलोनेसुठिसोभादिषवैयाबिनुवितहिबिकैहैं हियेहेरिहरिलेतलीनोललनासमेतलोयननिलाहूदेतजहांजइगैहैं ॥ १ ॥ रामलषनसियपथिककीकथाप्टथुलप्रेमबिथकीकहतिसुमुषिसबैहैं। तुलसीतिन्हसरिसतेउभूरिभागजेउसुनिकैसुचिततेहिसमैसमैहैं ॥ १ ॥ २ ॥ ३७ ॥

टी०। आली इ० ॥ १ ॥ उठत बैस चढ़ती अवस्था ससिभींजत रेख उठान ॥ २ ॥ प्टथुल विस्तृत तेहि समै समै हैं बनवास के समै की कथा मे समाइंगे ॥ ३ ॥ ४ ३७ ॥

मू०। बहुतदिनबीतेसुधिकछुनलही गएजेपथिकगोरेसांवरेसलोनेसषिसंगनारिसुकुमारिरही। टेक। जानिपहिचानिबिनुआपुतेआपनेहुतेप्रानहुतेप्यारेप्रियतमउपही। सुधाकेसनेहहूकेसारलेसँवारेबिधिजैसेभावतेहैंभांतिजातनकही ॥ १ ॥ बहुरिबिलोकिबेकबहुंकहततनपुलकिनयनजलधारबही। तुलीप्रभुसुमिरिग्रामजुवतीसिथिलबिनुप्रयासपरीप्रेमसही ॥ ॥ २ ॥ ३८ ॥

टी०। बहुत इ० ॥ १ ॥ बिना जान पहिचान के उपही कहैं परदेसी हैं पर अपने सरीर ते औ पुत्रादि हुते औ प्रानहु ते प्रियतम प्यारे हैं ॥ २ ॥ ३ ॥ ३८ ॥

मू० राग गौरी । आलीरीपथिकजेएहिपथपरवसिधाए । तेतोरा मलखनअवधतेआए संगसियसबअंगसहजसुहाए । रतिका मरितुपतिकोटिकलजाए॥ १ ॥ राजादशरथरानोकोसिला जाए । कैकेईकुचालिकरिकाननपठाए ॥२॥ वचनकुभामिनि केभूपहिक्योंभाए । हायहायरायबामबिधिभरमाए ॥ ३ ॥ कुलगुरसचिवकाहूनसमुझाए। कांचमनिलैअमोलमानिक गवांए ॥ ४ ॥ भागमगलोगनिकेदेखनजिनपाए । तुलसीस हितजिन्हगुनगनगाए॥ ५ ॥ ३९ ॥

टी० । आली इ० । इहां कांच मणि सत्य है ॥ १ ॥ ३९ ॥

मू० । सखिजबसेसीतासमेतदेखेदोउभाई तबतेपरैनकलकछुनसु- हाई । नखसिखनीकेनीकेनिरखिनिकाईतनसुधिगईमनअ नतनजाई ॥ १ ॥ हेरनिविहसनिहियेलियेहैंचुराई। पावन प्रेमबिबसभईहौंपराई ॥ २ ॥ कैसेपितुमातुप्रियपरिजनभाई जीवतजीवकेजीवनवनहिपठाई ॥ ३ ॥ समउसुचितकरिहि तअधिकाई। प्रीतिग्रामवधुन्हकीतुलसीहूंगाई॥ ४ ॥ ४० ॥

टी० । सखि इ० समौ सुचित करि हित अधिकाई । अधिक हित तेसो समै संुदर चित्त मे करि के ग्राम बधुन की प्रीति तुलसिउ ने गाई ॥ ४० ॥

मू० । राग केदारा । जबतेसिधाएएहिमारगलखन रामजानकी सहिततबतेनसुधिलहीहै । अवधगएधौंफिरिकैधौंचढ़ेबिंध्य गिरिकैधौंकहूंरहेसोकछुनकाहूकहीहै । टेक: । एककहैं चित्रकूटनिकटनदीके तीरपरनकुटीरकरिबसेबातसहीहै । सुनियतभरतमनाइबेकोआवतहैं होइगीपैसोइजोविधाता चितचहीहै ॥ १ ॥ सत्यसंधधरमधुरीनरघुनाथजूकोआप- नीनिबाहिबेन्नृपकीनिरबहीहै । दसचारिबरषबिहारवनप दचारकरिबेपुनीतसैलसरसरिमहीहै ॥ २ ॥ मुनिसुरसुज

नसमाजकेसुधारिकाज बिगरिबिगरिजहांजहांजाकीरही-
है । पुरपांउधारिहैउधारिहैंतुलसीहूसेजनजिन्हजानिकैग
रीबीगाढ़ेगहोहै ॥ ३ ॥ ४१ ॥

टी० । जबतेइ० ॥ १ ॥ २ ॥ महाराज की तो निबहि गई है पर श्री रघुनाथ जू को आपनी निबाहिबे को है सर तलाव सरि नदी ३ ॥ ४ ॥ ४१ ॥

मू० । राग सारंग । एउपहीकोउकुंअरअहेरी । श्यामगौरधनु
बानतूनधरचित्रकूटअबआइरहेरी । टेक । इन्हहिबहुतआ
दरतमहामुनि समाचारमेरेनाहकहेरी । बनिताबंधुसमत
बसतबन पितुहितकठिनकलेससहेरी ॥ १ ॥ बचनपरसपर
कहतिकिरातिनि पुलकगातजलनयनबहेरी । तुलसीप्रभुहि
बिलोकतिएकटक लोचनजनुबिनुपलकलहेरी ॥ २ ॥ ४२ ॥

टी० । एउपहीइ० । महामुनि अचि वाल्मीक आदि ॥ ४२ ॥

मू० । चित्रकूटअतिबिचित्रसुंदरबनमहि पबित्रपावनपयसरितस
कलमलनिकंदिनी । सानुजजहंबसतरामलोकलोचनाभि-
रामबामअंगबामाबरबिश्वबंदिनी । टेक । रिषिबरतहंछंद
बासगावतकलकोकिलहासकिं तनउनमायकायक्रोधकंदिनी
बरबिधानकरतगानबारतधनमानप्रान झरनाझरतझिंगझिं
गझिंगजलतरंगिनी ॥ १ ॥ बरबिहारचरनचारुपांडरचंपक
चनार करनहारबारपारपुरपुरंदिनी । जोवननवढारतढार
दुत्तमत्तम्टगमराल मंजुमंजुगंजतहैंअलिअलिंगिनी॥२॥चि
तवतमुनिगनचकोरबैठैनिजठौरठौर अक्षयअकलंकसदरचं-
दचंदिनी। उदितसदाबनअकासमुदितबदततुलसिदासजयज
यरघुनंदनजयजनकनंदिनी ॥ ३ ॥ ४३ ॥

टी० । कलंक रहित चंद श्री रघुनाथ हैं औ चंदनी श्री जानकी जू हैं औ इहां आकाश बन हैं ॥ ४३ ॥

मू० । फटिकसिलामृदुबिसालसंकुलसुरतरुतमाललिततलताजाल हरतिछबिबितानकी मंदाकिनितटनितीरमंजुलमृगविहंगभी रधीरमुनिगिरागंभीरसामगानकी । मधुकरपिकबरहिमुषर सुंदरगिरिनिरझरझरजलकनघनछांहछन्दप्रभाभानकी स-बरितुरितुपतिप्रभाउसंतबहैत्रिबिधबाउजनुबिहारबाटिकानृ पपंचबानकी ॥ १ ॥ बिरचिततहंपरनसालअतिबिचित्रलष-नलालनिवसतजहंनितकृपालरामजानकी । निजकरराजी वनयनपल्लवदलरचितसयनप्यासपरसपरपियूषप्रेमपानकी २॥ सियअँगलिषैधातुरागसुमननिभूषनबिभागतिलककरनिक्यों कहौंकलानिधानकी । माधुरीबिलासहासगावतजसतुलसि दासबसतहृदयजोरीप्रियपरमप्रानकी ॥ ३ ॥ ४४ ॥

टी० । कोमल औ बिसाल फटिक सिला है इहां सीता राम के बैठवे ते सिला कोमल है गई है ताते मृदु कहे अबहीं ताईं चि-न्ह बना है औ तहां सघन कल्पवृक्ष औ तमाल है औ सुंदर ति-न्ह वृक्षन पर लतन के समूह है ते चंद वा आदि की छबि कों हरति हैं सो सिला मंदाकिनी नामा नदी के तीर मे है तहां सुंदर मृग औ पक्षिन की भीर है औ धीर जो मुनि हैं तिन की गम्भीरबानी सामवेद के गान की है वा मृग बिहंग धीर जो है सोई धीरमुनि हैं औ तिन की गिरा जो है सोई गम्भीरता साम गान की है ॥ १ ॥ भ्रमर औ कोइल औ मयूर शब्दायमान हैं औ सुंदर पर्वत न ते झरना झरत हैं सोई जल के बूंद हैं औ वृक्षादि के छांह हैं सो मेघ हैं औ तिन्ह झरनन पर सूर्य की प्रभा जो पडै है सो छन प्रभा कहे बिजुली है इहां प्रभा शब्द को देहली दीपक न्याय करि दूनो ओर लगावना औ सब ऋतु मे वसंत ऋतु को प्रभाव है ताते निरंतर सीतल मंद सुगंध वायु बहत है मानो महाराज कामदेव के बिहार करने की वाटिका है ॥ २ ॥ ३ ॥ धातु जो मन

सिला आदि तिन्ह ते श्री जानकी जी के अंग मे लिखे औ फूलनि करि विशेष भाग भूषनन को किए अर्थात् अनेक भूषन बनाए औ कला कारीगरी ताके निधान जो रघुनाथ तिन की तिलक करनि क्यों कहीं भाव कहा नही जात है ॥ ४ ॥ ४४ ॥

मू० । रागकेदारा । लोनेलाललषनसलोनेरामलोनीसियचारुचि
त्रकूटबैठेसुरतरुतरहैं गोरेसांवरेसरीरपीतनीरनीरजमेप्रे-
मरूपसुषमाकेमनसिजसरहैं। लोनेनषसिषनिरुपमनिरषि
वेजोगबड़ेउरकंधरबिसालभुजबरहैं लोनेलोनेलोचनजटनि
केमुकुटलोनेलोनेबदननिजीतेकोटिसुधाकरहैं ॥ १ ॥ लो-
नेलोनेधनुषबिसिषकरकमलनिलोनेमुनिपटकटिलोनेसरध
रहैं । प्रियाप्रियबंधुकोदेषावतबिटपबेलिमंजुकुंजसिलातल
दलफूलफरहैं ॥ २ ॥ रिषिन्हकेआश्रमसराहैंम्हगनामकहैं
लागीमधुसरितझरतनिरझरहैं । नाचतबरहीनोकेगावतम
धुपपिकबोलतबिहंगनभजलथलचरहैं ॥ ३ ॥ प्रभुछबिबिलो-
किमुनिगनपुलकेकहतभूरिभागभएसबनीचनारिनरहैं । तु
लसीसोसुषलाहलूटतकिरातकोलजाकोसिसिकतसुरबिबि-
हरीहरहैं ॥ ४ ॥ ४५ ॥

टी० । प्रेम औ रूप औ सुषमा कैं सरीर जे गोरे सांवरे ते काम देव के तड़ाग के पीत नील कमल सम हैं ॥ १ ॥ कंधर कांधा सुधाकर चंद्रमा ॥ २ ॥ बिसिष कहैं बाण सरधर कहै तरकस पहिले तुक में तीनो मूर्त्ति को बरनन किए फिर दोउ भाइन के अब केवल रघुनाथ को प्रिया बंधु को देषाउब लिषत हैं ॥ ३ ॥ ऋषिन के आश्रमन को बषानत हैं औ म्हगन के नाम कहत हैं अर्थात् यह सांवर है यह चीतर है औ इहां मधु लगी है यह नदी हैं ए झरना झरि रहे हैं अछी भांति ते मोर नाचत हैं भ्रमर गान करत हैं कोइल और नभचर जरचर थलचर बिहंग बोलत हैं

अस श्री रघुनाथ प्रिया औ अनुज सन कहत हैं ॥ ४ ॥ सिसिकत कहै ललचत ॥ ५ ॥ ४५ ॥

मू० । रागसारंग । आइरहेजबतेदोउभाई तबतेचित्रकूटकाननछ-
बिदिनदिनअधिकअधिकअधिकाई । सीतारामलषनपदअं
कितअवनिसोहावनिबरनिनजाई मंदाकिनिमज्जनअवलोक
तत्रिबिधपापत्रयतापनसाई ॥ १ ॥ उकठेउहरितभयेजलथ-
लरुहनितनूतनराजीवसोहाई । फूलतफलतपल्लवतपलुहत
बिटपबेलिअभिमतसुषदाई ॥ २ ॥ सरितसरनिसरसीरुहसं
कुलसदनसंवारिरमाजनुछाई । कूजतबिहंगमंजुगुंजतअलि
जातपथिकजनुलेतबोलाई ॥ ३ ॥ त्रिबिधसमीरनीरझरझर
ननिजहंतहंरहेरिषिकुटीबनाई । सीतलसुभगसिलनिपरता
पसकरतजोगजपतपमनुलाई ॥ ४ ॥ भएसबसाधुकिरातकि-
रातिनिरामदरसमिटिगईकलुषाई । षगम्रगमुदितएकसंग
बिहरतसहजबिषमबडबैरबिहाई ॥ ५ ॥ कामकेलिबाटिका
बिबुधबनलघुउपमाकबिकहतलजाई । सकलभुवनसोभासके
लिमानोरामबिपिनिबिधिआनिबसाई ॥ ६ ॥ बनमिसुमुनि
मुनितियमुनिबालकबरनतरघुबरबिमलबडाई । पुलकिसिथि
लतनुसजलबिलोचनप्रमुदितमनजीवनफलपाई ॥ ७ ॥ क्यों
कहौंचित्रकूटगिरिसंपतिमहिमामोदमनोहरताई । तुलसी
जहंबसिलषनरामसियआनंदअवधिअवधबिसराई ॥ ८ ॥
॥ ४६ ॥

टी० । त्रिबिध पाप कायिक वाचिक मानसिक त्रयताप दैहिक दैविक भौतिक नसात है । महाभारते वनपर्वणि ततोगिरिवरश्रेष्ठे चित्रकूटेविशांपते मंदाकिनी समासाद्य सर्वपापप्रनासिनीम् तत्राभि षेकंकुर्वाणः पितृदेवार्चनेरतः अश्वमेधमवाप्नोति गतिंचपरमांव्रजेत् । जल थल रुह जल के उच्चथल के उच्च राजीव कमल अभिमत

सुषदाई बांछित सुष देनि हारे भाव कल्पटच्छ समान॥ ३ ॥ नंदिन औ तलावन मे सघन कमल है मानो कमल नही है घर बनादू के लक्ष्मी छाई है पच्छी बोलत हैं भंवर गुंजार करत हैं सो बोलत गुंजार नहीं करत है मानो चले जात पथिक को बोलाय लेत है ॥ ४ ॥ ५ ॥ कलुषाई मलीनता ॥ ६ ॥ काम की विहार बाटिका औ विबुध बन नंदन चैत्र इत्यादि ए लघु हैं ताते उपमा कहत मे कवि लजात हैं बनमिसुबन के बरनन के व्याज से ॥ ८ ॥ ९ ॥ ४६ ॥

मू० । रागगौरी । देषतचित्रकूटबनमनअतिहोतहुलास सीतारामलषनप्रियतापसहंदनिवास । सरितसुहावनिपावनिपापहरनिपयनाम सिद्धसाधुसुरसेवितदेतिसकलमकाम ॥ १ ॥ बिटपबेलिनवकिसलयकुसुमितसघनसुजाति । कंदमूलजलथलरुहअगनितअनबनभांति ॥ २ ॥ बंजुलमंजुबकुलकुलसुरतरुतालतमाल । कदलिकदंबसुचंपकपाटलपनसरसाल ॥ ॥ ३ ॥ भूरुहभूरिभरेजनुछबिअनुरागसुभाग । बनबिलोकिलघुलागहिँबिपुलबिबुधबनबाग ॥ ४ ॥ जाइनबरनिरामबनचितवतचितहरिलेत । ललितलताद्रुमसंकुलमनहुंमनोजनिकेत ॥ ५ ॥ सरितसरनिसरसीरुहफूलेनानारंग । गुंजतमंजुमधुपगनकूजतबिबिधबिहंग ॥ ६ ॥ लषनकहेउरघुनंदनदेषियबिपिनसमाज । मानहुंचयनमयनपुरआयउप्रियरितुराज ॥ ७ ॥ चित्रकूटपरराउरजानिअधिकअनुरागु । सषासहितजनुरतिपतिआयेउषेलनफागु ॥ ८ ॥ झिंझिझांझझरनाडफपनवम्टदंगनिसान । भेरिउपंगभ्टंगरवतालकीरकलगान ॥ ९ ॥ हंसकपोतकबूतरबोलतचक्कचकोर । गावतमनहुंनारिनरमुदितनगरचहुंओर ॥ १० ॥ चित्रबिचित्रबिबिधिम्टगडोलतडोगरडांग । जनुपुरवीथिन्हबिहरतछैलसंवारेस्वांग ॥ ११ ॥ नटहिमोरपिकगावहिंसुस्वररागबंधान । नि

खगतकनतकनतगनोजनुषेलहिंसमयसमान ॥ १२ ॥ भरि भरिसूंडकरनिकहंजहंतहंडारहिंवारि । भरतपरसपरपिच- कनिमनहुंमुदितनरनारि ॥ १३ ॥ पीठचढ़ाइसिसुन्हकपि कूदतडारहिंडार । जनुमुदलाइगेरुममिभएखरनिअसवार ॥ १४ ॥ लिएपरागसुमनरसडोलतमलयसमीर । मनहुंअर गजाछिरकतभरतगुलालअबीर ॥ १५ ॥ कामकौतुकीएहिवि धिप्रभुहितकौतुककीन्ह । रीझिरामरतिनाथहिजगबिजई- बरदीन्ह ॥ १६ ॥ दुषबहुदासमोरजनिमानेहुमोरिरजाइ भलेहिनाथमाथेहिधरिआयसुचलेउबजाइ ॥ १७ ॥ मुदित किरातकिरातिनिरघुबररूपनिहारि । प्रभुगुनगावतनाचत- चलेजोहारिजोहारि ॥ १८ ॥ देहिंअसीसप्रसंसहिमुनिसु रबरषहिंफूल । गवनेभवनरामिउरमूरतिमंगलमूल ॥ १९ ॥ चित्रकूटकाननछबिकोकबिबरनैपार । जहंसियलषनसहित नितरघुबरकरहिंबिहार ॥ २० ॥ तुलसिदासचांचरिमिसिक हेरामगुनग्राम । गावहिंसुनहिंनारिनरपावहिंसबअभिराम ॥ २१ ॥ ४७ ॥

टी० । पय कहैं पय खनो ॥ २ ॥ नव किसलै नवीन पल्लव अन वन भांति अनेक भांति ॥ ३ ॥ वंजुल बेंत वकुल कुल मौल सरिन के समूह पाटल कहैं पांडर पनस कटहर रसाल आम ॥ ४ ॥ भू- रुह वृक्ष ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ लषन कहत भए को रघुनंदर विपिन को समाज देषिए मानो आनद युक्त कामदेव के पुर मे प्रिय रितु राज आयो अब दूसमर उत्प्रेक्षा कहत हैं ॥ ८ ॥ ९ ॥ झिल्ली झीं- गुर पनव ढोल भेरी नगारा उपंग मुरचंग ॥ १० ॥ कपोत यद्यपि कबूतर का नाम हैं पर इहां कुमरी जानना काहे ते कि कबूतर पृथक लिषा है चक्र चकवा ॥ ११ ॥ डोगंर डांग पर्वत कैराह ॥ १२ ॥ नटहिं नाचहिं समै समान फागुन मास के अनुकूल ॥ १३ ॥ क

निकर हंथिनी हाथी बारि जल ॥ १४ ॥ इहां खर के स्थान मे बांदर है औ बच्चा जो पीठ पर चढे हैं सो सवार के स्थान मे हैं लाल मुंह वाले बच्चा मानो गेरू लगाए हैं काले मुख वाले बच्चा मानो मसी लगाए हैं ॥ १५ ॥ मलया चल को जो दक्षिण वायु है सो फूलन को पराग औ रस लिए डोलत है मानो रस नहीं है घोरा भया अरगजा है ताको छिरकत है औ पराग नहीं है गुलाल अबीर हैं तासे भरत है ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ चांच भिनु कहे होरी मे चांर गायो जात है तेहि के बहाना से ॥ २२ ॥ ४७ ॥

मू० । रागबसंत । आजुबन्योहैबिपिनिदेषोरामधीर । मानोषेलत फागमुदमदनबीर ॥ बटबकुलकदंबपनसरसाल । कुसुमित तरुनिकरकुरवकतमाल ॥ मनोबिबिधबेषधरेछैलजूथ । बिचबीचलताललनाबरूथ ॥ १ ॥ पनवानकनिरझरअलिउपंग । बोलतपारावतमानोडफम्रदंग ॥ गायकसुककोकिलझिल्लिताल । नाचतबहुभांतिबरहिमराल ॥ २ ॥ मलयानिल सीतलसुरभिमंद । बहसहितसुमनरसरेनुबृंद ॥ मानोछिरकतफिरतसबनिसुरंग । भ्राजतउदारलीलाअनंग ॥ ३ ॥ क्रीड़तजीतेसुरनरअसुरनाग । हठिसिद्धमुनिन्हकेपंथलाग कहतुलसिदासतेहिछाडुमैन । जेहिराषरामराजीवनैन ॥ ॥ ४ ॥ ४८ ॥

टी० । निकर समूह कुरवक कोरैया ॥ २ ॥ आनक कहैं नगारा आनकः पटहेभेर्यां म्रदंगेध्वनदम्बुदे इत्यभिधानात् ढोल झरना ढोल औ नगारा है भ्रमर उपंग है ॥ ३ ॥ रेनु पराग ॥ ४ ॥ क्रीड़त जिते षेलवाड़ मे जीत लिए ॥ ५ ॥ ४८ ॥

मू० । रितुपतिआयोभलोबन्योबनसमाजु । मानोभएहैंमदनमहाराजआज ॥ मानोप्रथमफागमिसकरिअनीति । होरीमिस

अरिपुरजारिजोति ॥ मारुतमिसपत्रप्रजाउजारि । नएनग रवसाएविपिनिभारि ॥ १ ॥ सिंहासनसैलसिलासुरंग । काननछविरतिपरिजनकुरंग ॥ सितछत्रसुमनवल्लीवितान । चामरसमीरनिरझरनिसान ॥ २ ॥ मानोमधुमाधवदोउअ निपधीर । बरबिपुलबिटपबानैतबीर ॥ मधुकरशुककोकिल बंदिहंद । बरनहिंबिशुद्धजसबिबिधिछंद ॥ ३ ॥ महिपरत सुमनरसफलपराग । जनुदेतइतरनृपकरिबिभाग ॥ कलिस चिवसहितनयनिपुनमारि । कियोबिश्वबिबसचारिहुप्रका र ॥ ४ ॥ बिरहिनपरनितनइमरइमारि । डांटिअहिसिद्धि साधकप्रचार ॥ तिन्हकोनकामसकैचापिछाहं । तुलसीजेव- सहिंरघुबीरबाहं ॥ ५ ॥ ४९ ॥

टी० । बसंत ऋतु के आए से बन समाज भलो बन्यो मानो का- मदेव महाराज आज भए हैं मानो फाग के बहाना ते प्रथम अनीत करि के होरी के बहाने सत्रु पुर को जारि करि जोति करि वायु के बहाने पत्र रूपी प्रजाकों उजारि के फिरि सकल बन मे नया नगर बसाए ॥ १ ॥ सुंदर रंग वालो पर्वत की सिला सिंहासन है औ कानन की जो छबि सो काम की पत्नी रति है औ कुरंग ह- रिन निकट बर्तीजन हैं स्वेत सुमन स्वेत छत्र हैं लता मंडप हैं चमर वायु है झरना नगारा है ॥ २ ॥ मानो चैत्र औ वैसाष दोऊ धीर सैना पति हैं श्रेष्ट जे अनेक पिटपैं ते तेहि सैना बाने बंदबीर हैं भमर सुआ कोइल ए भाट गन हैं अनेक छंद मे बिशुद्ध यस को बरनत हैं ॥ ३ ॥ महि मे फूल रस फल धूरि परत है सो मानो आन राजा बिभाग पूर्वक कर देत हैं कलिकाल रूप सचिव सहित नीत मे निपुन जो काम है सो विश्व को चारिउ प्रकार ते अर्थात् साम दान भेद दंड करि बिशेष वश किए ॥ ४ ॥ बिरहिन के ऊपर निति नई मारि परति है औ सिद्ध औ साधक प्रचारि करि बिशेष

डाटे जात हैं काम तिन्ह की छांहं को नहीं दव य सकत है जे रघुबीर के बाहं ते बसत है ॥ ५ ॥ ४९ ॥

मू० । सबदिनचित्रकूटनीकोलागत । बरषारितुप्रवेसबिशेषगिरिदेषतमनअनुरागत ॥ चहुंदिसिबनसंपन्नबिहंगमृगबोलतसोभापावत । जनुसुनरेसदेसपुरप्रमुदितप्रजासकलसुषछावत ॥ ॥ १ ॥ सोहतस्यामजलदमृदुघोरतधातुरगमगेसृंगनि । मनहुंआदिअंभोजबिराजतसेवितसुरमुनिभृंगनि ॥ २ ॥ सिषरपरसिघनघटहिंमिलतबगपांतिसोछबिकबिबरनी । आदिबराहबिहरिबारिधिमानोउठ्योहैदसनिधरिधरनी ॥ ३ ॥ जलजुतबिमलसिलनिझलकतनभबनप्रतिबिंबतरंग । मानहुंजगरचनाबिचित्रबिलसतिबिराटअंगअंग ॥ ४ ॥ मंदाकिनिहिमिलतझरनाझरिझरिभरिभरिजलआछे । तुलसीसकलसुकृतसुषलागेमानोरामभगतिकेपाछे ॥ ५ ॥ ५० ॥

टी० । । चहुं ओरबन पुष्प फलादि करि सम्पन्न है औ पक्षी मृग बोलत मे सोभा पावत हैं मानो सुंदर नरेस ते देश औ पुर के प्रजा प्रमुदित है सकल सुष छावत हैं ॥ २ ॥ पर्वत के ऊपर स्याम मेघ सोभत हैं औ मृदु घोरत कहें मधुर धुनि ते गरजत हैं औ सिषरनि से धातु गेरू मन सिलादि रगमगे कहैं बहि चले हैं मानो परवत नहीं है आदि कमल है अर्थात् जाते ब्रह्मा उत्पन्न भए इहां अत्यंत दीर्घ करि आदि कमल की उपमा दिए सो सुर मुनि रूप भृंगनि करि सेवित हैं इहां भृंग रूप स्याम जलद जानना ॥ ३ ॥ भृंगनि को छुद्र के बकुलनि की पांति सघन जो घटा तिन को मिलत है सो छबि कबि बरनी हैं मानो आदि बराह समुद्र मे बिहार करि के दांत पर धरनी धरि के उठ्यो है इहां आदि बराह पर्वत है बर्षा को जल जो नीचे लगा है सो समुद्र है बग पांति दसन है घटा धरनी है वा जो मेघ पर्वत ते मिलि रह्यो

है सो आदि बाराह है ताके ऊपर से बग पांति जो ऊपर को नि-
कली है सो दसन है दूसरी घटा जो ऊपर है सो भूमि है ॥ ४ ॥
निर्मल सिलनि मे जल युक्त आकाश बन औ तरंग को प्रतिबिंब
झलकत है मानो बिराट के अंग अंगनि मे जग को रचना बिचित्र
बिशेष लसति है ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५० ॥

मू० । रागसोरठः । आजुकोभोरऔरसोमाई । सुन्योनद्वारबेद
बंदीधुनिगुनिगनगिरासोहाई ॥ निजनिजपतिसुंदरसदन-
नितरूपसीलछबिछाई । लेनअसीससीसआगेकरिमोपैसुत
बधूनआई ॥ १ ॥ बूझोहोंनबिहंसिमेरेरघुबरकहासुमित्रा
माता । तुलसीमनजुंमहांसुषमेरेदैंषिनसक्योबिधाता ॥२॥
॥ ५१ ॥

टी० । अवध मे श्री कौशल्या जी की उक्ति कहत हैं निज निज
पति अपने अपने पति के सुंदर गृहनि ते रूप शील छबि ते छाई
जे सुत बधू हैं ते माता के आगे करि असीस लेइबे हेतु हमारे
पास न आईं ॥ ३ ॥ ५१ ॥

मू० । जननीनिरिषतिबालधनुहिंआ । बारबारउरनयननिलावति
प्रभुजुकिललितपनहियां ॥ कबहुंप्रथमज्योंजाइजगावति
कहिप्रियबचनसकारे । उठहुतातबलिमातुबदनपरअनुजसषा
सबद्वारे ॥ १ ॥ कबहुंकहतिबड़बारभईज्योंजाहुभूपपैभैया
बंधुबोलिजेइयेजोभावैगईनेछावरिमैया ॥ २ ॥ कबहुंसमु-
झिबनगमनरामकोरहिचकिचित्रलिषीसी । तुलसिदासयह
समयकहेतेलागतिप्रीतिसिषीसो ॥ ३ ॥ ५१ ॥

टी० । प्रीति सिषीसी कहिबे को यह भाव कि जो नेह सत्य
हो तौ ता कहतही मे सरीर छूटि जातो ॥ ५२ ॥

मू० । माईरीमोहिनकोउसमुझावै । रामगमनसांचोकिधौंसपनो
मनपरतीतनआवै ॥ लगोरहतिमेरेनयननिआगेरामलषन

अरुसीता। तदपिनमिटतनदारुइयाउरकोबिधिजोभयोबिपरीता ॥ १ ॥ दुषनरहैरघुपतिहिबिलोकततनुनरहैबिनुदेषे । करतनप्रानपयानसुनहुसषिअरुझिपरीएहिलेषे ॥ २ ॥ कौसल्याकेबिरहबचनसुनिरोइउठीसबरानी । तुलसिदासरघुबीरबिरहकीपीरनजातिबषानी ॥ ३ ॥ ५३ ॥

टी० । सु० ॥ ५३ ॥

मू० । जबजबभवनबिलोकतिसूनो तबतबबिकलहोतिकौसल्यादिनदिनप्रतिदुषदूनो । सुमिरतबालबिनोदरामकेसुंदरमुनिमनहारी । होतिहृदयअतिशूलसमुझिपदपंकजअजिरबिहारी ॥ ॥ १ ॥ कोअबप्रातकलेऊमागतरूठिचलैगोमाई । स्यामातमरसनयनश्रवतजलकाहिलेउंउरलाई ॥ २ ॥ जिऔंतौबिपतिसहौंनिसबासरमरौंतौमनपछितायौ । चलतबिपिनिभरिनयनरामकोबदननदेषनपायों ॥ ३ ॥ तुलसिदासयहबिरहदसाअतिदारुनबिपतिघनेरो । दूरिकरैकोभूरिकृपाबिनुसोकजनितरुजमेरो ॥ ४ ॥ ५४ ॥

टी० । पद पंकज अजिर बिहारी कहिवे को यह भाव कि चरण कमल सम कोमल है औ आंगन से बाहर न निकले सो बन में कैसे निर्वाह हैं ॥ ४ ॥ ५४ ॥

मू० । मेरोयहअभिलाषविधाताकबपुरवैसषिसानुकूलह्वैहरिसेवकसुषदाता । सीतासहितकुसलकोसलपुरआवतहैंसुतदोऊ श्रवनसुधासमबचनसषोकबआइकहैगोकोऊ ॥ १ ॥ सुनिसंदेसप्रेमपरिपूरनसंभ्रमउठिधावोंगो । बदनबिलोकिरोकिलोचनजलहरषिहियेलावोंगो ॥ २ ॥ जनकसुताकबमासुकहैमोहिरामलषनकहैमैया । बांहंजोरिकबअजिरचलैगेस्यामगौरदोउभैया ॥ ३ ॥ तुलसिदासएहिभांतिमनोरथकरतप्रीतिअतिबाढ़ी । थकितभईउरआनिरामछबिमनहुंचित्र

लिषिकाढ़ी ॥ ४ ॥ ५५ ॥

टी० । सुगम ॥ ५५ ॥

मू० । सुन्यौजबफिरिसुमंतपुरआयो कहिहैकहाप्रानपतिकीगति नृपतिबिकलउठिधायो । पायपरतमंत्रीअतिब्याकुलनृपउठा यउरलायो दसरथदसादेषिनकह्योकछुहरिजोसंदेसपठायो ॥ १ ॥बूझिनसकतकुसलप्रीतमकीहृदययहैपछितायौ । सा चेहुसुतबियोगसुनिबेकहुंधिगबिधिमोहिंजिआयौ ॥ २ ॥ तुलसिदासप्रभुजानिनिठुरहौंन्यायनाथबिसरायो । हारघुप तिकहिपर्योअवनिजनुजलतेमीनबिलगायो ॥ ३ ॥ ५६ ॥ मुएहुनमिटैगोमेरोमानसिकपछिताउ नारिबसनबिचारकी न्होकाजसोचतराउ । तिलककोबोलेदियोबनचौगुनोचि तचाउ हृदौदारिमज्योंनबिहर्योसमुझिसीलसुभाउ ॥ १ ॥ सीयरघुबरलषनबिनुभयभभरिभग्योनआउ। मोहिबूझिपरत नयातेकवनकठिनकुघाउ ॥ २ ॥ सुनिसुमंतकिआनसुंदरसु- वनसहितजिआउ । दासतुलसीनतरुमोकहंमरनअमियपि- आउ ॥ ३ ॥ ५७ ॥

टी० ॥ १ ॥ दाडिम अनार ॥ २ ॥ भग्योन आउ आरदायन भा- ग्यो ॥ ३ ॥ हे सुमंत सुनो कि सुंदर पुत्र आनि कर हित सहित जिआउ भाव पुत्र बिना जिआवना अहित सहित है इहां महाराज अति पीड़ित हैं ताते सुनु के स्थान मे सुनि कहे ॥ ४ ॥ ५७ ॥

मू० । अवधबिलोकिहोंजीवतरामभद्रबिहीन कहाकरिहैआइसा नुजभरतधरमधुरीन । रामसोकसनेहसंकुलतनुबिकलमन लीन टूटितारागननमगज्योंहोतछिनछिनछीन ॥ १ ॥ हृद- यसमुझिसनेहसादरप्रेमपावनमीन । करीतुलसीदासदसर- थप्रीतिपरिमितिपीन ॥ २ ॥ ५८ ॥

टी० । राम भद्र के बिना अवध देषि करि के हम जीवत हैं अ-

नुज सहित धर्म्म धुरीन जो भरत सो आय करि के कहा करि है भाव प्रथम जो आए होते तो अस सोकत भोगिवे को परत अर्थात् कैकेई को डांटि देते क्योंकि धर्म्म धुरीन है वा भरत धर्म्म धुरीन है यह अन्याय जनित दुष को न सहि सकि हैं ताते आइ के कहा करि हैं अर्थात् जिन आवैं ॥ १ ॥ श्री राम के शोक से तन बिकल है औ सनेह ते पूर्ण है ताते मन लीन भयो जात है तारा टूट के आकाश के मग में जैसे छिन छिन छीन होत जात है तस होत है ॥ २ ॥ नेह सहित आदर सहित मौन के प्रेम को हृदय मे पवित्र समुझि के गोसांई जी कहत हैं कि दशरथ महाराज प्रीति को मर्यादा को पुष्ट करत भए भाव जैसे जल बिना मछरी शरीर त्यागत तस त्यागे ॥ ३ ॥ ५८ ॥

मू० । रागगौरी । करतरायमनमोअनुमान सोकबिकलमुषवचन नआवैबिछुरेकृपानिधान । राजदेनकहंबोलिनारिवसमैंजोक ह्योबनजान आयसुसिरधरिचलेहरषिहियकाननभवनसमा न ॥ १ ॥ ऐसेसुतकेबिरहअवधिलौंजौराषौयहप्रान । तौ-मिटिजाईप्रीतिकीपरिमितिअजससुनौंनिजकान ॥ २ ॥ रा मगएअजहूंहाजोवतसमुझतहींअकुलान । तुलसिदासतन तजिरघुपतिहितकियौप्रेमपरवान ॥ ३ ॥ ५९ ॥ सोरठ । ऐसोतैंक्योंकटुबचनकह्योरी रामजाऊकाननकठोरतेरोकैसे धौंहृदउरह्योरी । दिनकरबंसपितादसरथसोरामलषनसे-भाई जननीतूजननीतोकहाकहौंबिधिकेहिषोरिनलाई ॥ ॥ १ ॥ होलहिहौंसुषराजमातुह्वैसुतसिरछत्रधरैगो । कुल कलंकमलमूलमनोरथतोबिनुकोनकरैगो ॥ २ ॥ ऐहैंरामसु षीसबह्वैहैंईसअजसमेरोहरिहैं । तुलसीदासमोकोबड़ोसो चतूजनमकवनबिधिभरिहैं ॥ ३ ॥ ६० ॥

टी० । वशिष्ट जू को काश्मीर दूत भेजब औ भरत जू को आउब

आदि कथा छोड़दिए अब भरत जी की उक्ति कैकेई प्रति लिषत हैं १ ॥ दिनकर ऐसो वंस भयो औ दसरथ महाराज सम पिता औ श्रो राम लषन से भाई भए तहां हे जननी तू जननी भई तो कहा कहीं विधाता ने केहि को खोटाई नहीं लगाई है वा हे जननी तू अपने जननी सम भई यह कथा बाल्मीकी रामायण मे स्पष्ट है ॥ २ ॥ कुल को कलंक मल को मूल अस मनोरथ ता बिना कौन करैगो कि पुत्र सिर पर छत्र धारण करैगो हम राजा की माता ह्वै कै सुष पावोंगी ॥ ३ ॥ भरि है बितइ हैं ॥ ४ ॥ ६० ॥

मू० । तातेहौंदेतनदूषनतोऊ रामबिरोधीउरकठोरतेप्रगटकियो
बिधिमोहू । सुंदरसुषदसुसीलसुधानिधिजरनिजायजेहिजो
ए बिषबारुनीबंधुकहियतबिधुनातोमिटतनधोए ॥ १ ॥ हो
तेजौनसुजानसिरोमनिरामसबकेमनमाहीं । तौतेरीकरतू-
तिमातुसुनिप्रीतिप्रतीतिकहांही ॥ २ ॥ म्रदुमंजुलसांचीस-
नेहसुचिसुनतभरतबरबानी । तुलसीसाधुसाधुसुरनरमुनिक
हतप्रेमपहिचानी ॥ ६१ ॥

टी० । राम बिरोधी जे कठोर उर तातें बिधाता ने हमहूं को प्रगट कियो भाव तब दोषी हमहूं ठहरे ताते तोहू को दोष नहीं देत हौं ॥ १ ॥ सुंदर सुखदाता सुसील अम्रत की राह जेहि को देखिबे ते तपनिजात है ऐसे बिधु को भी बिख और बरुणी को भी बंधु कहियत है तो निस्चै भयो कि नाता धोयबे तें नहीं मिटत है ॥ २ ॥ सुजाननि में सिरोमणि और सब के मन माहीं श्री राम जो न होते तो हे माता तेरी करतूति सुनि के हमारी प्रीति प्रतीति कहां रही अर्थात् कहीं नहीं रही ॥ ३ ॥ कोमल सुंदर सां- ची नेह सहित औ शुद्ध ऐसी जो भरत की श्रेष्ट बानी ताको सुनत मात्र सुर नर मुनि प्रेम पहिचान के ठीक है ठीक हैं कहत हैं ॥ ४ ॥ ६१ ॥

मू० । जौपैहौंमातुतुमतेमळ्हैहौंतौजननीजगमैयामुखकीकहां
कालिमाध्वैहो । क्यौंहौंआजुहोतशुचिसपथनिकौनमानि
हैसांची । महिमाम्रगीकौनसुकृतीकीषलवचनविसिषतेवां-
ची ॥ १ ॥ गहिनजातिरसनाकाहूकीकहौंजाहिजोईसूझै ।
दीनबंधुकारुन्यसिंधुबिनुकौनहृदयकीबूझै ॥ २ ॥ तुलसीरा
मवियोगविषमबिषबिकलनारिनरभारी । भरतसनेहसुधा
सीचेसबभयेतेसमयसुखारी ॥ ३ ॥ ६२ ॥

टी० । कौसल्याजी के प्रति भरतजी की उक्ति ॥ १ ॥ आजु सपथ
नि से हम कैसे सुद्ध ह्वै सकत हैं हमारे बात को कौन साचो मा
नैगो कवने सुकृती की महिमा रूप म्रगी षल के बचन रूप बान
ते बची है भाव नहीं बची है ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ६२ ॥

मू० । काहेकोषोरिकैकहिलावो घरळ्बीरबलिजांउतातमोकोआजु
बिधाताबांवो । सुनिबेयोगबियोगरामकोहोनहोउमेरप्यारे
सोमेरेनयननिआगेतेरघुपतिबनहिं सिधारे ॥ १ ॥ तुलसि-
दाससमुझाइभरतकहँआंसुपोछिउरलाए ॥ २ ॥ ६३ ॥

टी० । कौसल्या जी की उक्ति है ॥ ६३ ॥

मू० । मेरोअवधधौंकहहुकहाहैकरहुराजरघुराजचरणतजिलैल-
टिहोगुरहाहै । धन्यमातुहौधन्यलागिजेहिराजसमाजठ-
हाहै ॥ तापरमोसोप्रभुकरिचाहतसबबिनुदहनदहाहै ॥ १ ॥
राममसपथकोजककछूकहैजनिमेदूखदुसहसहाहै । चित्रकूटच
लिहौंप्राताहिचलिछमिएमोहिहहाहै ॥ २ ॥ योंकहिभोर
भरतगिरबरकोमारगबूझिगहाहै । सकलसराहतएकभरत
जगजनमिसुलाहुलहाहै ॥ ३ ॥ जानिहिसियरघुनाथभरत
कोसीलसनेहमहाहै । कैतुलसीजाकोरामनामसोंप्रेमनेम
निबहाहै ॥ ४ ॥ ६४ ॥

टी० । श्री भरत जी की उक्ति है मेरो अयोध्या जी मे कहो तो

क्या है अर्थात कुछ नहीं है रघुराज को चरण छोड़िके राज करऊ अमलैं लगाइ के लोग लठि कहैं रटि रहा वा मालै में लोग लटि रहाहै॥१॥ हमारी माता धन्या हैं औ हम धन्य हैं काहे ते कि जेहि के निमित्त राज समाज ठहा हैं कहैं बिगरि गया है ताहू पर हमारे ऐसे को स्वामी करि के बिना अगिनि के सब जरा चाहत हैं ॥ २ ॥ मेरी इहा कहैं बिनता है छमा कीजियें हम प्रातःकाल चलैंगे आप सब चलिये ॥ ३ ॥ गिरवर कामदनाथ जगत में जनमि कें एक भरतैने सुंदर लाभ को लहा है अस सकल सराहत हैं ॥ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६४ ॥

मू० । भाईहौंअवधकहारहिलहिहौं । रामलषनसियचरनबिलोकनकालिकाननिजैहौं ॥ जद्यपिमोतेंकैकुमातुतेह्वैआईअतिपोची । सनमुखगयेसरनराखहिंगेरघुपतिपरमसकोची ॥ १ ॥ तुलसीयोंकहिचलेभोरहीलोगबिकलसँगलागे । जनुबनजरतदेखिदारुनदवनिकसिबिहँगम्रगभागे ॥ २ ॥ ६५ ॥

टी० । सुगम ॥ ६५ ॥

मू० । शुकसोंगहबरहियकहैसारो बीरकीरसियरामलषनबिनुलागतजगअँधियारो । पापिनचेरिअयानिरानिनृपहितअनहितनबिचारो। कुलगुरसचिवसाधुसोचतबिधिकोनवसाइउजारो ॥ १ ॥ अवलोकेनचलतभरिलोचननगरकोलाहलभारो । सुनेनबचनकरुनाकरकेजबपुरपरिवारसँभारो ॥ २ ॥ भैयाभरतभावतेकेसंगबनसबलोगसिधारो । हमपरपाइपीँजरनतरसतअधिकअभागहमारो ॥ ३ ॥ सुनिषगकहतअंबमौगीरहुसमुझिप्रेमपथन्यारो । गएतेप्रभुपहुंचायफिरेपुनिकरतकरमगुनगारो ॥ ४ ॥ जीवनजगजानकीलषनकोमरनमहीपसँवारो । तुलसीऔरप्रीतिकीचरचाकरतकहाककुरेचारो ॥ ५ ॥ ६६ ॥

टी० । मैना सुआ सो व्याकुल हृदय कहै है हे भाई सूआ श्री सीताराम लक्ष्मन बिना जगत अँधियारो लागत है ॥ १ ॥ पापिन जो चेरी औ बुद्धि हीन रानी और महाराज ने हित अनहित न हीं बिचार किया बशिष्टजी और सुमंत्रादि मंत्री और साधुजन सोचत हैं कि बिधाता ने बसाय के कौन का नहीं उजारेउ अर्थात सब को उ जारेउ ॥ २ ॥ चलत कै नेत्र भरि देखे नहीं और जब पुरपरिवार कों सम्हार श्री राघव कियो तब नगर में महत शब्द रह्यौ ताते करुना कर के बचन न सुने ॥ ३ ॥ प्रिय जो भैया भरत तिन के संग बन मे सब लोग गए औ हम पंख पाय कै पींजरन मे तरसत हैं भाव जिन के पंष नाहीं ते गए औ हम नाहीं ताते अधिक अभाग हमारो है ॥ ४ ॥ सुआ सुनि के कहत है कि हे अम्ब मैनी प्रेम का पथ न्यारो है यह समुझि कै मौगी कहैं मौन रहु जे प्रभु के संग गए ते पहुंचाय कै कर्म के करतब की निंदा करत पुनि फिरे ॥ ५ ॥ जीवन तो जग मे श्री जानकी औ लषन लाल को है औ महाराज ने मरन बनायो है और प्रीति की चरचा काहे को करत हैं काहे ते कि कुछु ह्वै सकत नाहीं भाव न मरतै बना न संग जातै बना ॥ ६ ॥ ६६ ॥

मू० । कहैसुकसुनहिंसिषावनसारो बिधिकरतबबिपरीतबामगति
रामप्रेमपथन्यारो । कोनरनारिअवधषगम्हगजेहिजीवनरा
मतेप्यारो बिद्यमानसबकेगवनेबनबदनकरमकोकारो ॥ १ ॥
अंबअनुजप्रियसषासुसेवकदेषिबिषादबिसारो पच्छीपरबसप
रेपींजरनिलेषौकौनहमारो ॥ २ ॥ रहिन्हपकीबिगरीहैसब
कीअवएकसंवारनहारो । तुलसीप्रभुनिजचरनपीठमिसभरत
प्रानरषवारो ॥ ३ ॥ ६७ ॥

टी० सुक कहत है कि हे मैना सिषावन सुनो बिधि के बिपरीत करतब से बक्र गति है औ श्री राम के प्रेम को पथ न्यारो है ॥ १ ॥

अवध में कवन नरनारि खगम्हग अस है कि जेहिके राम ते प्यारो जीवन है परंतु सबके रहत जो श्री राम बन को गए तो करम को मुहकारो है ॥ २ ॥ माता औ बंधुवर्ग औ प्रियसखा औ सुसेवक देषि के बिषाद को बिसरायो वा अनुज प्रियसषा औ सुसेवकों कों देषि कै माता सब बिषाद को बिसरायो तो हमतो पक्षि हैं ताहू मे परबस पीजरन में परें हैं तो हमारो कवन लेषो है ॥ ३ ॥ एक महाराज को तो रही और सबकी बिगरी अब एक सवांरनिहारो है जो प्रभु निजचरण पादुका के बहाना ते भरत के प्रान को रषवारो है ॥ ४ ॥ ६७ ॥

मू० । तादिनशृंगबेरपुरआए रामसषातेसमाचारसुनिबारिबिलोचनछए । कुससाथरीदेषिरघुपतिकीहेतुअपनपौजानो कहतकथासियरामलषनकोबैठेहिरैनबिहानो ॥ १ ॥ भोरहिभरद्वाजआश्रमह्वैकरिनिषादपतिआगे । चलेजनुतऔनडागतदेषितगजघोरघामकेलागे ॥ २ ॥ बूझतचित्रकूटकहंजेहितेहिमुनिबालकनिबतायो । तुलसीमनहुंफनिकमनिढूंढतनिरषिहरषिहियधायो ॥ ३ ॥ ६८ ॥ पदसुगम ॥ ६८ ॥

मू० । बिलोकेदूरितेदोउबीर उरआयतआजानुसुभगभुजस्यामलगौरसरीर । सीसजटासरसीरुहलोचनबनेपरिधनमुनिचीर निकटनिषंगसंगसियसोभितकरनिधुनतधनुतीर ॥ १ ॥ मनअगऊडतनपुलकिसिथिलभयोनलिननयनभरेनीर । गड़तगोड़मानोसकुचपंकमहंकठतप्रेमबलधीर ॥ २ ॥ तुलसीदासदसादेषिभरतकोउठिधायेअतिहीअधीर । लिएउठाइउरलाइकृपानिधिबिरहजनितहरिपीर ॥ ३ ॥ ॥ ६९ ॥

टी० । आयतबिसाल आजान भुज जानु पर्यंत बहुँ ॥ १ ॥ बने परिधन मुनिचीर मुनिचीर जे बल्कल ते परिधन कहैं बस्त्र बने हैं २ ॥ अगऊड अग्रवर्ती ॥ ३ ॥ हरि कहैं हरि लिए ॥ ४ ॥ ६९ ॥

मू० । रागकेदारा । भरतभएठाढेकरजोरि ह्वैनसकतसामुहेसकुच बससमुझिमातुक्रतषोरि । फिरिहैंकिधौंफिरनकहिहैंप्रभु कलपिकुटिलतामोरि हृदयसोचजलभरेबिलोचनदेहनेह-भईभोरि ॥ १ ॥ बनवासीपुरलोगमहामुनिकियेहैंकाठके सेकोरि। दैदैश्रवनसुनिबेकोजहंतहंरहेप्रेममनबोरि ॥ २ ॥ तुलसीरामसुभाउसुमिरिउरधरिधोरजहिबहोरि । बोलेब चनबिनीतउचितहितकरुनारसहिनिचोरि ॥ ३ ॥ ७० ॥

टी० । कलपि कल्पना करिके अर्थात् बिचारि के देह नेह भई भोर देहाध्यास रहित भए ॥ २ ॥ काठ केसे स्वरूप से बनाए भए हैं भाव सबजड़ से ह्वै रहे हैं प्रेम मन बोरि प्रेम मे मन को बोरि रहे हैं ॥ ३ ॥ ७० ॥

मू० । जानतहौसबहीकेमनकी तदपिकृपालकरौंबिनतीसोईसाद रसुनऊदीनहितजनकी । एसेवकसंततअनंन्यअतिज्यौंचात कहिएकगतिघनकी यहबिचारिगवनऊपुनीतपुरहरऊदुस हआरतपरिजनकी ॥ १ ॥ मरोपुनिजीवनजानिएऐसो दुजियजैसोअहिजासुगईमनिफनकी । मेटऊकुलकलंककोसलपतिआज्ञादेऊनाथमोहिबनकी ॥ २ ॥ मोकोजोईजोई लादूएलोगैसोईसोईजौउतपतिकुमातुतेयातनकी । तुलसी दाससबदोषदूरिकरिप्रभुअबलाजकरऊनिजपनकी ॥ ३ ॥ ७१ ॥

टी० । एअवधवासी सब निरंतर अति अनन्य सेवक हैं जैसे चातक को एक मेघकी गति है भाव तैसे इन जनन को एक आप की गति है ॥ २ ॥ पुनि हमारो जीवन असजानिए कि जेहि सर्प के फणि की मणि गई जैसे सोजीयै हे कोशलपति कुल को कलंक मेटऊ हे नाथ मोको बन जावे की आज्ञा देऊ इहां कुल को कलंक छोटे को राज्य होनो बड़े को बन जानो है ॥ ३ ॥ जो यातन की उतपत्ति कुमातु से है याते मोको जोई जोई दोष लगाए सोई सोई

लागे निज पन की कहैं सरना गत पालिबे की लज्जा ॥ ४ ॥ ७१ ॥

मू० । तातबिचारौधौंहौंक्योंआवों तुम्हशुचिसुहृदसुजानसकलबि-
धिबहुतकहाकहिकहिसमुझावौं । निजकरखालखैंचियातन
तेजौपितुपगपानहौंकरावौं होउनउरिनपिताद्सरथतेंकैसे
ताकोबचनमेटिपतिपावौं ॥ १ ॥ तुलसिदासजाकोसुजसति-
हुंपुरक्योंतेहिकुलहिकालिमालावौं । प्रभुरूषनिरषिनिरास
भरतभएजान्यौंहैसबहिभांतिबिधिबावौं ॥ २ ॥ ७२ ॥

टी० । हे तात भरत बिचारो तोकि मै क्यों बन कों आयों ॥ १ ॥
करावों कहैं बनवावों पति पावों कहैं मर्यादा पावों ॥ २ ॥ कुलहि
कालिमालांवो कहिबे को यह भाव सत्य प्रतिज्ञ कुल है ॥ ३ ॥ ७२ ॥

मू० । रागसोरठ । बहुरोंभरतकह्योकछुचाहै सकुचसिंधुबोहित
बिवेककरिबुधिबलबचननिबाहै । छोटेहुतेंछोहकरिआएमै
सामुहेनहेरो एकहिबारआजुबिधिमेरोसीलसनेहनिबेरो ॥
१ ॥ तुलसीजौफिरिबोनबनैप्रभुतौहौंआयसुपावों । घरफेरि
यैलषनलरिकाहैंनाथसाथहोंआवों ॥ २ ॥ ७३ ॥

टी० । फेरि भरत कछु कहा चाहत हैं सकुच रूप समुद्र मे
अपने बिबक को जहाज करि के तेहि जहाज को बुद्धि औ बचन
के बल तें निवाहत हैं अर्थात् कुठौर मे नहीं परै देत हैं वा बुद्धि
औ वचन रूप सैना को तेहि जहाज पर निवाहत हैं ॥ २ ॥ निबे
रो कहैं दूरि कियो हौं आवों हम चलैं ॥ ३ ॥ ७३ ॥

मू० । रघुपतिमोहिंसंगकिनलीजै बारबारपुरजाहुनाथकेहिकारन
आयसुदीजै । जद्यपिहौंअतिअधमकुटिलमतिअपराधिनि
कोजायो प्रनतपालकोमलसुभाउजियजानिसरनतकिआयो
॥ १ ॥ जौमेरेतजिचरनआनगतिकहौंहृदयकछुराषी । तौ
परिहरहुदयालदीनहितप्रभुअभिअंतरसाषी ॥ २ ॥ ताते
नाथकहौंमैपुनिपुनिप्रभुपितुमातुगोसांई । भजनहीननरदेह

इथाघरखानफेरुकीनाई ॥ ३ ॥ बंधुवचनसुनिस्रवननयनराजी वनीरभरिआए । तुलसिदासप्रभुपरमक्रपागहिबांइभरतउ-रलाए ॥ ४ ॥ ७४ ॥

टी० । जो मोकों चरन छोड़ि के आन गति होय औ हृदय में कछु राषि के कहत होंउं तौ हे दयाल हे दीनहित हे प्रभु हे अंतरजामी त्याग देऊ ॥ ३ ॥ फेरु स्टगाल ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७४ ॥

मू० । काहेकोमानतहानिहियेहो प्रीतिनीतिगुनसीलधरमकहंतुमअवलंबदियेहो । तातजातजानिवेनएदिनकरिप्रमानपितुबानी। ऐहौंबेगिधरहुधीरजउरकठिनकालगतिजानो ॥ १ ॥ तुलसिदासअनुजहिप्रबोधिप्रभुचरनपीठनिजदीन्हे । मनहुंसवनकेप्रानपाहरुभरतसीसधरिलीन्हे ॥ २ ॥ ७५ ॥

टी० । हे भरत काहे को हानि हृदय मे मानत हौ प्रीति औ नीति औ गुण औ सील औ धर्म को तुमहीं अवलंब दिए हौ ॥ १ ॥ हे तात एजे चौदह वर्ष के दिन हैं तिनके जाते न जानोगे २ ॥ ३ ॥ ७५ ॥

मू० । विनतीभरतकरतकरजोरे दीनबंधुदीनतादीनकीकबहुंपरेजनिभोरे । तुम्हसेतुम्हहिनाथमोकोमोसेजनतुम्हकोबहुतेरे यहैजानिपहिचानिप्रीतिछमिबेअघऔगुनमेरे ॥ १ ॥ यौंकहिसीयरामपायनपरिलषनलाइउरलीन्हे । पुलकसरीरनीरभरिलोचनकहतप्रेमपनुकीन्हे ॥ २ ॥ तुलसीबीतेअवधप्रथमदिनजौरघुबीरनऐहौ । तौप्रभुचरनसरोजसपथजीवतपरिजनहिनपैहौ ॥ ३ ॥ ७६ ॥

टी० । सु० ॥ ७६ ॥

मू० । अवसिहौंआयसुपायरहौंगो जनमिकैकईकोषिछपानिबि-क्योंकछुचपरिकहौंगो । भरतभूपसियरामलखनबनसुनिसानंदसहौंगो पुरपरिजनअवलोकिमातुसबसुषसंतोषलहौंगो ॥ १ ॥ प्रभुजानतजेहिंभांतिअवधलौंवचनपालिनिबहौंगो ।

आगेकीबिनतीतुलसीतबजबफिरिचरनगहौंगो॥ २॥ ७७॥

टी० । चपरि चाव पूर्वक ॥ १ ॥ भरत राजा हैं औ सीता राम लषन बन मे हैं यह बचनसुनि के आनद सहित सहौंगो पुर परिजन औ सब मातन को देषिके अर्थात् बिकल देषि के सुष औ संतोष को पांवों गो ॥ २ ॥ जेहि भांति अवधि लों बचन पालि के निबहैंगो सो प्रभु जानत हैं जब फेरि चरन गहैंगे तब आगे की बिनता करैं गे भाव आप सिंहासन पर बैठिए यह बिनती करैं गे ॥ ३ ॥ ॥ ७७ ॥

मू० । प्रभुसोंमैढीठ्योबहुतदईहै कीबीक्षमानाथआरतितेकहीकुजुगुतिनईहै । यौंकहिबारबारपायनपरिपावरिपुलकिलईहै अपनोअदिनदेषिहोंडरपतजेहिबिषबेलिबईहै ॥ १ ॥ आयोसदासुधारिगोसायोंजनतेबिगरिगईहै । थकेबचनपैरतसनेहसरिपर्‌योमानोघोरघईहै ॥ २ ॥ चित्रकूटतेहिसमयसबनिकीबुद्धिबिषादहईहै । तुलसीरामभरतकेबिछुरतसिलासप्रेमभईहै ॥ ७८ ॥

टी० । प्रभु सों मै बहुत ढिठाई करी है औ आरति ते नई कुजुगुति कह्यो है हे नाथ ताको क्षमा कीजिए गा ॥ १ ॥ पांवरि पादुका हौं कहैं हम ॥ २ ॥ हे गोसांई जो जन ते बिगरि गई है ताको आप सदा सुधारत आए हौ एतना कहि बचन थकित भए मानो सनेह रूप नदी के पैरत मे घोर प्रवाह मे पर्‌यो है ॥ ३ ॥ तेहि समै चित्रकूट मे सबनि के बुद्धि को बिषाद ने नासी है गोसांई जी कहत हैं कि औ भरत जू को बिछुरत मे और को को कहे सिला प्रेम सहित भई है भाव पघिलि गई है ॥ ४ ॥ ७८ ॥

मू० । जबतेचित्रकूटतेआए नंदिग्रामषनिअवनिडासिकुसपरनकुटीकरिछाए । अजिनबसनफलअसनजटाधरेरहतअवधिचितदीन्हे प्रभुपदप्रेमनेमब्रतनिरषतमुनिन्हनमितमुषकीन्हे ॥

१ ॥ सिंहासनपरपूजिपादुकाबारहिंबारजोहारे । प्रभुअनु रागमागिआयसुपुरजनसबकाजसंवारे ॥ २ ॥ तुलसीज्यौं ज्यौंघटततेजतनुत्यौंत्यौंप्रीतिअधिकाई । भएनहैंनहोंहिगे कबहूंभुअनभरतसेभाई ॥ ३ ॥ ७६ ॥

टी० । अजिन म्टग चर्म मुनिन्ह नमित मृष कीन्हे कहिवे को यह भाव कि राज कुमार होय के जस तप ए करत हैं तस हम नहीं करि सकत हैं ॥ २ ॥ अनुराग पूर्वक प्रभु जो चरन पादुका तिन्ह से आज्ञा मागि करि के पुरजनन के सब काज संवारें हैं ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ७६ ॥

मू० । रागरामकली । राषीभगतिभलीभलाईभलीभांतिभरत स्वा रथपरमाथपथीजयजयजगकरत । जोब्रतमुनिवरनिकठिनमा नसआचरत सोब्रतलियोचाहिकज्योंमुनतप तकहरत ॥ १ ॥ सिंहासनसुभगरामचरनपीठधरत । चालतसबराजकाजआ- यसुअनुसरत ॥ २ ॥ आपुअवधबिपिनिबंधुसोचजरनिजरत । तुलसीसमबिषमसुगमअगमलषिनपरत ॥ ३ ॥ ८० ॥

टी० । भली भांति ते भरत ने भली भगति औ भली भलाई रा- षी है वा भली भलाई ते भली भांति भरत ने भगति राषी भरतजू स्वारथ औ परमारथ के पथी हैं अस कहि जगत जैजै कहत हैं वा जगत मे जेतने स्वारथ औ परमारथ के पथी हैं ते जैजै करत हैं ॥ १ ॥ कठिन मानस हठ योगादि ते वा कठिन करि मन को अर्थात रोकि के ॥ २ ॥ चरन पीठ के आज्ञानुसार सब राज काज चलावत हैं ॥ ३ ॥ आप तो अवध मे हैं औ बन मे भाई हैं तातें सोच रूप जरनि ते जरत हैं गोसांईं जी कहत हैं कि भरत जी को सम विषम सुगम अगम कछु नहीं लषि परत है अर्थात अ- त्यंत सोच है ताते वा सम औ सुगम ठौर मे भरत जू औ बिषम औ अगम ठौर मे राम जू हैं पर लषि नहीं परत कि के कहां हैं

भाव भरत जू जद्यपि सम सुगम ठौर मे हैं पर जब सोच जरनि मे जरत हैं तब विष मे अगम मे हैं औ श्रीराम जू यद्यपि विषम अगम मे हैं पर सोच रहित हैं तो समै सुगम मे हैं ॥ ४ ॥ ८० ॥

मू० । मोहिभावतिकहिआवतिनहिंभरतजूकीरहनि सजलनयन-
सिथिलवयनप्रभुगुनगनकहनि । असनवसनअयनसयनधरम
गरुअगहनि दिनदिनपनप्रेमनेमनिरुपधिनिरवहनि ॥ १ ॥
सीतारघुनाथलषनविरहपीरसहनि । तुलसीतजिउभयलोक
रामचरनचहनि ॥ २ ॥ ८१ ॥

टी० । असन भोजन वसन वस्त्र अयन गृह औ सैन औ भारी धर्म्म का ग्रहन करना ॥ २ ॥ ३ ॥ ८१ ॥

मू० । जानीहैंशंकरहनुमानलषनभरतरामभगति कहतअगमक-
रतसुगमसुनतमीठीलगति । लहतसकतचहतसकलजुगजुग
जगमगति रामप्रेमपथतेकबहुंडोलतनहिंडगति ॥ १ ॥ रि
धिसिधिविधिचारिसुगतिजाबिनुगतिअगति । तुलसीतेहिस
नमुषविनुविषयठगनिठगति ॥ २ ॥ ८२ ॥

टी० । श्री शंकर श्री हनुमान श्री लषनलाल श्रीभरतजू ने राम भक्ति को जानी है वह राम भक्ति कैसी है कि कहिवे मे सुगम है औ करिवे मे अगम है औ सुनत मे मीठी लगति है ॥ १ ॥ तेहि भक्ति को सकल चाहत हैं पर कोऊ एक पावत हैं औ जुग जुग मे जगमगाति रहति है भाव कबहूं मलानि परत नाहीं औ श्री राम के प्रेम रूप पथ तें कबहूं डोलति औ डगति नहीं है ॥२॥ रिद्धि सिद्धि औ चारो भांति की मोक्ष कहैं उपाय सो जा बिना अगति है तेहि भक्ति के सन्मुख बिना विषै रूपा ठगिनि ठगति है ॥ ३ ॥ ८२ ॥

मू० । रागगौरी । कैकेईकरीधौंचतुराईकौनरामलषनसियबनहिं
पठायेपतिपठयेसुरभौन । कहाभलोधौंभयोभरतकोलगेतरु

नतनदौन पुरबासिनकेनैननीरबिनुकबहूँतोदेषतिहौंन ॥ ॥ १ ॥ कौसल्यादिनरातिबिसूरतिबैठिमहिंमनमौन । तुलसीउचितनहोइरोइबोप्रानगएसंगजौन ॥ २ ॥ ८३ ॥

टी० । कौसल्या जी की उक्ति है ॥ १ ॥ दवन कहैं बिरहानल ॥ २ ॥ बिसूरति चिंता करति प्रान गए संग जौन जो प्रान संग न गए ॥ ३ ॥ ८३ ॥

मू० । हाथमीजिबोहाथरह्यो लगीनसंगचित्रकूटहूतेह्यांकहाजात बह्यो । पतिसुरपुरसियरामलषनबनमुनिब्रतभरतगह्यो हौं रहिघरमसानपावकज्योंमरिबोईम्रतकदह्यो ॥ १ ॥ मेरोई हियोकठोरकरिबेकहुंबिधिकहुंकुलिसलह्यो । तुलसीबनपहुंचायफिरीसुतक्योंकछुपरतकह्यो ॥ २ ॥ ८४ ॥

टी० । ह्यां कहां जात बह्यो इहां का वहां जात रहा भाव जेहि सम्हारै हेतु आए ॥ १ ॥ हम घर रहि के मसान को पावक जैसे म्रतक को जरावत है तैसेई मरिबोई रूप म्रतक को जराय दियों ॥ २ ॥ हमारही हिय कठोर करिबे के लिए बिधाता ने कतहूं कुलिस पायो है भाव वाही को हमारो हृदै बनायो है ॥ ३ ॥ ८४ ॥

मू० । हौंतोसमुझरहीअपनोसोरामलषनसियकोसुषसाकहुंभयोसषीसपनोसो । जिन्हकेबिरहबिषादबटाउन्हषगम्रगजीवदुषारी मोहिकहासजनीसमुझावतिहौंतिन्हकीमहंतारी ॥ १ ॥ भरतदसासुनिसुमिरिभूपगतिदेषिदीनपुरवासी । तुलसीरामकहतहौंसकुचतिह्वैहैजगउपहासी ॥ २ ॥ ८५ ॥

टी० । सखी समुझावति है ता प्रति यों कौशल्या जी कहति हैं कि हे सखी मै तौ आपै समुझि रही हौं भाव तब समुझाइवे को क्या प्रयोजन है ॥ १ ॥ २ ॥ कौशल्या ज कहति हैं कि राम कहत मे हम सकुचत हैं भाव लोग कहि हैं कि कैसा माता हैं कि एसे पुत्र के बिछूरे पर भी बोलते हैं बोल नो हमारो जग मे उपहांस

करावनि हारो होयगो ॥ ३ ॥ ८५ ॥

मू० । आलीहौंइन्हहिबुझावोंकैसे लेतहियेभरिभरिपतिकेहित मातहेतसुतजैसे । बारबारहिहिनातहेरिउतजोबोलैकोउ द्वारे अंगलगाइलियेबारेतेकरुनामयसुतप्यारे ॥ १ ॥ लोचनसजलसदासोवतसेषानपानबिसराए । चितवतचौंकिनाम सुनिसोचतिरामसुरतिउरआए॥२॥तुलसिप्रभुकेबिरहबधिक हठिराजहंससेजोरे । ऐसेउदुषितदेषिहौंजीवतिरामलषन केघोरे ॥ ३ ॥ ८६ ॥

टी० । हे आली इन घोडन के मै कैसे समुझावो अपने स्वामि ले श्री राम लषन तिन के हित अपने हृदै मे सोक को भरि भरि लेत हैं जैसे महतारि के हेतु पुच ॥ १ जो कोऊ द्वारे बोलत है तब द्वार के बोर ताकि के बार बार हिहिनात हैं भाव श्री राम लषन जो नहीं बोलत हैं करुनामय हमारे प्यारे पुच लरिकई ते इन घोरन को अंग लगाइ लिए हैं ॥ २ ॥ सदा लोचन सजल रहत हैं औ षान पान जस सोअत मे बिसरि जात है तस बिसराए रहत है औ श्री राम लछ्मण को नाम सुनि चऊंकि के देषत हैं जब नाम सुनिबे ते श्री राम की सुरति उर मे आय जाति है तब सोच करत हैं ॥ ३ ॥ गोसाईं जी कहत हैं कि प्रभ के बिरह रूप बधिक ने राम लषन के घोडे जो राज हंस के जोडे सम हैं तिन को हठि करि के दुषित किए सो भी देषि के मैजि अत हौं ॥ ४ ॥ ८६ ॥

मू० । राघोएकबारफिरिआवो एबरबाजिबिलोकिआपनेबहुरोबन हिंसिधावो । जेपयप्याइपोषिकरपंकजबारबारचुचुकारे क्यों जीवहिंमेरेरामलाडिलेतेअबनिपटबिसारे ॥ १ ॥ भरतसैगुनीसारकरतहैंअतिप्रियजानितिहारे । तदपिदिनहुंदिनहोत झांवरेमनहुंकमलहिममारे ॥ २ ॥ सुनहुंपथिकजौंरामसि

लहिं बनकाहियोमातुसंदेसो । तुलसीमोहिंऔरसबहिनते इन्हकोबड़ोअंदेसो ॥ ३ ॥ ८७ ॥

टी० । १ सार कहैं पालन ॥ ८७ ॥

मू० । राग केदारा । काहूसोकाहूसमाचारअनपाए । चित्रकूटते रामघनसियसुनियतअनतसिधाए । सैलसहितनिरझरबन मुनिथलदेषिदेषिसबआए । कहतसुनतसुमिरतसुषदायक मानससुगमसुहाए ॥ १ ॥ बढ़िअवलंबवामबिधिबिघटितबि षमबिषादबढ़ाए । सिरससुमनसुकुमारमनोहरबालकबिंध चढ़ाए ॥ २ ॥ अवधसकलनरनारिबिकलअतिअकनिबचन अनभाए । तुलसीरामबियोगसोगबससमुझतनहिंसमुझाए ॥ ३ ॥ ८८ ॥

टी० । परवत नदी झरना बन मुनिन के आश्रम इम सब देषि देषि के आए हैं सुगम औ सुंदर हैं बसिवे को को कहै कहत सुनत सुमिरत मे मन के सुष दायक है बढि अव लंब को बाम बिधा ताने तोड़ि औ तीक्ष्ण बिषाद को बढ़ाए सिरिस के सुमन सम सुकुमार मनोहर बालकन को बिंध्यपरवत पर चढ़ाए ॥ २ ॥ ३ ॥ अकनि सुनि अनभाए अप्रिय ॥ ४ ॥ ८८ ॥

मू० । सुनीमैसषीमंगलचाहसुहाई । शुभपत्रिकानिषादराजकीआजु भरतपहंआई । कुंअरसोकुशलछेमतेहिअवसरकुलगुरुकहं पहुंचाई गुरकृपालसंभ्रमपुरघरघरसादरसबहिसुनाई ॥१॥ बधिबिराधसुरसाधुसुषीकरिरिषिसिषआसिषपाई । कुंभजसि ष्यसमेतसंगसियमुदितचलेदोउभाई ॥ २ ॥ रेवाबिंधबीचसु पासथलबसेहैंपरनगृहछाई । पंथकथारघुनाथपथिककीतुल सिदाससुनिगाई ॥ ३ ॥ ८९ ॥

टी० । १ ॥ सो कुशल छेम तेही अवसर कुंअर भरत ने वशिष्ट जू कहं पहुंचाई है ॥ २ ॥ कुंभज शिष्य सुतीक्ष्ण ॥ ३ ॥ रेवा नर्मदा

॥ ४ ॥ सांख्य न्याय बेदांत को छोड़ि छाड़ि सब जंग। सीता रघुपति चरण मइं हरि हर करज्ञ उमंग ॥ इति श्री राम गीतावली प्रकाशिका टीकायां श्री सीताराम कृपापात्र श्री सीता रामीय हरिहर प्रसाद कृतौ अयोध्या काण्डः समाप्तः ॥

श्रीसीतारामाभ्यांनमः। बरवा। रक्षरक्षरघुनायकश्रुतिपथपाल। पाहिपाहिकरुणाकरदुर्जनकाल ॥

मूल। रागमल्लार। देखेरामपथिकनाचतमुदितमोर मानतमनज्ञसतड़ितललितघनधनुसुरधनुगरजनिटंकोर ॥ कम्पैकलापबरबरहिफिरावतगावतकलकोकिलकिशोर। जहंजहप्रभुबिचरततहंतहंसुखदण्डकबनकौतुकनथोर ॥ सघनछांहतमरुचिररजनिभ्रमबदनचन्दचितवतचकोर। तुलसीमुनिखगम्रग-निसराहतभयेहैंसुकृतसबइनकीओर ॥ १ ॥

टी०। देखेइ० कवि की उक्ति है कि श्री राम पथिक के देखिबे ते हर्षित मोर नाचत है मानो श्री राम को तड़िता सहित सुंदर घन मानत है इहां तड़िता श्री जानकी जी हैं वा पीत पट है औ सारङ्ग धनु जो सो इन्द्र धनु है औ ताको टंकोर जो सो गरज है ॥ १ ॥ बरही कहैं मयूर सो कलाप कहैं पक्ष को कंपाय के फिरावत है औ युवा कोकिल जो सो मधुर गावत है जहां जहां दण्डक बन मे प्रभु फिरत है तहां तहां सुख औ कौतुक थोर नहीं है ॥ २ ॥ सघन छांह के अंधेरो मे सुंदर राचि के भ्रम ते औ मुख चन्द को चन्द के भ्रम ते चकोर चितवत है गोसांई जी कहत हैं कि खग म्रगनि को मुनि सराहत हैं औ कहत हैं कि सब सुकृत इन के ओर भए हैं ॥ ३ ॥ १ ॥

मू०। रागकल्यान। सुभगसरासनसायकजोरे खेलतरामफिरतम्रगपावनबसतिसोम्रदुमूरतिमनमोरे। पीतबसनकटिचारुचारिसरचलतकोटिनटसोतृणतोरे। श्यामलतनश्रमकणराज

तज्योंनवघनसुधासरोवरखोरे ॥ ललितकंधवरभुजविशालउ
रलेहिकण्ठरेषैचितचोरे अवलोकतमुखदेतपरमसुखलेतसर
दशशिकौक्षविछोरे ॥ जटामुकुटसिरसारसनयननिगोहैंतक
तसुभौंहसकोरे शोभाअमितसमातिनकाननउमगिचलीच-
हुंदिशिमितिफोरे । चितवतचकितकुरङ्गकुरङ्गिनिसबभयेम
गनमदनकेभोरे तुलसिदासप्रभुवाणनमोचतसहजसुभायप्रेम
वसथोरे ॥ २ ॥

टी० । सुभग इ० । म्रगया सिकार ॥ १ ॥ कटि चारु चारिसर कटि मे चारि बान धरे हैं नव घन सुधा सरोअर खोरे मानो नवीन मेघ अम्रत के तालाव मे स्नान किए ॥ २ ॥ ३ ॥ जटा को मुकुट सिर पर है औ सारस कहैं कमल ता सम नैन हैं सुंदर भौंह को सकोरे भए घात ताकत हैं सोभा मिति रहित है ताते बन मे समाति नहीं है मर्याद को फोरि के चहुं दिसि उमगि चली ॥ ४ ॥ म्रगा म्रगी चकित चितवत हैं मदन के भ्रम ते सब मगन भए हैं भाव मदन के पांच बाण हैं एक एक बाण हाथ मे औ चार बाण कटि मे धरे हैं गोसांईं जी कहत हैं कि प्रभु बाण नहीं छोड़त हैं काहे ते कि प्रभु को यह सहज सुभाव है अर्थात् बनावट करि नहीं कि थोरे प्रेम के बस होत हैं ॥ ५ ॥ २ ॥

मू० । रागसोरठ । बैठेहैंरामलषणअरुसीता पञ्चवटीवरपरणकु-
कुटीतरकहैंकछुकथापुनीता । कपटकुरङ्गकनकमणिमयलषि
प्रियसोकहतिहंसिबाला पाइपालिवेयोगमञ्जुम्रगमारेहुसं-
जुलछाला ॥ प्रियाबचनसुनिविहंसिप्रेमवसगंवहिचापसर
लीन्हे चल्योभाजिफिरिफिरिहेरतमुनिमखरषवारेचीन्हे
सोहतिमधुरमनोहरमूरतिहेमहरिणकेपाछे धावनिनवनि-
बिलोकनिविथकनिवसतुलसीउरआछे ॥ ३ ॥

टी० । बैठे इ० । पद सु० ॥ ३ ॥

मू० । रागकल्यान । करसरधनुकटिरुचिरनिषङ्ग प्रियाप्रीतिप्रेरि-
तबनबीथिनबिचरतकपटकनकम्रगसङ्ग । भुजबिशालकमनी
यकन्धउरश्रमसीकरसोहैसावरेअङ्ग मनोमुक्तामणिमरकत
गिरिपरलसततलितरबिकिरणप्रसङ्ग ॥ नैननलिनशिरजटा
मकुटबिचशुमनमालमानोशिवशिरगङ्ग। तुलसिदासअसिम
रतिकीबलिछबिबिलोकिलाजैअमितअनङ्ग ॥ ४ ॥

टी० । करइ० । भुजा बिसाल है औ कंध छाती सुंदर है औ श्रम कण सांवरे अंग पर सोहत है मानो मुक्ता मणि मरकत के परवत पर सुंदर रबि किरन के प्रसंग ते सोभत है नैन कमल सम है सिर मे जटा को मुकुट है बीच मे स्वेत सुमन की माला है सो मानो शिव के सिर पर गंगा हैं गोसांई जी कहत हैं कि ऐसो मूरति कि छबि देखि कै एक को को कहै अनेक काम लाजत हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥

मू० । रागकेदारा । राघोभावतिमोहिबिपिनकीबीथिन्हधावनि अ-
रुणकञ्जवरनचरणशोकहरण अंकुशकुलिशकेतुअंङ्कितअव-
नि ॥ १ ॥ सुन्दरश्यामलअङ्गवसनपीतसुरङ्गकटिनिषङ्गपरि
करमिरवनि । कनककुरङ्गसङ्गसाजेकरसरचापराजिवनयन-
इतउतचितवनि ॥ २ ॥ सोहतशिरमुकुटजटापटलनिकरशु
मनलतासहितरचीवनवनि । तैसेईश्रमसीकररुचिरराजत
मुखतैसिअैललितभ्रुकुटिन्हकीनवनि ॥ ३ ॥ देखतखगनिक
रम्रगरवनिह्युतथकितबिसारिजहंतहंकीभवनि । हरिदर
शनफलपायोहैज्ञानबिमलजाचतभक्तिमुनिचाहतजवनि॥४॥
जिनकेमनमगनभयेहैंरसमगुणतिनकेलेखेअगुणमुक्तिकवनि
श्रवणमुखकरणिभवसरितातरणिगावततुलसिदासकीरतिपव-
नि ॥ ५ ॥

टी०। राघोइ० राघो की बिपिनि बीथिन की धावनि मोको भावति है

जेहि धाइबे ते सोक हरन लाल कमल सम जो श्री चरण में अंकुश कुलिश ध्वज हैं ताते अंकित अवनि ह्वै गई है ॥ १ ॥ औ सुंदर स्यामल अंग औ सुंदर पीत रंग को बसन औ कटिमें जो तरकस औ पटुका तें फेट को बांधनि मोको भावति है औ कनक स्टग के संग मे जो हाथ मे सर चांप साजे हैं औ कमल सम नैन मे जो इत उत देखत हैं सो मोको भावति है ॥ २ ॥ औ सिर में जटा समूह को मुकुट जो सोहत है औ अनेकन पुष्प लता ते जो बनावरी रची है सो मोको भावति है औ तैसेई सुंदर स्रम कण जो मुख पर सोभत औ तैसेई सुंदर जे भ्रकुटिन की नवनि है सो मोको भावति है ॥ ३ ॥ खगन औ स्टगिन युत स्टग जहां तहां कि भ्रमनि बिसारि के थकित देखत हैं हरि के दरसन को फल बिमल ग्यान पायो है ताते भक्ति जाचत हैं जेहि भक्ति को मुनि चाहत हैं ॥४॥ कदापि कोऊ कहै कि सब ते दुर्लभ ग्यान है तेहि पाए पर भक्ति क्यों जाचत हैं ता पर कहत हैं जिन्ह के मन सगुन के प्रेम में मगन भए हैं तिन्ह के लेखे निर्विशेष मुक्ति क्या है अत एव गीता मे कहा । ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मा नशोचतिनकांक्षति । समःसर्वेषुभूतेषु मद्भक्तिंलभतेपराम् ॥ पवनि कहैं पावनि ॥ ५ ॥ ५ ॥

मू० । सोरठ । रघुवरदूरिजाइस्टगमार्यो लषणपुकारिरामहरुवें कहिमरतेहुंबयरसंभार्यो ॥ १ ॥ सुनऊतातकोउतुमहिंपुकारतप्राणनायकीनाईं । कह्योलषणहत्योहरिणकोपि सियहठिपठयेबरिआईं ॥ २ ॥ बन्धुबिलोकिकहततुलसीप्रभुभाईभलीनकोन्ही । मेरेजानजानकीकाहूखलछलतकरिहरिलीन्हीं ॥ ६ ॥

टी० । रघुह० । हरुए धीरे अपर पद सु० ॥ ६ ॥

मू० । आरतवचनकहतिवैदेहीबिलपतिभूरिबिसूरिदूरिगयेस्टगसंगपरमसनेही । कहेकटुबचनरेखनाघीमैतातछमासोकीजै

देषिगधिकबसराजमरालिनिलखणलालछिनिलीजै ॥ बन-
देवनिसियकहनकहतियोंछलकरिबीचहरीहौं। गोमरकर
सुरधेनुनाथज्योंत्योंपरहाथपरीहौं॥ तुलसिदासरघुनाथना
मधुनिअकनिगीधधुकिधायो। पुत्रिपुत्रिजनिडरहिनजैहैनी
चमीचहौंआयो ॥ ७ ॥

टी०। आरतदू०। भूरि जिसूरि बहु चिंता करि वा बहुत उसास लेइ ॥ १ ॥ २ ॥ बन देवतनि सो सीता जू औ राम जू सो यों कहिवे को कहति हैं कि मोंको छल करि के नीच नेहरी है गो-मर कहै कसाई तेहि के कर सुर धेनु जैसे परै तैसे पर हाथ परी हौं ॥ ३ ॥ धुकि कहैं वेग करि नीच मीच हौं आयो नीच जो रावण ताके म्टत्यु सम मैं आयो ॥ ४ ॥ ७ ॥

मू०। फिरतनवारहिंवारप्रचार्‍यो चपरिचोंचचंगुलहयहतिरथख-
ण्डखण्डकरिडार्‍यो। बिरथबिकलकियोछीनलीन्हिसियघन
घायनिअकुलान्यो तबअसिकाढिकाटिपरपांवरलैप्रभुप्रियाप
रान्यो ॥ रामकाजखगराजआजलर्‍योजियतनजानकित्यागी
तुलसिदाससुरसिद्धसराहतधन्यबिहगबड़भागी ॥ ८ ॥

टी०। चपरि चटकई करि ॥ १ ॥ घन वायन बहुत घावन से ॥ २ ॥ ३ ॥ ८ ॥

मू०। रागगौरी । हेमकोहरिणहनिफिरेरघुकुलमणिलषणल-
लितकरलियेम्टगछाल। आश्रमआवतचलेसगुननभयेभलेफ
रकेबामबाहुलोचनबिशाल ॥ १ ॥ सरितजलमलिनसरनि-
सूखेनलिनअलिनगुंजतकलकूजेनमराल। कोकिलनिकोल
किरातजहंतहंबिलपातबननबिलोकिजातखगम्टगमाल ॥२॥
तरुजेजानकीलायेज्यायेहरिकरिकपिहेरैनहुंकारिभरेफल-
नेरशाल। जेशुकसारिकापालेमातुज्यौंललकिलालतेजनप-
ढ़तनपढ़ावैमुनिबाल ॥ ३ ॥ समुझिसहमेसुठिप्रियातोन

आई उठि तुलसी बिबरणपरनहणशाल । औरैसो सबममा-
नुकुशलन देखौं आजु गहबरिहियेकहैंकोशलपाल ॥ ४ ॥ ९ ॥

टी० । हेम को हरिन जो मारीच ताको मारि के रघुकुल मनि फिरे ताको सुंदर छाल लषन लाल हाथ मे लिए अतएव हनुम न्नाटक लंका काण्ड मे एही म्हगचर्म्म पर रघुनाथ को बैठव लिखे। अंकेकृत्वोत्तमांगंप्लवगवलपतेः पादमत्त्वय इंतुर्भूमौबिस्तारितायांत्वचि कनकम्हगस्यांगशेषंनिधायवाणंरक्षः कुलघ्नंप्रगुणितमनुजेनार्पितंतीक्ष्ण मक्ष्णोः कोणेनोद्वीक्ष्यमाणस्त्वदनुजवचनेदत्तकर्णोंयमास्ते ॥ १ ॥ माल समूह ॥ २ ॥ ज्याए जे हरि करि कपि सिंह हाथी बानर जे जानकी जी जिआए रहीं ॥ ३ । ४ ॥ ९ ॥

मू० । आश्रमनिरखिभूलेद्रुमनफलेफूलेअलिखगम्हगमानोकबहुंनरहे। मुनिनमुनिबधूटीउजरीपरणकुटीपञ्चबटीपहिचानिठाढ़ेईर हे ॥ उठिनशलिललियेप्रेमप्रमुदितहियेप्रियानपुलकिप्रियब चनकहे। पल्लवशालनहेरीप्राणवल्लभानटेरीबिरहमियकिल खिलफणगहे ॥ देखेरघुपतिगतिबिबुधबिकलअतितुलसीगह नबिनुदहनदहे। अनुजदियोभरोसोतौलोहैसोचखरोसोसि यसमाचारप्रभुजौलौनलहे ॥ १० ॥

टी० । आश्रम इ०। नहे कहैं नहो रहे ॥ १ ॥ पल्लव साल कहै पर्ण साल ॥ २ ॥ गहन बिनु दहन दहे बनवे आगि को जरि गयो हे प्रभु सीय को समाचार जब लो न लहे तव लो सोच खरो सो कहैं पर के समान अर्थात् तनिक है ॥ ३ ॥ १० ॥

मू० । रागसोरठ। जबहिंसियसुधिसबसुरनिसुनाई। भयेसुनिसु- जगबिरहमनिमैपरतथकेथाहसीपाई ॥ कसितूणीरतीरधनुधर धुरधीरबीरदोभाई। पञ्चबटीगोदहिंप्रणामकरिकुटीदाहि नीलाई ॥ चलेवूमतबनबेलिबिटपखगम्हगअलिअलिसुहा ई । प्रभुकीदशासोसमयकहिबेकोकबिउरआइनआई ॥

रटनिअकनिपहिचानिगीधफिरेकरुणामयरघुराई । तुल-
सीरामहिप्रियाबिसरिगईसुमिरिसनेहसगाई ॥ ११ ॥

टी० । जबहिंइ० ॥ १ ॥ धुर धीर धीरन मे अग्रवर्ती गोदहिं गोदावरी को ॥ २ ॥ ता समै में प्रभु की दसा कहिबे को कवि के उर मे आइ न आई भाव कहिबे मे कवि जो समर्थ भए हैं सो बड़ी आश्चर्य की बात है वा सो दसा कहिबे को कवि के उर मे आइ कहूँ समर्थता न आई ॥ ३ ॥ अकनि सुनि ॥ ४ ॥ ११ ॥

मू० । मेरेएकोहाथनलागो गयोबपुबीतिबादिकाननज्योंकल्पलता
दवदागो । दशरथसोनप्रेमप्रतिपाल्योऊतौसकलजगसाखीब
रबसहरतनिशाचरपतिसोहठिनजानकीराखो ॥ मरतनमैर
घुबीरबिलोकेतापसवेषबनाये । चाहतचलनप्राणपांवरबिनुसि
यसुधिप्रभुहिसुनाये ॥ बारबारकरमीजिशीसधुनिगीधराजप
छिताई । तुलसीप्रभुकृपालतेहिऔसरआइगयेद्वौभाई ॥ १२ ॥

टी० । मेरेइ० । अब गीधराज को परलाप कहत हैं कि मेरे एको बात हाथ न लागी नाहक हमार सरीर समाप्त भयो जैसे बन मे कल्प लता अग्नि ते जरि जाइ ॥ १ ॥ सब जग जानत रह्यो कि महाराज दशरथ से औ जटायु से प्रेम है पर सो प्रेम महाराज दशरथ सो न प्रति पाल्यो भाव महाराज दशरथ की इच्छा रही कि श्रीराम राजा होहिं तेहि मे हम सहाय न किया । नाटके नमैत्रीनिर्व्यूढादशरथनृपेराज्यविषयानवैदेहीचाताहठहरणतोराक्षसपतेः नरामस्याक्षिन्दुर्नयनविषयोभूत्कृतिनोजटायोर्जन्मेदंवितथम भवद्वाक्यरहितम् ॥ याही श्लोक के अनुसार यह पद है ॥ १२ ॥

मू० । राघोगीधगोदकरिलीन्हो नयनसरोजसनेहसलिलसुचिम
नहुँअर्घजलदीन्हो । सुनहुलषनखगपतिहिमिलेबनमैंपितु
मरणनजान्यो सहिनसक्योंसोकठिनबिधाताबड़ोपक्षआज
भान्यो ॥ बहुबिधिरामकह्योतनराखनपरमधीरनहिडोल्यो

रोकिप्रेमअवलोकिवदनबिधुबचनमनोहरबोल्यो ॥ तुलसी प्रभुझूठेजीवनलागिसमयनधोखेलैंहौं । जाकोनाममरतमु निदुर्लभतुमहिंकहांपुनिपैहौं ॥ १३ ॥

टी० । राघोइ० । खगपति गीधराज भान्यो तोह्यो अपर पद सु० ॥ १३ ॥

मू० । नीकेकैजानतरामहियोहौं प्रणतपालसेवककृपालचितपितु पटतरहिदियोहौं । त्रजगजोनिगतगीधजनमभरिखाइकुज न्तुजियोहौं। महाराजसुकृतीसमाजसबऊपरआजकियोहौं अवणबचनमुखनामरूपचषरामउछङ्गलियोहौं । तुलसीमो समानबड़भागीकोकहिसकैबियोहौं ॥ १४ ॥

टी० । नीकेइ० । अपने हृदय मे श्री राम को नीके कै जानत हौं वा यों कहैं एहि भांति ते नीके कै जानत हौं ॥ १ ॥ २ ॥ श्र-वन सों श्री राम को वचन सुनत हौं औ मुष से नाम लेत हौं नेत्र सो रूप देखत हौं औ देह को श्री राम गोद मे लिए हैं तो मो समान बड़भागी बियो कहैं दूसरे को को कहि सकै गो ॥ ३ ॥ १४ ॥

मू० । मेरेजानतातकछुदिनजोजै देखियेआपुसुअनसेवासुखमोहि पितुकोसुखदीजै । दिव्यदेहइच्छाजीवनजगबिधिमनाइमां-गिलीजै हरिहरसुयशसुनायदरशदैलोगकृतारथकीजै ॥ देखिवदनसुनिवचनअमियतनरामनयनजलभीजै । बोल्यो-बिहगबिहसिरघुबरबलिकहौंसुभायपतीजै ॥ मेरेमरिवेसम नचारिफलहौंहितोश्रोनकहीजै । तुलसीप्रभुदियोउतरुमो नहींपरिमानोप्रेमसहीजै ॥ १५ ॥

टी० । मेरेइ० । पुत्र की सेवा को सुख आप देखिए औ हम को पिता का मुष दीजिए ॥ १ ॥ बिधाता को मनाइ के दिव्य देह औ जग मे इच्छा जीवन मांगि लीजिए हरिहर को जस सुनाय के

औ आपन दरसन देइ के लोगन को कतार्थ किजिए॥ २ ॥रघुनाथ के मुख को देखि कै औ वचनामृत कों सुनि कै औ श्री राम के नैन जल से तन को भिजै कै॥ ३ ॥ मौनै रूप उत्तर श्री राम दियो मानों प्रेम मे सही परी भाव रघुनाथ ऐसे वक्ता निरुत्तर भए॥ ४ ॥ १५ ॥

मू० । मेरेसुनियैताततन्देशो सोयहरगाजनिकहेहुपितासोहूहै अधिकअन्देशो रावरेपुण्यप्रतापअनलमहंअल्पदिननिरिपु-दहिहै । कुलसमेतसुरसभादशाननसमाचारसबकहिहै ॥ मुनिप्रभुबचनआनिउरमूरतिचरणकमलशिरनाई । चल्योन भगनतरामकलकीरतिअरुनिजभामबड़ाई ॥ पितुज्योंगीध क्रियाकरिरघुपतिअपनेधामपठायो । असेप्रभुबिसारितुलसी शठतूंचाहतसुखपायो ॥ १६ ॥

टी० । पद सु० ॥ १६ ॥

मू० । रागसूहव । सेवरीसोइउठीफरकतबामबिलोचनबाहु सगुण सुहावनेसूचतमुनिमनअगमउछाहु । छन्द । मुनिअगमउर आनन्दलोचनसजलतनुपुलकावली । तृणपर्णशालबनाइजल भरिकलशफलचाहनचली ॥ मञ्जुलमनोरथकरतिसुमिरति बिप्रबरबाणीभली । ज्योंकल्पबेलिसकेलिमुकुलतमुफूलफूलीसु खफली ॥ १ ॥ प्राणप्रियपाहुनेऐहैरामलषनमेरेआजु । जानतजनजियकीमृदुचितरामगरीबनेवाजु । छन्द । मृदुचि तगरीबनिवाजुआजुबिराजिहैंगृहआइकै । ब्रह्मादिशङ्करगौ रिपूजितपूजिहौंअबजाइकै ॥ लहिनाथहौंरघुनाथबानोपति तपावनपाइकै । दुहुंआरलाहुअघाइतुलसीतीसरेहुगुणगा इकै॥ २ ॥ दोनारुचिररचेपूरणकन्दमूलफलफूल । अनुपम अमियहुतेअम्बकअवलोकतअनुकूल ॥ छन्द । अनुकूलअ म्बकअम्बज्योंनिजडिम्भहितसबआनिकै । सुंदरसनेहसु-

घासहससजनुसरसराखेसानिकै ॥ ज्यणभवनज्यणवाहिरबि-
लोकतिपन्थभूपरिपाणिकै ॥ द्वौभाइआयेसबरिकाकेप्रेम
पणपहिचानिकै ॥ ३ ॥ श्रवणहिसुनतचलीआवतदेखि
लषनरघुराउ । सिथिलमनेहुकहेहैंसपनोविधिकैधौंसति-
भाउ ॥ छन्द । सतिभाउकैसपनोनिहारिकुमारकोशलराय
के । गहेचरणजेअघहरणनतजनबचनमानसकायके ॥ ल
घुभागभाजनउदधिउमग्योलाभसुखचितचायके । सोजननि
ज्यौंआदरीसानुजरामभूखेभायके ॥ ४ ॥ प्रेमपटपांवरेदेत
सुअर्घविलोचनवारि । आश्रमलैदियेआसनपङ्कजपायपखा-
रि ॥ छन्द । पदपङ्कजातपखारिपूजेपन्थश्रमबिरहितभये ।
फलफूलअंकुरमूलधरेसुधारिभरिदोनानये ॥ प्रभुखातपुल-
कितगातस्वादसराहिआदरजनुजये । फलचारिहूंफलचारि
देतपरचारिफलसेवरीदये ॥ ५ ॥ सुमनवर्षिहर्षैसुरमुनिमु-
दितसराहिसिहात । केहिरुचिकेहिक्षुधासानुजमांगिमांगि
प्रभुखात ॥ छन्द । प्रभुखातमांगतदेतिसेवरीरामभोगीयाग
के । बालकसुमित्राकौशिलाकेपाहुनेफलसागके ॥ पुलकितप्र
शंसतसिद्धशिवशनकादिभाजनभागके । सुनिसमुझितुलसी
जानिरामहिंवसअमलअनुरागके ॥ ६ ॥ रघुबरअंचइउठेसे-
वरीकरिप्रणामकरजोरि । होंबलिबलिगईपुरइमञ्जुमनोरथ
मोरि ॥ छन्द । पुरईमनोरथस्वारथहुपरमारथहुंपूरणकरी ।
अघओगुणनकीकोठरीकरिकृपामुदमङ्गलभरी ॥ तापसकिरा
तनिकोलम्टदुमूरतिमनोहरचितधरी । शिरनाइआयसुपाइ
गवनीपरमनिधिपालपरी ॥ ७ ॥ सियसुधिसबकहीनखशि
षनिरषिनिरषिद्वौभाइ । दैदैप्रदच्छिनाकरतप्रणामनप्रेमअ-
घाइ ॥ छन्द । अतिप्रेमसानसराहिरामहिंरामधामहिंसो
गई । तेहिमातुज्योंरघुनाथअपनेहाथजलअञ्जलिदई ॥ तु

लसीभनतसेवरीप्रणतिरघुवरप्रकृतिकरुणामई। गावतसुनत समुझतभगतिहियहोइप्रभुपदनितनई ॥ १७ ॥

इतिश्रीरामगीतावल्यांआरण्यकांडःसमाप्तः ॥

टी० । सेवरीइ० । सेवरी सोय उठी वा काल मे बाम नेच औ बाहु फरकत जे ते सोहावने सगुन मुनि मन अगम उछाहु को सूचन करत हैं मुनिन को जो अगम सो आनन्द उर मे है नेच सजल हैं तन मे रोमांच है एसी जो सवरी सो ठन औ परन के गृह को सवारि के अर्थात् झारि बटोरि कै औ कलस मे जल भरि कै फल लेइवे के अभिलाष सें चली चलत मे सुंदर मनोरथ करति है औ बिप्रबर जो मतंग ऋषि तिन की जो भली बानी ताकों सुमिरति है जो बानी रूप कल्पबेलि सुकृत बटोरि कै सुंदर फूल फूली रही सो अब सुख रूप फल फली ॥ १ ॥ अब सवरी को मनोरथ कहत हैं सवरी कहति है हम नाथ पाइ कै अघाय के लाहु लहब औ श्री रघुनाथ पतित पावन बाना पाय कै अघाइ कै लाहु लहब याते दूनो ओर लाभ अघाइ के है औ तुलसी से तीसरो गुन गाइ कै अघाय लहु लहब अपर सु० ॥ २ ॥ दोना सुंदर रचे ताको कंद मूल फल फूल ते पूरन किए ते मूलादि कैसे हैं कि अम्रतहु ते अनूप है औ अम्बक कहैं नेच तासे देखतो मे अनुकूल हैं अर्थात् सुंदरो हैं नेचन के प्रिय जो फल हैं जैसे माता अपने बालक के हित आनै तैसे सब आनि के सुंदर सनेह जो है सो हजार गुन अम्रत से सरस है मानो तासों सनि राखे छन भौन छन बाहर भूमि पर हाथ दै कै राह देखति है सवरी के प्रेम की प्रतिज्ञा पहिचानि कै दोउ भाई आए छन भौन कहिवे को यह भाव कि जो फल आदि भौन मे धरा है ताको कोउ जंतु आदि बिगारि न देइ ॥ ३ ॥ रघुनाथ आवत हैं अस स्रवन सुनत चलत भई ते राम लषन के आवत देखि सनेह से सिथिल ह्वै कहै है कि

है विधाता सपना है कि सांच है भाग्य रूप पाच छोटो है औ लाभ सुख औ आनन्द के समुद्र उमग्यो अपर सु० ॥ ४ ॥ प्रेम रूप पट के पांवडे देत औ नेत्र जल को अर्घ देत औ आश्रम मे ले जाय के आसन दिए फेर चरन कमल पषारि के पूजे औ राम पंथ श्रम ते विशेष रहित भए फल फूल अंकुर मूल नए नए दोना मे सुधारि के भरि भरि के धरे पुलकित गात संते सराहि के प्रभु फल खात हैं मानो सराहत नही हैं आदर उत्पन्न करत हैं सवरी ने चारि भांति के फल दिए भाव बेर आदि भक्ष्य सरीफा आदि भोज्य आम आदि चोष्य नारि केल रस आदि पेय सो फल कैसे हैं कि चारि फल को प्रचारि कहैं ललकारि देत हैं ॥ ५ ॥ सिद्दांत कहिवे को यह भाव कि हाय हम सवर न भए वस अमल अनुराग के निर्मल अनुराग के वस हैं वा अनुराग रूप अमल के वस हैं अपर पद सुगम ॥ ६ ॥ परम निधि पाले परी राम भक्ति पाइ गई ॥ ७ ॥ तुलसी भनित गावत सवरी प्रनति सुनत करुना मई रघुवर प्रकृत समुझत प्रभु पद भक्ति नित्य नई हिय मे होइ ॥ ८ ॥ १७ ॥

रिपुमोहेमोहेमुनिउ ठगिसरहेकिरात । सुंदरनहिकोउरामसम हरिहरकहुकहिजात ॥ १ ॥

इतिश्रीरामगीतावलीप्रकाशिकाटीकायां श्रीसीतारामकृपापात्रश्री सीतारामीय हरिहरप्रसादकृतौ आरण्यकाण्डः समाप्तः ॥

अथ किष्किंधाकाण्ड । सोरठा । त्यागिठालिबलवान दीनषीनसुग्रीवकहं । सीतकियोभगवान कोकृपालअसहेतुबिनु ॥ १ ॥

मू० । रागकेदारा । भूषनबसनबिलोकतसियके प्रेमबिबसमनकंपपुलकतननीरजनैननीरभरेपियके ॥ सकुचतकहतसमुझितरउमगतशीलसनेहसगुनगनुतियके । स्वामिदशालखिलषनसखा कपिपविलेहैंसांठआंचमानोबियके ॥ सोचतहानिमानिमनगुनिगुनिगयेनिघटिफलसकलसुकियके । बरणायासबन्ततेहि

अवसरबचनबिबेकबीररसबियके ॥ घोरबीरसुनिसमुझिपर
स्परबलउपायउघटतनिजहियके । तुलसिदासयहसमउकहे
कसिलागतनिपटनिठुरजड़जियके ॥ १८ ॥

टी० । भूषणइ० । ऋष्य मूक पर्वत पर सुग्रीव ने श्री जानकीजी को भूषन बसन श्री रामजी को दिए तेहि बिलोकत मात्र श्री राम जू को मन प्रेम के बिशेष बस भयो औ तन कंप औ पुलकावली युक्त भयो औ कमल नैन मे आंसू भरि आए ॥ १ ॥ सखा कपि सुग्रीव और बांदर माठ मठुका ॥ २ ॥ मन से हानि मानि के गु- नि गुनि के सोचत हैं कि सुकिय कहैं सुकृत के सकल फल बिघटि कहैं बीति गए हैं बीर रस बिय के बीर रस के बीज के ॥ ३ ॥ उ- घठत प्रगट करत ॥ ४ ॥ १ ॥

मू० । प्रभुकपिनायकबोलिकह्योहै बरषागईसरदऋतुआईअबलौ
नहिसियसोधुलह्योहै ॥ जाकारणतजिलोकलाजतनुराखिबि
योगसह्योहै । ताकोतोकपिराजुआजुलगिकछुनकाजुनिबह्यो-
है ॥ सुनिसुग्रीवसभीतनमितमुखउतरुनदेनचह्योहै । आइ
गयेहरिजूथदेखिउरपूरिप्रमोदरह्योहै ॥ पठयेबदिबदिअवधि
दशहुंदिशिचलेबलसबनिगह्योहै । तुलसीसियलगिभवदधि
मानोफिरिहरिचहतमह्योहै ॥ १९ ॥

इतिश्रीरामगीतावल्यांकिष्किन्धाकाण्डःसमाप्तः ॥

टी० । प्रभुइ० ॥ १ ॥ २ ॥ हरि बानर ॥ ३ ॥ अवधि बदि बदि पठए अवधि चौपाई रामायण मे स्पष्ट है। मास दिवस महं आयेउ भाई। दसो दिसा को चलत भए पराक्रम को सबने गह्यो है गोसांई जी कहत हैं कि जानकी जी के लगि संसार रूप समुद्र को मानो फिर हरि मह्या चाहत हैं ॥ ४ ॥ २ ॥

इतिश्री रामगीतावली प्रकाशिका टीकायां श्रीसीताराम कृपापात्र श्रीसीतारामीय हरिहर प्रसादकृतौ किष्किंधाकाण्डः समाप्तः ॥

मू० । रागकेदारा । रजायसुरामकोजबपायो गालमेलिमुद्रिकामु-
दितमनपवनपूतशिरनायो ॥ भालुनाथनलनीलसाथचलेबली
बालिकोजायो फरकिसुअङ्गभयेमगणकहतमानोमगमुदमङ्ग
लछायो ॥ देखिविवरसुधिपाइगीधसोसबनिअपनोबलमायो।
सुमिरिरामतकितरकितोयनिधिलङ्कलूकसोआयो ॥ खोजत
घरघरजनुदरिद्रमनिफिरतलागिधनुधायो। तुलसीसियबिलो
किपुलक्योंतनभूरिभागभयोभायो ॥ २० ॥

टी० । रजासुइ० ॥ १ ॥ २ ॥ मायो कहैं तौल्यौ तरकि कहैं कूदि लंक लक सो आयो लंका मे लूक सम आयो भाव लूक उत्पात सूचक होत है ॥ ३ ॥ श्री हनुमान जू श्री जानकी जू को घर घर खोजत हैं जैसे दरिद्र को मन धन लागि धाये फिरत है भायो कहैं मन भायो ॥ ४ ॥ १ ॥

मू० । देखीजानकीजबजाइ परमधीरसमीरसुतकेप्रेमउरनसमाइ।
क्रशशरीरसुभायशोभितलगीउड़िउड़िधूलि मनहुमनसिज-
मोहनीमणिगयोभोरेभूलि ॥ रटतिनिसिबासरनिरन्तरराा
मराजिवनयन । जातनिकटनबिरहिनीअरिअकनितातेबयन
नाथकेगुणगाथकहिकपिदइमुदरीडारि । कथासुनिउठिल-
इकरबररुचिरनामनिहारि॥ हृदयहर्षविषादअतिपतिमुद्रि
कापहिचानि। दासतुलसीदशासोकेहिभांतिकहैबखानि ॥ २१ ॥

टी० । देखोइ० ॥ १ ॥ स्वाभाविक सोभित जो श्री जानकी जू तिन को क्रमित जो सरीर है तामे धूरि उड़ि उड़ि लगी है मानो काम भ्रम से अपने मोहनी मणि को भूलि गयो है ॥ २ ॥ राति दिन निरंतर श्री राम राजिव नैन रटति हैं तात गरम बानो सुनि के बिरहिनी अरि जो वायु सो निकट नही जात है भाव जरि जावे के डर ते ॥ ३ ॥ करवर श्रेष्ट कर मे ॥ ४ ॥ ५ ॥ २ ॥

मू० । रागसोरठ । बोलिरलिमुदरीसानुजकुशलकोशलपालु अमि

यत्रचनमुनाइमेटहिविरहज्वालाजालु । कहतिहितअपमा-
नमैंकियोहोतहियसोइशालु रोषछमिसुधिकरतकबहूंल-
लितलछिमनलालु ॥ परस्परपतिदेवरहिकाहोतिचरचाचा
लु । देविकहुकेहिहेतुबोलेविपुलबानरभालु ॥ शीलनिधि
समरथसुमाहिबदीनबंधुदयालु । दासतुलसीप्रभुहिकाहुन-
कह्योमेराहालु ॥ २२ ॥

टी० । बोलिइ० । श्री जानकी जू मुदरी से पूछति हैं कि हे मुदरी अनुज सहित कोशल पाल को कुशल बोलु ॥ १ ॥ लषन लाल के हित कहते मे मैं अपमान किया सो सुमिरि हृदै मे साल होत है ॥ पति जो श्रीराम औ देवर जो लषनलाल तिन्हके आपुस मे केहि चाल की चरचा होति है हे देवि बहुत बानर भालु केहि हेतु बोलाए । संका । बानर भालु के बोलाइब श्री जाकी जू कैसे जानो । उत्तर । मुदरी डारते मे हनुमान जी कहे रहे नाथ के गुन गाथ कहि कपि दियो मुदरी डारि ॥ ३ ॥ ४ ॥ ३ ॥

मू० ।सदलसलखनहैंकुशलकृपालुकोशलराउशीलसदनसनेहसाग
रमहजसरलसुभाउ ॥नीदभूखनदेवरहिपरिहरेकोपछिता-
उधीरधुररघुबीरकोनहिसपनेहूचितचाउ ॥ सोधविनुअनु
रोधऋतुकेबोधविहितउपाउ । करतहैंसोइसमयसाधनफ-
लतिबनतिबन उ ॥ पठैकपिदिशिदशहुंजप्रभुकाजकुटिलन-
काउ । बोलिलियेहनुमानकरिसनमानजानिममाउ ॥ दई
हैामङ्कतकहिकुशलातसियहिसुनाउ । देखिदुर्गविशेषिजा
नकिजानिरिपुगतिआउ कियासीयप्रबोधमुदरीदियोकपिहि
लषाउ । पइअवसरनाइशिरतुलसीशगुणगणगाउ ॥ २३ ॥

टी० । सदलइ० । मुंदरी की उक्ति की दल सहित लषनलाल स हित कृपाल जू कोशलराव सो कुशल हैं ॥ १ ॥ देवर जो लषन लाल तिन को न नीद है भूष है औ छोड़ि के जावे को पछिताव

है भाव मर्म बचन सहि लेते उहां से न जाते तो काहे को यह दुख भोगते वा दूर नाहक गए नगीचै छूप काहे न रहे औ धीरन मे अग्रवर्ती जे श्री रघुबीर तिन के चित्त मे सपनो मे आनंद नही है ॥ २ ॥ रिपु को षबर पाए बिना अनुरोध कहैं रोक रहत है अर्थात् कुछ बनत नाही तब रिपु के बोध मे जो बिहित उपाय ताको लोग करत हैं सोई उपाय रूप साधन समय के फलति है औ बनाव बनत है एही न्याय के अनुसार प्रभु ने रिपु के जानिबे हेतु दसो दिसा मे बानरों को पठए ते बानर प्रभु के काज कुटिल कोउ नहीं हैं हनुमान में समाई जानि के बुलाय लियो पुनि सनमान करिके संकेत की बात कहिके हम को दई औ कहत भए कि हमारी कुशलात जानकीजी को जाय सुनाओ औ लंका गढ़ कों औ विशेष जानकीजी को देखि कै औ रिपु की पराक्रम जानि कै हमारे ढिग आओ ॥ ३ ॥ ४ ॥५॥ एहि प्रकार ते मुदरी ने श्री जानकी जी को विशेष बोध कियो औ हनुमान को देखाय दियो श्री हनुमान जू अवसर पाय सिरनाय कै श्रीराम के गुन समूह कहन लगे ॥ ६ ॥ ४ ॥

मू० । सुअनसमीरकोधीरधुरीणबीरबड़ोइ। देखिगतिसियमुद्रिकाकीबालज्योंदियोरोइ ॥ अकनिकटुबाणीकुटिलकीक्रोधविंध्यबढोइ।सकुचिसमभयोईशआयसुकलशभवजियजोइ। बुद्धिबलसाहसपराक्रमअछतराखेगोइ।सकलसाजसमाजसाधकसमउकहसबकोइ॥उत्तरितरुतेनमतपदसकुचातसोचतसोइ । चुकेअवसरमनहुसुजनहिंसुजनसनमुखहोइ॥ कहेबचनबिनीतिप्रीतिप्रतीतिनीतिनिचोइ । सीयसुनिहनुमानजान्योभलीभांतिभलोइ ॥ देखिबिनकरतूतिकहिबोजानिहैलघुलोइ । कहौंगोमुखकीसमरसरिकालिकारिखधोइ ॥ करतकछुनहिंबनतहरिहियहरखशोकसमोइ । कहतमनतुलसीशलङ्काकरौंसघनघमोइ ॥ २२४ ॥

टी० । सुअनदू० । धीरन मे अग्रवर्ती बड़ो बीर जो पवन को पूत सो श्री जानकी जू औ मुद्रिका को कुगति देषि कै जैसे बालक रोवै तैसे रोय दियो ॥ १ ॥ कुटिल रावन को कटुबानी सुनि कै हनुमान जी को क्रोध रूप बिंध्य पर्वत बढ़त भयो पर श्री रामकी आज्ञा रूप अगस्ति को देखि कै सकुचि कै सम ह्वै जात भयो ॥ २ ॥ बुद्धि बल साहस पराक्रम के रहते इन सब के छपाय राखे काहे ते कि सकल साज समाज के साधक सबै है अस सब कोई कहत हैं ॥ ३ ॥ हृक्ष ते उतरि के श्री जानकी जू के पद मे नमस्कार करत भए औ सो बात ते सकुचात औ सोचत भए भाव जब रावन कटु कहत रहा तब कुछ न बन्यो अवसर के चूके पर मानो सुजन के सन्मुख सुजन होय ॥ ४ ॥ प्रीति बिस्वास नीति में निचोरि के नम्र वचन बोले श्री जानकी जू सो बचन सुनि के हनमान को जान्यो औ यह बिचाय्यो कि अब भलाई भली भांति ते है ॥ ५ ॥ हनुमान जू बोले कि हे देवि बिना करतूति किए कहिबे ते लोग लघु जानि हैं ताते काल्हि समर रूपी नदी मे मुख को करिषा धोइ के तब कहौंगो ॥ ६ ॥ हरख सोक मे हृदै मिलि रह्यो है ताते हनुमान जू सो कुछ करत नहीं बनत है इहां हरख दर्शन करि औ सोक दसा देखि तुलसी के ईस जे हनुमान ते मन मे कहत है कि लंका मे सघन घमोइ करौंगो भाव अस चौपट करौंगो कि कांटै जामै गो घमोइ को कोऊ देशवाले भंड भांड कोऊ देसवाले घमोइ कोऊ देशवाले कटीला कोऊ देशवाले सत्यानासी कोऊ देश वाले बंग कहत हैं ॥ ७ ॥ ५ ॥

मू० । रागकेदारा । श्रीरघुबंशमनिकोदूत मातुमानुप्रतीतिजान-
किजानुमारुतपूत॥ मैसुनीबातैअसैलीकहिजेनिसचरनीच। क्यों
नमारेगालबैठोकालडाढ़निबीच ॥ निदरिअरिरघुबीरबलले
जाउंजौंहठिआजु। डरौंआयसुभङ्गतेअरुबिगरिहैसुरकाजु

बांधिबारिघसाधिरिपुदिनचारिमेंहौबीर। मिलहिंगेकपिभा-
लुदलसंगजननिउरधरुधीर॥ चित्रकूटकथाकुशलकहिशीश
नायोकीश । सुहृदसेवकनाथकोलखिदईअचलअशीश॥
भयेसीतलश्रवणतनमनसुनेबचनपियूष। दासतुलसीरहीन-
यननिदरशहीकीभूष॥ २२॥ ५॥

टी०। होडू०॥ १॥ बातैं असैली अमजोद की बातै काल के मुख मे जो चौभरि है ताके बीच मे बैठ्यो है तब क्यों न गाल मारै भाव गाल नही मारत हैं सन्निपात करि जल्पत है॥ २॥ श्रीरघुबीर के बल ते अरि को निरादर करि कै हठि करि जो आप को ले जांउं तो श्रीराम जू की आज्ञा भंग ते डरत हौं औ देवतन को काज बिगरैगो ताते डरत हौं॥ ३॥ इहां चारिदिन अल्पदिन को बोधक है॥ ४॥ चित्रकूट की कथा अर्थात् जयंत की कथा औ श्री राम को कुशल कहि के हनुमान ने सीस नवाऐ चित्रकूट की कथा जो कहे ताको यह भाव कि तुम्हारे हेतु इन्द्र के बेटा की कैसी दुर्दसा किए तब और की कहा चली॥ ५॥ ६॥

मू०। ताततोह्लसोंकहतहोतिहियेगलानि मनकोप्रथमप्रणाससमु
झिअछततनलखिनइगतिभइमतिमलानि॥ प्रियकोबचनप
रिहर्योजियकेभरोसेसङ्गचलीबनबड़ोलाभजानि।प्रियतुमबि
रहतौसनेहसरवससुतऔसरकोचूकिबोसरिसनहानि॥ आ
रजसुअनकेतौदयादुअनऊपरमोहिसोचमोतेसबबिधिनसा-
नि। आपनीभलाईभलोकियोनाथसबहीकोमेरेहीअदिनब
सबिसरीबानि॥ नेमतौपपीहाहीकेप्रेमप्यारोमीनहीकेतुल-
सीकहीहैनीकेहृदयआनि। इतनीकहीसोकहीसीयज्योंही
त्योंहीरहीप्रीतिपरिसहीबिधिसोनबसानि॥ २२॥ ६॥

टी०। तातइ०। हे तात तुमह्लं से कहत हृदै मे गलानि होति है मन को जो प्रथम पन रह्यो भाव श्री राम बिनु हम जिअब

नाही सो तन को विद्यमान समझि के यह नई गति देखि कै ह-मारी गति मलान भई ॥ १ ॥ पिय कहत रहे कि तुम घर मे रहो तेहि बचन को त्याग्यों जिअवे के भरोसे से औ बन मे बड़ा लाभ जानि के संग चलिउं पर सनेह को सरबस जो पीतम तिन को बिरह भयो तब हे सुत अवसर चूकबे सरिस हानि नही है भाव बिछुरते सरीर छोडि देना रहा वा प्रीतम बिरह ते सनेह सर्वस पाठ होय तो अस अर्थ करना कि बडो लाभ बन मे जानी कौन लाभ जानी कि प्रितम के बिरह ते प्रीतम को सनेह सरबस है भाव ताते संग चलनो चाहिए सो प्रीतम को बिरह बन मे भयो ताको हम सहे याते अवसर चूकिबो सरिस हानि नही है भाव तन त्यागि देना रहा ॥ २ ॥ आर्ज जो श्रेष्ट दशरथ महाराज तिन के पुत्र को दया दुष्टो पर है भाव तव जो सरनागत हैं तिन को को कहै मोते सब बिनसाय गई है याते हम को सोच है आपने भलाई ते नाथ सब को भलो कियो है पर मेरीही अदिन बस नाथ हू की भलाई को बानि बिगरि गई है ॥ ३ ॥ नेम तो पपी है को ठीक है भाव वाको पीतम मेघ केतनो निरादर करत है ताको न-ही मानत है औ प्यारी मीनही को प्रेम है भाव पीतम जो जल तेहि बिनु नही जीअत है नीके हृदय मे आनि के जानकी जू ने यह कही है यतनी कही सो कही जानकी जू ज्यों कै त्यों रही भाव काष्टवत ह्वै रही प्रीति की तो सही परी अर्थात् अपन पो भूलि गई पर बिधाता सों कुछन बसान ॥ ४ ॥ ७ ॥

सू० । मातुकाहेकोंकहतिअतिबचनदीन तबकीतुहींजानतिअबकी
होंहिकहतसबकेजियकोजानतप्रभुप्रबीन । ऐसेतोसोचहिं
न्यायनिठुरनायकरतशलभकुरङ्गखगकमलमीन करुणानिधा
नकोतोज्योंज्योंतनुछीणभयोत्योंत्योंमनभयोतेरेप्रेमपीन ॥
सियकोसनेहरघुबरकीदशासुमिरिपवनपूतदेख्योप्रीतिलीन ।

तुलसीजनकोजननिहुप्रबोधकियोसमुझितातजगबिधिअधीन ॥ २२ ॥ ७ ॥

टी० । मातुइ० । हे मातु काहे को अति दीन बचन कहति हौ तब की तुमहीं जानति हौ भाव कैसो प्रीति तुम्हारे मे रही औ अब जैसो है तस हम कहत हैं औ सब के जिय की प्रभु प्रबीन जानत हैं भाव तुमको बिरहिनी जानि क्योंन बिरही होंहि गे ॥ १ ॥ जस तुम सोचति हौ तस निठुर नायक मे जेरत हैं ते सोचहिं तो न्याय कहैं युक्त है जैसे पतंग पपोहा हरिन कमल मीन को निठुर नायक दीप सिखा मेघ राग सूर्य जल ए सब हैं ते सोचहिं औ करुना निधान श्रीराम को तो ज्यौं ज्यौं तन छीन भयो त्यौं त्यौं तुम्हारे प्रेम मे मन पीन भयो ॥ २ ॥ श्री जानकी जू को नेह औ रघुबर की दसा सुमिरि के जब पवन पूत प्रीति मे लीन भयो तब जानकी जू देखि हनुमान जी को प्रबोध कियो कि हे तात बिधाता के आधीन जग जानो ॥ ३ ॥ ८ ॥

मू० । रागजयतिश्री । कहौंकपिकबरघुनाथकृपाकरिहरिहैंनिजबियोगसम्भवदुख । राजिवनयनमदनअनेककछबिरबिकुलकुमुदसुखदमयंकमुख ॥ बिरहअनलसहायसमीरनिजतनुजरिबेकहंरहीनकछुशक । अतिबलजलबरखतदोउलोचनदिनअरुरैनिरहतयेकहितक ॥ सुदृढज्ञानअवलम्बिसुनहुसुतराखतिप्राणबिचारिदहनमत । सगुणरूपलीलाबिलाससुखसुमिरणकरतरहतअन्तरगत ॥ सुनुहनुमन्तअनन्तबंधुकरुणासुभावसुशीलकोमलअति । तुलसिदासएहिचासजानिजियबहुदुखसहौंप्रगटनकहिसकति ॥

टी० । कहौइ० । निज बियोग संभव अपने बियोग ते उत्पत्ति ॥ १ ॥ निज स्वास रूप वायु के सहाय युक्त जो बिरहानल तामे तन के जरिबे कहं कछु संदेह न रही पर दिन औ राति एकै तार से

दोऊ लोचन प्रबल जल बर्षत हैं भाव नैन रूप मेघ जरिबे नहीं देत हैं ॥ २ ॥ हे सुत सुंदर दृढज्ञान को अवलम्बन करि के भाव राघो जाको अपनावत हैं ताको त्यागते नही एहि ज्ञान के अवलम्बन करि जराइबे के मत ते बिचारि के प्रान को राषति हौं औ भीतर सगुन रूप के लीला विलास को सुख सुमिरन करत रहत हौं ॥ ३ ॥ हे हनुमंत लषनलाल के भाई कारुण्य सुसील औ अति कोमल हैं एहि त्रास ते प्रगट नही कहि सकति हौ भाव तुम जब जाय कहो गे तब बिकल होय जांहिगे ताते बहु दुख सहत हौं ॥ ४ ॥ ९ ॥

मू० । रागकेदारा । कबहुंककपिराघोआवहिंगे मेरेनयनचकोर
प्रीतिवसराकाशशिमुखदेखरावहिंगे ॥ मधुपमरालमोरचातक ह्वैलोचनबहुप्रकारधावहिंगे । अंगअंगछबिभिन्नभिन्नसुख निरषिनिरखितहंतहंछावहिंगे ॥ बिरहअग्निजरिरहीलता ज्योंकृपादृष्टिजलपलुहावहिंगे । निजवियोगदुखजानिदया निधिमधुरबचनकहिसमुझावहिंगे ॥ लोकपालसुरनागमनुजसबपरेबन्दिकबमुकुतावहिंगे । रावणबधरघुनाथबिमल यशनारदादिमुनिजनगावहिंगे ॥ यहअभिलाषरहनिदिनमेरेराजबिभीषणकबपावहिंगे । तुलसिदासप्रभुमोहजनितभ्रमभेदबुद्धिकबबिसरावहिंगे ॥ २२ ॥ ९ ॥

टी० । कबहुंक० । हमारे प्रीति बस नैन रूप चकोर को मुख रूपपूर्ण चंद्र को कब देषरावैंगे राका नाम पूर्णवांसी को है ॥ १ ॥ लोचन जोसो भ्रमर हंस मोर पपीहा ह्वै के बहुत प्रकार ते कब धावैं गे औ अंग अंग की छबि मे भिन्न भिन्न सुष देषि देषि के तहां तहां कब छाय रहैं गे भाव भ्रमर ह्वै मुष नेत्र करपद रूप कमलन मे औ हंस ह्वै के नाभी रूप सर मे औ मोर ह्वै के गंभीर गिरा रूप गर्जन मे औ पपीहा ह्वै स्याम सरीर रूप घन मे

कब छावैं गे ॥ २ ॥ ३ ॥ मुक्तावहिंगे छोड़ावहिं गे ॥ ४ ॥ गोसांई जी कहत हैं कि जानकी जो कहति हैं की प्रभु हमारे मोह जनित भ्रम को अर्थात् कनक म्टग विषयक जो भ्रम भयो ताको औ भेद बुद्धि को अर्थात लक्ष्मणजू मे जो आनि भांति की बुद्धि भई ताकों कब बिसराइ देहिं गे भाव यह दूनो दोष हमारे कब भूलि जाहिं गे ॥ ५ ॥ १० ॥

मू० । सत्यबचनसुनुमातुजानकी जनकेदुखरघुनाथदुखितअतिसहजप्रकृतिकरुणानिधानकी ॥ तुववियोगसंभवदारुणदुखविसरिगईमहिमासुबाणकी।नतकहुंकहंरघुपतिसायकरवितमअनीककहजातुधानकी ॥ कहंहमपशुसाखाम्टगचञ्चलबात कहौंमैविद्यमानकी । कहंहरिशिवअजपूज्यज्ञानघननहिं बिसरतिवहलगनिकानकी ॥ तुवदरशनसन्देशसुनिहरिको बहुतभईअवलम्बप्राणकी । तुलसिदासगुणसुमिरिरामकेप्रेममगननहिसुधिअपानकी ॥ २ ॥ ३० ॥

टी० । सत्यबचनइ० ॥ १ ॥ तुम्हारे बियोग ते उत्पन्न जो कठिन दुःष ताते सुंदर जो बान की महिमा सो बिसरि गई नाही तो तुम हीं कहो कहां रघुपति को शायक सूर्य सम कहां राक्षसो की सेना तम सम ॥ २ ॥ कहां हम पसुन मे चंचल बांदर औ कहां बिष्णु शिव ब्रह्मा करि के पूज्यज्ञान स्वरूप श्री राम बात कहौं मे बिद्यमान की हमारे पर जो बीती है सो बात कहत हौं जेहि प्रकार ते हमारे कान मे लगि बात कहे सो बिसरत नाहीं इहां श्री राम की अति करुना जनाए । तथाचस्मृतिः ब्रह्मविष्णुमहेशाद्यायस्यांशालोकसाधकाः तमादिदेवंश्रीरामंविशुद्धम्परमम्भजे ॥ १ ॥ ३ ॥ तुम्हार दर्सन तुम्हार संदेसा सुनि के हम जानत हैं कि श्रीराम को प्रान की बहुत अवलंब भई हनुमान जी श्री राम को गुन गन सुमिरि के प्रेम मे मगन भए ताते अपन पो भूलि गए ॥ ४ ॥ ११ ॥

मू० । रागकानरा । रावणजौपैंरामरणरोषे कोसहिसकैसुरासुर समरथबिशिषकालदशननितेचोषे ॥ तपबलभुजबलकैसनेह बलशिवबिरञ्चिनोकेबिधितोषे सोफलराजसमाजसुअनजन अपननासआपनेपोषे ॥ तुलापिनाकसाहुन्टपचिभुअनभटब- टोरिसबकेबलजोषे । परशुरामसेसूरशिरोमणिपलमेभयेखेत केसेधोषे ॥ कालिकीबातबालिकीसुधिकरिसमुझहिताहित खोलिझरोषे । कह्योकुमंचिनकोनमानियेबड़ीहानिजियजा निचिदोषे ॥ जासुप्रसादजन्मिजगपुरुषनिसागरसृजेखनेअ- रुसोषे । तुलसिदाससोस्वामिनसूझ्योनयनसीशमन्दिरके सेमोषे ॥ २ ॥ ॥ ३१ ॥

टी० । रावनदू० । अब श्री हनुमान जी औ रावन को संबाद लिखत हैं ॥ १ ॥ तप बल ते कै भुज बल ते कै सनेह बल ते शिव बिरंचि को नीको बिधि से प्रसन्न किए ताको फल राज समाज औ पुत्र सेवक पाए सो आपने पोषे को आपुहि मति नासो ॥ २ ॥ राजा जनक रूप साहु ने त्रिभुवन के भट बटोरि के सब के बल को पिनाक रूप तेराजूपर जोषे भाव सब का पलरा उठि गया श्रीरामहि का पलरा न उठा औ जेहि श्रीराम के आगे सूर सिरोमनि परसु राम से पल मे षेत के धोषे से भए भाव देषही मात्र के रहि गए ॥ ३ ॥ अबही बालि की बात कालि की है भाव थोडे दिन की है ताको सुधि करि के हृदय रूप झरोषा को पट षोलि के हित अ- हित समुझि कुमंचिन को चिदोषे जानि अर्थात् काल बस जानि इन को कह्यो न मानिए काहि ते की बड़ी हानि है ॥ ४ ॥ जेहि के प्रसाद ते जगत मे पुरुष जनम के समुद्र को उत्पन्न किए औ षंदे औ सोषे समुद्र को सृजे प्रियब्रत ने औषोदे सगर महाराज के पुत्र ने सोषे अगस्ति ने मोषे कहै झरोषे ॥ ५ ॥ १२ ॥

मू० । रागमारू । जौहौप्रभुआयसुलैचलतो तौयेहिरिसितोहिस

हितदशाननजातुधानदलदलतो। रावणसोरसराजसुभटर-
सहितलङ्कखलखलतो करिपुटपाकनाकनायकहितघनेघने
घरघलतो ॥ बडेसमाजलाजभाजनभयोबड़ोकाजबिनुछलतो
लंकनाथरघुनाथबयरतरुआजुफैलिफुलिफलतो ॥ कालकर्म
दिगपालसकलजगजालजासुकरतलतो । तारिपुसोंपरभूमि
राररणजीवनमरणसुथलतो ॥ देखीमैंदशकण्ठसभासबमो
तेकोउनसबलतो । तुलसीअरिउरआनिऐकअवएतीगला-
निनगलतो ॥ २ ॥ ३२ ॥

टी० । जौडू० । जो हम प्रभु की आग्यां युद्ध के हेतु लैके चले होते तो हे दसानन एहि रिसि ते तोहि सहित राक्षस दल कों दलि डारते ॥ १ ॥ रावन ऐसो रसराज कहैं पारद को तासो सुभट रूप बूटिन के रस सहित करि कै लंका रूप खल मे खलते फिर पुट पाक बनाइ के इन्द्र के हित घने घने घर को घालते भाव और जे अनेक रोग रूप राक्षस तिन्है नासते ॥ २ ॥ हे लंकनाथ रघुनाथ को बैर रूप वृक्ष जो आज फैलि फूलि कै फलत तो बिनु छलै ते बड़ो काज होत सो न भयो ताते बडे समाज मे लाज के पात्र हम भए भाव बिना करतूति बचन साचकहे ॥ ३ ॥ काल कर्म इन्द्रादि दिग्पाल सब औ जगत समूह जाके करतल मे है ताके रिपु सो परभूमि कहैं शत्रु के भूमि मे औ रन की लड़ाई ऐसे संजोग मे जीवन मरन दोऊ सुथल को रह्यो ॥ ४ ॥ हे दसकंध मै देषी तेरे सब सभा मे मोते कोऊ सबल नही है उर मे अरि को अंदाजा आनि कै एती गलानि मे नही गलते जो रघुबीर की आज्ञा होति ॥ ५ ॥ १३ ॥

मू० । तौलोंमातुआपुनिकैरहिवो। जौलोंहौंल्यावौंरघुवीरहिदिनद्वै
औरदुसहदुखसहिवो । सोषिकैखेतकेवांधिसेतुकरिउतरि-
वोउदधिनवोहितचहिवो। प्रबलदनुजदलदलिपलआधमेंजो

वतदुरितदशाननगहिबो ॥ बैरिहन्दविधवावनितनिकोदेखि
बोवारिबिलोचनवहिबो । सानुजसैनसमेतस्वामिपदनिरषि
परममुदमंगललहिबो ॥ लंकदाहउरआनिमानिबोसांचरा-
मसेवककोकहिबो । तुलसीप्रभुसुरसुयशगादूहैंमिटिजैहैं
सकलसोचदौदहिबो ॥ २ ॥ ३३ ॥

टी० । तौलोंइ० । अब श्री जानकी जू प्रति हनुमानजू की उक्ति है तौलोंइ० । इहां दस दिन अल्पदिन को वाचक है ॥ १ ॥ समुद्र को सोषि कै षेत कहैं सम करि कै अथवां सेतु बांधि कै समुद्र उतरब जहाज को चाहना न करब दुरित दसानन पाप रूप दसानन ॥ २ ॥ रिपु गन के बिधवा स्त्रिन को नेत्रन ते जल वहिबो देषब ॥ ३ ॥ लंका को दाह उर मे आनि के राम सेवक को कहब सांच मानव भाव हम एक राम सेवक अस किआ तब अनेक राम सेवक रहैं गे जस हम कहे तस क्यों न करैं गे दव कहैं अग्नि ॥ ४ ॥ १४ ॥

मू० । कपिकेचलतसियकोमनगहवरआयो । पुलकसिथिलभयोशरीरनीरनयनन्हछायो । कहनचह्योसन्देशनहिकह्योपियके-
जियकीजानिहृदयदुसहदुखदुरायो देखिदशाव्याकुलहरिसु
ग्रीषमकेपथिकज्योंधरणितरणितायो ॥ मीचतेंनीचलगीअ-
मरताछलकोनवलकोथलनिरषिपरुषप्रेमपायो । कैप्रबोधमा
तप्रीतिसोंमनुअशोसदीन्हीह्वैहैतिहारीगोईभायो ॥ करुणाको
मलाजभयभर्योकियोगौनमौनहींचरणकमलशीसनायो ।
यहसनेहसरवसुसमौतुलसीरसनारूषीताहितेपरतगायो ॥

टी० । कपिइ० । गहवरि आयो कहैं भरि आयो ॥ १ ॥ संदेस कहिवे के चाहत भई पर न कहीं पिय की करुना मै हृदय जानि कै कठिन दुख अपने हृदय मे छपाई भाव सुनि कै रघुनाथ और अति दुखी ह्वै जाहिं गे दसा देखि के हरीस जो श्री हनुमान ज

सो ग्रीष्म रितु को पथिक जैसे सूर्य करि तपी भूमि मे व्याकुल होत तस भए ॥ २ ॥ हनुमान जू को अपनी अमरता मृत्यु से भी निकाम लगी छल को औ बल को यल नहीं देखि कै भाव ह्यां न छलै काम आवत है न बलै काम आवत है अस देखि कै अपने प्रेम को कठोर पावत भए भाव जो तन न छूटा तो कहा प्रेम ॥ ३ ॥ करुणा श्री जानकी जू की दसा देखि कोप रावण पर लाज जस चाहिए तस न करने को भय बिनु आज्ञा लंका जराइबे को तासो भयो चरण कमल सिर नाय के मौनहीं कपि गमन कियो यह समै स्नेह को सर्वस्व है औ तुलसी की रसना रूपी है ताही ते गायो परत है भाव सरस होती तो बंझि जाती ॥ ४ ॥ १५ ॥

मू० । रागवसंत । रघुपतिदेखोआयोआयोहनुमन्त लङ्कागगनरखे ल्योवसन्त । श्रीरामराजहितसुदिनसोधि । साथीप्रबोधिलांघोपयोधि ॥ सियपायपूजिआशिषापाय । फलअमियसरिस खायेअघाय ॥ काननदलिहोरीरचिबनाय । हठितेलवसन बालधिबंधाय ॥ हियढोलचलेसंगलोगलागि । बरजोरदईचहुँओरआगि ॥ आखतआकृतिकियेजातुधान । लखिलपट भभरिभागेबिमान ॥ नभतलकौतुकलङ्काबिलाप । परिनाम पचहिंपातकीपाप ॥ हनुमानहांकसुनिबरषिफूल । सुरवार वारवरणहिंलंगूल ॥ भरिभुअनसकलकल्याणधूम । पुरजारि वारिनिधिबोरिलूम ॥ जानकीतोषिपोषेउप्रताप । जैपवन सुअनदलिदुअनदाप ॥ नांचहिंकूदहिंकपिकरिबिनोद । पीवतमधुमधुवननगनमोद ॥ योंकहतलषणगहेपायआय । मणिसहितमुदितभेंट्योंउठाय ॥ लगेसजनसैनभयोहियहुलास । जयजययशगावततुलसिदास ॥ २ ॥ ३५ ॥

टी० । रघुपतिइ० ॥ १ ॥ साथी जामवंत आदि ॥ २ ॥ बालधि लंगूर ॥ ३ ॥ आकृति को आषत रूप निसाचरों को किए भभरि

भड़कि परिनाम पचहिं पाप ते पातकी अंत मे पचत हैं तो क्यों न लंका मे बिलाप होय ॥ ४ ॥ लूमि लंगूर ॥ ५ ॥ पोष्यो प्रताप लंका जराइ के श्री राम प्रताप कों पुष्ट कियो दुश्रन दाप कहैं दुष्टन को अहंकार ॥ ६ ॥ मनि चूड़ामनि । संका । ए सब लक्ष्मण जी कैसे जाने । उत्तर । सर्वज्ञता करि ॥ ७ ॥ १६ ॥

मू० । रागजयतिश्री । सुनऊरामबिश्रामधामहरिजनकसुताअति
बिपतिजैसेसहति । हेसौमित्रिबंधुकरुणानिधिमनमऊरट-
तिप्रगटऊनहिंकहति ॥ निजपदजलजबिलोकशोकरतनयन
निवारिरहतनएकक्षण । मनऊनीलनीरजशशिसंभवरबिवि
योगद्वौश्रवतसुधाकण ॥ बऊराक्षसीसहिततरुकेतरतुम्हरेबि
रहनिजजन्मबिगोवति । मनहुंदुष्टइन्द्रियसंकटमहंबुद्धिबिवे
कउदयमगुजोवति ॥ सुनिकपिबचनबिचारिहृदयहरिअन
पाइनोसदासोएकमन । तुलसिदासदुखसुखातीतहरिसोच
करतमानऊंप्राकृतजन ॥ २ ॥ ३६ ॥

टी० । हेसौमित्र बंधो हे करुणा निधे अस जानकी जू मन महं रटति हैं औ प्रगट नहीं कहति हैं भाव अति बियोग ते बोलि नहीं सकति हैं वा राक्षसन के भय ते ॥ १ ॥ अपने चरण कमल को देखत रहति हैं नीचे सिर करना एक सोक मुद्रा है औ सोक मे रहत हैं औ आंखिन से आंसु एक क्षन टिकत नाहीं मानो चंद्रमा ते उत्पन्न जे दोऊ स्याम रंग के कमल ते सूर्य के बियोग ते सुधा कणश्रवत हैं इहां दोऊ स्याम कमल नेत्र हैं मुख शसि है रबिश्री राम हैं सुधा कण आंसू हैं ॥ २ ॥ तरु के तर मे बऊत राक्षसिन के सहित तुम्हारे बिरह मे आपन जन्म बितावति हैं मानो बुद्धि दुष्ट इन्द्रीन के संकट मे बिबेक उदै की राह ताकति है इहां दुष्टेन्द्री राक्षस हैं बुद्धि श्री जानकी जू हैं औ बिबेक श्री राघव हैं ॥ ३ ॥ हरि कपि की बातैं सुनि कै औ हृदय मे अस बिचारि के कि सो

जानकी जू एक मन मे सदा अनपायनी कहैं नास रहित भक्ति मे स्थित हैं गोसाईं जी कहत हैं कि दुष सुष ते रहित जो हरि सो प्राकृत जन सम सोच करत हैं ॥ ४ ॥ १७ ॥

मू० । रागकेदारा । रघुकुलतिलकवियोगतिहारे मैदेखीजबजाइ जानकीमनहुंबिरहमूरतिमनमारे । चित्रसेनैनअरुगढेसेच रणकरमढेसेश्रवणनहिंसुनतिसुपुकारे रसनारटतिनामकर शिरचिररहैनितनिजपदकमलनिहारे॥दरसनआसलालसा मनमहंरांखेप्रभुध्यानप्राणरखवारे । तुलसिदासपूजतित्रिज-टानीकेरावरेगुणगणसुमनसवारे ॥ २ ॥ ३७ ॥

टी० । रघुकुलइ० । मानो बिरह की मूरति हैं ताह्न मे उदास ॥ १ ॥ तसबीर के नेत्र सम नेत्र हैं भाव अचल ह्वै रहे हैं औ गढ़े से चरन कर हैं भाव चेष्टा रहित हैं औ मूदे सम कान हैं ताते धीरे से को कहै पुकारे से भी नहीं सुनति हैं जीभ ते नाम को रटति हैं औ बहुत देर तक माथ पर हाथ धरे रहति हैं औ अप ने चरण कमल को सदा निहारे रहति हैं ॥ २ ॥ आप के दरसन की आसा औ लालसा मन मे राषे हैं ताते प्राण के रक्षा करनि हारो प्रभु को ध्यान राखे हैं औ रावरे गुन गन रूप संवारे भए फूल ते त्रिजटा नीके पूजति है ॥ ३ ॥ १८ ॥

मू० । अतिहिंअधिकदरशनकीआरति रामवियोगअशोकविटपत-रसीयनिमेषकल्पसमटारति॥ बारबारबरबारिजलोचनभरि भरिबरतबारिउरढारति मनहुंबिरहकेसद्यघायहियेंलखित किततकिधरिधीरततारति॥तुलसिदासयद्यपिनिशिवासरक्षण क्षणप्रभुमूरतिहिनिहारति । मिटतिनदुसहतापतउतनुकी यहविचारिअन्तरगतिहारति ॥ २ ॥ ३८ ॥

टी० । अतिइ० ॥ १ ॥ वार वार श्रेष्ट कमल लोचन म गरम जल भरि भरि के उर पर गिरावति हैं मानो हृदै मे बिरह के

तुरंत को घाव देखि के धीरज धरि के तकि तकि के ततारति कहुँ छोटा देति हैं अंतर गति हारति भीतर से हारति है ॥ ३ ॥ १९ ॥

मू० । तुम्हरेबिरहभईगतिजौन चितदैसुनऊरामकरुणानिधिजानौंकछुपैसकौंकहिहौन । लोचननीरकृपणकेधनज्यौंरहतनिरन्तरलोचनकोंन हाधुनिखगीलाजपिंजरेमहंराखिहियेंबड़ेबधिकहठिमौन ॥ जेहिबाटिकाबसतितहंषगमृगतजितजिभजेपुरातनभौन । स्वाससमीरभेंटभईभोरेऊंतेहिमगुपगुनधर्योतिऊपौन ॥ तुलसिदासप्रभुदशासीयकीमुखकरिकहतहोतिअतिगौन । दीजेदरशदूरिकीजैदुषहौतुमआरतिआरतदौन ॥ २ ॥ ३९ ॥

टी० । तुम्हरेइ० । हे करुणानिधि राम तुमरे बिरह मे जानकी जू को जो गति भई है ताको चित्त दै के सुनऊ हम कछु जानत हैं पै कहि नही सकत हौं ॥ १ ॥ निरंतर नेत्रन के कोन मे नेत्रन को जल रहत है जैसे कृपिन को धन कोने मे रहत है लाज रूपी पिंजरा महं हाधुनि रूपी पच्छिणी कों बड़े बधिक रूप मौन ने हठि करि के राषी है ॥ २ ॥ जेहि बाटिका मे श्री जानकी जू बसति है तहां ते खग मृग अपना प्राचीन भौन छोड़ि के भजे भाव शरीर से बिरहानल की तपनि जो उठति है ताको न सहि सकी स्वास औ समीर ते जो भूलीउ के भेट भई तो फेर तेहि मग तीनो समीर सीतल मंद सुगंध पग न धर्यो भाव एक बार काहू भाग से बचि गए फेर जाइवे ते स्वांस जलाइ देइ गो ॥ ३ ॥ हे प्रभु सीय की जो दसा है सो मुख करि कहिवे ते अति गौण होति हैं ताते दरसन दीजे औ दुष को दूर कीजे काहे ते कि तुम आर्त्त की आर्त्ति दाहक हौ ॥ ४ ॥ २० ॥

मू० । कपिकेसुनिकलकोमलबयन प्रेमपुलकिसबगातसिथिलभयेभरेसलिलसरसीरुहनयन । सियबियोगसागरनागरमनुबू-

ड़नलग्योसहितचितचयन लह्योनावपवनजप्रशन्नतावरबसत
हांगह्योगुणमयन ॥ सकतनबूझिकुशलबूझेबिनुगिराविपुल
व्याकुलउरअयन । ज्यौंकुलीनसुचिसुमतिवियोगिनिसन्मुष
सहैबिरहसरपयन ॥ धरिधरिधीरबीरकोशलपतिकियेयतनस
केउतरूनदयन । तुलसिदासप्रभुसखाअनुजसौंसयनहिंकह्यो
चलडुमजिसयन ॥ २४ ॥

टी० । कपिदू० ॥ १ ॥ श्री जानकी जू के बियोग रूपी समुद्र में श्री रामजू के मन जो नागर सो अपने चित्त के आनन्द सहित बूड़न लग्यो तहां पवन सुत की प्रशन्नता रूप नौकालही पर तहूं ऊं बरबस ते काम ने गुन को गह्यो भाव मन को षीच्यो पवनज प्रशन्नता को नउका कहिवे को यह भाव कि एनके प्रशन्नता ते जानि परत है कि शीघ्र रावन जीत्यो जायगो ॥ २ ॥ श्री राम कुशल नहीं बूझि सकत हैं औ कुशल बूझे बिना उर रूप घर मे बानी अति व्याकुल है जैसे कुलीन पवित्र सुंदर मतिवाली बियोगिनि नायका बिरह को चोषो बान सन्मुष सहै है भाव कुछ उपाय नही करि सकति है ॥ ३ ॥ ४ ॥ २१ ॥

मू० । रागमारू । जबरघुबीरपयानोकीन्हो क्षुभितसिंधुडगमगतम
हीधरसजिसारंगकरलीन्हो । सुनिकठोरटंकोरघोरअतिचौं
केबिधित्रिपुरारिजटापटलतेचलीसुरसरीसकतनशंभुसंभारि
भयेबिकलदिग्पालसकलभयभरेभुवनदशचारि । खरभरल
ङ्कसशङ्कदशाननगर्भस्रवहिंअरिनारि ॥ कटकटातभटभालु
बिकटमर्कटकरिकेहरिनाद । कूदतकरिरघुनाथसपथउपरी
उपरावदिवाद ॥ गिरितरुधरनखमुखकरालरदकालडुकरत
बिषाद । चलेदशदिशिरिसिभरिधरूधरूकहिकोवराकमनु
जाद ॥ पवनपंगुपावकपतंगशशिदुरिगएथकेबिमान । जाचत
सुरनिमेषसुरनायकनयनभारअकुलान ॥ गयेपूरिसरधूरिभूरि

भयअगथलजलधिसमान । नभनिसानहनुमानहांकसुनिस मुझतकोउनअपान ॥ दिग्गजकमठकोलसहसाननधरतधर णिधरिधीर । बारहिंवारअमरषतकरषतकरकैपरीशरीर ॥ चलीचमूचहुंओरसोरकछुवनैनवरणतभीर । किलकिलात कसमसतकोलाहलहोतनीरनिधितीर ॥ जातुधानपतिजानि कालवसमिलेविभीषणआइ । सरणागतपालकक्रपालकियो तिलकलियोअपनाइ ॥ कौतुकहीवारिधिवंधाइउतरेसुवेलत टजाइ । तुलसिदासगढदेखिफिरेकपिप्रभुआगमनसुनाइ ॥ २ ॥ ४१ ॥

टी० । जवइ० । छुभित कहैं चलाय मान ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ के हरिनाद सिंहनाद उपरी उपरा चढ़ा चढ़ी ॥ ४ ॥ धर धारन किए रद दांत वराक तुच्छ मनुजाद राक्षस ॥ ५ ॥ वायु बंद ह्वै गयो अग्नि सूर्य चन्द्रमा सब छिपि गए विमान थकि गए देवता निमेष जाचत भए औ इन्द्र नैनन के भार ते अकुलाय उठे भाव बज्ज नेत्रन मे धूरि परो ताते ॥ ६ ॥ धूरि से तलाव पूरि गए परवत औ थल सब समुद्र के समान ह्वै गए भाव चरनन के आघात से आकाश में नगारा औ हनुमान जू को हांक सुनि के कोऊ अपन पो नहीं समुझत है अर्थात् देहाध्यास रहित भए ॥ ७ ॥ दिग्गज कमठ बाराह शेस धीर धरि के भूमि को धरत हैं औ शरीर मे कड़कैं परी है ताते वारंवार आमर्ष युक्त होइ षींचत हैं अर्थात् शरीर को सीधा करत हैं ॥ ८ ॥ कसमसत एक में एक मिलि गए हैं ताते ॥ ६ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ १२ ॥ २२ ॥

मू० । रागअसावरी । आएदूतदेखिसुनिसोचशठमनमे बाहिरवजा वैगालभालुकपिकालवसमोसेवीरसोचहतजीत्योराररिरणमे । रामछामलरिकालक्षणबालिबालकहिघालिकोगणतक्षत्रज लज्योंनघनमे । काजकोनकपिराजकायरकपिसमाजमेरेअ

नुमान हनुमान हरिगणमे॥ समयसयानीरानीन्हदुवानीकहै
पियपावकनहोहिजातुधानवेनुवनमे। तुलसीजानकीदियेखा
मीसोसनेहकियेकुशलनतकसबहैवैखारखणमे ॥ २ ॥४२॥

टी० । आएदू० ॥ १ ॥ चाम कहैं दुर्वल बालि बालक अंगद जल ज्योंन वनमें जैसे वे जल को बादर वे गनती को होत है हरि गन बानर को समूह ॥ २ ॥ राक्षस रूपजो बांस का वन है तामे अग्नि भति होहिं ॥ ३ ॥ २३ ॥

मू० । आपनीआपनीभांतिसबकाहूकहीहै सन्दोदरीमहोदरमा-
लिवानमहामतिराजनीतिपांउंचजहांलोजाकीरहीहै । म
हामदअंधदशकन्धनकरतकानमीचुवसनीचुहठकुगहनिग-
हीहै। हंसिकहैसचिवसयानेमोसोयोंकहतचहतमेरुउड़न
वड़ीबयारवहीहै ॥ भालुनरवानरअहारनिश्चरनिकोसोऊन्ह
पवालकनिमागीधारिलहीहै । देखोकालकौतुकपिपीलकनि
पच्छलागेभागमेरेलोगनिकेभईचितचहीहै ॥ तोसोनतिलो-
कआजुसाहससमाजसाजुमहाराजुआयसुभोजोईसोईसही
है । तुलसीप्रणामकैविभीषणविनीतिकहैख्यालवेधेतालकपि
केलिलङ्कादहीहै ॥ २ ॥ ४३ ॥

टी० । आपनीदू० । धारि कहैं फौज अपर पद सु० ॥ ४ ॥ २४॥

मू० । दूसरोनदेखियतसाहिबसमरामै वेदऔपुराणकविकोविदविर
तरतजाकोयशसुनतगावतगुणग्रामै॥ मायाजीवजगजालसु-
भावकरमकालसबकोसासकुसबमैसबजामै। विधिसेकरणहा
रहरिसेपालनहारहरसेहरणहारजपैजाकेनामै ॥ सोईन
रवेषजानिजनकीबिनतीमानिमतोनाथसोईजातेंभलोपरिना
मै । सुभटशिरोमनिकुठारपाणिसारिषेहुंलखीओलखाईहू-
हांकियेसुभसामै ॥ वचनविभूषणविभीषणवचनसुनिलागेंदु-
खदूषणसेदाहिनेउबांमै । तुलसीहृमकिहियेहन्योलातभले

तातचल्योसुरतरुताकितजिघोरघामै ॥ २ ॥ ४४ ॥

टी०। दूसरोइ०। को विद पंडित विरत रत वैराग्य रत ॥ १ ॥ सासकु सासना कर्त्ता ॥ २ सुभटन में सिरोमनि परसुराम ऐसऊं देषि औ देखाइ के श्रीराम से सुभ जानिकै सामें किए अर्थात मिलापे किए ॥ ३ ॥ बचनन को बिशेष भूषन कर्त्ता जो बिभीषन का बचन है ताको सुनि कै यद्यपि दाहिने बचन है पर दुख औ दूषन समान बाम लगे वा दाहिने औ बायें जे बैठे रहे तिन के दुख दूषन समान लगे गोसांई कहत हैं कि ऊमकि करि के हृदय में लात मार्‍यो है तात भला किए अस कहि घोर घाम सम जो रावन है ताको तजि के सुर तरु समान जो श्रीराम हैं तिन्हको ताकि के चल्यो ॥

सू०। जायमायपायपरिकथासोसुनाईहै। समाधानकरतिबिभीषन कोबारबारकहाभयोतातलातमारेबड़ोभाईहै ॥ साहिबपितु समानजातुधानकोतिलकताकेअपमानतेरीबड़ीयैबड़ाईहै । गरतगलानिजानिसनमानिशिषदेतिरोषकियेंदोषसहेसमुझे भलाईहै ॥ इहांतेंबिमुखभयेरामकीसरणगयेभलोनेकुलोकु राखेनिपटनिकाईहै। मातपगसीसनाईतुलसीअशीशपाइ चलेभलेसगुणकहतमनभाईहै ॥ २ ॥ ४५ ॥

टी०। जायइ०। बिभीषन अपने माता को ढिग जाय के पांय परि के लात मारिवे की कथा सुनाई ॥ १ ॥ एक तो साहिब है दूसरे पितु समान है अर्थात बड़ा भाई है और राक्षसन को राजा है ताके अपमान ते तेरी बढ़िए बड़ाई है बिभीषन को गलानि में गरत जानि के माता सनमानि के सीक्षा देति है कि समुझेते क्रोध किए मे दोष है और सहे में भलाई है ॥ २ ॥ यद्यपि रावन किहां ते बिमुख भए में औ श्री राम जू के सरन गए मे भलो है पर तद्यपि किंचित लोक राषे मे निपट सुंदराई है भाव लोग कहै गे कि संकट समै मे भाई को छोड़ दियो ॥ ३ ॥ २६ ॥

मू० । भाईकैसोकरौंडरौंकठिनकुफेरैं सुक्षतसंकटपखोजातुहैग- लानिगस्थोक्षपानिधिकोमिलोपैमिलिकैकुवेरैं। जायगहेपाय धायधनदउठायभेव्योसमाचारपायपोचसोचतसुमेरैं तहईमि लेमहेशदियोहितउपदेशरामकीसरणजाहिसुदिननहेरैं ॥ जाकोनामकुम्भजकलेशसिंधुसोषिवेकोमेरोकह्योमानितात बांधैजनिवेरैं। तुलसीमुदितचलेपायेहैंसगुणभलेरङ्कलूटिवे कोमानोमणिगणढेरैं ॥ २ ॥ ४६ ॥

टी० । भाईइ० । बिभीषन अपने मन में विचार करत हैं कि हे भाई हम कैसा करैं कठिन कुफेरैं हैं धर्म संकट मे परत भए भाव राम विरोधी किहां न रहना चाहिए औ त्यागिबे मे लोकोपहांस कि आपद काल मे छोड़ि भागे एहि ग्लानि मे गरे जात हैं फेर यह निश्चै कियो कि कुबेर से मिलि करि के फेर श्री रघुनाथ सों मिलो ॥ १ ॥ फेर कुवेर के ढिग जाय दौड़ि के चरण गहत भए कुवेर उठाय के भेंटत भए खोटो समाचार पाय कै सुमेर सम अ- र्थात् अति सोच करत हैं वा सुमेर पर सोच करत हैं तहंई श्री शिवजी मिले हित उपदेश दिए कि तूं श्रीराम के सरन जाउ सु- दिन मति ढूंढ़ो ॥ २ ॥ जाको नाम क्लेस रूप समुद्र को सोषिवे को अगस्त सम है हे तात मेरो कह्यो मानि कै वेरा लकड़ी को त है ताको मति बांधो भाव उपायांतर क्लेश समुद्र तरिवे मे मति करो वा बांधै जनि वेरै जाचा मति विचारो वा देर मति लगाओ ॥ २७ ॥

मू० । रागकेदारा । शङ्करशिषआसिषपाइकै चलेमनहिमनकह तविभीषणशीसमहेशहिनाइकै। गयेसोचभयेसगुणसुमङ्गल दशदिशिदेतदेखाइकै सजलनयनसानन्दहृदयतनप्रेमपुलक अधिकाइकै ॥ अन्तहुभायभलोभाईकोकियोअनभलोमना इकै । भइकुवेरकीलातविधातारावीवातवनाइकै॥ नाहित

क्योंकुबेरघरमिलिहैंरहितकहतेचितलाइकै। जोसुनिसरण रामताकेमैंनिजवामताबिहाइकै॥ अनायासअनुकूलसूलधर मगमुदमूलजनाइकै। कृपासिन्धुसनमानिजानिजनदीनलि-योअपनाइकै॥ स्वारथपरमारथकरतलगतश्रमपथगयोसि-राइकै। सपनेकैसौतुखसुखशशिमुरसींचतदेतनिराइकै॥ गुरगौरीशसांईसीतापतिहितहनुमानहिजाइकै॥ मिलि होमोहिकहाकीबेअबअभिमतअवधअघाइकै। मरतोकहां जाइकोजानैलठिलालचीललाइकै॥ तुलसिदासभजिहौंरघु बीरहिंअभयनिसानबजाइकै॥ २॥ ४७॥

टी०। शंकरइ०॥ १॥ २॥ निदान मे भाई को भाई भलो हो त है यद्यपि हमारो अनभलो मनाइ कै कियो पर कूवर की लात सम भई बिधाता ने भली भांति वात राखी॥ ३॥ ४॥ कृपासिंधु सूल पानिवे परिश्रम अनुकूल भए मुद को मूल रूप जो मार्ग ता-को जनाय कै सनमानि कै दीन जन जानि कै अपनाय लियो॥ ५॥ स्वारथ औ परमारथ दोऊ हस्तगत भयो औ श्रमपथ वीति गयो यह सपना है कै धों सौतुष है कि सुखरूप धान को देवता सींचत औ निराय देत हैं निराइव सोहिवे को कहत हैं॥ ६॥ गुरू गौ रीस मिले अब सांई सीतापति औ हित हनुमान ते जाय के मिलि हौं अब हम को कहा करिवे को है वांछित की सीमा अघाय कै मिली॥ ७॥ मै जो लालची सो लटि के ललचाइ के को जानै क-हां जाय मरतो अब अभै रूप नगारा वजाय कै श्री रघुवीर को भ-जि हौं॥ ८॥ २८॥

मू०। पदपदुमगरीबनिवाजके देखिहौंजाइपाइलोचनफलहितसु रसाधुसमाजके। गईवहोरओरनिबाँहकसाजकविगरेसाज के। सवरीसुखदगृध्रगतिदायकसमनशोककपिराजके॥ नाहिं नमोहिओरकतहुंकछुजैसेकागजहाजके। आयोसरणसु-

खद्दपदपङ्कजचोथेराखवाजके ॥ आरतिहरणसरणसमरथ सबदिनअपनेकीलाजके । तुलसीयाहिकहतनतपालकमोसे निपटनिकाजके ॥ २ ॥ ४८ ॥

टी० । पदइ० ॥ १ ॥ जो बात गई है ताकों वहोर निहारे हैं औ अंत लों निर्वाह करनि हारे हैं औ बिगरे भए साज के साजनि हारे हैं ॥ २ ॥ आरति के हरनि हारें हैं औ सब दिन मे अपने भक्त की लाज के समर्थ सरण कहैं रक्षक है । सरणंगृहरक्षित्रोरित्यमरः । नत पालक शरणागत रक्षक ॥ ३ ॥ २९ ॥

मू० । महाराजरामपहिंजाउंगो सुखस्वारथपरिहरिकरिहौंसोइ जोसाहिबहिसोहाउंगो। सरणागतसुनिवेगिबोलिहैंहौंनिपटहिंसकुचाउंगो। रामगरीबनिवाजनिवाजिहौंजानिहैंठाकुरठाउंगो ॥ धरिहैंनाथहाथमाथेएहितेकेहिलाभअघाउंगो सपनोसोअपनोनकछूलखिलघुलालचनलोभाउंगो ॥ कहिहोंबलिरोटिहारावरोबिनमोलहींबिकाउंगो। तुलसीपटऊतरेओढ़िहौंउबरीजूठहिखाउंगो ॥ २ ॥ ४९ ॥

टी० । महाइ० ॥ १ ॥ जानि हैं ठाकुर ठांउगो ठांव कहैं स्थान गयो भयो ठाकुर मोको जानि हैं अर्थात् स्थान भ्रष्ट ॥ २ ॥ लघु लालच लौकिक सुषादि ॥ ३ ॥ ४ ॥ ३० ॥

मू० । आइसचिवविभीषणकेकही कृपासिन्धुदशकंधबन्धुलघुचरणशरणआयोसही । विषमविषादवारिनिधिबूड़तथाहकपीशकथालही।गयेदुषदोषदेखिपदपङ्कजअवनसाधएकौरही॥ सिथिलसनेहसराहतनखशिषनीकिनिकाईनिरखही । तुलसीमुदितदूतभएमनमहअमियलाहुमागतमही ॥ २ ॥ ५० ॥

टी० । आयइ० । बिभीषन के सचिव ने श्री रामचंद्र से आइ के कही ॥ १ ॥ तीक्ष्ण विषाद रूप समुद्र मे बूड़त रहे तहां सुग्रीव की कथा समुझि थाह पाई आव बालि के त्रास से सुग्रीव के उबारे

तो हमहूं को उबारैंगे ॥ २ ॥ नष ते सिष लों जो नीकी निकाई निवही है ताको सराहत हैं औ सनेह ते सिथिल हैं दूत हर्षित होत भयो मानो छांह को मागत रहे औ अमृत पाए इहां छांह सनेसा है औ अमृत सुंदराई को देषिवो है ॥ ३ ॥ ३१ ॥

मू० । विनतीसुनिप्रभुमुदितभए कृपराजकपिराजनीलनलबोलि बालिनन्दनलये । बूझियकहारजाइपाइनयधर्म्मसहितउत्तर दये । बलीबंधुताकोविमोहबसबयरबीजवरबसवये ॥ बांहपगा रद्वारतेरेतेंसभयनकबहूफिरिगये । तुलसीअसरणसरणस्वा- मिकेविरदविराजतनितनये ॥ २ ॥ ५१ ॥

टी० । विनती ॥ १ ॥ श्री रामजू कहे तुम सब के बूझिवे मे कहा है अस आज्ञा पाइ के नीति धर्म्म सहित उत्तर देत भए ते- हि रावन बली को बंधु है जेहि ने विशेष मोह के वस बैर को बीज बोए एह नीति कहे अब धर्म्म कहत हैं ॥ २ ॥ हे बांह पगार तेरे द्वार ते भै सहित जे पुरुष ते कबहूं फिरि न गए स्वामी के अ- सरन सरन जे विरद हैं ते नित्य नए विराजत हैं पगार नाम यद्यपि भित्तिका है पर इहां प्रबल के अर्थ में जानना ॥ ३ ॥ ३२ ॥

मू० । हियविहसिकहतहनुमानसों सुमतिसाधुसुचिसुहृदविभीष णबूझिपरतअनुमानसों । हौवलिजाउंऔरकोजानैकहिक- पिकृपानिधानसों । छलीनहोइस्वामिसन्मुखज्योंतिमिरसात हैजानसों ॥ षोटोखरोसभीतपालियैसोसनेहसनमानसों । तुलसीप्रभुकीवोजोभलोसोईबूझिसरासनवानसों ॥ २ ॥ ॥ ५२ ॥

टी० । हियइ० ॥ १ ॥ कृपानिधान सो हनुमान जू यह बात कही कि मै बलि जांउं आप छोड़ि और अस को जानै छली पुरु ष स्वामी के सन्मुष नही होत है सात हय जान जो सूर्य तिन्ह सो जैसे अंधकार सन्मुष नही होत है ॥ २ ॥ खोटो है वा खरो

है पर सो विभीषण सभीत है तातें सनेह युक्त सन्मान सो पालिये शरासन औ बान सो बूझि कहैं जानि कै जो आप करब सो भलो है भाव शरासन टेढा औ बान सूधा आप दोउ को राखे हैं वा शरासन बान सो बूझि कै आप जो करब सो भला है भाव दूसरे से बूझिवे को क्या प्रयोजन है आप के पराक्रम को को भेद ले सकै गो ॥ ३ ॥ ३३ ॥

मू० । सांचेऊविभीषनआइहैं बूझतबिहंसिकृपालुलषनसुनिकहत
सकुचिशिरनाइहैं । ऐहैकहानाथआयोहैह्यांक्योंकहिजा
तिबनाइहै रावणरिपुहिराखिरघुबरबिनुकोत्रिभुअनपतिपा-
इहै ॥ प्रभुप्रसन्नसबसभासराहतदूतबचनमनभाइहैं। तुल
सीबोलियबेगिलछ्मणसोंभइमहाराजरजाइहै ॥ २ ॥ ५३ ॥

टी० । साचेऊइ० । लषन लाल सो श्री राम कृपालु बिहसि कै बूझत हैं कि साचेऊ विभीषन आवै गो यह सुनि शिर नवाइ सकुचि के लषनलाल कहत हैं ॥ १ ॥ हे नाथ आवै गो कहा अर्थात् भविष्य आप काहे को कहत हैं विभीषण आइ गयो है औ आप के इहां बनाइ के क्यों कहि जाइ सकत है आप के विना रावण के रिपु को राखि कै ऐसो को त्रिभुवन मे है जो प्रतिष्ठा पावै गो ॥ २ ॥ प्रभु प्रसन्न हैं सब सभा सराहति है औ यह बचन विभीषन के दूत के मन मे भावत भयो लषनलाल सों श्री महाराज रामचंद्र की अज्ञा भई कि विभीषण को शीघ्र बलाइ लीजिये ॥ ३ ॥ ॥ ३४ ॥

मू० । चलेलेनलषनहनुमानहैं मिलेमुदितबूझिकुशलपरस्परस-
कुचतकरिसनमानहैं । भयोरजायसुपांउंधारियेबोलतकृपा
निधानहैं। दूरितेंदीनबन्धुदेखेजनदेतअभयबरदानहैं ॥ शी
लसहसहिमभानुतेजशतकोटिभानऊकेभानुहैं । भक्तनिको
हितकोटिमातुपितुअरिन्हकोकोटिकृशानुहैं ॥ जनगुणरज

गिरिगणिसकुचतनिजगुणगिरिरजपरवानहैं। वाङ्कपगारबोलकोअविचलुवेदकरतगुणगानहैं॥ चरचाचलतिविभीषणकीसोइसुनतसुचितुदैकानहैं। चारुचापतूणीरतामरसकरनिसुधारतवाणहैं॥ हरषतसुरवरषतप्रसूनशुभसगुणकहतकल्याणहैं। तुलसीतेकृतकृत्यजेसुमिरतसमयसुहावनध्यानहैं ॥ २ ॥ ५४ ॥

टी०। चलेइ०। लवाइवे के हेतु लषन लाल औ हनुमान जू चले हैं जब विभीषण के ढिग गए तब हर्षित परस्पर मिले औ कुशल बूझि के सन्मान करि के सकुचत हैं सकुचने को यह भाव जस सन्मान किया चाही तस नाही बनत है वा करि के अर्थ से जानना अर्थात् सन्मान से विभीषन जू सकुचत हैं ॥ १ ॥ २ ॥ प्रभु सहस्त्र चंद सम शीलवान् हैं शतकोटि भानुहू के भानु सम तेजस्वी हैं कृशानु कहैं अग्नि ॥ ३ ॥ जन को गुण जो रज सम है ताको गिरि सम गनि के सकुचत हैं औ आपन गुण जो गिरि सम है ताको रज सम मानत हैं ॥ ४ ॥ सुंदर चाप औ तरकस है कर कमलनि ते वान सुधारत हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥ ३५ ॥

मू०। रामहिंकरतप्रणामनिहारिकैउठेउमगिआनंदप्रेमपरिपूरणविरदविचारिकै। भयोविदेहविभीषणउतइतप्रभुअपनपौविसारिकै। भलीभांतिभावतेभरतज्योंभेट्योभुजापसारिकै॥ सादरसबहिंमिलाइसमाजहिंनिपटनिकटबैठारिकै। बूझतकुशलक्षेमसप्रेमअपनाइभरोसोभारिकै॥ नाथकुशलकल्याणसुमङ्गलविधिसुखसकलसुधारिकै। देतलेतजेनामरावरोविनयकरतसुखचारिकै॥ जोमूरतिसपनेनविलोकतमुनिमहेशमनमारिकै। तुलसीतेहिंहौंलियोअङ्कभरिकहतकछुनसंवारिकै॥ २॥ ५५॥

टी०। रामहिइ०। विरुद विचारि के अशरण के शरण हम हैं

यह बात विचारि कै ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ हे नाथ जे रावरो नाम लेत हैं तिन्है ब्रह्मा कुशल कल्याण सुमंगल सकल सुख सुधारि कै देत हैं औ चारि मुख से विनय करत हैं ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३६ ॥

मू० । करुणाकरकीकरुणाभई मिटीमीचुलहिलङ्कशङ्कगईकाहूसोंनखुनिसखई । दशमुखतज्योदूधमाखीज्योंआपुकाढ़िसाढ़ीलई । भवभूषणसोइकियोविभीषणमुदमङ्गलमहिमामई ॥ विधिहरिहरमुनिसिद्धसराहतमुदितदेवदुन्दुभिदई । बारहिंबारशुमनवरषतहियहरषतकहिजयजयजई ॥ कौशिकशिलाजनकसङ्कटहरिभृगुपतिकीटारीटई । खगम्टगसबरनिशाचरसबकीपूंजीबिनुबाढ़ीसई ॥ युगयुगकोटिकोटिकरतबकरणीनकछुबरणीनई । रामभजनमहिमाहुलसीहियतुलसीहूकीबनिगई ॥ २ ॥ ५६ ॥

टी० । करुणाइ० । करुणा कर जो श्री राघव तिन्ह की करुणा होति भई बिभीषण की म्टत्यु मिटी लंका मिली औ सब शंका गई औ काहू सो खुनुस औ दूषो न भई भाव बिना परिश्रम ई सब बात भई ॥ १ ॥ दशमुख ने विभीषण को दूध के माषी सम तज्यौ औ आप साढ़ी सम लंका के सुष को लई सोइ विभीषण को श्री राम ने भव जो संसार ताको भूषण औ मुद मंगल महिमा मई कियो ॥ २ ॥ ३ ॥ विश्वामित्र अहल्या औ जनक को संकट हरि के परशुराम की टई कहें गर्व टारे औ खग म्टग भिल्ल औ निशाचर इन्ह सब की बिन पूंजी को बढ़ती बाढ़ी ॥ ४ ॥ युगयुग में कोटि कोटि श्री राम के करतब हैं कछु नई करनी नहीं बरनी गई ॥ ५ ॥ ३७ ॥

मू० । मञ्जुलमरतिमंगलमई भयोविशोकविलोकविभीषणनेहदेहसुधिसीवंगई । उठिदाहिनीओरतेंसन्मुषसुषदमागिबैठकलई नषशिषनिरषिनिरषिसुखपावतभावतकछुकछुऔभई ॥ वा

रकोटिशिरकाटिसाटिलटिरावणशङ्करपैलई । सोइलंकाल खिअतिथअनवसररामटणासनज्योंदई ॥ प्रीतिप्रतीतिरीति सोभासरिथाहतजहंजहंतहंघई । बाङ्कवलीबानैतबोलकोबी रदविश्वविजईजई॥कोदयालुदुसरोदुनीजेहिजरणिदीनहि- यकीहई । तुलसीकाकोनामजपतजगजगतीजामतिविनुबई ॥ २ ॥ ५७ ॥

टी० । मंजुल इ० । नेह कहैं संसारिक प्रेम और देह की सुधि की मर्यादा गई वा श्रीराम के नेह ते देह की सुधि की मर्यादा गई ॥ १ ॥ दाहिने ओर बैठे रहे तहां ते उठिके सुखद सन्मुख बैठवे की श्रीराम सों आज्ञा मागि लई अर्थात् जामें रूप भली भांति देखि परै भावत कछु कछु भै भई महा दुख की भावना करत रहे सो सुख की भावना करन लगे ॥ २ ॥ अनंत वार सिर काटिकै उंख समान लटिके जो रावन ने श्रीशंकर पै लंका लई सोई लंका को बिभीषन को अतिथ मानिकै अनवसर समुझि कै अर्थात् बन बास समुझि कै टन के आसन समान दई भाव यह विचारे कि हम कुछ न दिये ॥ ३ ॥ प्रीति प्रतीति रीति औ सोभा रूप नदी को जहां जहां थाह लेत हैं तहां तहां अथाहै पावत है बांङ्क के बली बोल के बाना वाले अर्थात् जोकहत सोई करत और विश्व के बिजै करनेवाले बीर औ नीतिवान और दयाल कौन दूसरो दुनियां मे है जेहि ने दीन के हिय की जरनि नासी है औं काको नाम जपत संसार मे पृथ्वी बिना बोए जमति है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३८ ॥

मू० । सबभांतिबिभीषनकीबनी कियोकृपालुअभयकालहुतेंगईसं सृतिसासतिघनी । सखालछनहनुमानशंभुगुरुधनीरामको भलधनी हियहिऔरऔरकीन्हीबिधिरामकृपाऔरैठनी । कलुषकलङ्कलेशकोशभयोजोपदपाइरावणरणी सोइपद पाइबिभीषनभोभवभूषनदलिदूषनअनी । वाहुपगारउदार

शिरोमणिनतपाकपावनपनो शुभनबरषिरघुबरगुणबरणत हरषिदेवदुन्दभिहनी । रङ्कनिवाजरङ्कराजाकियेगयेगर्ब्बग रिगरिगनी रामप्रनाममहामहिमाकरसकलसुमंङ्गलमनि जनीहोयभलोऐसेहिअजहूंगयेरामसरनपरिहरिमणी भु जाउठायसाषिसंङ्करकरिकसमखाइतुलसीभनी ॥ २ ॥ ५८ ॥

टी० । सब भांति ई० । संसृति संसार ॥१॥ श्रीलखनलाल औ हनुमान जू सखा भये औ श्री शिवजू गुरु भये और कोशल धनी जो श्रीराम सो धनी कहैं स्वामी भए बिभीषन के हृदय में और रहा भाव रावन को उपदेश करि हित करैं और बिधाता ने और किया अर्थात रावन न मान्यो और श्रीराम के कृपा ते औरै ठनत भई अर्थात् बिभीषन ने लंक पाई ॥ २ ॥ जो राज पद पाय के रनी रावन पाय औ कलङ्क औ कलि को खजाना भयो सोई राज पद पायकै दूखन गन को दलि के संसार को भूषन बिभीषन भयो ॥३॥ पावनपनो पवित्र जाको प्रतिज्ञा है ॥ ४ ॥ ५ ॥ रंक निवाजा कहैं ग- रीबनेवाज जो श्रीराम सो रंक जो बिभीषनता को राजा किए औ गनी कहैं धनी अपने गर्व ते गलि गलि गये अर्थात् बिभीषन को एश्वर्य देखि कै श्री राम के प्रनाम की महा महिमा की खानि ने सकल सुमंल रूपमणि को उत्पन्न किये ॥ ६ ॥ मनी कहैं अभिमा न ताको छोड़िके अजहूं श्रीराम सरण गए ऐसेही भलो होए अर्थात् जस बिभीषन को भयो भुजा उठाय कै अर्थात् ईश्वर के ओ र हाथ करि के और शिवजी के शाखी करि के सपथ खाय के तुल सी ने कहो ॥ ७ ॥ सो० । एतनेऊपरनहिहोय सन्मुषसीतानाथजो हरिहरपसुहयसोय तरसतभूसाघासको ॥ ३९ ॥

मू० । कहौंक्योनबिभीषनकीबनै गयोछाड़िछलसरणरामकीजोफ लचारिचारयोजनै । मङ्गलमूलप्रणामजासुजगमूलअमङ्गल केखनै तेहिरघुनाथहाथमाथेदियोकोताकीमहिमाभनै ॥ ना

मप्रतापपतितपावनकियजेनअघानेअघअनै। कोउउलटोकी
जपधोजपिभयेराजहंसवायसतनै ॥ ज्ञतोललातक्रशगातखा
तखरिमोदपाइकोदोकनै । सोतुलसीचातकभयोयाचतराम
श्यामसुन्दरघनै ॥ २ ॥ ५८ ॥

टी० । कह्योइ० । जो फल चारि चाह्यो जनै जो सरनागत चारो बेद में फल रूप है औ अर्थ धर्म्म काम मोक्ष चारो की उतपत्ति करनि हारी है ॥ १ ॥ जाको प्रणाम मंगल को मूल है औ अमंगल के मूल को षोदत है ते रघुनाथ ने हाथ माथे पर दियो तव ताकी महिमा को को कहै ॥ २ ॥ अघ औ अनीति ते जेन अघाने ते पतितन को नाम ने अपने प्रताप ते पावन किये उलटो बाल्मीक जी जपि कै सूधो प्रल्हाद आदि जपि कै काक से हंस भए ॥ ३ ॥ दुर्बल शरीर ललचात जो षरी षात रह्यो औ कोदो के कनौ पाय कै आनन्द पावत रह्यो सो राम श्यामसुंदर घन को जाचत मात्र चातक भयो इहां षरी लौकिक सुख को जानौ औ कोदो के कणवत् स्वर्गादि सुख जानो औ चातक होव श्री राम में अनन्य होव है ॥ ४ ॥ ४० ॥

मू० । अतिभागविभीषणकेभले एकप्रणामप्रशन्नरामभयेदुरितदो
षदारिददले । रावणकुम्भकर्णवरमागतशिवविरञ्चिवाचाछ-
ले रामदरसपायोअविचलपदसुदिनसगुणनीकेचले ॥ मिल
निविलोकिस्वामिसेवककीउकटेतरूफूलेफले । तुलसीसुनिस
नमानवन्धुकोदशकन्धरहियजले ॥ २ ॥ ६० ॥

टी० । अतिइ० । दुरित दोष पाप जनित दोष वा पाप औ औगुन ॥ १ ॥ रावन औ कुंभकरन को वर मांगत मे शिव विरंचि ने सरस्वती करि के छले अर्थात् आन कै आन कहवाय दिए औ वे वर मागे औ राम के दरसन ते विभीषन अविचल पद पाए औ सुंदर दिन औ सुंदर सगुन भली भांति ते विभीषन के संग चले भाव वि-

भीषन दिन सगुनादिन विचारे रहे आप से आप संग लगे ॥ २ ॥ उकठे तरु फूले फले को यह भाव कि जेजड़ श्रीराम सनेह रहित रहे ते सनेह सहित भए हंसि हिय जले ऊपर से तो हंसे पर भीतर से जले ॥ ३ ॥ ४१ ॥

मू० । गएरामसरणसबकोभलो गनीगरीबबड़ोछोटोबुधमूढ़हीन बलअतिबलो । पंगुअन्धनिर्गुणीनिसम्बलजोनलहैजांचेजलो सोनिबह्योनीकेजोजनमिजगरामराजमारगचलो ॥ नामप्रतापदिवाकरकरतेंगरततुहिनज्योंकलिमलो । सुतहितनाम लेतभवनिधितरिगयोअजामिलसोखलो ॥ प्रभुपदप्रेमप्रणाम कामतरुसद्यबिभीषणकोफलो । तुलसिसुमिरतनामसबनि कोमङ्गलमयनभजलथलो ॥ २ ॥ ६१ ॥

टी० । गएहू० । बुध पंडित ॥ १ ॥ निसम्बल बिना खरच को राम राज मारग चलो श्री राम के राजमार्ग कहैं भक्ति पथ मे जो चलो ॥२॥ नाम प्रताप रूप सूर्य के तीक्ष्ण किरण ते कलिमलो बरफ सम गलत है ॥ ३ ॥ प्रभु के पद मे प्रेम औ प्रणाम रूप काम तरुसे तत्क्षणे बिभीषन को भलो भयो नाम सुमिरत मात्र सब जीवन को आकाश जल थल मंगल मय होत है ॥ ४ ॥ ४२ ॥

मू० । सुयशसुनिश्रवणहोनाथआयोसरन उपलकेवटगृद्धसेवरीसंसृतिसमनशोकश्रमसोंवसुग्रीवआरतिहरन । रामराजीवलोचनविमोचनविपतिश्यामनवतामरसदामवारिदवरन लशतजटजूटशिरचारुमुनिचीरकटिधीररघुबीरतूणीरसरधनुधरन ॥ जातुधानेशभ्राताबिभीषननामबन्धुअपमानगुरुग्लानिचाहतगरन । पतितपावनप्रणतपालकरुणासिंधुराखिएमोहिंसौमित्रसेवितचरन ॥ दीनताप्रीतिसंकलितम्दुवचनसुनिपुलकितनप्रेमजलनयनलागेभरन । बोलिलङ्केशकहिअङ्कभरिभेटिप्रभुतिलकदियोदीनदुखदोषदारिददरन ॥ रातिचरजातिआ

रातिसबभांतिगतकियोकल्याणभाजनसुमङ्गलकरन। दासतु
लसीसदैहृदयरघुवंशमणिपाहिकहेकाहिकीन्होनतारणतर
न॥ २॥ ६२॥

टी०। सुयसइ० ॥ १॥ स्याम नव तामरस दाम नवीन नील क-
मल की माला सम जूट समूह ॥ २॥ जातु धानेस रावण गुरु
ग्लानि भारी ग्लानि से ॥ ३॥ संकलित संमिलित ॥ ४॥ राति चर
निसाचर आराति शत्रु इहां रावण को बंधु है ताते आराति कहे
सदय दया सहित ॥ ५॥ ४३॥

मू०। दीनहितबिरदपुराणनिगायो आरतबंधुकृपालुम्दुलचितजा
निसरणह्वोआयों। तुम्हरेरिपुकोअनुजबिभीषनवंशनिशाच
रजायो सुनिगुणशीलसुभावनाथकोमैचरनन्हिचितलायो॥
जानतप्रभुदुखसुखदासनिकोतातेकहिनसुनायो। करिकरु-
णाभरिनयनबिलोकहुतबजानौअपनायो॥ बचनबिनीतसुन
तरघुनायकहंसिकरिनिकटबोलायो। भेट्योहरिभरिअङ्कभ
रतज्योंलङ्कापतिमनभायो॥ करपङ्कजशिरपरसिअभयकियो
जनपरहेतुदेखायो। तुलसिदासरघुबीरभजनकरिकोनअभ
यपदपायो॥ २॥ ६३॥

टी०। दीनइ०। हेतु प्रीति अपर पद सु०॥ ४४॥

मू०। रागधनाश्री। सत्यकहौंमेरोसहजसुभाउ सुनहुसखाकपि
पतिलङ्कापतितुमसोकौनदुराउ। सबबिधिहीनदीनअतिज-
ड़मतिजाकोकतहुनठाउ आयेसरणभजोनतज्योतेहियहु-
जानतऋषिराउ॥ जिनकोहौंहितसबप्रकारचितनाहिनऔ
रउपाउ। यतिनहिंलागिधरिदेहकरोसबडरोंनसुयशनसाउ॥
पुनिपुनिभुजाउठाइकहतहौंसकलसभापतिआउ। नाहिन
कोउप्रियमोहिदाससमकपटप्रीतिबहिजाउ॥ सुनिरघुपति
केबचनबिभीषणप्रेममगनमनचाउ। तुलसिदासतजिआस

चासमवञ्जैसेप्रभुकङ्गाउं ॥ २ ॥ ६४ ॥

टी० । सत्यइ० । सहज वनावट रहित ॥ १ ॥ भजो कहैं अंगी-कार करत हौं गिधिराउ नारदजू ॥ २ ॥ डरोन सुजस नसाइ कहि वे को यह भाव कि भुञ्चनञ्चनेकरोमप्रतिजासू यहमहिमाकछुवकुत नतासू । इत्यादि ॥ ३ ॥ कपट प्रीति वहि जाउ कपट करि जो प्रीति होति है सो वहिजाऊ होति है भाव हमारी प्रीति निष्कपट है अतएव अचल है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४५ ॥

मू० । नाहिनभजिवेयोगबियो श्रीरघुवीरसमानञ्चानकोपूरणकृपा
हियो । कहहुकौनसुरशिलातारिपुनिकेवटमीतकियो । कौ
नेगीधअधमकोपितुज्यौंनिजकरपिंडदियो ॥ कौनदेवसवरी
केफलकरिभोजनशलिलपियो । वालित्रासवारिधिवूड़तकपि
केहिगहिवांहलियो ॥ भजनप्रभाउविभीषनभाख्योसुनिक-
पिकटकजियो । तुलसीदासकोप्रभुकोशलपतिसबप्रकारबरि
यो ॥ २ ॥ ६५ ॥

टी० । नाहिन इ० बियो कहैं दूसरो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ बरियो कहैं बलवान ॥ ४ ॥ ४६ ॥

मू० । रागजयतिश्री । कवदेखौंगीनयनवहमधुरमूरति । राजि
वदलनयनकोमलकृपाअयनमयननिवक्कछविअङ्गनिदूरति ॥
शिरसिजटाकलापपाणिसायकचापउरसिरुचिरवनमाललूर
ति । तुलसिदासरघुवीरकीसोभासुमिरिभई हैमगवनहितनु
कोसूरति ॥ २ ॥ ६६ ॥

टी० । श्री जानकी जू की उक्ति कमल के पत्र के समान नेत्र है जेहि मूरति की औ कोमल है औ कृपा को गृह हैं औ काम समूह के छवि को अंगनि ते दूर करति है ॥ १ ॥ लूरति लटकति ॥ २ ॥ ४७ ॥

मू० । रागकेदारा । कङ्कवहुंदेखिहौंआलीहोआरजसुअन सा

नुजसुभगतनजबतेबिछुरेबनतबतेंदवसीलागोतीनऊंभुअन ।
मूरतिसूरतिकियेप्रगटप्रीतमहियेंमनकेकरनचाहैचरणछुअ
न चितचढ़िगोवियोगदशानकहिबेयोगपुलकगातलागेंलोच
नचुअन ॥ तुलसित्रिजटाजानीसीयअतिअकुलानीम्दुबानी
कह्योऐहैंदवनदुअन। तमीचरतमहारीसुरकञ्जसुखकारी
रविकुलरबिअबचाहतउअन ॥ २ ॥ ६७ ॥

टी० । कछुइ० । आरज कहैं श्रेष्ट दवसी आगसी ॥ १ ॥ मन के करन मन के हाथन से ॥ २ ॥ दवन दुअन शत्रु नाशक निसाचर रूप तम के नासनि हारे औ देव रूप कमल के सुख देनि हारे सूर्य कुल के सूर्य अब उगा चाहत हैं ॥ ३ ॥ ४८ ॥

मू० । अबलोंमैंतोसोनकहेरी सुनुत्रिजटाप्रियप्राणनाथबिनुबासर-
निशिदुखदुसहसहेरी । बिरहबिषमबिषबेलिबढ़ीउरतेसुख
सकलसुभायदहेरी सोइसीचिबेलागिमनसिजकेरहटनयन-
नितरहतनहेरी॥सरशरीरसुखेप्राणबारिचरजीवनआसतजि
चलनचहेरी। तैंप्रभुसुयशसुधासीतलकरिराखेतदपिनटप्रल
हेरी ॥ रिपुरिसिघोरनदीविवेकबलधीरसहितऊतेजातबहे-
री । दैमुद्रिकाटेकतेहिअवसरसुचिसमीरसुतपैरिगहेरी ॥
तुलसिदाससबसोचपोचम्टगमनकाननभरिपूरिरहेरी । अब
सखिसियसन्देहपरिहरुहियआइगयेदोबीरअहेरी ॥ २ ॥
॥ ६८ ॥

टी० । अबलोंइ० ॥ १ ॥ उर ते तीच्छन बिरह रूप बिष की बेली बढ़ी तेहि बेली ने स्वाभाविक सकल सुख को जराय दई औ तेहि बेली सीचबे के अर्थ काम के रहट रूप हमारे नेत्र नित नधे रहत हैं ॥ २ ॥ शरीर रूप तडाग सूषे प्रान रूप मछरी आदि जीवन की आसा छोड़ि के चलना चाहे पर तैं ने प्रभु सुजस रूप अम्टत ते सीतल करि के राखे तथापि टप्ति न लहे ॥ ३ ॥ शत्रु का

जो घोर रिस है सो नदी है विवेक बल धीरता सहित तामें बहे जात रहे पर तेहि अवसर मे मुद्रिका रूप लकड़ी से थम्हाइ के हे सखी पैरि कै पवन पूत गहत भए ॥ ४ ॥ सब सोच पोच रूप म्रगा मन रूप कानन मे भरि पूरि रहे हैं एतना सुनि त्रिजटा बोली कि हे सखी श्रीजानकीजू अब संदेह को हिय ते छोड़ो दोउ सिकारी कुंअर आइ गए भाव सोंच पोच रूप म्रग अब न बचैंगे ॥ ५ ॥ ४६ ॥

मू० । रागबिलावल । सोदिनसोनेकोकहुकबऐहै जादिनबंध्यो सिंधुत्रिजटासोतंसंभ्रममोहिआनिसुनैहै । बिस्वदबनसुर साधुसतावनरावणकियोआपनोपैहै कनकपुरीभयोभपबिभी षनबिबुधसमाजबिलोकनधैहै ॥ दिव्यदुन्दुभीप्रसंसिहैंमुनि गणनभतलबिमलबिमाननिछैहै । बरषिहैंकुसुमभानुकुल मणिपरतबमोहिपवनपूतलैजैहै ॥ अनुजसहितसोभिहैंक- पिनमहुतनुछबिकोटिमनोजहितैहै । इननयननयेहिभांति- प्राणपतिनिरषिहृदयआनंदसमैहै ॥ बहुरोसदलसनाथस लछिमनकुशलकुशलबिधिअवधदेखैहै । गुरुपुरलोगसासु द्दौदेवरमिलतदुसहउरतपतबतैहै ॥ मङ्गलकलशबधावन- घरघरपैहैंमागनेजोजेहिभैहै । बिजयरामराजाधिराजको तुलसिदासपावनजसगैहै ॥ २ ॥ ६९ ॥

टी० । सोदिनइ० । सोने को कहिवे को यह भाव कि जैसे धातुन मे सोना उत्कृष्ट होत है तैसे दिनन में सो दिन उत्कृष्ट कब आवैगो ॥ १ ॥ २ ॥ नभ तल आकाश औ पृथ्वी में ॥ ३ ॥ कोटि मनोज हितैहैं कोटि काम को संतप्त करि हैं ॥ ४ ॥ फेर दल सहित लक्ष्मण सहित नाथ को कुशल औ अवध को कुशल विधाता देषैहैं ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५० ॥

मू० । सियधीरजधरियेराघवअबऐहैं पवनपूतपहंपाइतोरिसुधिस हजलछपालुबिलम्बनलैहैं । सेनसाजिकपिभालुकालसमकौतु

कहिंपाथोधिबंधैहैं। घेरोईदेखिबोलङ्कगढ़विकलजातुधानी पछितैहैं॥ निस्चरशलभक्कशानुरामसरउड़िउड़िपरतजरतज ड़जैहैं। रावणकरपरिवारअगमनोयमपुरजातबऊतसकुचैहैं तिलकसारिअपनाइबिभीषणअभयबांहदैअमरबसैहैं। ज- यधुनिमुनिबरषिहैंसुमनसुरव्योमबिमाननिसानवजैहैं॥ ब न्धुसमेतप्राणवल्लभपदपरसिसकलपरितापनसैहैं। रामवाम दिशिदेखितुमहिंसवनयनवन्तलोचनफलपैहैं॥ तुमअतिहि तचितइहोनायतनुवारवारप्रभुतुमहिंचितैहैं। यहशोभासु खसमयबिलोकतकाहूतोपलकैनहिलैहैं॥ कपिकुललषनसु यशजयजानकिसहितकुशलनिजनगरसिधैहैं। प्रेमपुलकि आनन्दमुदितमनतुलसिदासकलकीरतिगैहैं॥ २०० ॥

इतिश्रीरामगीतावल्यांसुंदरकाण्डसमाप्तः ॥ ५ ॥

टी० । सियइ० ॥ १ ॥ पाथोधि समुद्र । घेरो ई देखिवो लंकगढ लंकगढ़ फौज ते घेरो घेरो देषि पड़े गो ॥ २ ॥ रावण करि परि- वार अगमनो रावन अपने परिवार को आगे करि के ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ न हितैहै नही हित करै गो अर्थात् पलक न लगावैगो ॥ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५१ ॥

दो० । दीनउधारनसुजसतौ गावतबेदपुरान । हरिहरवेरकहाभ यो बिसरायोंनिजसान ॥ १ ॥

इतिश्रीतुलसीदासकृतरामगीतावलीप्रकाशिकटीकायांश्रीसीताराम कृपापात्रश्रीसीतारामीयहरिहरप्रसादकृतौसुंदरकांडःसमाप्तः ॥

दो० । जनरंजनगंजनषलन भंजनधरनीभार । हरिहरभजुरघु- नाथकहं जोचाहसिभवपार ॥ १ ॥

मू० । रागमारू । मानअजहुंशिषपरिहरिक्रोध पियपूरोंआयोअव काहिकऊकरिरघुबीरबिरोध । जेहिताडकासुबाऊमारिमख राखिजनायोआपु कौतुकहीमारीचनीचमिसप्रगट्योविशिष

प्रतापु ॥ सकलभूपबलगर्वसहिततोर्योकठोरशिवचापु । व्या
होजेहिजानकीजीतिजगहर्योपरसुधरदापु ॥ कपटकाकसा
सतिप्रमादकरिविनुश्रमबध्योविराधु । खरदूषणत्रिशिराकब-
न्धहतिकियेसुखीसुरसाधु ॥ येकहिवाणबालिमार्योजेहिजो
बलउदधिअगाधु । कहंधोंकंतकुशलबीतीकेहिकिएरामअप
राधु ॥ लांघिनसकेलोकबिजईतुमजासुअनुजकृतरेषु । उतरि
सिंधुजार्योप्रचारिपुरजाकेदूतबिशेषु ॥ कृपासिंधुखलबनकृशा
नुसमयशगावतअ्रुतशेषु । सोद्दबिरदैतबीरकोशलपतिनाथ
समुझिजियदेषु ॥ मुनिपुलस्तिकेयशमयङ्कमङ्कातकलङ्कह
ठिहोहि । औरप्रकारउबारनहींकहुंमैदेख्योजगटोहि ॥
चलुसिलुवेगिकुशलसारदसियसहितअग्रकरमोहि । तुलसि
दासप्रभुसरणशब्दसुनिअभयकरैंगेतोहि ॥ २ ॥ ७१ ॥

टी० । मानदू० । मंदोदरी कि उक्ति है आयो व कहैं आयो अब ॥ १ ॥ जन्मयो आप अपने को जनावत भए मिस बहाना ते ॥ २ ॥ दाप अभिमान ॥ ३ ॥ ४ ॥ बल उदधि अगाध बल रूप समुद्र जेहि बालि को अथाह ॥ ५ ॥ ६ ॥ बिरदैत बानावाले टोहिकहैं टोढ़िकै ॥ ८ ॥ ९ ॥ १ ॥

मू० । रागकान्हरा । तूंदशकण्ठभलेकुलआयो तामङ्गशिवसेवाबि
रञ्चिवरभुजबलबिपुलजगतयशपायो । खरदूषणत्रिशिराक-
बन्धरिपुजेहिबालीयमलोकपठायो ताकोदूतपुनीतचरितह
रिशुभसंदेशकहनहौंआयो ॥ श्रीमदनृपअभिमानमोहवस
जानतअनजानतहरिल्यायो । तजिब्यलीकभजुकारुणीकप्रभु
दैजानकिहिसुनहिसमुझायो ॥ यातेतवहितहोहिंकुशलकु
लअचलराजचलिहैनचलायो । नाहितरामप्रतापअनलमङ्क
ह्वैपतङ्गपरिहैशठधायो ॥ यद्यपिअङ्गदनीतिपरमहितकह्यो-
तथापिनकछुमनभायो । तुलसिदाससुनिवचनक्रोधअतिपाव

कजरतमनकुहटतनायो ॥ २ ॥ ७२ ॥

टी०। तूंइ०। अंगद कि उक्ति ॥ १ ॥ २ ॥ धीमद धनमद व्यलीक कपट ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ २ ॥

मू०। तैंमेरोमरमकछूनहिपायो रेकपिकुटिलढीठपशुपांवरमोहि दासज्योंडांटनआयो। भ्राताकुम्भकरनरिपुघातकसुतसुरपति हिबन्धकरिल्यायो निजभुजबलअतिअतुलकहोंक्योंकन्दुकज्यौंकैलाशउठायो ॥ सुरनरअसुरनागखगकिन्नरसकलकरतमेरोमनभायो। निश्चरकचिरअहारमनुजतनुताकोयशखलमोहिसुनायो॥कहाभयोबानरसहायमिलिकरिउपायज्यों सिंधुबंधायो। जोतरिहैभुजबीशघोरनिधिऐसोकोचि भुअन मैजायो ॥ सुनिदशशीसवचनकपिकुञ्जरबिहंसिईशमायहि शिरनायो। तुलसिदासलंकेशकालबसगुनतनकोटिजतनसमुझायो ॥ २ ॥ ७३ ॥

टी०। तैंइ०। रावन की उक्ति ॥ १ ॥ २ ॥ गन को भायो कहैं हमारो को कहै हमारो गुलाम को भायो करत हैं ॥ ३॥४॥५॥३॥

मू०। सुनुखलमैंतोहिबहुतबुझायो येतेमानशठभयोमोहवसजानतहूंचाहतविषखायो। जगतबिदितअतिबीरबालिबलजानत होकिधौंअबबिसरायो बिनुप्रयाससोउहत्योएकसरसरनागतपरप्रेमदेखायो ॥ पावहुगेनिजकर्म्मजनितफलभलेठौरहठिबैरबढ़ायो। बानरभालुचपेटलपेटनिमारततबह्वैहैपछितायो ॥ होहौंदशनतोरिबेलायककहाकरौंजोनआयसुपायो। अबरघुबीरबाणबिदलितउरसोवहिगोरणभूमिसोहायो॥ अविचलराजबिभीषणकोसबजेहिरघुनाथचरनचितलायो। तुलसिदासएहिभांतिबचनकहिगर्जतचल्योबालिनृपजायो७३

टी०। सुनुइ०। अंगद की उक्ति हे सठ एतना अभिमान मोहबस भयो है ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ होहौं कहैं हम विदलित बिशेष द-

लित ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४ ॥

मू० । रागकेदारा । रामलषणउरलाइलयेहैं भरेनीरराजीवनयन सबअङ्गअङ्गपरितापतयेहैं । कहतसशोकविलोकबंधुमुखबच नप्रीतिगथयेहैं। सेवकसखाभक्तिभायपगुणचाहतअबअथयेहैं निजकीरतिकरतूतितातुमसुकृतीसकलजयेहैं । मैतुमबिनु तनुराखिलोकअपनेअपलोकलयेहैं ॥ मेरेपनकीलाजइहां लोंहठिप्रियप्राणदयेहैं ।लागतसांगविभीषणहीपरसीपरआ पुभयेहैं ॥ सुनिप्रभुबचनभालुकपिसुरगणसोचसुखाइगयेहैं तुलसीआइपवनसुतविधिमनोफिरिनिरमयेनयेहैं॥२॥७५॥

टी० । रामइ० । लक्ष्मण जी को शक्ति लगिबे की कथा लिखत हैं सब अंग परिताप तए हैं सब अंग परिताप तें तै उठे हैं ॥ १ ॥ बचन प्रीति गथए हैं बचन प्रीति से गुहे भए हैं सेवक औ सखा औ भगति औ भाईपने को गुन अब डूबा चाहत है भाव ए सब गु ण लक्ष्मण छोड़ि दूसरे मे कहां होयगो ॥ २ ॥ हे तात तुम अपनी कीर्ति औ करतूति ते सकल सुकृति को जीति लए हैं हम तुम्हारे बिना अपना तन लोक में राखि के अपलोक कहैं अजस को लए हैं ॥ ३ ॥ हमारे प्रतिज्ञा को लाज तुम को इहां लो भई कि हठि करि के प्रिय जो प्रान सो दिए बिभीषन को सांग लगत तापर लक्ष्म ण आप ढाल भए हैं भाव बिभीषन जो मरैं गे तो श्री राघव की प्र तिज्ञा जायगी यह बिचारि आप शक्ति को लै लए ढाल को सिपर पारसी मे कहत हैं ॥ ४ ॥ निर्मल नए हैं मानो बिधाता ने नए सिर से फिर लक्ष्मण जी को बनाए हैं ॥ ५ ॥ ५ ॥

मू० । रागसोरठ । मोपैंतोनकछुह्वैआई ओरनिबाहिभलीबिधि भायपचल्योलषणसोभाई। पुरपितुमातुसकलसुखपरिहरिजे हिबनबिपतिबंटाई तासंगहौंसुरलोकशोकतजिसक्योनप्राण पठाई ॥ जानतहौंयाउरकठोरतेंकुलिशकठिनतापाई । सुमि

रिसनेहसुमित्रासुतकोदरकिदरारनजाई ॥ तातमरणतिय
हरणगृद्धवधभुजदाहिनीगवांई। तुलसीमैसबभांतिआपनेकु
लहिकालिमालाई ॥ २ ॥ ७६ ॥

टी० । मोपैइ० । और अंतलों ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ दाहिना भुज
भाई को कहत हैं ॥ ४ ॥ ६ ॥

मू० । मेरोसवपुरुषारथथाको विपतिबंटावनबंधुबाहुबिनुकरोंभरो
सोकाको । सुनुसुग्रीवसांचेहुमोपरफेर्योवदनविधाता ऐ
सेसमयसमरसङ्कटहौंतज्योलक्षणसोभ्राता ॥ गिरिकाननजै
हैंसाखामृगहौंपुनिअनुजसंघाती । ह्वैहैकहाबिभीषणकी-
गतिरहीसोचभरिछाती ॥ तुलसीसुनिप्रभुवचनभालुकपिस
कलविकलहियहारे । जामवंतहनुमन्तबोलितवऔसरजा
निप्रचारे ॥ २ ॥ ७७ ॥

टी० । मेरोइ० । बिपति बटावन बिपति को बटावन हारो ॥
॥ १ ॥ ७ ॥

मू० । रागमारू । जौहौंअबअनुसासनपावों तौचन्द्रमहिनिचोरि
चैलज्योंआनिसुधाशिरनावों । कैपातालदलौंव्यालावलिअ-
मृतकुंडमहिल्यावों भेदिभुअनकरिभानुवाहिरोतुरतराहु
दैतावों ॥ बिबुधवैद्यवरबसआनोधरितौप्रभुअनुगकहावों । प
ठकोंनीचुमीचुमूषकज्योंसबहिकोपापवहावों ॥ तुम्हरेहिकृ
पाप्रतापतिहारेहिनेकुबिलम्बनलावों। दीजैसोइआयसुतुल
सीप्रभुजेहितुम्हरेमनभावों ॥ २ ॥ ७८ ॥

टी० । जौइ० । हनुमान जी की उक्ति है जो अब हम आज्ञा
पावैं तो वस्त्र सम चंद्रमा को गारि कै अमृत आनि कै सिर नवावैं
॥ १ ॥ अथवा पाताल के सर्पों को मारि कै अमृत को कुंड भूमि प
र ले आवों अथवा ब्रह्मांड को भेदन करि तेहि राह ते सूर्य को
बाहर करों औ तेहि राहु को राहु से बंद करि देउं भाव जब

सूर्य ब्रह्मांड मे न रहैं गे तब कैसे भिनुसार होयगो काज नसाईहि होत प्रभाता एह आसे लेके हनुमान जी कहे बिबुध बैद्य अश्वनी कुमार वरवस जो रावरो अनुगदास मीचु मृत्यु मूषक मूसा ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ८ ॥

मू० । सुनिहनुमंतबचनरघुबीर सत्यसमीरसुअनसबलायककह्यौ-रामरनधीर। चाहियबैदईसआयसुधरिसीसकीसबलऐन आन्यौसदनसहितसोवतहीजौंलौंपलकुपरैन ॥ १ ॥ जियैकुंअरनिसिमिलैमूलिकाकीन्हीबिनयसुषेन । उठ्योकपीससुमिरिसीतापतिचल्यौसजीवनलेन ॥ २ ॥ कालनेमिदलिवेगिविलोक्यौद्रोनाचलजियजानि । देषीदिव्योषधीजहंतहंजरीनपरीपहिचानि ॥ ३ ॥ लियौंउठाइकुधरकंदुकज्यौंवेगिनजाइबषानि । ज्यौंधाएगजराजउधारनसपदिसुदरसनपानि ॥ ४ ॥ आनिपहारजोहारेप्रभुकियौबैदराजउपचारु । करुनासिंधुबंधुभेट्यौमिटिगयौसकलदुषभारु ॥ ५ ॥ मुदितभालुकपिकटकलह्यौजनुसमरपयोनिधिपारु । बहुरिठौरहीराषिमहीधरुआयोपवनकुमारु ॥ ६ ॥ सेनसहितसेवकहिसराहतपुनिपुनिरामसुजान। वरषिसुमनहियहरषिप्रसंसतबिबुधबजाइनिसान ॥ ७ ॥ तुलसिदाससुधिपाइनिसाचरभयेमनहुंबिनुप्रान । परीभोरहीरोरलंकगढ़दईहांकहनुमान॥ ८ ॥ ॥ २ ॥ ७८ ॥

टी० । सुनिह० ॥ १ ॥ श्री राघव कहे कि बैद्य चाहिए यह आज्ञा स्वामी की हनुमान बल अयन सिर पर धरि के घर सहित बैद्य को लंका से सोअतही आन्यो एतने सीघ्रता से कि जब लो पलक न पर्‍यो ॥ २ ॥ सुषेन नामा बैद्य जो लंका से आयो सो बिनै कीन्ही कि रातिभर मे जड़ी मिलै तो कुअंर जीवै ॥ ३ ॥ ४ ॥ कुधर पर्वत कंदुक गेंदा वेग सीघ्रता सुदर्शन पानि विष्णु॥ ५ ॥ ६ ॥

ठौरहीं जहां से आए रहे तहैं रषि आए ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

मू० । रागकेदारा । कौतुकहींकपिकुधरलियौहै चल्यौनभनाइ माथरघुनाथहिसरिसनवेगवियौहै । देष्यौजातजानिनिचर बिनुफरसरहयौहियौहै । पर्यौकहिरामपवनराष्यौगिरिपुर तेहितेजपियौहै ॥ १ ॥ जाइभरतभरिअंकभेटिनिजजीवन दानदियौहै । दुषलघुलषनमरमघायलसुनिसुषवड़ोकीसजि यौहै ॥ २ ॥ आयसुइतहिस्वामिसंकटउतपरतनकछूकियौ है । तुलसिदासविहर्यौअकाससोकैसेकैजातसियौहै ॥३॥ ॥ २ ॥ ७९ ॥

टी० । कौतुकइ० । सरिस न वेग वियो है जाकै बरावर दूसरे को वेग नही है ॥ १ ॥ भरत जू हनुमान जी को जात देखे निसर जानि के बिनु फर को बान हृदय मे मार्यो तेहि वान ने पुर कहैं संपूर्ण हनुमान जी के तेज को पीलियो हनुमान जू राम कहि के पृथ्वी मे गिरे परवत को पवन ने रोकि राख्यो भाव जाते पुरी न ट वि जाय ॥ २ ॥ भरत जू हनुमान जी के ढिग जाय के अंक भरि भे टि के पुनि अपना आरदाय हनुमान जू को दान दियो है तव हनु मान जू जी उठे हैं एतना ग्रेष है मरम घायल मर्म स्थान के घाव ते घायल ॥ ३ ॥ इत श्री रामज की आज्ञा अवधि भर आयोध्याजी मे रहिवे की औ उत श्री राघव जू संकट मे हैं कुछ करत नहीं बनत है भाव न रहत बनत न जात बनत है गोसांई जी कहत हैं कि फर्यो अकाश सो कैसे सियो जात है ॥ ४ ॥ १० ॥

सू० । भरतशत्रुसूदनविलोकिकपिचितचकितभयोहै रामलषनरन जीतिअवधआएकैधोंमोहिभ्रमकैधोंकाहूकपटठयोहै । प्रेम पुलकिपहिचानिकैपदपदुमनयोहै कह्यौनपरतजेहिभांतिदु- हुंभाइन्हसनेहसोंसोउरलाइलयोहै ॥ १ ॥ समाचारकहि गहरुभौतेहितापतयोहै । कुधरसहितचढोबिसिषवेगिपठवौं

सुनिहरिहियगरवगूढ़उपयौहै ॥ २ ॥ तीरतेउतरिजसुक-
ह्यौचहैगुनगननिजयोहै। धन्यभरतधन्यभरतकरतभयौमग
नमौनरह्यौमनअनुरागरयौहै ॥३॥ यहजलनिधिषन्योमथ्यौ
लंघ्यौबँध्यौअँचयौहै । तुलसिदासरघुबीरबंधुमहिमाकोसिं
धुतरिकोकविपारगयौहै ॥ ४ ॥ २ ॥ ८० ॥

टी० । भरत हू० । १ ॥ २ ॥ हनुमानजू समाचार कहे गहरु कहैं बिलंलम्ब भयो तेहि तापते भरत जू तपि जात भए भरत जू कहत भये कि पर्वत सहित हमारे बाण पर चढ़ो तुम को शीघ्र प्रभु के ढिग भेज देउं यह सुनि के हनुमान जी के हृदय मे भारी अहंकार उपज्यो है कि मोरे भार चलहि किमि बाना फिर हनुमान जी बाण पर चढे भरत जू को बोझ न जान पक्ष्यौ बान चलावन लगे तब हनुमान जू भरत जू को प्रभाव समुझि बाण ते उतरि के भरतजू को यश कहा चाह्यौ पर भरत जू के गुन गनों ने जीति लियो है भाव कहि वे को न समर्थ भये धन्य धन्य भरत कहत मगन भए और चुप ह्वै जात भए औ मन भरत जू के अनुराग में रँगि गयो ॥ ३ ॥ ४ ॥ यह समुद्र को सगर महाराज के पुत्रों ने षन्यो वा प्रिय व्रत ने औ देवता दैत्यों ने मथ्यो औ हनुमान जी ने नाघ्यो श्रीरघुनाथ ने बांधेउ औ अगस्त्य जी अचइ गए गोसांई जी कहत हैं कि भरत की महिमा समुद्र को तरिके कौन अस कवि है कि जो पार गयो है एहि समुद्र तें महिमा समुद्र को अधिक जनाए ॥ ५ ॥ ११ ॥

मू० । होतोनहिजोजगजनमभरतको तौकपिकहतक्रपानधारमग
चलिआचरनचरतको । धीरजधरमधरनिधरधुरहुतेंगुरुधु-
रधरनिधरतको सबसद्गुनसनमानिआनिउरअघऔगुन
निदरतको ॥ १ ॥ सिवहुनसुगमसनेहरामपदसुजननिसु
लभकरतको । सृजिनिजजससुरतरुतुलसीकहुंअभिमतफर

निफरतको ॥ २ ॥ २८१ ॥

टी० । होतोइ० । अब हनुमान जी की उक्ति गोसांई जी कह त हैं जगत में जो भरत जी को जनम न होतो तो स्नेह का मार्ग कृपान धार सम है तापर चलि के तेहि ब्रत को को आचरन करत ॥१॥ धरनि धर जो पर्वत तेहि के धुर कहैं भारहू ते गुरू धुर कहैं अ- धिक है भार जेहि को ऐसे धीरज धर्म्म को धरनी पर को धरत औ सब सद्गुनो को सनमानि कै हृदै मे आनि कै अघ औ औगु- नन को कौन दरत कहैं विदीर्ण करत वा निदरत कहैं निरादर क रत ॥ २ ॥ जो राम पद सनेह शिव को भी नहीं सुगम सो सुजन नि को को सुलभ करत भाव भरत जी की दसा स्मरन करि के श्री राम पद मे प्रीति उपजति है कहतसुनतसतिभावभरतको सीयराम पदहोइनरतको । निज यश रूप सुर तरू को सृजि के तुलसी कहं बांछित फरनि को को फरत भरतजीप्रति श्री राम जी की उक्ति है मिटिहैपापप्रपंचसब अखिलअमंगलभार । लोकसुयशपरलोकसुख सुमिरतनामतुम्हार ॥ ३ ॥ १२ ॥

मू० । सुनिरनघायलखनपरेहैं स्वामिकाजसंग्राममुभटसोंलोहे ललकिलरेहैं । सुवनसोकसंतोषसुमित्रहिंरघुपतिभगतिवरे हैं । छिनछिनगातसुखातछिनहिंछिनुहुलसतहोतहरेहैं ॥ १ ॥ कपिसोंकहतसुभायअंबकेअंबकअंबुभरेहैं । रघुनंदन बिनुबंधुकुअवसरजद्यपिधनुदुसरेहैं ॥ २ ॥ तातजाहुकपि संगरिपुसूदनउठिकरजोरिखरेहैं । प्रमुदितपुलकिपैतपूरेजनु बिधिबसमुढरढरेहैं ॥ ३ ॥ अंबअनुजगतिलखिपवनजभरता दिगलानिगरेहैं । तुलसीसबसमुझाइमातुतेहिसमयसचेत- करेहैं ॥ ४ ॥ २ ॥ ८२ ॥

टी० । सुनिइ० । स्वामी के कार्य हेतु संग्राम में सुभट जो मेघ नाथ तासों ललकारि के लोह करि लरें है तेहि रन मे लषन ला

ल घायल परे हैं यह सुनि के सुमित्रा जू कों पुत्र को शोक है औ लक्ष्मण जू रघुपति की भक्ति को वरे कहैं अंगीकार किए हैं ताते संतोष है याते छिन छिन मे गात सुषात औ छिन छिन मे उलसत औ हरे होत है ॥ १ ॥ २ ॥ माता के नेत्रों मे जल भरे हैं स्वाभाविक कपि सो कहति हैं यद्यपि धनु दूसरा है अर्थात् सहायक है तथापि कुअवसर मे बिना बंधु के रघुनन्दन भए ॥ ३ ॥ हे रिपुसूदन अब तुम हनुमान के संग जाउ यह सुनि सत्रुहन जू हाथ जोरि के षड़े होत भए आनन्द करि पुलकित होत भए मानो पूरे दांव पर बिधि के बस पासा सुंदर ढार से ढरे हैं माता कों औ शत्रुहन की दसा देखि हनुमान जू औ भरत आदिक ग्लानि ते गरत भए तेहिं समै में मातु के समुझाय के सब सचेत करे हैं ॥ ४ ॥ १३ ॥

मू० । बिनयसुनाइबोपरिपाय कहौंकहाकपीसतुम्हसुचिसुमति सुहृदसुभाय। स्वामिसंकटहेतुहौंजड़जननिजनम्यौंजाय। समयपाइकहाइसेवकघट्योतौनसहाय ॥ १ ॥ कहतसिथिल सनेहभोजनुधीरघायलपाय । भरतगतिलषिमातुसबरहि ज्यौंगुडीबिनुबाय॥ २ ॥ भेटकहिकहिबोकह्योयोंकठिनमानसमाय। लाललोनेंलषनसहितसुललितलागतनाय ॥ ३ ॥ देखिबंधुसनेहअंबसुभायलषनकुठाय। तपततुलसीतरनित्रासकुएहिनयेतिइंताय ॥ ४ ॥ २ ॥ ८३ ॥

टी० । बिनयइ० ॥ १ ॥ जाय व्यर्थ घट्यो तोन सहाय सहाय में युक्त न भयों ॥ २ ॥ ज्यों गुढी बिनु वायु जैसे वे हवा की गुडी ॥ ३ ॥ औ कौशिल्याजू कहति हैं कि हमारो भेट कहि कै ऐसो कहना कि तुम्हारी कठिन मानस माता ने अस कह्यो है कि हे लाल नायकहैं नाव तुम्हारो लषन सहित ललित लागत है भाव निज सोभा जो चाहो तो लषन सहित आयो ॥ ४ ॥ भरत सत्रुहन को सनेह औ माता को सुभाव औ लषन को कुठाव में देखि कै तरनि

जो सूर्य तिन के त्रास देनिहारे जो हनुमान जू सो यह नए तीनो ताप से तपत हैं । संका । नंदिग्राम में श्री कौशिल्या जू आदि कैसे प्राप्त भई । उत्तर । महात्मन के मुख से अस सुना है जब लक्ष्मण जू को शक्ती लगी तब सुमित्रा जू स्वप्न देख्यो कि भुजा को सर्प लीलयो सो जाय श्री वशिष्ट जू सो कह्यो उ सो सुनि वशिष्टजू कह्यो कि लक्ष्मण को कुछ अरिष्ट है सो ताके हेतु यज्ञ सांति के अर्थ किआ चाहिए परंतु यह समै राक्षस करि जज्ञ नाही होयै पावत भरत जो रक्षा करैं तो यज्ञ होय तब सब मिलि नंदिग्राम मे भरत के समीप आए के समाचार कहे तब भरत विना गासी को बान ले करि रक्षा हेतु धरे ताही समै मे हनुमान आए सो निश्चर केभ्रम से भरत ज मारत भए ॥ ५ ॥ १४ ॥

मू० । हृदयघाउमेरेपीररघुबीरैं पाइसजीवनजागिकहतयौंप्रेमपुलकिबिसरेसरीरैं । मोहिकहापूछतपुनिपुनिजैसेपाठअरथचरचाकीरैं।सोभासुषछतिलाहुभूपकहुंकेवलकांतिमोलहीरैं॥ १ ॥ तुलसोसुनिसौमित्रिबचनसबधरिनसकतधीरौधीरैं । उपमारामलषनकोप्रीतिकीक्योंदीजैछीरैंनीरैं ॥ २ ॥ ॥ २८४ ॥

टी० । हृदयइ० । श्री लक्ष्मण जू सजीवन के पाय के जागि के प्रेम मे पुलकि के देहाध्यास बिसारि के अस कहत हैं कि हम को पुनि पुनि कहा बूझत हौ जो घाव देखनो होय तो हमारे हृदै में देखो औ पीर पूछना होय तो श्री रघुबीर जू सो पूछो जैसे पाठ के अर्थ की चर्चा सूगा से कोउ पूंछै भाव तस हम से पूछना है सोभा सुख हानि औ लाभ राजा कहं है हीरा को केवल कांति औ मोल मात्र है अस लक्ष्मण जू को बचन सुनि धीरो धीर को नही धरि सकत है औ राम लषन की प्रीति को उपमा छीर औ नीर की क्यों दिजिए भाव उन की प्रीति घटाई आदि तें बिल-

गाति है ॥ ३ ॥ १५ ॥

मू० । राग कान्हरा । राजतरामकामसतसुंदर। रिपुनजीतिअनुज
संगसोभितफेरतचापबिसिषबनरुहकर । स्यामसरीररुचिर
श्रमसीकरसोनितकनबिचबीचमनोहर ॥ जनुषद्योतनिकर
हरिहितगनभ्राजतमरकतसैलसिखरपर ॥ १ ॥ घायलबीर
बिराजतचहुंदिसिहरखितसकलरीछअरुबनचर । कुसुमित
किंसुकतरुसमूहमहंतरुनतमालबिसालबिटपबर ॥ २ ॥ रा
जिवनयनबिलोकिकृपाकरिकियेअभयमुनिनागबिबुधनर। तु
लसिदासयहरूपअनूपमहृदिसरोजबसिदुसहबिपतिहर ॥
॥ ३ ॥ २८५ ॥

अब रावणादि सब निशाचरों के बध के अनंतर श्री रघुनाथ जी के स्वरूप को बर्नन करत हैं टी० । राजत० । बनरुह कमल ॥१॥ सुंदर स्याम शरीर मे सुंदर श्रमबिंदु औ बीच बीच मे शोणित कण हैं मानो खद्योत समूह औ हरहित जे चंद्रमा तिन कें गन जे तारा ते मरकत सैल के सिषर पर सोभत हैं इहां खद्योत शोणित कण है औ तारा श्रमबिंदु है मरकत शैल श्रीराम को शरीर है खद्योत को कोऊ देश मे जुगुनू कोऊ देश मे भगजोगिनी कहत हैं औ जो खद्योत सूर्य बाचक होय तौ भी बनत है क्योंकि अरुणरंग सूर्य का भी है ॥ २ ॥ मानो फूले भए पलास के तरु समूह मे युवा श्रेष्ट बिशाल तमाल को वृक्ष है इहां घायल बीर फूले पलास सम हैं तमाल सम श्री राम हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥ १६ ॥

मू० । रागअसावरी । अवधिआजुकिधौंऔरोदिनह्वैहै चढ़िधवर
हरबिलोकिदषिनदिसिबूझौंपथिककहातेआएवैहै । बहु-
रिबिचारिहारिहियसोचतिपुलकिगातलागेलोचनच्वैहै निज
बासरनिबरषपुरवैगोबिधिमेरेतहंकरमकठिनकतवैहै ॥ १ ॥
बनरघुबीरमातुगृहजीवतिनिलजप्रानसुनिसुनिसुषलैहैं। तु

लसिदाससमोसीकठोरचितकुलिससारभंजिनकोह्वै है ॥ २॥
॥ २८६ ॥

टी० । अवधिइ० । श्री कौशिल्या जू की उक्ति रघुनाथ के आइवे को दिन आजुइ है कि दुइ दिन और है सखी ते कहति हैं कि अटारी पर चढ़ि के दक्षिण दिसा देखि के पथिक सों बूझु कि वै कहां ते आए हैं भाव कदापि कहीं रघुनाथ से आवत कै भेंट भई होय ॥ १ ॥ बिचार करि हारि हिए सोच करत हैं पुलकावली अंग मे है औ नेत्रन से आंसू टपकन लगे अब हृदे में सोचत हैं कि तहां बिधाता के निकट मे मेरे कृत कठिन कर्म कोई है तातें ब्रह्मा अपने दिनन सों चौदह बर्ष पुरवै गो ॥ २ ॥ कुलिश शाल भंजि कौन ह्वै है कुलिश कहै वज्र को शाल भंजिका कहैं प्रति मासो भी नही होगी ॥ ३ ॥ १७ ॥

मू० । आलीअबरामलषनकितह्वै हैं चित्रकूटतज्यौतबतेनलहीसु
धिवधूसमेतकुशलसुतद्वै हैं । बारिबयारिबिषमहिमआतपस
हिबिनुबसनभूमितलस्वै हैं कंदमूलफलफूलअसनबनभोजन
समयमिलतकैसेवै हैं ॥ १ ॥ जिन्हहिबिलोकिसोचिहैलता
द्रुमषगम्टगमुनिलोचनजलच्वै हैं । तुलसिदासतिन्हकीजननी
हांमोसीनिठुरचितऔरौंकऊंह्वै हैं ॥ २ ॥ २८७ ॥

टी० । आलीइ० । संका । हनुमान जी से तो सब वृतान्त सुने रहीं चित्रकूट तज्यो तब ते न लहो सुधि यह कैसे कहति हैं । उत्तर । व्याकुलता करि अपर पद सु० ॥ १८ ॥

मू० । रागसोरठ । बैठीसगुनमनावतिमाता कबऐहैंमेरेबालकुश
लघरकहहुकागफुरिबाता । दूधभातकीदोनीदैहौंसोनेचोंच
मढैहौं।जबसियसहितबिलोकिनयनभरिरामलषनउरलै
हौं ॥ १ ॥ अवधिसमीपजानिजननीजियअतिआतुरअकुला
नी । गनकबुलाइप्रायपरिपूछतिप्रेममगनम्टदुबानी ॥ २ ॥

तेहिअवसरकोउभरतनिकटतेंसमाचारलैआयौ । प्रभुआगमनसुनततुलसीमानोंमीनमरतजलपायौ ॥ ३ ॥ २८८ ॥

टी० । बैठीइ० । पद सुगम ॥ १९ ॥

मू० । रागगौरी । छेमकरीबलिबोलिसुबानी कुशलछेमसियराम लषनकबऐहैंअंबअवधरजधानी । ससिमुषिकुंकुमबरनिसुलोचनिमोचनिमोचनिवेदबषानी देविदयाकरिदेहिदरस फलजोरिपानिबिनवहिसबरानी ॥ १ ॥ सुनिसनेहमयबचन निकटह्वैमंजुलमंडलकैमडरानी । शुभमंगलआनंदगगनधुनिअकनिअकनिउरजरनिजुड़ानी ॥ २ ॥ फरकनलगेसुअंग बिदिसिदिसिमनप्रसन्नदुषदासिरानी । करहिप्रनामसप्रेमपुलकितनमानिबिबिधिबलिसगुनसयानी ॥ ३ ॥ तेहिअवसरहनुमानभरतसोंकहीसकलकल्यानकहानी । तुलसिदाससोइचाहसजीवनिबिषमबियोगबिथाबड़िभानी ॥ ४ ॥ २८९ ॥

टी० । छेमइ० । छेमकरी सपेद मुष वाली चील्ह को कहत हैं काहू देश में खेम कल्यानी कहत हैं अएहैं अवध अवध रजजानी रजधानी की जो सीवां तेहि अयोध्या जी मे कब अए हैं ॥ १ ॥ हे शशि-मुषी हे अरुणवर्णी तूं कहैं तुम ॥ २ ॥ ३ ॥ मानि बिबिधि बलि अनेकन पूजा मानि के ॥ ४ ॥ सोई कल्यान कहानी रूप इच्छित सजीवन ने बिषम बियोग जनित जो बड़ी व्यथा ताको जराय दिए ॥ ५ ॥ २० ॥

मू० । रागधनाश्री । सुनियतसागरसेतुबंधायो कोसलपतिकीकुशलसकलसुधिकोउएकदूतभरतपहिल्यायो । बधिबिराधत्रिसिराषरदूषनसूपनषाकोरूपनसायौ हतिकबंधबलअंधबालिदलिकृपासिंधुसुग्रीवबसायौ ॥ १ ॥ सरनागतअपनाइबिभीषनरावनसकुलसमूलबहायौ । बिबुधसमाजनिवाजिबांह

दैबंदिह्योरवरबिरदकहायौ॥ २ ॥ एकएकसोंसमाचारसुनि
नगरलोगजहंतहंसबधायौ। घनधुनिअकनिमुदितमयूरज्यों
बूड़तजलधिपारसोपायौ ॥ ३ ॥ अवधिआजुयौकहतपरसप
रवेंगिबिमाननिकटपुरआयौ । उतरिअनुजअनुगनिसमेतप्र
भुगुरुद्विजगनचरननिसिरनायौ ॥ ४ ॥ जोजेहिजोगरामते
हिबिधिमिलिसबकेमनअतिमोदबढायौ। भेटीमातुभरतभर
तानुजक्यौकहौंप्रेमअमितअनमायौ॥ ५ ॥ तेहीदिनमुनिइ
ंद्रअनंदिततुरितिलककोसाजसजायौ। महाराजरघुबंसति
लककोसादरतुलसिदासगुनगायौ ॥ ६ ॥ २९० ॥

टी० । सुनियतद० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ मेघधुनि सुनि के जैसे मयू-
र प्रमुदित होत अर्थात्तस प्रमुदित भए औ जस समुद्र मे बूड़त पा
र पावै तस पाए ॥ ४ ॥ अनुग सेवक ॥ ५ ॥ अनमायौ जो न अमा
य ॥ ६ ॥ ७ ॥ २१ ॥

मू० । रागजयतिश्री । रनजीतिरामराउआए सानुजसदलससीय
कुशलआजुअवधआनंदबधाए। अरिपुरजारिउजारिमारिरि
पुबिबुधसुवासबसाए धरनिधेनुमहिदेवसाधुसबकेसबसोचन
साए ॥ १ ॥ दईलंकथिरथप्योबिभीषनबचनपियूषपिआए ।
सुधासींचिकपिकृपानगरनरनारिनिहारिजिआए॥ २ ॥मि
लेगुरबंधुमातुजनपरिजनभएसकलमनभाए । दरसहरषदस
चारिबरषकेदुषपलमैबिसराए॥ ३ ॥ बोलिसचिवसुचिसोधि
सुदिनमुनिमंगलसाजसजाए । महाराजअभिषेकबरषिसुर-
सुमननिसानबजाए॥ ४ ॥लैलैभेटन्टपअहिपलोकपतिअति
सनेहसिरनाए । पूजिप्रीतिपहिचानिरामआदरेअधिकअप
नाए ॥ ५ ॥ दानमानसनमानिजानिरुचिजाचकजनपहिरा
ए । गएसोकसरसूषिमोदसरितासमुद्रगंहिराए ॥ ६ ॥ प्र
भुप्रतापरविअहितअमंगलअघउलूकतमताए । किएविशोक

नी अपने निर्मल चित्त को लगाय उनके पद कमल को सेवत हैं ब्राह्मणन की मंडली औ मुनिन के समूहन के बीच में चन्द्र बदन सुख सदन, सब लोग के नैनन को सुख दाता श्री रघुनाथ सोहत हैं ब्राह्मन वसिष्ट न्याय करि ब्रह्म मंडली ते मुनीन्द्र इंद पृथक लिखे ॥ २ ॥ सिर रूह कहैं बार कुंचित कहैं टेढे तिनको वरूथ कहैं समूह विथुरित कहैं बिखरे भए हैं तिनके बीच बीच फूलन के गुच्छे गथे हैं सो मानो मणि युक्त सर्पन के बालकन की सेना चद्रमा के समीप आई है सो सैना देखि चंद्रमा डरि अकोर दै जुगल सुंदर कुंडल जो मयूर है ताको राखे अर्थात सर्प को मयूर खात है तिन कुंडल मयूरन की छवि देषि चोर सर्प बालक बहुत सकुचत हैं इहां मणि गूथे भये पुष्पै है सिसुफणि की सेना टेढ बिखरे बार है चंद्रमा मुख है कुंडल के आड़ कर बार मुखपर नहीं आय सकत है सो सकुचना है संका सर्प को मणि गुप्त रहत हैं इहां फूल तो प्रगट है उत्तर मणि जो सिर पर गुप्त रहत है ताकी आभा बाहर चमकत है तैसे बालन में पुष्प गुप्त हैं किंचित पखुरी जो निकलो है सो आभा रूप हैं ॥ ३ ॥ भौहैं ललित हैं औ भाल तिलक औ ठोढ़ी औ ओठ औ दांत रसीले हैं इमी अति सुंदर है औ कपोल नासिका सुंदर है मानो नीरज कहैं कमल इहां कमल करि नेत्र जानना तिन के ऊपर भ्रमर की अवली लरत हैं इहां भ्रमर की पंक्ति दोनो भौहैं हैं सो कमल रूप नेत्र के रस पान करिवे हेतु लरत हैं सो बिलोकि मधुकर जुगल जो कमल मे हैं इहां मधुकर जुगल कस्तूरी को तिलक रेष है जो केसर को तिलक मानो तो पीत जुगल मधुकर जानो पंकज मुष है अर्थात् कमल बदन पर जो जुग मधुकर तिलक रेष सो औ नासिका रूप सुआ सो दोऊ के बीच अर्थात् दोऊ भौहं भ्रमरावली के बीच कियो भाव धरहर कियो जाय कै ॥ ४ ॥ सुंदर पीत वस्त्र धारे हैं औ बिसद बनमाल

तुलसी औ पुष्प करि रचित विविधि विधान ते बनाई उर में सोभत मानो तमाल वृक्ष के अध विच त्रिविध खगन की पांति रुचिर बैठी है कोऊ संदेह करै कि पक्षी चंचल होत हैं थिर क्यों ह्वै रहे हैं ता हेतु लिषत हैं कौ सोने के जाल के भीतर परे हैं ताते उड़ात नही हैं इहां तमाल तरु राघव हैं अधविच वक्षस्थल है त्रिविध कीर पांति वनमाला जो हरित खेत पीत तुलसी पुष्पन करि है सोहै सोने की जाल पीत बसन है ॥ ५ ॥ सिवजी के हृदय कमल मो राम रूपी भंवर जो नेवास करत है औ निर्व्यलीक कहैं दूषन रहित मानस कहैं हृदय रूप गृह मे निरंतर जो छायो रहत है औ अति सै आनन्द को मूल है औ सकल सूल हरणि हारो औ श्री अवध के मंडन कहैं भूषन करनिहारो रघुराई सै जो तुलसी दास तापर सानकूल रहौ ॥ ६ ॥ ३ ॥

मू० । राजतरघुवीरधीरभंजनभवभीरपीरहरनसकलसरजुतीरनिरषजुसषिसोहैं। संगअनुजमनुजनिकरदनुजबलविभंगकरनअंगअंगछबिअनंगअगनितमनमोहैं। सुषमामुषसीलअयननयननिरषनिरषुनीलकुंचितकचकुंडलकलनासिकचितपोहैं मनहुंइंदुबिंबमध्यकंजमीनषंजनलषिमधुपमकरकीरआएतकितकिनिजगोहैं ॥ १ ॥ ललितगंडमंडलसुविशालभालतिलकझलकमंजुतरमयंकअंकरुचिरवंकभौहैं। अरुनअधरमधुरबोलदसनदमकदामिनिदुतिउलसतिहियहसनिचारुचितवनितिरछौहैं ॥ २ ॥ कंबुकंठभुजविसालउरसितरुनतुलसिमालमंजुलमुक्तावलिजुतजागतिजियजोहैं। जनुकलिंदनंदिनिमनिइंद्रनीलसिषरपरसिधसतिलसतिहंसश्रेनिसंकुलअधिकौहैं ॥ ३ ॥ दिव्यतरदुकूलभव्यनव्यरुचिरचंपकचयचंचलाकलापकनकनिकरअलिकिधौहैं । सज्जनचषझषनिकेतबभूषनमनिगनसमेतरूपजलधिवपुषलेतमनगयंदवोहैं ॥४॥

अकनिबचनचातुरीतुरीयपेषिप्रेममगन पगनपरतद्रुतउतसब चकिततेहिसमोहैं । तुलसिदासयहसुधिनहिकौनकोकहां तेआइकौनकाजकाकेढिगकौनठाउंकोहैं ॥ ५ ॥ २९६ ॥

टी० । राजतद्द० । री सषी रघुबीर धीर भंजन करनि हारे भव रूपी भीर को औ सकल पीर हरनि हारे सरजू तीर मे तेरे सोहैं कहैं सनमुष सोभत हैं देषक्ज भाईऔ बक्तत मनुष्य संग हैं औ दनुजन के बल को विसेष तोड़नि हारे हैं जो दनुज वनपाठ होय तो अस अर्थ करना दनुज रूप बन को तोडनि हारे हैं हैं तो ऐसे बलिष्ठ पर सुंदर एसे हैं कि अंग अंग की छबि पर एक को कहै अगिनित काम मोहैं ॥ १ ॥ परमा सोभा औ सुष औ सील के गृह जे नैन हैं तिन्हें देषु औ स्याम टेढ बाल औ कुंडल औ सुंदर नासिका जे चित्त मोहत हैं तिन्हैं देखु भाव बस करि लेत हैं सो मानो चंद्रमा के बिंब के मध्य मे कमल मछरी षंजरीट लषि के भंवर मछरी सुआ अपने अपने गोहैं कहैं संबंध जानि आए इहां चंद्रबिंब श्री राघव को सुष है तेहि मध्य कमल मीन षंजन रूप नेत्र है तहि को देषि कै कमल जानि बाल रूप भ्रमर आए औ कुंडल रूप मकर अपनो सजाती नेत्र मीन को मानि आए औ नासिका जो कीर सोऊ अपनो सजातीय अर्थात् पच्छी नैन षंजन को जानि आए ॥ २ ॥ ललित कपोल मंडल है औ सुंदर बिसाल भाल तामे तिलक अति सुंदर टेढी भौहैं अंक सम है औ लाल ओठ है बोल मधुर है औ दांतन की चमक दामिनि की दुति सम है हसनि औ तिरछी चितवनि देषि हृदय हुलसति है ॥ ३ ॥ संष के तीन रेषा सम कंठ है भुज बिसाल है उर मे तुलसी की माला मोतिन की माला युक्त है जाको जोगी जिय सो देषत हैं मानो जमुनाजी नीलमनिंद्र पहार के सिषर को परसि धसति कहैं गिरति तहां हंसनि की पंक्ति संकुल कहैं संकीर्ण अधिक होति अर्थात् एक मे एक

सटि लसति इहां जमुना तुलसी की माला है मनींद्र नील रघुनाथ हैं सिषर कांधा है ताको परसिधारा सम माला नीचे को गिर्यो है ताके पास जो मोतिन की माला है सो हंस की पंक्ति है ॥ ४ ॥ अति अलौकिक पीत वसन भव्य कहैं सुंदर नवीन जो है सो कैधों सुंदर चंपा के पुष्पन का समूह है कैधो बिजुरीन को समूह है कैधो सोननि के भ्रमरन को समूह है अर्थात् पीत भ्रमरन का समूह है औ रूप रूपी समुद्र जो है सो भूषन रूप मनि गन समेत सज्जन के नेत्र रूप मछरी के निकेत कहै रहिवे को स्थान है भाव समुद्र मे मछरी रहत है सो इहां सज्जन का नेत्र है उहां मनि गन रहत इहां भूषन है तेहि रूप रूपी समुद्र मे मन रूप हाथी को वपुष कहैं सरीर वोड़ लेत है अर्थात् डूवत उतिराति है ॥ ५ ॥ सषी के वचन की चतुराई श्रवनि कहैं सुनि तब तुरीय जो श्री रघुनाथ तिन को देषि कै प्रेम मे डूवत भईं पग नहीं इत घर के ओर परत न उत सरजू ओर परत तेहि समय मो सब चकित ह्वै गईं गोसांई जी कहत हैं यह सुधि नहीं रही की कवन की हौं औ केहि ठांव ते आई औ कौन काज करना है काके ढिग हौं औ कवन ठांव के रहैया हौं तुरीय ते रघुनाथ वोध हेतु प्रमान । तुरीया जानकी प्रोक्ता तुरीयो रघुनंदनः इतिमहारामायने ॥ ६ ॥ ४ ॥

मू० । देंषुमषिआजुरघुनाथसोभावनी नीलनीरदबरनवपुषभुवनाभरनपीतअंबरधरनहरनदुतिदामिनी । सरजुमज्जनकियेसंगसज्जनलियेहेतुजनपरहियेकृपाकोमलघनी। सजनिआवतभवनमत्तगजवरगवनलंकमृगपतिठवनिकुवरकोसलधनी॥ १ ॥ सघनचिक्कनकुटिलचिकुरबिलुलितमृदुलकरनिबिवरतचतुर-सरससुषमाजनी । ललितअहिसिसुनिकरमनहुंससिसनसमरलरतधरहरिकरतरुचिरजनुजुगफनी ॥ २ ॥ भालभ्राजततिलकजलजलोचनपलकचारुभ्रूनासिकासुभगसुकआननी

हितकोककोकनदलोकसुजसशुभछाए ॥ ७ ॥ रामराजकु-
लिकाजसुमंगलसबनिसबैसुखपाए । देहिँअसीसभूमिसुर
प्रमुदितप्रजाप्रमोदबढ़ाए॥ ८ ॥ आश्रमधरमबिभागबेदपथ
पावनलोगचलाए । धरमनिरतसियरामचरनरतमनहुँराम
सियजाए ॥ ९ ॥ कामधेनुमहिबिटपकामतरुकोउबिधिवा-
मनलाए । तेतबअबतुलसीतेउजिन्हहितसहितरामगुनगा-
ए॥ १० ॥ २९१ ॥

टी० । रणह० ॥ १ ॥ २ ॥ सुधा से सींचि के कपिन को औ छ
पा से नगर के नर नारि को जिआवत भए ॥ ३ ॥ दरस हरष द-
र्शन के हर्ष से महाराज अभिषेक महाराज के अभिषेक होने में
॥ ४ ॥ ५ ॥ अहिप लोकपति शेष वासु की आदि औ इन्द्रादि लो-
कपाल ॥ ६ ॥ सोक रूप तलाव सूषिगए औ आनन्द रूप सरिता
औ समुद्र अथाह होत भए ॥ ७ ॥ प्रभु के प्रताप रूप सूर्य ने अ-
हित औ अमंगल औ अघ रूप उलूक को सुषदाई जो तम ताको
नाश किए इहां तम करि अविद्या लेना औ हित रूप चक्रवाक औ
कमल को विगत सोक किए औ लोक मे सुंदर यस सुभ छाए ॥
॥ ८ ॥ श्री रघुनाथ के राज्य में सब काज में सुमंगल भयो औ सब
ने सब प्रकार के सुष पाए ॥ ९ ॥ मनहुं राम सिय जाए मानो श्री
सीता राम के पुत्र हैं भूमि काम धेनु होत भई औ इच्छ कल्पतरु
होत भए औ कोऊ पर विधाता वामन भए ते प्रजा तव राम राज्य
में सुषी भए अब तेऊ सुषी हैं जे हित सहित रामगुन गाए ॥१०॥२२॥
मू० । रागटोडी । आजुअवधआनंदबधावनरिपुरनजीतिरामवर
आए सजिसुबिमाननिसानबजावतमुदितदेवदेषनधाए । वर
वरचारुचौकचंदनमनिमंगलकलससबनिसाजे।धुजपताकतो
रनवितानबरबिबिधिभांतिबाजनबाजे॥ १ ॥ रामतिलकसुनि
दीपदीपकेनृपआएउपहारलिए । सीयसहितआसीनसिंहा

सननिरषिजोहारतहरषिहिये ॥ २ ॥ मंगलगानबेदधुनि जयधुनिमुनिअसीसधुनिभुवनभरे । बरषिसुमनसुरसिद्धप्रसं सतसबकेसबसंतापहरे ॥ ३ ॥ रामराजभईकामधेनुमहिसु- षसंपदालोकछाए। जनमजनमजानकीनाथकेगुनगनतुलसि दासगाए ॥ ४ ॥ २९२ ॥ २३ ॥

इतिश्रीरामगीतावल्यांलंकाकांडः समाप्तः ॥

टी० । आजुइ० ॥ १ ॥ घर घरमे सुंदर चौक चंदन ते औ मणि ते औ मंगल कलश सब ने साजे तोरण कहैं बंदरवार बितान कहैं मंडप ॥ २ ॥ उपहार भेंट आसीन बैठे ॥ ३ ॥ ४ ॥ श्री रघुनाथ के राज्य में भूमि काम धेनु भई सुख औ संपदा सब लोक मे छावत भई जन्म जन्म में जानकी नाथ के गुन गन को गाए इहां जन्म जन्म पद ते अपने को वाल्मीक जी का अवतार सूचन किए स्पष्ट श्री नाभा जी लिषे कलि कुटिल जीव निस्तार हित वालमीक तुलसी भयो लंका कांड को समाप्त जैसे बाल्मीकजी राम राज्य मे किए तैसे गीतावली मे गोसांई जी किए । दो० । मंगलश्रीसरयूसरितमं गलबिपिनिप्रमोद । मंगलसीतारामजू जोमोदक्कोमोद ॥

इतिश्री तुलसीदासकृत रामगीतावली प्रकाशिका टीकायां श्रीसीतारा मकृपापात्र श्रीसीतारामीय हरिहरप्रसादकृतौ लंकाकाण्डः समाप्तः

मू० । रागसोरठ । बनतेंआइकैराजारामभएभुआल मुदितचौद- हभुअनसबसुषसुषीसबसबकाल । मिटेकलुषकलेसकुलषनक पटकुपथकुचाल गएदारिददोषदारुनदंभदुरितदुकाल ॥ १ ॥ कामधुकमहिकामतरुतरुउपलमनिगनलाल । नारिनरते- हिसमयसुकृतीभरेभागसुभाल ॥ २ ॥ बरनआश्रमधरमरत मनबचनबेषमराल । रामसियसेवकसनेहीसाधुसुमुषसाल ॥ ३ ॥ रामराजसमाजबरनतसिद्धसुरदिगपाल । सुमिरिसो तुलसीअजहुंहियहरषहोतबिसाल ॥ ४ ॥ २९३ ॥

टी० । दो० । हृतकलङ्कीउतचंद्रिका कुंडलतरिवनकान । सियसियवल्लभसोसदा बसोहियेनिचश्रान ॥ १ ॥ बनहू० । भए भुश्राल पृथ्वी पालन में युक्त भए चौदहो भुश्रन के वासी सब हर्षित श्रो सब काल में सब सुष करि सुषी होत भए ॥ १ ॥ पाप करि कलेश जो रोग जनित श्रो कुलच्चण टख छेदनादि सो मिटे श्रो कपट करि श्रो कुपंथ मे परि जो कुचाल तें चलत रहे सो मिटे श्रो दारुणक है घोर दंभ श्रो पाप रूप दुकाल अर्थात् दुरभिच्छादि तें जो दारिद्र जनित दोष रहे सो गए ॥ २ ॥ भूमि काम धेनु भई हृच्छ कल्पहृच्छ भए पाथर सब लाल मणि के समूह भए अर्थात् चिंतामणि भए श्रौ तेहि समय मे नारि नर सुकृती श्रो सुंदर भाल अपना भाग्य तें भरत भए ॥ ३ ॥ वरणाश्रम धर्म मे रत श्रो मन बचन करि हंस सम बेषधारी अर्थात् बोलो मधुर श्रो वेषौ उज्वल श्रो राम सिय के सेवक श्रो सनेही श्रो परकार्ज साधक श्रो सुमुष कहै प्रसन्न मुष श्रो रस युक्त बचन अर्थात् मिष्ट भाषी ॥ ४ ॥ १ ॥

मू० । राग ललित । भोरजानकीजीवनजागे । सूतमागधप्रवीन
बेनुबीनाधुनिद्वारेगायकसरसरागरागे ॥ टेक । स्यामलसलोनेगातश्रालसबसजभांतप्रियाप्रेमरसपागे । उनीदेलोचन
चारुमुषसुषमासिंगारहेरिहेरिहारेमारभूरिभागे ॥ १ ॥
सहजसुहाईछबिउपमानलहैकविमुदितबिलोकनलागे । तुलसिदासनिसिवासरअनूपरूपरहतप्रेमअनुरागे ॥ २ ॥
२९४ ॥ ४ ॥

टी० । भोरहू० । सूत पौरानिक मागध बंस प्रसंसक सरस राग ते रागे कहैं गावत भए उनीदे लोचन नीद भरे नैन सुंदर श्रौर मुख को परम सोभा देषि सृंगार रसहारे श्रो एक के को कहै बहुत काम भागे ॥ १ ॥ स्वाभाविक सुंदर छबि ताको उपमा कवि नहीं पावत हर्षित सब देखन लागे यह अनूप रूप के प्रेम में रा

त दिन दास अनुरागे रहत हैं ॥ २ ॥ २ ॥

मू० । राग कल्यान । रघुपतिराजीवनयनसोभातनकोटिमयनकरुणारसअयनचयनरूपभूपमाई । देखोसखिअतुलितछबिसंतकंजकाननरविगावतकलकीरतिकबिकोबिदसमुदाई ॥ टेक मज्जनकरिसरजुतीरठाढ़े रघुंसबीरसेवतपदकमलधीरनिरमलचितलाई । ब्रह्ममंडलीमुनींद्रवृंदमध्यइंदुबदनराजतसुषसदनलोकलोचनसुखदाई ॥ १ ॥ बिथुरितसिरकहवरूथकुंचितबिचसुमनजूथमनिजुतसिसुफनिअनोकससिसमीपआई जनुसभीतदैअकोरराखेजुगरुचिरमोरकुंडलछबिनिरखिचोरसकुचतअधिकाई ॥ २ ॥ ललितभ्रुकुटितिलकभालचिबुकअधरद्विजरसालहासचारुतरकपोलनासिकासुहाई । मधुकरजुगपंकजबिचशुकबिलोकिनीर जपरलरतमधुपअवलीमनोबीचिकियोजाई ॥ ३ ॥ सुंदरपटपीतबिसदभ्राजतबनमालउरसितुलसिकाप्रसूनरचितबिबिधिबिधिबनाई । तरुतमालअधबिचजनुत्रिबिधिकीरपांतिरुचिर हेमजालअंतरपरितातेनउड़ाई ॥४॥ संकरहृदिपुंडरीकनिवसतहरिचंचरीकनिरब्यलीकमानसगृहसंततरहेछाई । अतिसयआनंदमूलतुलसिदाससानकूलहरनसकलसूलअवधमंडनरघुराई ॥ ५ ॥ २९५ ॥

टी० । रघुपति इ० । सखी प्रति सखी कहति है री माई अर्थात री सखी रघुपति जो कमल नयन हैं औ जिनके तनकी सोभा कोटि मयन सम है औ करुना रस के अयन कहैं गृह हैं औ चैन दाता रूप भूप है जिनको बाजावत चैन कहैं आनंद रूप ब्रह्मादि तिनके भूप हैं तिनको देखो अतुलित छबि है उनकी औ संत रूपी कमल वन के सूर्य हैं अर्थात प्रफुल्लित कर निहारे हैं औ उनकी सुंदरि कीरति कवि पंडितन को समुदाय गावत हैं ॥ १ ॥ सो श्री रघुबंस बीर स्नान करिके सरजू तीर में खडे हैं धीर कहैं ग्या

चिबुकसुंदरअधरअरुनद्विजदुतिसुधरवचनगंभीरम्टदुहासभ
वभाननी ॥ ३ ॥ श्रवनकुंडलविमलगंडमंडितचपलकलितक
लकांतिअतिभांतिकछुतिनतनी । जुगलकंचनमकरमनहुंवि
धुकरमधुरपिअतपहिचानिकरिसिंधुकीरतिभनी ॥ ४ ॥ उ
रसिराजतपदिकजोतिरचनाअधिकमालसुविसालचहुंपास
बनीगजमनी । स्यामनवजलदपरनिरखिदिनकरकलाकौतु
कीमनहुंरहिघेरिउड़गनअनी ॥ ५ ॥ मंदिरनिपरघरीना
रिआनंदभरीनिरखिवरखहिंविपुलकुसुमकुंकुमकनी । दास
तुलसीरामपरमकरुनाधामकामसतकोटिमदहरतछबिआप
नी ॥ ६ ॥ २९७ ॥

टी० । देषु इति । हे सखी आजु जो रघुनाथ की शोभा बनी सो देखु श्याम मेघ सम सरीर को रंग है सो सरीर समस्तभुवन के आभरन कहैं भूषन रूप है औ पीतबसन का जो पहिरन है सो दामिनी की द्युति हरनि हारो है सरजू ते मज्जन किए संग में सज्जनन को लिए हेतु कहैं प्रीति जन के ऊपर जिनके हृदय मे है औ कृपा करि कोमल स्वभाव घनी कहैं अत्यंत है औ मतवारे श्रेष्ट हाथी सम चाल है औ लंक कहे कटि औ ठवनि कहे अकड़ सिंह सम है हे सजनी कोशल धनी कुअर भौन आवत हैं ॥ २ ॥ सघन चिक्कन टेढ़े बार अरुझे भाव स्नान किए ते अरुझे हैं ताको कोमल हाथ सो रघुनाथ बिवरत कहैं पृथक पृथक करत तासे अति रस युक्त परमा सोभा जनी कहैं उत्पन्न भई सुंदर सर्पन के बालकन के समूह मानो चंद्रमा सन युद्ध में लरत तहां दुइ सर्प सुंदर धरहरि करत हैं इहां सर्पन के बालकन के समूह बार हैं शसि मुष है युग फनी दोउ हाथ है मुष पर जो बार परत है सो लरब है हाथन ते जो सम्हारब है सो धर हरि है भाव यह कि अद्भुत हेतु चंद्रमा सो सर्पन के बालक लरत हैं दुइ बड़े सर्प धर हरि

करत हैं कि जो कोई अपना माल न देतो तासो लड़ना न चाहिये ॥ ३ ॥ ललाट मे तिलक सोभत कमल सम नेत्र हैं पलकै और भौंह सुंदर है औ नासिका सुंदर सुगा के मुख सम है अर्थात ठोर सम ठोढ़ी औ अरुन अधर ओष्ट के नीचे को भाग औ दांतनि की दुतिधर कहैं ओष्ट सहित सुंदर है वचन गंभीर है औ मृदु हँसी संसार की मन हरनि हारी है ॥ ४ ॥ कानन मे चंचल निर्मल कुंडल है तिन्ह करि कपोल भूषित है कल कहैं सुंदर सोभित अति प्रकाशित जिन्ह की कांति तिन्ह कुंडलन ने कछू तनी कहैं विस्तार किया है ताको कहत हैं मानो दुइ सोने के मकर अर्थात कुंडल रूप मकरी चंद्र की किरन मधुर अमृत पियत इहां मुख चंद्र है रूप अमृत है समुद्र की कीर्ति जो भनी भई हैं अर्थात चंद्रमा अमृत आदि समुद्र ते उत्पन्न है यह कीर्त्ति तें पहिचानि करि के पियत को हमहूं समुद्र ते उत्पन्न हैं तो भाई के चीज लेवे में दोष नहीं ॥ ५ ॥ उर में पदिक सोभति ताकी रचना की जोति अधिक है औ गज मुक्ता करि बनी सुंदर बिसाल माला चहुं पास सोभत से मानो स्याम नवीन मेघ पर सूर्य की कला देखि कै कौतुक करने वाली तारागन की सेना घेर रही इहां स्याम नव जलद रघुनाथ को बक्षस्थल है औ पदिक जोति दिनकर की कला है तारागन मे ती की दाना हैं कौतुक मेघ सूर्य की कला को होनो है ताको देखि तारागन बिचारे हमहूं सब उलटी करैं ताते मेघ के ऊपर ताहू पर सूर्य के समीप आनि बैठे यह अति आश्चर्य कौतुक किये ॥ ६ ॥ मंदिरन पर खड़ी आनंद भरी नारि निरखि कै बकुल फूल औ कुमकुम कहैं केसरि बारोरो ताकी कलिका को दृष्टि करति हैं गोसाईं जी कहत हैं परम करुना के धाम जो राम सो आपनी छवि सो सौ कोटि काम के मद को हरत हैं ॥ ७ ॥

मू० । आजुरघुबीरछबिजातिनहिंकछुकही। सुभगसिंहासनासीन सीतारमनभुवनअभिरामबहुकाममोभामही ॥ चारुचामर व्यजनछत्रमनिगनबिपुलदाममुकुतावलीजोतिजगिमगिरही मनहुँराकेससँगहंसउडगनबरहिमिलनआएहृदयजानिनिजनायही ॥ १ ॥ मुकुटसुंदरसिरसिभालबरतिलकभ्रूकुटिलकचकुंडलनिपरमआभालही । मनहुहरडरजुगलमकरध्वजकेमकरलागिश्रवननिकरतमेरकीबतकही ॥ २ ॥ अरुनराजीवदलनयनकरुनाअयनवदनसुषमासदनहासत्रयतापही । बिबिधकंकनहारउरसिगजमनिमालमनहुबगपांतिजुगमिलिचलीजलदही ॥ ३ ॥ पीतनिरमलचैलमनहुमरकतसैलपृथुलदामिनिरहीछूटितजिसहजही। ललितसायकचापपीनभुजबलअतुलमनुजतनदनुजबनदहनमंडनमही ॥४॥ जासगुनरूपनहिंकलितनिरगुनसगुनसंभुसनकादिशुकभक्तिदृढकरगही । दासतुलसीरामचरनपंकजसदावचनमनकरमचहैप्रीतिनितनिरवही ॥ ५ ॥ २९८ ॥

टी० । आजु० । आसान बैठे भुवन अभिराम चौदहों भुवन मे सुंदर है सही सत्य ॥ १ ॥ सुंदर चंवर पंषा छत्र तामो बहुत मनिगन औ मोतिन की पंक्ति अर्थात् झालरि लगा है औ दाम कहैं गुच्छा तिन की जोति जगमगाय रही मानो छत्र नही राकेस कहें पूर्न चंद्र है चमर नही हंस है चमर स्वेत होत है ताते हंस कहे मुक्तामनि नही है तारागन हैं औ पंषा नही है बर्हो कहैं मयूर है हृदय मे अपना स्वामी जानि मिलन आए पंषा मयूर के पच्छ का है औ मयूर के नाचने सम डोलत रहत है तातें मयूर कहे ॥ १ ॥ सुंदर मुकुट सिर पर है औ ललाट मे श्रेष्ट तिलक है भौहैं टेढी है औ दोऊ कुंडल परम प्रभा को लही है मानो सिव जी के डर ते कामदेव के ध्वजा के दोऊ मछरी कान मो लगी मेल ो बत

कह्यौ करत है इहां दोऊ कुंडल मकरी हैं भाव हमारे स्वामी काम को मारि डारे अब हम को भी सिव कदापि मारि डारैं यह हेतु सिव जी को स्वामी रघुनाथ को जानि मेल को बत कह्यौ करत हैं की इन के कहे सिवजो न मारैंगे मेल ह्वै जाय गो ॥ ३ ॥ लाल कमल सम नेत्र करुना के गृह हैं औ मुष परमा सोभा को घर तीनौ ताप हरता है और बिबिध प्रकार के कंकन हारादि अर्थात् बनमाला आदि औ उरमे गज मुक्ता की माला है सो मानो माला नहीं है जुगबग पांति है सरीर रूप मेघ सो मिलि चली है ॥ ४ ॥ मल रहित पीतरंग को बसन मानो सरीर रूप मरकत मनि के सैल पर पृथुल कहे समूह पीताम्बर रूप बिजुरी सहजही सोभाव जो चंचल ताको तजि कै छाय रही थिर होय रही पोनभुजा औ बल अतुलित है सुंदर बान धनुष धारे मनुष्य के सरीर सम सरीर औ दनुज रूपी बन के दहन कहे अग्नि औ पृथ्वी के भूषन कर्ता हैं ॥ ५ ॥ जाके गुन रूप को निर्गुन सगुन सिवादि नहो कहत अर्थात् नहीं निश्चै करि सकत संभु सनकादि सुक केवल भक्तिही को दृढ़ करि गहि रही है गोसांई जी कहत हैं कि हम तिन्ह राम के चरन कमल मे सदा मन बचन कर्म करि प्रीति को निबाहिवो चाहत हैं ॥ ६ ॥ ६ ॥

मू० । रामराजराजमौलिमुनिबरमनहरनसरनलायकसुषदायकरघुनायकदेषोरी । लोकलोचनाभिरामनीलमनितमालस्यामरूपसीलधामअंगछबिअनंगकोरी । भ्राजतसिरमुकुटपुरटनिरमितमनिरचितचारुकुंचितकचरुचिरपरमसोभानहियोरी । मनहुंचंचरीकपुंजकंजवृंदप्रीतिलागिगुंजतकलगानतानदिनमनिरिझयोरी ॥ १ ॥ अरुनकंजदलबिसाललोचनभूतिलकभालमंडितश्रुतिकुंडलवरसुंदरतरजोरी । मनहुंसंबरारिमारिललितमकरजुगबिचारिदीन्हेससिकहंपुरारिभ्रा

जतदुङ्ओरी ॥ २ ॥ सुंदरनासाकपोलचिवुकअधरअरुन-
बोलमधुरदसनराजतजबचितवतमुषमोरी। कंजकोसभीत-
रजनुकंजरागसिषरनिकररुचिररचितविधिबिचितडितरं-
गबोरी ॥ ३ ॥ कंबुकंठउरबिशालतुलसिकानवीनमालमधु
करवरबासबिबसउपमासुनिमोरी। जनुकलिंदजातनीलसैल
तेधसीसमीपकंदष्टदवरपतक्रबिमधुरघोरिघोरी ॥ ४ ॥ निर
मलअतिपीतचैलदामिनिजनुजलदनीलराषीनिजसोभाहि-
तविपुलबिधिनिहोरी। नैननिकोफलविशेषब्रह्मअगुनसगुन
बेषनिरषक्तजिपलकसुफलजीवनलेषोरी ॥ ५ ॥ सुंदरसी
तासमेतसोभितकरुनानिकेतसेवकसुषदेतलेतचितवतचित-
चोरी। बरनतयहअमितरूपथकितनिगमनागभूपतुलसिदा
सछबिविलोकिसारदभइभोरी ॥ ६ ॥ २९९ ॥

टी०। रामराजइ०। राजन के मौलि कहैं मस्तक रूप औ मु-
नि बरन के मन हरनिहारे औ सरन के जोग्य सुख के दाता र-
घुकुल के स्वामी वा रघुनाम जीव ताके स्वामी जो राम राजा तिन
को री सखी देखो सब जग के नेत्रों को रमनीय हैं औ नील मनि
सम स्याम औ चिक्कन औ तमाल सम पुष्ट औ स्याम हैं औ रूप औ सी
ल के गृह हैं औ कोरी कहैं करोरिन काम की छबि है जाको ॥१॥ सि
र में पुरट कहैं सोना ताको मुकुट निरमित कहैं बनायो औ मनि
न करि जड़ित सुंदर सोभत औ सुंदर टेढे बाल तिनके उत्कृष्ट सो
भा थोरी नहीं मानो बाल नहीं भ्रमरन को समूह हैं मुख औ
दोऊ नेत्र एही कमलन के द्वंद हैं तिनके प्रीति लागि गुंजार कर
त हैं सो सुंदर तान करिगान ते सूर्य रूप मुकुट कों रिझायो भा
व सूर्य को चंचल सुभाव है ताको रीझि कै छोड़ि थिर ह्वै बैठे ॥
२ ॥ लाल कमल के दल समान बिसाल नेत्र हैं औ भौंह करि ति
लक करि भाल सोभित है औ श्रेष्ट कुंडलनि की जोड़ी अति सुं-

दर कानन में हैं मानो संवरारि कहैं काम ताकों मारि कुंडल न हीं है ताके पताका केलित दोऊ मछरी हैं तिनको मुख रूप चं-द्रमा कहँ सिवनू दियो सो दोऊ ओर सोभत हैं ॥ ३ ॥ नासिका औ कपोल औ ठोड़ी सुंदर हैं औ ओठ लाल हैं बोल मधुर है जब मुख मोरि देखत हैं तब दांतै सोभत हैं मानो कमल कोस के भीतर कंज कहैं कमल राग कहैं लाल अर्थात लाल कमल तिनके सुंदर सिषर का समूह अर्थात पषुरिन का समूह विधि कहैं ब्रह्मा ने राश्चर्य्य बिजुरी के रंग में बोरि कै रचित किया है दूजा कंजको स मुख कोस है ताके भीतर लाल कमल का शिषर को समूह दा तै अरुन है तड़िता को रंग झलक है वा कंज राग कहैं पद्मराग मनि शृंग तिनके समूह ॥ ४ ॥ संष सम कंठ है छाती चौड़ी है तामे नवीन तुलसी की माला है तेहि विषे श्रेष्ट सुगंध तें विवस ह्वै भ्रमर घेरि रहे हैं ताकी जो उपमा है री सखी सोसुनु मानो कलिंद जात कहैं जमुना जी नील परवत तें धसी कहैं गिरी तिन के समीप कंद वृंद कहैं मेघन को समूह दूजा जमुना स्याम तुल-सी की माला है श्री राघव को सरीर नील परवत है धसि बो माला को नीचे के ओर लटकनो है ताके समीप जो भ्रम रन का भीर है सो मेघ है माला के पुष्प के रस लेइ उड़त हैं मुख से जो रस ट-पक परत है सो बरसना है जो गुंजार सब्द करत हैं सो गरजना है ॥ ५ ॥ अति निर्मल जो पीत बसन बिजुरी सम ताकों मानों स्याम मेघ ने बहुत प्रकार निहोरा करि अपने सोभा हित राखी है दूजां स्याम मेघ स्याम सरीर है पीत चैल दामिन में रूपक अलंकार है मनु उतप्रेक्षा है नील जलद मे रूपकातिसयोक्ति तीन अलंकार का संकर है विशेष करि नैनन को फल रूप ब्रह्म अगुन सगुन वेष श्री रामचंद्र को निमेष तजि देखहु तब अपने जीवन को सुफल जानो ॥६॥ करुना निकेत करुना के गृह निगम बेद नाग भूप शेष ॥

मू० । राग केदारा । सषिरघुनाथरूपनिहारु सरदविधुरविसुमन मनसिजमानभंजनिहारु । स्यामसुभगसरीरजनमनकामपूरनिहारु चारुचंदनमनहुंमरकतसिषरलसतनिहारु ॥ १ ॥ रुचिरउरउपवीतराजतपदिकगजमनिहारु । मनहुंसुरधनुनषतगनविचतिमिरगंजनिहारु ॥ २ ॥ विमलपीतदुकूलदामिनिदुतिविनिंदनिहारु । बदनसुषमासदनसोभितमदनमोहनिहारु ॥ ३ ॥ सकलअंगअनूपनहिकोउसुकबिबरननिहारु । दासतुलसीनिरषतहिसुषलहतनिरषनिहारु ॥ ४ ॥ ॥ ३०० ॥

टी० । सषिर० । सरद को पूर्न चंद्र औ अस्विनी कुमार औ काम के अहंकार भंजनिहार रूप निहारु ॥ १ ॥ सुंदर चंदन जो सरीर मे है सो मानो मरकत के सिषर पर निहारु कहैं वरफ लसत है ॥ २ ॥ सुंदर उर मे जग्योपवीत औ पदिक कहैं चौकी औ गजमुक्तन का हार सोभत है सो मानो जग्योपवीत नही है इंद्र धनु है इहां केवल आकार मे उपमा है रंग मे नही गज मनिहार नही है तारागन है ताके बीच मो चौकी नही है तिमिर गंजनिहारु कहैं सूर्य हैं ॥ ३ ॥ दामिनि के दुति को निंदा करनि हारो निर्मल पीत वसन है जाको औ मदन को मोहन करनि हारो परमा सोभा को गृह को सोभित बदन जाको ॥ ४ ॥ निरषि निहार देषने वालो पर ॥ ५ ॥ ८ ॥

मू० । सषिरघुवीरमुषछबिदेषु चित्तभीतिसुप्रीतिरंगसुरूपताअवरेषु ॥ नयनसुषमानिरषिनागरिसुफलजीवनलेषु । मनहुंविधिजुगजलजबिरचेससिसुपूरनमेषु ॥ १ ॥ भ्रकुटिभालविसालराजतरुचिरकुंकुमरेषु । भ्रमरद्वैरविकिरनल्याएकरनजनुउनमेषु ॥२॥ सुमषिकेससुदेससुंदरसुमनसंजुतपेषु । मनहुउडगनवाह्नआयेमिलनतमतजिदेषु ॥ ३ ॥ श्रवनकुंडलमनहुं

गुरुकविकरतबादविशेषु । नासिकाद्विजअधरजनुरह्योमदन करिबहुवेषु ॥ ४ ॥ रूपबरनिनहिसकतनारदसंभुसारदसेषु कहैतुलसीदासक्योमतिमंदसकलनरेषु ॥ ५ ॥ ३०१ ॥

टी० । चित्त रूपी भीत पर सुंदर प्रीति रूपी रंग तें ता स्वरूप कों लिषि लेऊ ॥ १ ॥ हे नागरि नेत्रों की परमा सोभा देषि कै अपने जीवन को सुफल लेखो मानो नेत्र नहीं हैं ब्रह्मा ने मेख रासि के पुर्न चंद्रमा मे जुगल कमल बनाए हैं इहां मेष रासि को पूरनचंद्र श्री राघव को मुष है मेषके चंद्रमा निर्मल होत है औ मे षही के संक्रांति मे श्रीराघव को जन्मह्न हैं ताते मेष के चंद्रमाकी उपमा दिए चंद्रढिग कमल कैसे विगसित भए सो हेतु आगे लिष त हैं ॥ २ ॥ भौंहैं युक्त भाल जो विसाल है तामे सुंदर केसरि को जुगल रेषा सोभत है मानो भौंह दोनो भ्रमर है तिन्हो ने उन्मेष कहैं विकास करिवे हेतु नेत्र रूप कमल के कुमकुम रेषा रूप सूर्य किरिन को ल्याए भाव यह कि मुख रूप चंद्र देषि संपुटित भए हैं तिन को तिलक रेख रूप सूर्य किरिन ते प्रफुल्लित करायो चाहत हैं छवि रूप मकरंद के पान करिवे हेतु ॥ ३ ॥ सुंदर मुष पर केस अपने भाग पर सुंदर पुष्पन जुत देषु मानो फूल जो है सो तारागन हैं तिन्ह के वाह ते बाररूप तम मुष रूप चंद्र तें मिलन आयो ॥ ४ ॥ कानन मे जो दोऊ कुंडल है सो दृहस्पति सुक्र हैं परस्पर बाद करत हैं इहां कुंडलन को हलना सो बाद है नाक दांत ओठ नहीं है मानो काम बहुत वेष करि टिक रह्यौ है ॥ ५ ॥ सकल न रेषु सब मनुष्यन मे ॥ ६ ॥ ८ ॥

मू० । रागजयतश्री । देषोराघोवदनबिराजतचारु । जातनबरनिबि लोकतहीसुषमुषकिधौंछविबरनारिसिंगारु । रुचिरचिबुक- रदजोतिअनूपमअधरअरुनसितहासनिहारु मनोससिकर बस्योचहतकमलमहुंप्रगटतदुरतनवनतविचारु ॥ १ ॥ नासि

कसुभगमनजुंसुकसुंदरचितवतचकितआचरजअपारू । कलकपोलम्टुबोलमनोहररीझिचितचतुरअपनपौवारू ॥२॥ नयनसरोजकुटिलकचकुंडलभ्रकुटिसुभालतिलकसोभासारू मनजुकेतुकेमकरचापसरगयोबिसरिभयौमोहितमारू ॥ ३ ॥ निगमसेषसारदशुकसंकरबरनतरूपनपावतपारू । तुलसिदासकहैकहौकौनविधिअतिलघुमतिजड़कूरगँवारू ॥ ४ ॥ ३०२॥

टी० । देषो हू० । हे सखी देषो श्री राघव को मुख सुंदर सोभत है देखतही जो सुख होत है सो बरन्यो नहीं जात है सुख है कैधौं श्रेष्ट छबि रूप स्त्री को शृंगार है ॥ १ ॥ सुंदर ठोढ़ी है औ दांतनि की जोति अनुपम है ओठ लाल औ हँसी उज्जल इन सब को निहार मानो हँसी रूप चंद्रमा को किरन ओठ रूप कमल मो वसो चाहत है पर बिचार नहीं बनत कबहूं प्रगटत कबहूं छिपि जात है अर्थात जब रघुनाथ मुसुकात तब प्रगटत जब मुसुकाव छोड़ देत तब छिपि जात ॥ २ ॥ नासिका जो सुंदर सो मानो सुवा को चोंच है अपार आश्चर्य करि देखन वारे चकित होय ताको चितवत है सुंदर कपोल है औ कोमल बोल मनोहर है ताको सुनि चतुर जन चित्त में रीझि के अपनो अपनपो कहै देह ध्यास वा आत्मा अपना नेवछावरि करत ॥ ३ ॥ नेच कमल सम हैं टेढ़े वाले है औ कुंडल भौंह सुंदर भालतिलक ए सब सोभा को सारांस रूप हैं मानो कुंडल नहीं केतु कहै ध्वजा पर के मीन हैं औ भ्रकुटी नहीं हैं चांप है तिलक नहीं है वान है यों रघुबर को मुख देखि मोहित होय काम इन सब को बिसारि गयो ॥ ४ ॥ ५ ॥ १० ॥

मू० । राग ललित । आजुरघुपतिमुखदेखतलागतसुखसेवकसुरूख सोभासरदससिसिहाई । दसनबसनलालविशदहासरसाल मानोहिमकरकररारवेराजीवमनाई ॥ अरुननैनविसालल

ललितभृकुटिभालतिलकचारुतरकपोलचिबुकनासिकासुहाई
बिथुरेकुटिलकचमानहुंमधुलालचअलिनलिनजुगलऊपरर
हेलुभाई ॥ १ ॥ श्रवनसुंदरसमकुंडलकलजुगमतुलसिदास
अनूपउपमाकहीनजाई। मानहुंमरकतसीपसुंदरससिसमी
पकनकमकरजुतबिधिबिरचीबनाई ॥ २ ॥ ३०२ ॥

टी० । हे सखी आजु रघुपति मुख देषत सुख लागत कहैं सुख होत है वह मुख कैसो है की सेवक पर सुंदर रूप पूर्वक रहत है औ जाके सोभा कों सरद पूनों को चंद्रमा सिहात है दसन बसन कहैं ओठ सो लाल है औ हांस उज्जल रसीला है मानो मुख नहीं चंद्रमा है उज्जल हांस नहीं ताकी कर कहैं किरन है तिहि से ओष्ट रूप कमल को मनाइ राखे भाव चंद्रमा को कमलते बिरोध है ताको छोड़ाय राखे ॥ १ ॥ लाल नैन बिसाल है सुंदर है औ कपोल ठोढ़ी नासिका सुंदर है औ बिखरे भए टेढ़े बार हैं सो मानो बार नहीं है भ्रमरै हैं छबि रूप मधु के लालच तें जुगल नेत्र रूप कमल के ऊपर सो भाय रहे हैं ॥ २ ॥ कान सुंदर हैं ताके सम कुंडलोकल कहैं सुंदर दुइ हैं गोसाईं जीकहत है की उपमा रहित हैं ताते उपमा नहीं कही जात है मानो कान नहीं हैं मरकत मनि जो स्याम रंगको ताको सीप संदर है सो मुख रूप चंद्रमा के निकट सोने के कुंडल रूप मकरी जुत ब्रह्मा जी ने बनाइ रच्यो है संका काहे की उपमा नहीं कहि जाति है फेरि उपमा काहे सो क्यों उत्तर। जब उपमा न पाए तब जो कबहूं न हो निहार सो उपमान ते ठहराए अर्थात मरकत मनि की सीप न होति औ सोने की मकरी नहीं होति ॥ ३ ॥ ११ ॥

मू० । राग भैरव । प्रातकालरघुबीरबदनछबिचितैचतुरचितमेरे ।
होहिंबिवेकबिलोचननिरमलसुफलसुसीतलतेरे ॥ भालबि-

भालविकटभ्रुकुटीबिचतिलकरेषरुचिराजै। मनहुंमदनतम तकिमरकतधनुजुगलकनकसरसाजै॥ १ ॥ रुचिरपलकलो चनजुगतारकस्यामअरुनसितकोए। जनुअलिनलिनकोस-मह्नंबंधुकसुमनसेजसजिसोए ॥ २ ॥ बिलुलितललितकपो लनिपरकचमेचककुटिलसुहाए। मनोबिधुमहँबनरुहबिलो किअलिबिपुलसकौतुकआए ॥ ३ ॥ सोभितस्रवनकनककुंड लकलंबितबिवभुजमूले । मनहुं केकितकिगहनचहतजुग उरगइंदुप्रतिकूले॥ ४ ॥ अधरअरुनतरदसनपांतिबरमधुर मनोहरहासा। मनहुंसोनसरसिजमहुंकुलिसनितडितस हितकृतवासा ॥ ५ ॥ चारुचिबुकशुकतुंडबिनिंदकसुभगसु उन्नतनासा । तुलसिदासछविधामराममुखसुखदसमनभव त्रासा ॥ ६ ॥ ३०४ ॥

टी० । प्रातइ० । हे चतुर चित्त मेरे प्रात काल रघुवीर के मुख की छबि कों देषो तब विवेक रूपी नेत्र तेरे मल रहित फल सहित औ सीतल होहिं चतुर कहिवे कौ यह भाव कि मुख छबि के सन मुख कराया चाहत हैं ताते बड़ाई दै बोले ॥ १ ॥ विसाल भाल औ भौंह के बीच मे तिलक की रेषा सुंदर सोभति है मानो मुख रूप काम ने बाल रूप तम को ताकि कै भौंह रूप धनुष पर पीत तिलक रूप युगल सोने को वान साध्यौ है ॥ २ ॥ पलकैं औ नेत्रैं सुंदर है तारक कहैं पुतरी स्याम है औ ललाई मिश्रित स्वेत आंख के कोए कहैं कोने हैं सो मानो पुतली रूप भ्रमर नेत्र रूप कमल के कोस में ललाई रूप दुपहरि के फूल की सज्या बिछाय सोए ॥ ३ ॥ अरुझे स्याम टेढ़े वार सुंदर कपोलन पर सोभत है मानो म ष चंद्र मह नेत्र रूप वनरुह कहैं कमल देषि कै केस रूप भ्रमरैं कौतुक सहित अर्थात् एक से एक मे मिले क्रीड़ा करते आये ॥ ४ ॥ लंबे जो विवि कहैं दोऊ भुजा हैं तिन के मूल मे सुंदर सोने के

कुंडल कानो के सोभित हैं सो मानों कुंडल रूप मयूर को देखि कै दोऊ भुजा रूप सर्प जो चंद्रमा के प्रतिकूल मे हैं अर्थात् मुख चंद्र के सन्मुष मुष नहीं है पार्श्वभागमे है सो पकड़ा चाहत है भाव कुंडल मयूर को मुष चंद्र के अनुकूल जानि के ॥ ५ ॥ ओठ लाल तर है दांतनि की पांति श्रेष्ट है औ मधुर हंसी मन को हर निहारी है मानो ओठ नहीं सोन कहैं लालरंग के सरसिज कहैं कमल है तामे दांत पंक्ति नहीं कुलिस कहैं हीरन का समूह है सो तड़िता रूप हंसी सहित वास कियो है वा दांतनि की चमक सो तड़िता है ॥ ६ ॥ सुंदर ठोढ़ी है औ सुवा के ठोर को निंदा करनि हारी अति सुंदर उन्नत नासिका है गोसांई जी कहत हैं छबि को धाम औ सुष को दाता औ भवत्रास को समन करनिहारो श्री राम जी को मुष है ॥ ७ ॥ १२ ॥

मू० । राग केदारा । सुमिरतश्रीरघुबीरकीबाहैं होतसुगमभवउदधिअगमअतिकोउलांघतकोउतरतथाहैं । सुंदरस्यामसरीरसैलतेंधसिजनुद्वैजमुनाअवगाहैं अमितअमलजलबलपरिपूरनजनुजनसीसिंगारसविताहैं ॥ १ ॥ धारैंवानकूलधनुभूषनजलचरभंवरसुभगसबघाहैं । बिलसतिबीचिविजैविरुदावलिकरसरोजसोहतसुषमाहैं ॥ २ ॥ सकलभुवनमंगलमंदिरकेद्वारविसालसोहाईसाहैं । जेपूजीकौसिकमषरिषवनिजनकगनपसंकरगिरिजाहैं ॥ ३ ॥ भवधनुदलिजानकीबिवाहीभएविहालनृपालत्रपाहैं । परसुपानिजिन्हकिएमहामुनिजेचितएकवऊंनकृपाहैं ॥ ४ ॥ जातुधानतियजानिवियोगिनिदुषईसीयसुनाइकुचाहैं । जिन्हरिपुमारिसुरारिनारितेइसीसउघारिदिवाईधाहैं ॥ ५ ॥ दसमुषविवसतिलोकलोकपतिविकलविनाएनाकचनाहैं । सुवसवसेगावतजिन्हकोजसुअमरनागनरसुमुषिसनाहैं ॥ ६ ॥ जेभुजबेदपुरानसेषसुकसारद

सहितसनेहसराहैं । कलपलताऊकिकलपलतावरकामदु-
हाऊकिकामदुहाहैं ॥ ७ ॥ सरनागतआरतप्रनतनिकोदै
दैअभयपदओरनिवाहैं । करिआईकरिहैंकरतीहैंतुलसिदा
सदासनिपरछाहैं ॥ ८ ॥ ३०५ ॥

टी० । सुमिरतहू० । श्री रघुनाथ के भुजन को स्मरन करत मात्र मे संसार रूपी समुद्र जो अति अगम है सो सुगम होत पराभक्ति वाले तो वाही काल लांघि जात औ सकामा भक्तिवाले प्रारब्धभोग पूर्वक संसार समुद्र को थाहैं उतरत अर्थात् किंचित देर होत पर उतरै मे संदेह नहीं ॥ १ ॥ संदर स्याम सरीर रूप परवत ते मानो द्वै जमुना की धारा अवगाहैं कहैं अथाहैं घसी भाव नीचे को गिरी मिति रहित निर्मल वल रूप जल करि भरी जमुना जो सूर्य से जनमो हैं यह भुजा रूप जमुना श्रृंगार रस रूप सविता कहैं सूर्य से जनमी हैं ॥ २ ॥ वान धार है धनुकूल है जो भूषन पहिरे हैं सो जलचर हैं औ सब थाहैं भवर हैं थाह अंगुरी के बीच को कहत हैं जाको कोऊ देश मे गाई कहूं थाई कहूं गासा कहत हैं नदी मे कमल रहत है इहां सुषमा कहैं परमा सोभा करि सोहत जो कर सो कमल है ॥ ३ ॥ सकल भुवन रूप मंदिर के मंगल रूप जो दरवाजा विसालता के सुंदर साहैं कहै चौकठ को बाजू भुजा हैं भाव बाजू आधार ते दरवाजा रहत है तैसे सर्व मंगल इन भुजन के आधार तें रहत हैं औ जेहि भुजन को विश्वामित्रजी के जज्ञ मे रिषि सब औ विवाह मे जनकजी औ असुरन के जय किए पर गणप कहैं लोकपाल सब औ शिव पार्वतीजू काशी मे जे मरै तेहि के मोक्ष हेतु पूजी ॥ ४ ॥ जिन्ह भुजन ने सिव धनु तोरि जानकी जू को बिवाही राजा सब टपा कहैं लज्जा करि विहाल भए औ जेहि भुजन ने परसुराम को महामुनि किए अर्थात् सांत बनाय दिए जे परसुराम कृपा जुक्त काहू को कबहू न देषे ॥ ५ ॥

श्री जानकी जू को वियोगिनि जानि निसाचरन की स्त्री कु चाहैं सुनाय दुष देत भई तव जिन्ह भुजन ने सत्रु को मारि कै तेई निसाचरन की स्त्रीन की सीस उघारि कै अर्थात् विधवा करि कै षा कहैं टोहाई देवाई दाहै पाठ होय तो अस अर्थ करना उन के पतिन के चिता को दाहैं कहैं आंचे देवाई अर्थात् दग्ध करिवे समै मे ॥ ६ ॥ तीनौ लोक के लोकपालन को रावन विकल औ विसेष वसकरि नाक ते चना बिनाए सो सुवस वसे जिन्ह भुजन को जस देवता नाग नरन स्त्री सनाहैं कहैं अपने पतिन सहित गावति हैं ॥ ७ ॥ जेहि भुजन को बेद पुरान सेष सुक सरस्वती नेह सहित सराहैं हैं कि कल्पवृक्ष के कल्पवृक्ष औ कामधेनहूं के कामधेनु हैं भाव कल्पवृक्ष कामधेनु जो सब को मनोरथ पूरन करत तिनहू के मनोरथ पूरन करत हैं ॥ ८ ॥ आरत जीव सरनागत मे आय प्रनाम करत तिन को अभै पद देदे ओर कहैं अंत लो निवाहत भाव आदि सों अंत लो निवाहत गोसांई जी कहत हैं सोकर दासनि पर छाहैं करि आए औ करैंगे औ करत हैं ॥ ९ ॥ १३ ॥

मू० । रागभैरो । रामचंद्रकरकंजकामतरुवामदेवहितकारी सिय
सनेहवरबेलिबलितवरप्रेमबंधुवरबारी । मंजुलमंगलमूलमू
लतनुकरजमनोहरसाषा रोमपरननषसुमनसुफलसबकाल
सुजनअभिलाषा ॥ १ ॥ अविचलअमलअनामयअबिरलललि
तरहितछलछाया । समनसकलसंतापपापरुजमोहमानमद
माया ॥ २ ॥ सेवहिशुचिमुनिभंगबिहंगमनमुदितमनोरथ
पाए । सुमिरतहियहुलसततुलसीअनुरागउमगिगुनगाए ॥ ३
३०६ ॥

टी० । श्री रामचन्द्र का हस्तकमल रूप जो कल्पवृक्ष सो वामदेव कहैं सिवजू को हितकारी है औ श्री जानकी जू को स्नेह सोई श्रेष्ट लता है तेहि करि बलित कहैं आछादित है औ श्रेष्ट प्रेम

जो बंधु का सोई बरबारि कहैं बाढ़ है अर्थात ताको घेरा है ॥ १ ॥ हस्त कमल रूप कल्प वृक्ष उज्जल मंगल मूल को मूल कहैं जड़ सो तनु कहैं सरीर है औ करज कहैं अंगुरी सब साखा हैं हस्त में जो रोम है सो वृक्ष को पत्र है नख फूल है औ सुंदर जनन का जो अभिलाषा सब काल में सोई सुंदर फल है भाव अभिलाषानुसार फल फल्यो रहत है ॥ २ ॥ विशेषकरि चंचलता रहित निर्मल औ रोग रहित भाव जैसे भिलामा आदि वृक्ष की छाया रोगकारी होति है तैसी नहीं अविरल कहैं सघन हैं देखिबे में ललित है औ छल करि रहित छाया है अर्थात ठग आदि वृक्ष लगाय भलो थल बनाय राखत है कि कोई पथिक सुथल देखि बास करै गो ताको धनादि हरोंगो तस नहीं फिर छाया कैसी है लसक संताप अर्थात दैहिक दैविक भौतिक समन करनि हारी है औ पाप औ रोग औ माया करि जो मोहमान मद ताको समन करनिहारी ॥ ३ ॥ वृक्ष को भ्रमर पच्छि सेवत हैं इहां पवित्र जो मुनिन को मन सोई भ्रमर औ पच्छी है सो मन भाए रस फल पाए हरखित ह्वै सेवत गुसाईं जी कहत हैं वा कल्पवृक्ष के तो नीचे गए सुख पावत है औ इहां स्मरन करत मात्र में हिय हुलसति औ गुनगान किए ते अनुराग उमगि चलत ॥ ४ ॥ १४ ॥

मू० । रामचरनअभिरामकामप्रदतीरथराजबिराजे । संकरहृदयभक्तिभूतलपरप्रेमअछयबटछाजे ॥ स्यामचरनपदपीठअरुनतललसतिबिसदनखश्रेनी। जनुरबिसुतासारदासुरसरिमिलिचलिललितत्रिबेनी ॥ १ ॥ अंकुसकुलिसकमलध्वजसुन्दरभवरतरंगबिलासा । मज्जहिंसुरसज्जनमुनिजनमनमुदितमनोहरबासा ॥ २ ॥ बिनुबिरागजपजागजोगब्रतबिनुतीरथतनुत्यागे । सबसुषसुलभसद्यतुलसीप्रभुपदप्रयागअनुरागे ॥ ३ ॥ ३०७॥

टी० । रामद्र० । चरन में तीरथ राज प्रयाग को रूपक करि क

हत हैं श्रीराम को चरन रमनीय मनोरथ दाता प्रयाग रूप सोभै है शंकर को जो प्रेम सोई अक्षय वट है सो शंकर के हृदय की भक्ति रूप भूतल पर सोहत है ॥ १ ॥ पद पीठ श्याम वर्ण है तर वा लाल है औ नखन्ह की पंक्ति उज्वल सोहति है मानऊ यमुना सरस्वती औ गंगा मिलि के सुंदरि त्रिबेनी चली है सरस्वती जैसें प्रयाग में गुप्त हैं तैसे तर वो गुप्त है ॥ २ ॥ अंकुशादि जे चिन्ह हैं ते भँवर तरंग के बिलास हैं सुरसंत औ मुनि जन अर्थात मननशील ते मनोहर चरन रूप प्रयाग में वास औ मज्जन करत हैं इहां पद के वर्णिबे आदि में जो हर्षना औ पुलकना है सो मज्जन है कहतसुनतहर्षहिंपुलकाहीं। तेसुकृतीमनमुदितनहाहीं ॥ औ ध्यान करना वास करना है॥ पदराजीवबरनिनहिंजाहीं । मुनिमननमधुपवसहिंजिन्हमाहीं ॥ ४ ॥ १५ ॥

मू० । रागबिलावल । रघुबररूपबिलोकुनेकुमन । सकललोक
लोचनसुखदायकनखसिखसुभगस्यामसुंदरतन ॥ चारुचरन
तलचिन्ह । चारिफलचारिदेतपरराजतनचारिजानिजन ॥
खजनुकमलदलनिपरअरुनप्रभारंजिततुषारकन ॥ १ ॥
जंघाजानुआनुउरऊरुकटिकिंकिनपटपीतसुहावन । रुचिर
नितंबनाभिरोमावलित्रिबलिवलितउपमाकछुआवन ॥ २ ॥
भृगुपदचिन्हपदिकउरसोभितमुकुतमालकुंकुमअनुलेपन।
मनऊंपरसपरमिलिपंकजरवि प्रगट्योनिजअनुरागमुजसघ
न ॥ ३ ॥ बाऊबिसाललतितसायकधनुकरकंकनकेयूरम
हाधन । बिमलदुकूलदलनदामिनिदुतिजग्योपवीतलसत
अतिपावन ॥ ४ ॥ कंबुग्रीवछबिसीवचिबुकद्विजअधरकपो
लबोलभयमोचन । नासिकसुभगकृपापरिपूरनतरुनअरु
नराजीवबिलोचन ॥ ५ ॥ कुटिलभृकुटिबरभालतिलकरु-
चिशुचिसुंदरतरश्रवनबिभूखन । मनहुंमारिमनसिजपुरा

रिदिएससिहिचांपसरमकरअदूषन॥ ६ ॥ कुंचितकचकंच-
नकिरीटसिरजटितजोतिमयबङ्गविधिमनिगन। तुलसिदास
रविकुलरविछबिकबिकहिनसकतशुकसंभुसहसफन॥ ७ ॥
॥ ३०८ ॥

टी०। रघुवरइ०। सुंदर तरवा मे जे अंकुशादि चारि चिन्ह हैं ते जन जानि के ललकारि के चारो फल देत हैं वा अंकुश अर्थ कुलिश धर्म कमल कामध्वज मोक्ष देत है नष मानङ्ग नहीं सोहत है कमल दलनि पर प्रातःकाल के सूर्य के प्रभा तें रंजित ओस कण सोहत है ॥ २ ॥ वलित सहित ॥ ३ ॥ भृगु पद को चिन्ह और धुकधुकी औ मुक्तामाल और केसर को अनुलेपन सोहत हैं मानो कमल औ सूर्य परस्पर मिलि के अपना अनुराग औ घनो सुयश प्रगट कियो है इहां भृगु पद चिन्ह कमल पदिक सूर्य मुक्तामाल सुयश कुंकुम को अनुलेपन अनुराग है ॥ ४ ॥ केयूर विजायठ महाधन बड़े मोल का ॥ ५ ॥ द्विज दांत ॥ ६ ॥ ठेढो भौं हैं औ श्रेष्ठ भाल पर सुंदर तिलक है और कुंडल की रुचि कहिये कांति सुंदर है मानो शिव ने कामदेव को मारि के ताकों चाप शर औ दूषण रहित मकर चंद्रमा को दियो है यहां मुख चंद्र है भृकुटी चांप है तिलक शर है कुंडल मकर है ॥ ७ ॥ ७ ॥ १५ ॥

मू०। राग कान्हरा। देषोरघुपतिछबिअतुलितअति। जनुतिलोक
सुषमासकेलिविधिराषीरुचिरअंगअंगनिप्रति॥ पदुमरागरु
चिम्टदुपदतलध्वजअंकुसकुलिसकमलएहिसूरति॥ रहीआ
निचङ्गविधिभगतनकीजनुअनुरागभरीअंतरगति॥ १ ॥ स
कलसुचिन्हसुजनसुषदायकऊरधरेषविशेषविराजति। मन-
ङ्गभानुमंडलहिसवारतधर्योसूतविधिसुतविचित्रमति॥ २ ॥
सुभगअंगुष्टअंगुलीअविरलकछुकअरुननषजोतिजगमगति
चरनपीठउन्नतनतपालकगूढ़गुलफजंघाकदलीजति ॥ ३ ॥

कामतूनतलसरिसजानुजुगऊरूकरिकरकरभहिबिलषावति रसनारचितरतनचामीकरपीतवसनकटिकसेसरबसति ॥ ४ ॥ नाभीसरत्रिबलीनिसेनिकारोमराजिसेवालछबिपावति । उर मुकतामनिमालमनोहरमनहुंहंसअवलीउड़िआवति ॥ ५ ॥ हृदयपदिकभृगुचरनचिन्हवरबाहुबिसालजानुलगिपहुंच- ति । कलकेयूरपूरकंचनमनिपहुंचीमंजुकंजकरसोहति ॥ ६ ॥ सुजबसुरेषसुनषअंगुलिजुतसुंदरपानिमुद्रिकाराजति अँगुलीचानकमानबानछबि सुरनिसुषदअसुरनिउरसालति ७ स्यामसरीरसुचंदनचरचितपीतदुकूलअधिकछबिछाजति नीलजलदपरनिरखिचंद्रिकादुरनि त्यागिदामिनिजनुदमक- ति ॥ ८ ॥ जग्योपवीतपुनीतबिराजतगूढ़जंचुबनिपीनअंसतति सुगढ़पृष्ठउन्नतकृकाटिकाकंबुकंठसोभामनमानति ॥ ९ ॥ स रदसमयसरसीरुहनिंदकमुखसुखमाकछुकहनहिबनति । निरषतहीनयननिनिरूपमसुखरबिसुतमदनसोमदुतिनिदर ति॥१०॥अरुनअधरद्विजपांतिअनूपमललितहसनिजनमन आकरषतिबिद्रुमरचितबिमानमध्यमानोसुरमंडलीसुमनचय बरषति॥ ११ ॥ मंजुलचिबुकमनोहरहनुथलुकलकपोलना सामनमोहति । पंकजमानबिमोचनलोचनचितवनिचारुअ मृतजलसींचति ॥ १२ ॥ केसरुदेसगंभीरबचनबरश्रुतिकुंड लडोलनिजियजागति । लखिनवनीलपयोदरसितसुनिरुचि रमोरजोरीजनुनाचति ॥ १३ ॥ भौंहैबंकमयंकअंकरुचिकुं कुमरेषभालभलिभ्राजति । सिरसिहेमहीरकमानिकमयमु कुटप्रभासबभुवनप्रकासति ॥१४॥ बरनतरूपपारनहिंपावत- निगमसेषसुकसंकरभारति । तुलसिदासकेहिबिधिबषानिक हैयहमनबचनअगोचरमूरति ॥ १५ ॥ ३०९ ॥

टी० । देखो इ० ॥ १ ॥ लाल मणि की कांति सम कोमलतरवा

है और तामे ध्वज अंकुश कुलिश कमल एहि चारि रेखन की सूरति है मानो से रेखा अन्तर्गति अनुराग भरी से आर्तजिज्ञासु अर्थार्थी ज्ञानी चारो प्रकार के भक्तन को आनि रही ॥ २ ॥ सब श्री रघुनाथ के पदन के सुंदर चिन्ह सुजनन के सुखदायक हैं पर उर्द्ध रेखा बिशेष सोभति है मानो सूर्य मंडल के सँवारते मे बिचित्र मति बिस्वकर्म्मा ने सूत धर्यो है यहां तरवा को रंग लाल है ताते सूर्य मंडल की उपमा कही ॥ ३ ॥ उन्नत ऊंचा नत मालक सरनागत पालक गूढ़ गुलुफ घुटना ढँका है ॥ ४ ॥ करि कर करभहिं बिलखावति हाथी के बच्चा के सुंड कों बिलखावति है रसना किंकिनी चामी कर सुवर्ण सरबमति तरकस ॥ ५ ॥ नाभी तड़ागहै तेहि तड़ाग की सीढ़ी त्रिवली है औ तामेरोमन की पांति सेवार की छवि पावति है ॥ ६ ॥ केयूर पूर कंचन मनि कंचन औ मणि ते पूर कहैं भरा बिजायठ है ॥ ७ ॥ सुजव सुरेख सुंदर जव की रेखा है अंगुली चान अंगुस्ताना ॥ ८ ॥ मानो श्याम मेघ पर चंद्रिका देखि के चंचलता त्यागि के दामिनि दमकति है यहां श्याम मेघ श्यामसरीर है चंदन चंद्रिका है दामिनि पीताम्बर है दामिनि के स्थिर होने का यह भाव कि जब चंद्रिका ने अपना मर्याद छोड़ा तब हम क्यों न छोड़ै ॥ ९ ॥ सुंदर यज्ञोपवीत सोभति है हँसुली गुप्त है औ बिस्त्रित औ पुष्ट कांध है औ पीठि की सुंदर गढ़नि है छकाठि का कहैं लेवाड़ी कोउ देश में जाको जोता कहत हैं अर्थात गले को पृष्ट भाग सो उन्नत है ॥ १० ॥ रविसुत अश्विनी कुमार सोम चंद्रमा ॥ ११ ॥ ओठ लाल है औ दांतनि की पांति उपमा रहित है औ जन के मन को खींचनिहारी सुंदरि हँसनि है मानो मंगा के बिमान के मध्य मे देवता की मंडली फूलन के समूह बर्षत हैं इहां बिद्रुम ते रचित बिमान ओठ हैं सुर मंडली दांत है फूलन के समूह हँसी है ॥ १२ ॥ चिबुक कपोलन के नीचे को भागहनु

कहैं ठोढ़ी पंकज कमल ॥ १३ ॥ मानो नवीन मेघ देखि कै औ गर्जनि सुनि कै सुंदर मोर की जोरी नाचति है इहां नवीन मेघ केश हैं गंभीर बचन गर्जनि है कुंडल मोर है डोलनि नाचनि है ॥ १४ ॥ भौहैं जो टेढ़ी हैं सो चंद्रमा के चिन्ह सम हैं भाव बिना अंक कोमयंक उत्पाती होत है तातें भ्रू को चन्द्रमा कह्यौ सत सई में बिहारी ने लिखा है ॥ नीचनिचाईज्यौंतजै तौचितअधिकडरात । ज्यौंनिकलंकमयंकलषि लोगगनैउत्पात ॥ १५ ॥ १६ ॥

मू० । राग म० । आलीरीराघोजूकेरुचिरहिडोलनाझूलनजैये ॥ फटिकभीतिसुचारुचहुंदिसिमंजुमनिमयपौरि गचकांचलषिमननाचसिषिजनुपांचसरसुकसोरि ॥ तोरनबितानपताकचामरध्वजसुमनफलघोरि प्रतिकांइछबिकबिसाषिदैप्रतिसोंकहैंगुरहोरि ॥ १ ॥ मदनजयकेषंभसेरचेषंभसरलबिसालपाटीरपाटिबिचित्रभंवरावलितबेलनलाल डांडीकनककुंकुमतिलकरेषैंसिमनसिजभालपटुलीपदिकरतिहृदयजनुकलधौतकोमलमाल ॥ २ ॥ उनएसघनघनघोरम्रदुझरिसुषदसावनलाग बगपांतिसुरधनुदमकदामिनिहरितभूमिबिभाग । दादुरमुदितभरेसरितसरमहिउमगजनुअनुराग पिकमोरमधुपचकोरचातकसोरउपबनबाग ॥ ३ ॥ सोसमोदेषिसोहावनोनवमतसँवारिसँवारि । गुनरूपजोबनसींवसुंदरिचलींझूंडनिझारि । हिंडोलसालबिलोकिसबअंचलपसारिपसारि लागीअसीसनरामसीतहिंसुखसमाजनिहारि ॥ ४ ॥ झूलहिंझुलावहिंओसरिन्हगावैंसुहवगौंडमलार मंजीरनूपुरबलयधुनिजनुकामकरतलतार । अतिमचतश्रमकनमुषनिबिथुरेचिकुरबिलुलितहार । तमतड़ितउडगनअरुनबिधुजनुकरतव्योमबिहार ॥ ५ ॥ हियहरषिबिरषिप्रसूननिरषतिबिबुधतियट्टनतूरि । आंनंदजललोचनमुदितमनपुलकतनभरिपूरि । सबकहहिंअबि

चलराजनितकल्यानमंगलभूरि।चिरजिओजानकिनाथजगतु
लसीसजीवनमूरि ॥ ६ ॥ ३१० ॥

टी० । आलोइ० । अति सुंदर चहुंओर स्फटिक मणि की भीति हैं औ सुंदर मणिमै दरवाजा है हे सखी कांच को गच देखि के मन नाचत है मानो कांच को गच नहीं है काम की फांसी है बंदनेवार मंडप पताका चमर ध्वज फूल फलनि की शोभा परिछाहीं प्रति की छवि कवि को शाखी दैकै बिंब प्रति कहति है कि तुमसे हम गरू हैं ॥ १ ॥ सरल सुधा पाटीर नीचे के चारो पाटीको कहत हैं औपाटी ऊपरके चारो पाटी को कहतहैं भंवरा गोल गोल घरनमे लटके रहत हैं वलित ग्रंथित वेलना घरन के नीचे रहत है जामे डांडी लगाई जाती है पटुली पटरा सोपटरा नहीं है मानो रतिके हृदै को सोनेकी मालाकी पदिक है अर्थात् जुगावली है भाव पटरा पदिक है औ जामे लटको है सो सोनेकी माला है अर्थात् डांडी जाको एक बार कुमकुम तिलक को उपमा कहिआए ॥ २ ॥ सघन घन गंभीर घटा स्रदुभरि नान्ही नान्ही बूंदो सोइ० ॥ ३ ॥ नवसत सोरहो शृंगार हिंडोल सार झूलिवे को स्थान ॥ ४ ॥ ओसरिन्ह पारिन्ह सूहाराग औ गौंड मल्लार राग गावैं मंजीर पायँजेब नूपुर घुंघुरू बलय कंकन एनके जो धुनिहै सो धुनिनहीं है मानो काम के हथोरो के ताल हैं अत्यंत जो झूला मचतहै ताते पसीना को कन मुषनपर ह्वै रहेहैं औ बार बिथरि परेहैं औ माला डोलि रहेहैं बार बिखरे तमहै अंगकी गोराई तड़िता है उड़गन कहैं तारागन सो श्रमकन हैं अरुन कहैं सूर्य सो हार है औ बिधुध कहैं चंद्रमा सो मुष है सो आकाश मे बिहार करत हैं ॥ ५ ॥ बिबुध तिय के टन तूरिबे को यह भाव कि जामे नजर न लागै वा लज्जाको टन सम तोरिके देखैं वा स्वर्गसुख को तृन सम तोरैं ॥ ६ ॥ १७ ॥

मू० । रागसूहव । कोसलपुरीसुहावनीसरिसरजूकेतीर भूपावली मुकुटमनिनृपतिजहांरघुबीर ।पुरनरनारिचतुरअतिधरमनि पुनरतनीति सहजसुभायसकलउरश्रीरघुबरपदप्रीति । छंद श्रीरामपदजलजातसबकेप्रीतिअबिरलपावनी । जोचहतशुकसनकादिसंभुबिरंचिमुनिमनभावनी ॥ सबलोकेसुंदरमंदिराजिरराउरंकनलषिपरे । नाकेसदुर्ल्लभभोगलोगकरहिनमनबिषयनिहरे ॥ १ ॥ सबरितुसुषप्रदसोपुरीपावसअतिकमनीय । निरषतमनहिहरतिहठिहरितअवनिरमनीय । बीरबहूटिबिराजहींदादुरधुनिचहुंओर । मधुरगरजिघनबरषहिंसुनिसुनिबोलतमोर ॥ छंद । बोलतजोचातकमोरकोकिलकीरपारावतघने षगबिपुलपालेबालकनिकूजतउड़ातसुहावने । बकराजिराजतगगनहरिधनुतड़ितदिसिदिसिसोहहीं नभनगरकीसोभाअतुलअवलोकिमुनिमनमोहहीं ॥ २ ॥ गृहगृहरचेहिंडोलनामहिगचकांचसुठारि । चित्रबिचित्रचहूंदिसिपरदाफटिकपगार । सरलबिसालबिराजहिंबिद्रुमषंभसुजोर । चारुपाटिपटुपुरटकीझरकतमरकतभोर ॥ छंद । मरकतभवरडांडीकनकमनिजटितदुतिजगमगरही पटुलीमनहुंबिधिनिपुनतानिजप्रगटकरिराषीसही । बहुरंगलसतबितानमुकुतादामसहितमनोहरा । नवसुमनमालसुगंधलोभेमंजुगुंजतमधुकरा ॥ ३ ॥ झुंडझुंडझूलनचलीगजगामिनिबरनारि कुसुंभचीरतनसोहहींभूषनबिबिधसंवारि । पिकबयनीम्हगलोचनीसारदससिसमतुंड । राममुजससबगावहींसुखरसुसारँगगुंड ॥ छंद । सारंगगुंडमलारसोरठसुहवसुघरनिबाजहीं बहुभांतितानतरंगसुनिगंधर्बकिन्नरलाजहीं । अतिमचतछूटतकुटिलकचछबिअधिकसुंदरिपावहीं पटउड़तभूषनषसतहँसिहँसिअपरसषीझुलावहीं ॥ ४ ॥ फिरिफिरिझू

लहिंभामिनोअपनीअपनीवार बिबुधबिमानथकितभएदेखत चरितअपार । बरषिसुमनहरषहिंसुरबरनहिंहरिगुनगाथ पुनिपुनिप्रभुहिप्रसंसहींजयजयजानकिनाथ ॥ छंद । जयजा नकीपतिबिसदकीरतिसकललोकमलापहा सुरबधूदेहिअसी सजीवहुरामसुखसंपतिमहा ! पावससमयकछुअवधबरनत सुनिअघौघनसावहीं रघुबीरकेगुनगननवलनितदासतुलसी गावहीं ॥ ५ ॥ ३११ ॥

टी० । कोशलइ० । सरि नदी जल जात कमल अविरल निरंतर अजिर आंगन नाकेश इंद्र ॥ १ ॥ अवनि पृथ्वी चातक पपीहा कोकिल कोइल कीर सुआ पारावत कबूतर बकराजि बकपांति हरिधनु इंद्रधनु ॥ २ ॥ पगार भीति विद्रुम मूंगा पुरट सोना मुकुतादाम मोतिन्ह कीमाला मधुकर भ्रमर ॥ ३ ॥ शारद शशि समतुंड शरत्काल पूर्णिमाकेचंद्र सम मुख गुंड मलार भेद ॥ ४ ॥ विशद उज्वल ॥ ५ ॥ ३११ ॥

मू० । रागअसावरी । सांझसमयरघुबीरपुरीकीसोभाआजुबनी ल लितदीपमालिकाबिलोकहिंहितकरिअवधधनी । फटिकभी तसिषरनिपरराजतिकंचनदीपअनी । जनुअहिनाथमिलन आयेमनिसोभितसहसफनी ॥ १॥ प्रतिमंदिरकलसनिपरभ्रा जहिंमनिगनदुतिअपनी । मानहुंविपुलप्रगटिपुरलोहित- पठईदिएअवनी ॥ २ ॥ घरघरमंगलचारएकरसहरषितरंक गनी । तुलसिदासकलकीरतिगावतजोकलिमलसमनी ॥३॥ ॥ ३१२ ॥

टी० । अर्थसे सूचित होतहै कियह पद देवारी को है सांझइ० इहां स्फटिक की भित्ति सेसहैं औ ताकी सिषरैं फनि हैं औदीप मालिका मनिहैं ॥ १ ॥ इहां लोहित कहै मंगल सो कलसन के मनिहैं ॥ २ ॥ रंक दरिद्र गनी तालवर ॥ ३ ॥ ३१२ ॥

मू० । रागगौरी। अवधनगरअतिसुंदरबरसरिताकेतीर नीतिनिपुन नरतिअवसहिंधरमधुरंधरधीर। सकलरितुन्हसुषदायकतामहुंअधिकवसंत भूपमौलिमनिजहंवसन्नपतिजानकीकंत॥१॥ बनउपबननवकिसलयकुसुमितनानारंग । बोलतमधुरमुखरखगपिकबरगुंजतभृंग ॥ २ ॥ समयविचारिकृपानिधिद्दारदेखिअतिभीर । षेलहुमुदितनारिनरबिहंसिकहेउरघुबीर ॥ ३ ॥ नगरनारिनरहरषितसबचलेषेलनफागु । देखिरामछबिअतुलितउमगतउरअनुरागु ॥ ४ ॥ स्यामतमालजलदतननिरमलपीतदुकूल । अरुनकंजदललोचनसदादासअनुकूल ॥ ५ ॥ सिरकिरीटस्रुतिकुंडलतिलकमनोहरभाल। कुंचितकेसकुटिलभुअचितवनिभगतकृपाल ॥ ६ ॥ कलकपोलसुकनासिकललितअधरद्दिजजोति । अरुनकंजमहुँजनुजुगपांतिरुचिरगजमोति ॥ ७ ॥ बरदरग्रीवअमितबलबाहुसुपीनबिसाल। कंकनहारमनोहरउरसिलसतिबनमाल ॥८॥ उरभृगुचरनबिराजतद्दिजप्रियचरितपुनीत । भगतहेतुनरविग्रहसुरबरगुनगोतीत ॥ ९ ॥ उदररिरेखमनोहरसुंदरनाभिगंभीर । हाटकघटितजटितमनिकटितटरटमंजीर १० ऊरुजानुपीनमृदुमरकतषंभसमान । नूपुरमुनिमनमोहतकरतसुकोमलगान ॥ ११ ॥ अरुनबरनपदपंकजनखदुतिहुदुप्रकास । जनकसुताकरपल्लवलालितबिपुलबिलास॥ १२ ॥ कंजकुलिसध्वजअंकुसरेषचरनशुभचारि । जनमनमीनहरनकहंबनसीरचीसंवारि॥ १३ ॥ अंगअंगप्रतिअतुलितसुषमाबरनिनजाइ । एहिसुखमगनहोइमनफिरिनहिअनतलोभाइ ॥ १४ ॥ षेलतफागुअवधपतिअनुजसखाससंग । बरषिसुमनसुरनिरखहिसोभाअमितअनंग ॥ १५ ॥ तालमृदंगझांझडफबाजहिंपनवनिसान। सुघरसरससहनाइन्हगाव

हिसमयसमान ॥ १६ ॥ बीनाबेनुमधुरधुनिसुनिकिन्नरगंधर्व । निजगुनगनअहनअतिमानहिंमनतजिगर्व ॥१७॥ निजनिजअटनिमनोहरगानकरहिंपिकबैनि । मनऊंहिमालयसिषरनिलसहिंअमरखगनैनि ॥ १८ ॥ धवलधामतेनिकसहिंजहँतहँनारिबरूथ । मानऊंमथतपयोनिधिबिपुलअपछराजूथ ॥ १९ ॥ किंसुकबरनसुअंसुकसुषमासुषनिसमेत । जनुबिधुनिवहरहकरिदामिनिनिकरनिकेत ॥ २० ॥ कंकुमसुरसअबीरनिभरहिचतुरबरनारि । रितुसुभायसुठिसोभितदेहिबिबिधिबिधिगारि ॥२१॥ जोसुखजोगजागजपतपतीरथतेदूरि । रामकृपातेसोद्रुसुखअवधगलिनरह्योपरि ॥ २२ ॥ षेलिबसंतकियोप्रभुमज्जनसरजूनीर । बिबिधिभांतिजांचकजनपाएभूषनचीर ॥ २३ ॥ तुलसिदासतेहिअवसर मांगीभगतिअनूप । रुद्रसुसुकोंदूदीन्हितमकृपादृष्टिरघुभूप ॥ २४ ॥ ३१३ ॥

टी० । अवध इ० । बर सरिता सरजू ॥ १ ॥ नवकिसलय नवीन पल्लव कुसुमित पुष्पित ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ पीत दुकूल पीतांबर ॥५॥ श्रुति कान कुंचित टेढ़ा ॥ ६ ॥ द्विज दांत इहां मुख कोस अरुन कमल है औ जुग दंत पंक्ति गजमोती है ॥ ७ ॥ बरदर ग्रिव श्रेष्ठ संष सम कंठ ॥ ८ ॥ द्विज प्रिय चरित पुनीत श्रीराम द्विजन के प्रिय हैं औ चरित पुनीत है वाह्हि जन को प्रिय है चरित पुनीत जिनका ॥ ९ ॥ हाटक सोना इहां मंजीर करि किंकिनी लेना पावजेव नहीं ॥ १० ॥ ११ ॥ इंदु चंद्रमा ॥ १२ ॥ इहां रेखै बंसी हैं वा एक अंकुस रेखा को बंसी कहा ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ पनव ढोल निसान नगारा ॥ १६ ॥ हहय हलुका ॥ १७ ॥ अटनि अटारिन अमर खग नयन देव पखी ॥ १८ ॥ इहां धवल धाम छीर सागर औ निकसनेवाली नारि अपछरा समूह है ॥ १९ ॥ किंसुक बरन

कहैं लाल बरन के सुंदर अंसुक कहैं जो बस्त्र तेहि समेत परम सोभा सहित जे मुषैं हैं ते मानो बिधुनिवह कहैं चंद्रमा के समूह हैं औ दामिन निकर अरुन बस्त्र के घुघुटैं हैं तिनमें निकेतकहैं गृह करि रहे हैं ॥ २० ॥ कुंकुम कुंकुमा सुरस अबीर घोरा भया अबीर सुठि सुंदर ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ गोसांई जी कहत हैं जे तेहि अवसर मे अनूप भक्ति मागी तेहि कों म्रदु मुसकाय के तब कहैं तेहि काल में क्रपा द्दष्ठि करिके रघु भूपक हैं रघु कुलके राजा दिए वारघुकहैं जीव तिन के भूपं जे श्री राम ते दिए वा गोसांई जी ध्यान मे यह पद बनाए वा काल मे प्रत्यक्ष रघुनाथ बरदान दिए सो स्पष्ट अंत के तुक मे लिषे ॥ २४ ॥

मू० रागबसन्त । षेलतबसन्तराजाधिराज । देषतनभकौतुकसुरसमाज ॥ सोहैंसषाअनुजरघुनाथसाथ । झोलिन्हअबीरपिचकारिहाथ ॥ बाजहिंम्टदंगडफतालबेनु । छिरकहिंसुगंधभरैमलयरेनु ॥ १ ॥ उतजवतिजूथजानकीसंग । पहिरेपटभूषनसरसरंग ॥ लियेछरीबेतसोधेबिभाग । चांचरिझूमकगावहिंसरसराग ॥ २ ॥ नूपुरकिंकिनिधुनिअतिसुहाई ललनागनजबजेहिधरहिधाई ॥ लोचनआंजहिंफगुवामनाइ । छाड़हिनचाइहाहाकराइ ॥ ३ ॥ चढ़िषरनिबिदूषकस्वांगसाजि । करैकूटनिपटगईलाजभाजि ॥ नरनारिपरसपरगारिदेत । सुनिहँसंतरामभाइन्हसमेत ॥ ४ ॥ बरषतप्रसूनबरबिबुधबृन्द । जयजयदिनकरकुलकुमुदचंद ॥ ब्रह्मादिप्रसंसतअवधवास । गावतकलकीरतितुलसीदास ॥ ५ ॥
॥ ३१४ ॥

टी० । षेलतइ० । नभ आकाश मलयरेनु चंदनरज ॥ १ ॥ २ ॥ लोचन आजहिं अंजन लगाइ देइ ॥ ३ ॥ षर गदहा बिदूषक भांड़ ॥ ४ ॥ बिबुध देवता ॥ ५ ॥ ३१४ ॥

मू० । रागकेदारा । देषतअवधकोआनंद हरषिवरषतसुमनदिन दिनदेवतनिकोरंद । नगररचनासिषनकोविधितकतवहुवि धिवृंद निपटलागतअगमज्यौंजलचरहिंगमनसुछंद ॥ १ ॥ मुदितपुरलोगनिसराहतनिरषिसुषमाकंद । जिन्हकेसुअलि चषपिअतराममुषारविंदमरंद ॥ २ ॥ मध्यव्योमविलंबिचल तदिनेसउड़गनचंद । रामपुरीविलोकितुलसीमिटतसबदुख दंद ॥ ३ ॥ ३१५ ॥

टी० । देषतद० । नगर रचना सीषवे को वंद कहैं प्रकार बहु विधिते विधाता तकत हैं सुछंद स्वेच्छा ॥ १ ॥ सुखमा कंद परम सोभा के मूल सुअलि चख नेत्र रूप सुंदर भ्रमर मरंद रस ॥ २ ॥ व्योम आकाश दिनेश सूर्य उड़गन तारागन ॥ ३ ॥

मू० सोरठ । पालतराजयौराजारामधरमधुरीन । सावधानसुजान सबदिनरहतनयलयलीन ॥ स्वानषगजतिन्याउदेष्यौआपुबै ठिप्रवीन । नीचहतिमहिदेवबालककियोमीचविहीन ॥१॥ भरतज्यौंअनुकूलजगनिरुपाधिनेहनवीन। सकलचाहतराम होज्यौंजलअगाधहिमीन ॥ २ ॥ गाइराजसमाजजाचतदा सतुलसीदीन। लेहुनिजकरदेहुनिजपदप्रेमपावनपीन ॥ ३ ॥ ॥ ३१६ ॥

टी० पालतई० । नयनीति जती ने स्वान को मारा रहा सो बिनै पत्रिका मे स्पष्ट है स्वान के हेतु किये पुरवाहर जती गयंद चढाई अर्थात् शिव निर्माल्य षाइवे ते स्वान भयोरह्यो सोई अधिकार जती को दिए काक औ उलूक को बिवाद रहा उलूक कहत रहा किई अस्थान हमारा है औ काक कहत रहा कि हमारा है सो पहिले ते रहनेवाला उलूक कों जानिके जिताए औ सूद्र तप करत रहा ताते ब्राह्मण को बालक मरिगयो ताते तेहिसूद्र को मारि के ब्रा ह्मणके बालक को जिआए ॥ १ ॥ जैसे भरत जी अनुकूल हैं तैसे

निरुपाधि नेह नवीन पूर्वक जगत अनुकूल है ॥ २ ॥ ३ ॥ ३१६ ॥

मू० । संकटसुकृतकोसोचतजानिजियरघुराउ । सहसद्वादशपंचसतमैंकछुकहैअबआउ ॥ भोगपुनिपितुआपुकोसोउकियेबनैबनाउ । परिहरेबिनुजानकीनहिऔरअनवउपाउ ॥ १ ॥ पालिबेअसिधारव्रतप्रियप्रेमपालसुभाउ । होइहितकेहिभांतिनितसुबिचारुनहिचितचाउ ॥ २ ॥ निपटअसमंजसहुँबिलसतिमुखमनोहरताउ । परमधीरधुरीनहृदयकिहरषबिसमयकाउ ॥ ३ ॥ अनुजसेवकसचिवहैंसबसुमतिसाधुसखाउ जानकोउनजानकीबिनुअगमअलखलखाउ ॥ ४ ॥ रामजोगवतसीयमनप्रियमनहिप्रानप्रियाउ । परमपावनप्रेमपरमितसमुझितुलसीगाउ ॥ ५ ॥ ३१७ ॥

टी० । संकटइ० । सहस द्वादश पंचशत बारह हजार पांचसै वर्ष मे कछुक अब आय है यद्यपि बाल्मीक जी के मत से इग्यार है हजार वर्ष आवत है इहां गोसांई जी वह कल्प से भिन्न के लिखे ताते संका नहीं करना ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३१७ ॥

मू० । रामबिचारिकैराखीठीकदैमनमाहि । लोकबेदसनेहपालतपलकृपालहिजाहिं ॥ प्रियतमापतिदेवताजेहिउमासिहाहिं गुर्विनीसुकुमारिसियतियमनिसमुझिसकुचाहिँ ॥ १ ॥ मेरेहीसुखसुखीसुखअपनोसोसपनहूँनाहिं । गेहनीगुनगेहनीगुनसुमिरिसोचसमाहिं ॥ २ ॥ रामसीयसनेहबरनतअगमसुकबिसकाहिं । रामसीयरहस्यतुलसीकहतरामकृपाहिँ ॥ ३ ॥ ३१८ ॥

टी० । रामइ० ॥ १ ॥ गेहनी स्त्री जानकी जू गुनगेहनी गुनके गृह ॥ २ ॥ राम कृपाहिं राम कृपाकरि तुलसी श्रीराम रहस्य को कहत हैं ॥ ३ ॥ ३१८ ॥

मू० । चरचाचरनिसोंचरचोजानिमनिरघुराइ । दूतमुखसुनिलो-

कथुनिघरघरनिवूझौआइ ॥ प्रिआनिजअभिलाषरुचिकह्
कहतिसियसकुचाइ । तीयतनयसमेततापसपूजिहौंवनजाइ
॥ १ ॥ जानिकरुनासिंधुभावीविवससकलसहाइ । धीरधरि
रघुबीरभोरहिंलिएलषनबोलाइ ॥ २ ॥ तातुरतहिसाजि
स्यंदनसीयलेऊचढ़ाइ । बालमीकमुनीसआश्रमआइअऊप
हुंचाइ ॥ ३ ॥ भलेहिनाथसुहायमायेराषिरामरजाइ । च
लेतुलसीपालिसेवकधर्मअवधिअघाइ ॥ ४ ॥ ३१९ ॥

टी० । घरघाइ० । घानि सों दूतन सों जानि मनिज्ञानी सिरो
मनि अर्थात् ब्रह्मादि जे ज्ञानी तिनके सिरोमनि ॥ १ ॥ २ ॥ स्यं-
दन रथ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ३१९ ॥

मू० । आएलषनलैसौंपीसियमुनीसहिआनि । नाइसिररहेपाइ
आसिषजोरिपंकजपानि ॥ बालमीकबिलोकिव्याकुललखन
गरतगलानि । सर्वबिद्बूझतनबिधिकीबामतापहिचानि ॥
१ ॥ जानिजिअअनुमानहोसिअसहसबिधिसनमानि । रा
मसद्गुनधामपरमितिभईकछुकमलानि ॥ २ ॥ दीनबंधुद-
यालदेवरदेषिअतिअकुलानि । कहतिबचनउदासतुलसीदा
सत्रिभुअनरानि ॥ ३ ॥ ३२० ॥

टी० । आएइ० । सर्वबिद् सर्वज्ञ ॥ १ ॥ स्रीराम सद्गुन धाम
के परमित कहैं मर्य्यादा हैं पर यह क्या किया यह बिचारि के बाल
मीक जी की बुद्धि कुछ मलान भई ॥ २ ॥ ३ ॥ ३२० ॥

मू० । तौलौंबलिआपुहीकीबीबिनयसमुझिसुधारि । जौलौंहौंसि
षिलेउंबनरिषिरीतिबसिदिनचारि ॥ तापसीकहिकहापठव
तिनृपतिकोमनुहारि । बहुरितेहिबिधिआइकहिहैसाधुको
उहितकारि ॥ १ ॥ लषनलालकृपालनिपटहिडारिबीनबि-
सारि । पालिबीसबतापसनिज्यौंराजधरमबिचारि ॥ २ ॥
सुनतसीताबचनमोचतसकललोचनबारि । बालमीकिनसके

तुलसीसोसनेहसंभारि ॥ ३ ॥ ३२१ ॥

टी० । सु० ॥ ३२१ ॥

मू० । सुनिव्याकुलभयेउतरुकछुकह्योनजाइ । जानिजियविधि बामदीन्हीमोहिसकुषसजाइ कहतहियमेरीकठिनईलषिग ईप्रीतिलजाइ। आजुऔसरऐसेहूं जौनचलेप्रानबजाइ॥१॥ इतहिसीयसनेहसंकटउतहिरामरजाइ । मौनहीगहिच रनगौनेसिषसुआसिखपाइ ॥ २ ॥ प्रेमनिधिपितुकोकह्यौ मैंपरुषबचनअघाइ । पापतेहिपरितापतुलसीउचितसहेसि राइ ॥ ३ ॥ ३२२ ॥

टी० । सु० ॥ ३२२ ॥

मू० । गौनेमौनहींबारहिबारपरिपरिपाय । जातजनुरथरचीक रलछिमनमगनपछिताइ ॥ असनबिनुबनबरमबिनुरनबच्यौ कठिनकुघाय । दुसहसांसतिसहनकोहनुमानज्यायौजाय ॥१॥ हेतुहौंसियहरनकोतबअबहुंभयौसहाय । होतहठिमो हिदाहिनोदिनदैवदारुनदाय ॥ २ ॥ तज्यौतनसंग्रामजेहि लगिगीधजसीजटाय। ताहिहौंपहुंचाइकाननचल्यौअवधसु भाय॥ ३ ॥घोरहृदयकठोरकरतबसृज्यौहौंबिधिबाय। दास तुलसीजानिराख्यौकृपानिधिरघुराइ ॥ ४ ॥ ३२३ ॥

टी० । गौनेइ० । लछिमन जी पश्चात्ताप मे मगन हैं मानो लछिमन जी नही जात हैं करते रची भई अर्थात् प्रतिमा सो जातहै कोऊ रचीकर मृतक कों कहत अरु लछिमन जी का पछिताव कहत हैं कि भोजन बिना बन मे बचेउं औ बषतर बिनारण मे बचेउं कठिन कुघाउ का अन्वय दुसरे तुकसे है ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ ३२३ ॥

मू० । पुनिनसोचियेआईहोजनकगृहजियजानि । कालिहीकल्यानकौतुककुशलतुबकल्यानि ॥ राजरिषिपितुससुरप्रभुपतितू

सुमंगलषानि । ऐसेहुथलवामताबड़िवामबिधिकीजानि ॥ १ ॥ बोलिमुनिकन्यासिषाईप्रीतिगतिपहिचानि।आलसिन्हकीदेवसरिसीयसेइअऊसनमानि ॥ २ ॥ न्हाइप्रातहिपूजिवोबटबिटपअभिमतदानि । सुवनलाऊउछाऊदिनदिनदेखिअनहितहानि ॥ ३ ॥ पायतापबिमोचनीकहिकथासरसपुरानि । बालमीकप्रबोधतुलसीगईगरूअगलानि ४ ॥ ॥ ३२४ ॥

टी० पुनिइ० । राजरिषि तुम्हारे पिता औ ससुर हैं प्रभु पति हैं तूं सुमंगल षानि हौ ॥ १ ॥ रिषि स्त्री जानकी कों आपनि कन्या बोलि प्रीति की गति पहिचानि के सिषाई कि हे सिय आलसिन्ह की देवता जो गंगा हैं तिन्ह को सनमान करिके सेइअऊ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ३२४ ॥

मू० । जबतेजानकीरहिरुचिरआश्रमआइ । गगनजलथलबिमलतबतेसकलमंगलदाइ ॥ निरसभूरुहसरसफूलतफलतअतिअधिकाइ । कंदमूलअनेकअंकुरस्वादसुधालजाइ ॥ १ ॥ मलयमरुतमरालमधुकरमोरपिकसमुदाइ । मुदितमनखगबिहंगबिहरतबिषमबयरुबिहाइ ॥ २ ॥ रहतरबिअनकूलदिनससिरजनिसजनिसुहाइ । सीयसुनिसादरसराहतिसषिनभलोमनाइ ॥ ३ ॥ मोदबिपिनबिनोदचितवतलेतचितहिँचुराइ । रामबिनुसीयसुषदबनतुलसीकहैकिमिगाइ ॥४॥ ३२५॥

टी० जबतेइ० । निरसभूरुह शुष्क वृक्ष ॥ १ ॥ मलय मरुत दक्षिण पवन तेहि से मुदित मन खग पक्षी बिषम बैर बिहाय बिहरत हैं ॥ २ ॥ रहत रबि अनकूल दिन उष्णता आदिसे क्लेश नहीं देत हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥ यहि प्रकरणकी व्याख्या स्पष्ट करिनहीं लिषा बाल्मीकीय रामायण औ पद्मपुराण मे स्पष्ट है ॥ ३२५ ॥

मू० । सुभदिनसुभघरीनीकोनषतलगनसुहाइ । पूतजाएजानकीद्वैमुनिबधूउठिगाइ ॥ हरषिबरषतसुमनसुरगनगहेबधाएबजा

इ । भुअनकाननआश्रमनिरहेमोदमंगलछाइ ॥ १ ॥ तेहि निमातहेसत्रुसूदनरहेविधिवसआइ । मांगिमुनिसोविदागवनेभोरसोसुषपाइ ॥ २ ॥ मातुमौसीबहिनहूतेमासुतेंअधिकाइ । करहितापसतीयतनयासीयहितचितलाइ ॥ ३ ॥ कियेविधिव्यौहारमुनिवरविप्रहंदबोलाइ । कहतसबरिषिक्रपाकोफलभयौआजुअघाइ ॥ ४ ॥ मुदषरिषिसुषसुतनिकोसियमुषदसकलसहाइ । सूलरामसनेहकोतुलसीनजियतेजाइ ॥ ५ ॥ ३२६ ॥

टी० सुभइ० । पद सुगम कथा स्पष्ट श्री मद्रामायण मे ॥ ३२६ ॥

मू० । मुनिवरकरिछठीकीन्हीबारहेकीरीति । बनबसनपहिराइतापमतोषिपोषेप्रीति ॥ नामकरनसुअन्नप्रासनबेदबांधीनीतिसमैसबरिषिराजकरतसमाजसाजिसमीति ॥ १ ॥ बाललालहिँकहहिँकरिहैँराजुसबजगुजीति । रामसियसुतगुरअनुग्रहउचितअचलप्रतीति ॥ २ ॥ निरषिबालविनोदतुलसीजातवासरबीति । पिअचरितसियचितचितेरोलिषतनितहितभीति ॥ ३ ॥ ३२७ ॥

टी० । मुनिइ० । समीति सभा वा समित्र ॥ १ ॥ २ ॥ हित भीति प्रीति रूप भीति पर ॥ ३ ॥ ३२७ ॥

मू० । बालकसीयकेविहरतमुदितमनदोउभाइ । नामलवकुशरामसिअअनुहरतसुंदरताइ ॥ देतमुनिमुनिसिसुखिलौनालेतधरतदुराइ । षेलषेलतनृपसिसुन्हकेबालहंदबोलाइ ॥ १ ॥ भूपभूषनबसनबाहनराजसाजसजाइ । बरमचरमकृपानसरधनुतूनलेतबनाइ ॥ २ ॥ दुखीसियपिअबिरहतुलसीसुषीसुतसुषपाइ । आंचपयउफनातसींचतसलिलज्यौंसकुचाइ ॥ ॥ ३ ॥ ३२८ ॥

टी० । बालइ० ॥ १ ॥ बरम बषतर चरम ढाल कृपान तरवार तू

न तरकस ॥ २ ॥ ३ ॥ ३२८ ॥

मू० । केकईजौलौंजिअतरही । तौलौंबातमातुसोंमुहभरिभरतन भूलिकही ॥ मानीराम अधिकजननीतेंजननिहुं गसनगही । सीयलषनरिपुदवनरामरुखलषिसबकीनिबही ॥ १ ॥ लोक बदमरजाददोषगुनगतिचितचषनचही । तुलसीभरतसमुझि सुनिराषीरामसनेहसही ॥ २ ॥ ३२९ ॥

टी० बालद्द० । गस गांस ॥ १ ॥ चष नेत्र इहां सिंहावलोकन रीति से पिछिली कथा कहे ॥ ३२९ ॥

मू० रागरामकली । रघुनाथतुम्हारेचरितमनोहरगावतसकलअव धवासी । अतिउदारअवतारमनुजवपुधरेब्रह्मअजअविनासी ॥ प्रथमताड़िकाहतिसुबाहुबधिमषराष्योद्विजहितकारी । दे- षिदुषीअतिसिलाश्रापबसरघुपतिबिप्रनारितारि ॥ १ ॥ सबभू पनिकोगरबहर्‌योहरिभंज्यौसंभुचापभारी । जनकसुतासमे तआवतगृहपरसरामअतिमदहारि ॥ २ ॥ तातबचनतजिरा जकाजसुरचित्रकूटमुनिबेकधर्‌यौ । एकनयनकीन्होसुरपति सुतबधिविराधरिषिशोकहर्‌यौ ॥ ३ ॥ पंचबटीपावनराघौक रिसूपनषाकुरूपकीन्हो । षरदूषनसंघारकपटम्रगगीधराजक हुंगतिदीन्हो ॥ ४ ॥ हतिकबंधसुग्रीवसषाकरिबेधेतालबालि मार्‌यौ । बानररीछसहायअनुजसँगसिंधुबांधिजसुबिसतार्‌यौ ५ ॥ सकुलपुत्रदलसहितदसाननमारिअसुरसुरदुषटार्‌यौ । परमसाधुजियजानिबिभीषनलंकापुरीतिलकसार्‌यौ ॥ ६ ॥ सीताअरुलछिमनसंगलीन्हेऔरोजितेदासआए । नगरनिक टबिमानआयौसबनरनारीदेषनधाए ॥ ७ ॥ सिवबिरंचिशुक नारदादिमुनिअस्तुतिकरतबिमलबानी । चौदहभुअनचराच रहरषितआएरामराजधानी ॥ ८ ॥ मिलेभरतजननीगुरप रिजनचाहतपरमअनंदभरे दुसहबियोगजनितदारुनदुष

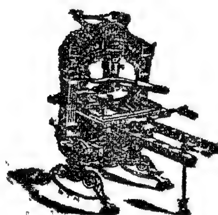
रामचरनदेषतबिसरे ॥ ९ ॥ वेदपुरानबिचारलगनशुभमहा राजअभिषेककियौ । तुलसिदासजियजानिसुअवसरभक्तिदा नतबमागिलियौ ॥ १० ॥ ३३० ॥ इति श्री रामगीतावल्यां उत्तर कांडः समाप्तः ।

टी० रघुनाथई० । इहां सब राम चरित्र क्रमसे लिखे पद पदसु गम ॥ ३३० ॥

दोहा ।

श्रीलछिमनरघुनाथनिधि रामसषेपदनाय ।
हरिहरसममतिमंदकृ टीकालईबनाय ॥

इति श्री रामगीतावलीप्रकाशिका टीकायां श्री सीताराम कृपा पात्र श्री सीतारामीयहरिहरप्रसादकृतौ उत्तर काण्डः समाप्तः ।



बनारस लाइट छापेखाने मे छपी ।

शुद्ध अशुद्ध पत्र ।

———ooo———

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१	वालांदगंवरं	वालंदिगंवरं
१	१७	हरषंत	हरषवंत
४	४	रहां	रहों
४	४	हरहीं	हरदी
५	३	गहहे	गहगहे
५	६	उठै	उठे
५	१४	जोवज्ञ	जीवज्ञ
६	२	लाग	लोग
६	१५	महेली	सहेली
७	७	वो	को
७	१६	अहिवतो	अहिवातो
७	१७	गुणा	गुणी
८	४	तसा	तासा
९	११	पतना	पूतना
९	१६	एश्वर्य	ऐश्वर्य
१०	१०	बरद	बिरद
१०	१७	विखद	बिषाद
१०	१९	सआसिन	सुआसन
११	२६	स्लेरा	स्लेषा
१२	३	जन्यत्मा	जन्यात्मा

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	५	मजत	सजत
१३	१८	सरम्र	सरस
१५	५	राची	राचि
१५	११	मणी	मणि
१५	२४	सतुहन	सत्रुहन
१५	२६	ञसव	उत्सव
१६	१२	लखाए	लिखाए
१७	१	भई	भईं
१७	३	को है	को हैं
१७	६	जहि	जोहि
१७	१८	पर	पुर
१७	२३	के	०
१८	१६	इंद्रनी	इन्द्रानी
१६	१६	फन	फल
१६	२१	नरदें	नरदेव
१६	२५	सूतका	सूतिका
१६	२६	कुशर्वकलसमाप्ति पूईभ	कुशलपूर्वकसमाप्तिभई
२०	७	विवि	विधि
२०	१५	सोरठा	सोरठ
२०	२२	लट	लटू
२०	२५	कठला	कठुला
२०	२५	बद	बटू
२०	२६	झिंगुरिया	झिंगुलिया
२१	५	बुझै	बुझाय

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१	१०	सुमंत	सुमंत्र
२१	१८	प्रुष	सुष
२२	१३	तलक	तिलक
२२	२२	चायरुगा	चारुगाय
२२	२४	दिय	दिये
२३	१४	लिए हैं	लए हैं
२३	२१	आसिबाद दिए	आसिर्बाद दए
२४	३	सेना	साना
२४	१०	एसै	ऐसे
२४	१७	नासिंह	नरसिंह
२४	१७	मय	भय
२४	२५	लगे	लागे
२५	१३	बध	बधू
२५	२३	पजि	पूजि
२६	१३	भीतरभवनबोला-योजिदियो	भीतरभवनबुलायो
२६	१३	पायपषारिअआसन	पायपषारिपूजिदियो आसनअ
२६	१४	चारुचरन	चरनचारु
३१	२४	पर्यायश	पर्याय हैं
३२	२६	षोड़कशला	षोड़शकला
३४	२३	परणो	पूरणो
३७	२६	द्यति	द्युति
३८	६	वह	वा
३८	१०	चिता	न्विता

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३९	३	अंकस	अंकुश
३९	२२	यवोंगुष्टे	यवोंगुष्ठे
३९	२५	आ	ओ
३९	२६	जंम्ब	जम्बू
४०	२	मध्यागः	मध्यगः
४०	४	धनुस्तुणो	धनुस्तूणो
४०	४	चतुविंशति	चतुर्विंशति
४०	१४	उच्यते	मुच्यते
४०	१७	सरयँ	सरयू
४०	१८	रक्तो	रक्तः
४०	१८	माह्वी	मह्वी
४१	५	संदर	सुंदर
४१	२१	गासांई	गोसांईं
४१	२२	रनुनाथ	रघुनाथ
४२	६	अनुभवनि	अनुभवति
४३	६	ठि	उठि
४३	१४	लुप्तोत्पेच्चा	लुप्तोत्प्रेच्चा
४४	२	हरि	हर
४५	१६	कि	०
४६	२०	उरपति	उरपत
४७	११	पैजन	पैजनी
४७	१८	ववचन	बचन
४८	१६	युश्र	युक्त
५०	९	चूद्र	चंद्र
५१	७	तेष	तोष

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५१	१	प्यरे	प्यारे
५२	७	वैटभारे	कैटभारे
५३	७	प्रत्यसा	प्रत्यासा
५३	८	॥	वा
५३	२६	असन	आसन
५४	२२	अवधि	अवध
५५	२	सुभप्रसंग	सुभगसंग
५५	५	सोभदन	सोभादान
५५	७	मकल	सकल
५६	२३	ठकि	ठोकि
५७	३	वमन	बसन
५७	३	सष	सषा
६०	८	विष्वामित्र	बिस्वामित्र
६१	११	मरति	मूरति
६२	३	जेति	जोति
६२	१०	कसे है	कसे हैं
६२	१४	नषभिष	नषसिष
६३	५	छ	छबि
६३	१५	पछो	पच्छी
६३	१४	षवन	षरिकन
६३	१७	कमन	कमल
६४	२	बचबिच	बिचबिच
६४	३	प्यातदती	प्यालदली
६४	६	वामी	वासी
६४	१७	अंमन	अंसन

पत्र	पंक्ति		
६४	२४	दल	दली
६४	२६	है	हैं
६५	१२	लाभकोलटि	लाभकीलूटि
६५	१९	मम	सम
६६	२	टेकिकै	देषिकै
६६	५	सेना	सोना
६६	११	मो	मोर
६६	२६	पाषन	पाषान
६७	३	च्छ इत्यादि	गच्छतस्तस्य रामस्य पा दस्पर्शात्महाशिलाका- चिघोषा भवत्सघो वि- स्मितंमुनिरब्रवीतथापि दग्धा पुराभर्चारामश- क्रापराधतःअहल्याख्या शिलाजन्म शतलिङ्गोक्त तः स्वराट् त्वदंघ्रिस्पर्श नातस्यैशापान्तं प्राहगो तमःतस्मादियंतेपादाज स्पर्शात्शुद्धाभवत्प्रभो
६७	७	मरति	मूरति
६७	९	मोई	सोई
६७	१३	हरो	हरी
६७	१६	नहिहै	नरहिहै
६७	१७	तोनि	तीनि
६७	२३	॥	रा

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६७	२५	प्र	प्रभु
६८	१२	नत्र	नेत्र
७०	१	कन	कान
७०	२	ो	रो
७०	८	तड़िका	ताड़िका
७०	१४	नथ	नाथ
७०	१६	ह्योयपिधन	ह्रि केय पिधान
७०	१७	विदेहत	विदेहता
७०	१८	पौर पौरि	पैरि पैरि
७१	६	स्वरथ	स्वारथ
७१	७	तते	तातें
७१	८	र	०
७२	१७	मनदरति	मदनरितु
७४	२६	ताड़क	ताड़ाका
७७	१६	अर्थत्	अर्थात्
७८	१	पट	पद
८०	१०	सगई	सागाई
८०	३	नीह	नहीं
८०	१४	मथे	माथे
८१	६	कमकल	कमल
८४	११	सुंदरतलभूमिजो	सुंदरजोभूमितल
८६	२	जनकौ	जनकको
८६	१७	आत	अर्थात
८७	१७	तुल	तुलसी
८८	१६	अग	अंग

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८८	२१	टाउ	टाऊ
८९	४	देषि दे २	देषि देषिरी
९१	२३	श्रीरामज	श्रीरामजू
९२	१	भप	भूप
९२	२६	क्रिकि	कि
९६	८	भ्राजत	भ्राजत
९६	८	मो	सो
९६	१७	पोवो	पावो
९६	१७	मलि	मेलि
९६	१८	कींकर	किंकर
९७	२५	प्रल	प्रलय
९८	१३	साढ़ मुष	साढ़ मुषै
९८	२३	मेव	मेव
१०१	१३	तुलो	तुलसी
१०१	१९	राउ	राउ
१०१	२३	भौहैं	भौंहै
१०२	५	मिश्रान	मिश्रानसे
१०२	२६	दुर्वाकमधक	दुर्वाकमधूक
१०३	७	ससखि	सखि
१०३	२४	जावन	जीवन
११३	११	षम	षेम
११४	२६	जा	जो
११५	३	तड़ागम	तड़ागमे
११५	५	जोगै	जोरी
११५	६	तगोरी	तनगोरी

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११८	१४	वौचि	वोचि
११९	२४	चिरं	चिर
१२०	६	संवसुअन	सवसुअन
१२२	१	सम्वत्	सम्मत
१२२	२३	से	सो
१२४	२१	सो	जो
१२४	२४	।	प
१२५	५	जहि	जबहि
१२५	१२	बनने	बनके
१२५	१५	जारे	जोरे
१२५	१९	निहारे	निहोरे
१२७	८	इिआ	प्रिया
१२७	२५	कनकका	कनक
१२९	११	समह	समह
१३०	१	पोपोही	पोही
१३१	१	हों	हौं
१३१	६	पारय	पायर
१३२	१	बघटी	बघूटी
१३२	१४	मोहीह	मोहीहै
१३३	१७	तन	तून
१३३	२४	वैय	वय
१३४	२०	सलोनीनी	सलोनी
१३५	१	अग	अगजग
१३५	१४	हैं	कहैं
१३५	२५	जन	जनि

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८८	२१	टोउ	दोऊ
८९	४	देषि दे २	देषि देषिरी
९१	२३	श्रीरामज	श्रीरामजू
९२	१	भप	भूप
९२	२६	क्लिकि	कि
९६	८	भ्राजत	भ्राजत
९६	८	मो	सो
९६	१७	पोवो	पावो
९६	१७	मलि	मेलि
९६	१८	कींकर	किंकर
९७	२५	प्रल	प्रलय
९८	१३	सार्ङ्ग मुष	सार्ङ्ग मुषै
९८	२३	मेव	मेव
१०१	१३	तुली	तुलसी
१०१	१९	राउ	राउ
१०१	२३	भौहैं	भौहै
१०२	५	मिश्रान	मिश्रानसे
१०२	२६	दुर्वाकमधक	दुर्वाकमधूक
१०३	७	ससखि	सखि
१०३	२४	जावन	जीवन
११३	११	पम	प्रेम
११४	२६	जा	जो
११५	३	तड़ागम	तड़ागमे
११५	५	जोगै	जोरी
११५	६	तगोरी	तनगोरी

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११८	१४	वोचि	वोचि
११६	२४	चिरं	चिर
१२०	६	संवमुअन	भवसुअन
१२२	१	सम्वत्	सम्मत
१२२	२३	से	सो
१२४	२१	सो	जो
१२४	२४		प
१२५	५	जहि	जबहि
१२५	१२	बनने	बनके
१२५	१५	जारे	जोरे
१२५	१६	निहारे	निहोरे
१२७	८	प्रिआ	प्रिया
१२७	२५	कनकक	कनक
१२६	११	समह	समह
१३०	१	पोपोही	पोही
१३१	१	हों	हौं
१३१	६	पारथ	पाथर
१३२	१	बघटी	बधूटी
१३२	१४	मोहोह	मोहोहै
१३३	१७	तन	तून
१३३	२४	वैय	वय
१३४	२०	सलोनोनो	सलोनो
१३५	१	अग	अगजग
१३५	१४	हैं	कहैं
१३५	२५	जन	जनि

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३६	६	सह्न	सोहति
१३६	१३	नषन	नयन
१३७	११	भरि	भूरि
१३८	६	फलि	फूलि
१३८	१०	आ	औ
१३८	१२	रामदि	रामादि
१४०	७	करिकेके	करिके
१४१	६	लोनो	लोनी
१४१	२३	तुली	तुलसी
१४३	६	समत	समेत
१४३	२१	गंजत	गुंजत
१४३	२२	सदर	सरद
१४४	५	संत	संतत
१४४	१०	कह्रौला	कह्रौंकला
१४५	१४	बालत	बोलत
१४५	२४	सांवर	सावर
१४५	२६	जरचर	जलचर
१४७	१०	मकाम	मनकाम
१४८	१	तरुनतरुनतरुनी	तरुन तरुनी
१४८	२	करनिकह्र	करनिकर
१४८	२१	आनद	आनंद
१४८	२२	दूससर	दूसर
१४८	२६	कनिकर	करनिकर
१५०	२०	परि	पति
१५१	१	दवय	दवाय

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५२	१४	साता	सीता
१५३	१	उरका	उरको
१५३	१०	स्यामात	स्यामता
१५५	२	सोकत	सोकन
१५५	१६	प्रीतिकी	प्रीतिको
१५६	६	मनोथता	मनोरथतो
१५६	१९	वकणी	वाकणी
१५८	२६	कछुरे	कछु
१६०	१३	नडाग	तडाग
१६०	२१	तुलसो	तुलसि
१६०	२३	मार	पोर
१६०	२४	बऊँ	बाऊँ
१६१	१८	तुलसी	तुलसि
१६२	१७	विवक	विवेक
१६३	६	त्याग	त्यागि
१६७	२	महि	मनहिं
१६७	२४	कौशल्याज	कौशल्याउ
१६८	९	स्वामि	स्वामी
१६८	१३	जानहीं	तानहीं
१६८	१८	प्रभ	प्रभु
१६८	२२	आवा	आवो
१७१	२०	कुकुटी	कुटी
१७४	२	नोच	नीच
१७४	२५	लाल	लाले
१७५	११	रहे	है

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७६	१४	प ताप	परिताप
१७७	२	लागि	लगि
१७७	२३	मह्नीजै	सह्नीजै
१८१	२०	ठालि	बालि
१८१	२६	वरणायासवंत	वरणेवासवंत
१८२	१६	किष्किंदा	किष्किधा
१८३	६	लक	लूक
१८४	१२	जाकी	जानकी
१८४	२६	भूप है	न भूप है
१८५	६	सयम के	समय पाय के
१८५	८	काज	काज में
१६०	३	ो	को
१६१	७	सत्त्य	सत्य
१६२	२५	पुचने	पुचों ने
१६५	१४	अघाव	अघाय
१६७	२५	लचनम	लोचनमें
२०२	२५	तद्यपि	तथापि
२०३	२६	कुबेर	कुवर
२०६	२४	मरति	सूरति
२१०	३	बीरद	बीर
२११	१	पाक	पालक
२११	११	लंक	लंका
२११	१२	लो त	लोभ
२१२	१४	नवाजा	निवाज
२१३	१०	तुलसि	तुलसो

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१४	२३	यतिनहि	तिनहि
२१५	१३	तुलसी	तुलसि
२१५	१८	अङ्कनि	अङ्गनि
२१५	२०	मगव	मगन
२१६	५	कञ्चु	कंज
२१७	८	तं	तूं
२१७	६	भप	भूप
२१८	२०	प्रकाशिक	प्रकाशिका
२१९	८	श्रुत	श्रुति
२१९	११	सारद	सादर
२१९	२४	आयोअव	आयोव
२१९	१५	जनमयो	जनायो
२२१	२१	निर्मल	निर्मए
२२२	११	ससकल	सकल
२२४	३	निचर	निस्वर
२२४	१८	रामज	रामजू
२२५	७	बिलंलम्ब	बिलम्ब
२२८	११	भरतज	भरतजू
२२९	२	रिपुन	रिपुरन
२२९	२२	वैहै	वैहै
२३०	१	सार	साल
२३१	१६	अएहैं	ऐहैं
२३१	५	अम्ब	अवि
२३६	१	रात	राति
२३६	५	रघुंस	रघुबंस

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३७	१	सेवतहु	सेवतहैं
२३८	१९	अंजु	मंजु
३३८	२६	निकेतव	निकेत
२४१	३	बछु	कछु
२४१	४	पहिचनि	पहिचानि
२४४	१३	मूषन	भूषन
२४६	७	सस्हूह	समूह
२४६	८	राश्चर्य्य	आश्चर्य्य
२५३	९	संदर	सुंदर
२५५	११	लसक	सकल
२५६	१५	राजतन	०
२५६	१६	षजनु	राजतनषजनु
२५८	१	तन	तून
२६०	५	चन्द्रमाकह्यो	चन्द्रमाकोचिन्हकह्यो
२६५	६	कंकुम	कुंकुम
२६५	१०	परि	पूरि
२६५	२२	पंद्रमा	चंद्रमा
२६६	१४	जवति	जुवति
२६६	१८	छडाहि	छाडिहि
२६८	१३	आप	आपु
२७१	२१	मन	मनहोय
२७३	१६	मटो	वटो